muskan

Poulomi

नवीनतम संस्करण : 2021

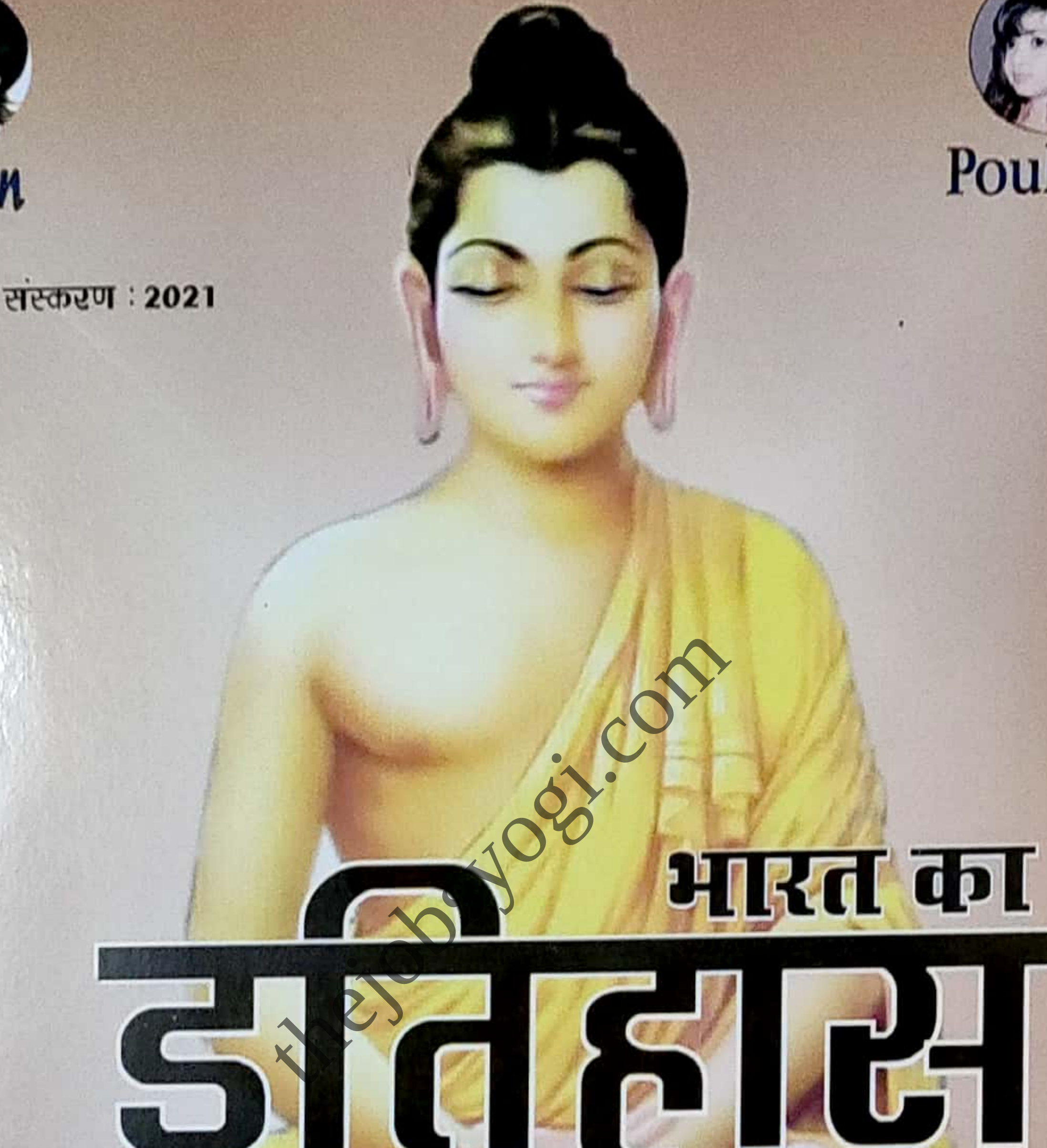

भारत का इतिहास

प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक भारत का इतिहास

thejobyogi.com

D.C. Patel

muskan publication

Scanned with CamScanner

□ प्रकाशक - मुस्कान पब्लिकेशन
बिलासपुर (छ.ग.)
मो. 9630463541 फोन : 07752-412999
E-mail :- muskanpublication@gmail.com

□ मुद्रक मुस्कान ऑफसेट प्रिंटर्स
बिलासपुर (छ.ग.)
फोन : 07752-412999

□ मूल्य- ₹ 220

□ कम्प्यूटर (कम्पोजिंग) - शोभाराम चौहान

टीप:- इस नोट्स को प्रकाशित करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है । फिर भी किसी त्रुटि केलिए प्रकाशक, संपादक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा ।

AKASH

भारत का इतिहास

विषय क्रम

प्रथम खण्ड
प्राचीन भारत का इतिहास

विषय	पृष्ठ क्रमांक
• इतिहास जानने के स्रोत	**12-27**
साहित्य स्रोत	12
ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग, महाकाव्य, पुराण, दर्शन, उपवेद, सूत्र, जैन एवं बौद्ध साहित्य, लौकिक साहित्य, स्मृति ग्रन्थ, विदेशियों का यात्रा विवरण।	
पुरातात्विक स्रोत	23
अभिलेख, सिक्के, मूर्तिकला, चित्रकला, भवन एवं स्मारक, पूर्व पाषाण कालीन स्थल, मध्य पाषाण कालीन स्थल, नव पाषाण कालीन स्थल, ताम्र पाषाणिक संस्कृतियाँ।	
• इतिहास	**28-47**
प्रागऐतिहासिक काल	28
पूर्व पाषाण काल, मध्य पाषाण काल, उत्तर पाषाण काल	
आद्यऐतिहासिक काल	29
सिन्धु घाटी सभ्यता : हड़प्पा, मोजनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, कालीबंगा, बनवाली, रंगपुर, सुरकोतड़ा, धौलावीरा, रोपड़, आलमगिरपुर, मांडा, सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों का जीवन	

विषय	पृष्ठ क्रमांक
ऋग्वैदिक काल	39
राजनीतिक व्यवस्था एवं प्रशासनिक इकाई, सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक जीवन, न्याय व्यवस्था, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन, ऋग्वैदिक काल में आर्यों का वर्णन।	
उत्तर वैदिक काल	42
भौगोलिक विस्तार, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन, आर्थिक जीवन, राजनीतिक जीवन।	
वैदिक कालीन प्रमुख यज्ञ	
आर्यों द्वारा किए जाने वाले यज्ञ	
महाजनपद काल	
विवाह की पद्धतियाँ	
• प्राचीन भारत में धार्मिक विकास	**48-59**
जैन धर्म : महावीर स्वामी, महावीर स्वामी का जैन दर्शन या सिद्धांत, जैन संगीति या सम्मेलन	
बौद्ध धर्म : गौतम बुद्ध का परिचय, बुद्ध के जीवन से संबंधित बौद्ध धर्म के प्रतीक एवं चिन्ह, बौद्ध धर्म के सिद्धांत, बौद्ध धर्म की मान्यताएँ, बौद्ध संगीति या महासम्मेलन, बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाएँ व उनका संबोधन, बौद्ध साहित्य, बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ, बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय, बौद्ध धर्म के पतन के कारण, बौद्ध धर्म के अनुयायी शासक, अन्य महत्वपूर्ण तथ्य।	

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

• भारत में साम्राज्यों का उदय 60-78

मगध साम्राज्य

हर्यक वंश (बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदायिन)

शिशुनाग वंश (शिशुनाग, कालाशोक), नंदीवर्धन

नंद वंश (महापद्मनंद, घनानंद)

मौर्य वंश (चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, अशोक) अशोक का धम्म, अशोक के शिलालेख, अशोक स्तंभ : सारनाथ, अशोक के उत्तराधिकारी

मौर्य प्रशासन : कौटिल्य का प्रशासन, मौर्यकालीन आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति

मगध साम्राज्य में ब्राह्मण वंशों का उदय : शुंग वंश, कण्व वंश एवं सातवाहन वंश

• प्राचीन भारत में विदेशी आक्रमण 79-84

फारसी आक्रमण, यूनानी आक्रमण (सिकंदर), बैक्ट्रियन (यवन) आक्रमण, पार्थियन (पहलव) आक्रमण, सीथियन (शक) आक्रमण, यू-ची (कुषाण) आक्रमण, कनिष्क।

• गुप्तकालीन भारत 85-94

गुप्त वंश : चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, रामगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य', कुमारगुप्त, स्कंदगुप्त, भानुगुप्त, हूणों का आक्रमण

गुप्तकालीन संस्कृति : सामाजिक जीवन, धर्म, प्रमुख मंदिर, मूर्तिकला, चित्रकला

चित्रकला, गुप्त कालीन प्रमुख अभिलेख, गुप्तकालीन साहित्य, गुप्तकाल में चिकित्सा, गुप्तकालीन विज्ञान के ग्रन्थ। गुप्त प्रशासन, व्यापार, शिक्षा, मुद्रा।

• गुप्तोत्तर कालीन भारत 95-100

पुष्यभूति वंश (हर्षवर्धन), पल्लव वंश, चालुक्य वंश, राष्ट्रकूट वंश, गुर्जर-प्रतिहार वंश, पाल वंश।

• भारत में राजपूत काल 102-106

राजपूत काल, सोलंकी वंश, गहड़वाल वंश, चौहान वंश, तोमर वंश, परमार वंश, कार्कोट वंश, उत्पल वंश, लोहार वंश, सेन वंश, चंदेल वंश, कल्चुरि वंश, गंग वंश।

• भारत में संगम काल 107-109

चेर वंश, चोल वंश, पाण्ड्य वंश, उत्तर प्राचीन चोल या द्वितीय चोल, चोलों का प्रशासन, धर्म, मंदिर निर्माण

• गुप्तोत्तर काल में विदेशी आक्रमण 110-111

भारत में अरबी आक्रमण, भारत में तुर्क आक्रमण (मोहम्मद गजनवी, मोहम्मद गौरी)

—00—

द्वितीय खण्ड

मध्यकालीन भारत का इतिहास

विषय — पृष्ठ क्रमांक

• दिल्ली सल्तनत काल 115-129

कुतुबी वंश : कुतुबुद्दीन ऐबक

शमशी वंश : इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, बहराम शाह, अलाउद्दीन मसूद शाह, नासिरूद्दीन महमूद।

बलबनी वंश : ग्यासुद्दीन बलबन, कैकुबाद एवं क्यूमर्स।

खिलजी वंश : जलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी (अलाउद्दीन खिलजी का विजय अभियान, अलाउद्दीन खिलजी के निर्माण कार्य), कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी।

तुगलक वंश : ग्यासुद्दीन तुगलक, मोहम्मद बिन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक, नासिरूद्दीन महमूद तुगलक।

सैय्यद वंश : मुबारक शाह, अलाउद्दीन आलम शाह।

लोदी वंश : सिकंदर लोदी, इब्राहीम लोदी (पानीपत का प्रथम युद्ध)

सल्तनतकालीन प्रशासन

सल्तनतकालीन सैन्य संगठन

सल्तनतकालीन कर व्यवस्था

सल्तनतकालीन स्थापत्य

सल्तनतकालीन साहित्य कला

विषय — पृष्ठ क्रमांक

• मुगल साम्राज्य 130-145

मुगलकालीन युद्ध एवं अभियान

मुगलकालीन स्थापत्य एवं वास्तुकला

मुगलकालीन साहित्य

मुगल शासकों का जीवन परिचय

बाबर : बाबर का भारत विजय अभियान

हुमायूँ : हुमायूँ के शासन का प्रथम काल एवं विजय अभियान।

अकबर : पानीपत का द्वितीय युद्ध, अकबर के दरबार में नवरत्न, अकबर की मनसबदारी व्यवस्था या सैन्य प्रबंधन प्रणाली, अकबर की राजपूत नीति, अकबर की आर्थिक प्रणाली, अकबर के विजय अभियान।

जहाँगीर : जहांगीर के कार्य एवं विजय अभियान, जहांगीर के शासनकाल का नूरजहां गुट का कारण, जहांगीर के समय विद्रोह।

शाहजहाँ : विजय अभियान, इसके शासनकाल में चार युद्ध लड़े गए – बहादुरपुर का युद्ध, धरमट का युद्ध, सामुगढ़ का युद्ध, देवराई का युद्ध।

औरंगजेब : औरंगजेब के विजय अभियान एवं नीतियाँ, धार्मिक नीति, औरंगजेब का दक्षिण अभियान का कारण, दक्षिण विजय अभियान (बीजापुर, गोलकुंडा), औरंगजेब के शासनकाल में विद्रोह।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

मुगलकालीन चित्रकला

मुगलकालीन राजस्व प्रणाली

मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था

मुगलकालीन प्रशासन

● विजयनगर साम्राज्य 146-148

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना

संगम वंश : हरिहर प्रथम, बुक्का प्रथम, हरिहर द्वितीय, देवराय प्रथम, देवराय द्वितीय, विरूपाक्ष द्वितीय।

सालुव वंश : इम्माडि नरसिंह

तुलुव वंश : कृष्ण देवराय, सदाशिव

अरावीडु वंश : वेंकट द्वितीय

विजयनगर साम्राज्य की व्यवस्था

● बहमनी साम्राज्य 149-152

महमूद गवां, (बीजापुर, अहमदनगर, बरार, गोलकुण्डा, बीदर)

मालवा : होसंग शाह, नासिरूद्दीन शाह, महमूद शाह खिलजी

मेवाड़ : राणा कुंभा, राणा सांगा

जौनपुर : कश्मीर (सिकंदर शाह, जैन उल आबदीन)

बंगाल : अलाउद्दीन हुसैन शाह

गुजरात : अहमद शाह, महमूद बेगड़ा (पेटू)

● मध्यकालीन भारत में 153-155

धार्मिक-सुधार आंदोलन

सूफी आंदोलन, भारत में चार प्रमुख संप्रदाय (चिश्ती, सुहारावर्दी, कादरी, नक्शबंदी), मुईनुद्दीन चिश्ती, निर्माण कार्य, भक्ति आंदोलन (प्रमुख विशेषताएं), निर्गुण धारा, सगुण धारा, प्रमुख संप्रदाय व प्रवर्तक, भक्ति आंदोलन के प्रभाव, सिक्ख संप्रदाय।

● उत्तर मुगल काल 156-160

मराठा साम्राज्य

शिवाजी : परिचय, सफलता का कारण, शिवाजी का विजय अभियान, शिवाजी की आगरा यात्रा, शिवाजी का प्रशासन, शिवाजी के अष्ट प्रधान, शिवाजी का सैन्य व्यवस्था, शिवाजी का राजस्व एवं कर व्यवस्था।

मराठा साम्राज्य का विस्तार : शम्भाजी, राजा राम, शिवाजी द्वितीय, साहू, प्रथम पेशवा : बालाजी विश्वनाथ, द्वितीय पेशवा : बाजीराव प्रथम, तृतीय पेशवा : बालाजी बाजीराव, (पानीपत का तृतीय युद्ध), चतुर्थ पेशवा : माधवराव प्रथम, पंचम पेशवा : नारायण राव प्रथम, छठा पेशवा : रघुनाथ राव,

सातवां पेशवा : माधवराव नारायण राव द्वितीय, अंतिम पेशवा : बाजीराव द्वितीय, आंग्ल–मराठा युद्ध, आंग्ल एवं मराठा के बीच हुए संधियाँ।

—00—

तृतीय खण्ड

आधुनिक भारत का इतिहास

विषय	पृष्ठ क्रमांक
● उत्तर मुगल काल	162-164
बहादुर शाह प्रथम, जहांदार शाह, फर्रूखसियर, मोहम्मद शाह, अहमद शाह, आलमगिर द्वितीय, शाह आलम, अकबर द्वितीय, बहादुर शाह जफर।	
● भारत में यूरोपीय कम्पनियाँ	165-177
पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश, फ्रांसीसी	
पुर्तगाली V/S डच, ब्रिटिश V/S डच, ब्रिटिश V/S फ्रांस, ब्रिटिश V/S फ्रांसीसी (आंग्ल कर्नाटक युद्ध), ब्रिटिश V/S बंगाल, ब्रिटिश V/S मैसूर, ब्रिटिश V/S मराठा, ब्रिटिश V/S सिक्ख, ब्रिटिश V/S नेपाल, ब्रिटिश V/S वर्मा, ब्रिटिश V/S भूटान, ब्रिटिश V/S अफगानिस्तान, ब्रिटिश V/S तिब्बत।	
● भारत में ब्रिटिश शासन का विकास	178-188
1. संवैधानिक विकास 2. न्यायपालिका 3.विधायिका 4. कार्यपालिका 5. निर्वाचन 6. भारत में शिक्षा का प्रसार 7. भारत में समाचार पत्रों का विकास 8. उद्योग 9. रेलवे 10. सड़क 11. वायुमार्ग 12. डॉक 13. टेलीग्राम 14. टेलीफोन 15. सिविल सेवा 16. कृषि 17. भारत में बैंकिंग का विकास 18. स्टॉक एक्सचेंज।	

विषय	पृष्ठ क्रमांक
● भारत में ब्रिटिश शासन	189-204
बंगाल के गवर्नर	189
लॉर्ड क्लाईव, वारेन हेस्टिंग्स	
बंगाल के गवर्नर जनरल	190
वारेन हेस्टिंग्स, लॉर्ड कार्नवालिस, सर जॉन शोर, लॉर्ड वेलेजली, लॉर्ड कार्नवालिस, जॉर्ज बोर्लो, लॉर्ड मिन्टो प्रथम, लॉर्ड हेस्टिंग्स, जॉन एडम्स, लॉर्ड एम्सहर्ट।	
भारत के गवर्नर जनरल	194
लॉर्ड विलियम बैंटिक, लॉर्ड चार्ल्स मेटकॉफ, ऑकलैण्ड प्रथम, लॉर्ड एलिनबरो, लॉर्ड हार्डिंग, लॉर्ड डलहौजी।	
भारत के वायसराय	197
लॉर्ड कैनिंग, लॉर्ड एल्गिन प्रथम, सर जॉन लॉरेन्स, लॉर्ड मेयो, लॉर्ड नार्थब्रुक, लॉर्ड लिटन, लॉर्ड रिपन, लॉर्ड डफरिन, लॉर्ड लैन्सडाऊन, लॉर्ड एल्गिन द्वितीय, लॉर्ड कर्जन, लॉर्ड मिन्टो प्रथम, लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय, लॉर्ड चेम्सफोर्ड, लॉर्ड रीडिंग, लॉर्ड इरविन, लॉर्ड विलिंग्टन, लॉर्ड लिनलिथगो, लॉर्ड वेवेल, लॉर्ड माउंटबेटन।	

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

● ब्रिटिश शासन के दौरान विद्रोह एवं आंदोलन 205-244

1. सामाजिक/धार्मिक सुधार आंदोलन 205

राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती (आर्य समाज, शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास), थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन (स्वामी विवेकानंद), प्रार्थना समाज, देव समाज/धर्म सभा, बंगाल के सुधारक (ईश्वरचन्द्र विद्यासागर), मुस्लिम धार्मिक सुधार आंदोलन, अहमदिया आंदोलन, मोहम्मडन लिट्रेटी सोसायटी, अलीगढ़ आंदोलन (सर सैयद अहमद खाँ), फारसी समाज सुधार आंदोलन, यंग बंगाल आंदोलन, सत्यशोधक समाज (ज्योतिबा फुले)।

2. क्रांतिकारी आंदोलन 211

भारत में क्रांतिकारियों का प्रथम चरण

महाराष्ट्र में आंदोलन

बंगाल में आंदोलन

दिल्ली में आंदोलन

पंजाब में आंदोलन

सरकारी प्रतिक्रिया।

विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन

ब्रिटेन में आंदोलन, पेरिस में आंदोलन, अमेरिका (सेन फ्रांसिस्को), बर्लिन।

भारत में क्रांतिकारियों का दूसरा चरण

हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन का गठन (1924, कानपुर), काकोरी डकैती काण्ड (9 अगस्त, 1925), भारत नौजवान सभा, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन (1928), सांडर्स हत्याकांड/लाहौर षड्यंत्र (1928), असेम्बली बम काण्ड (1929), चटगाँव शस्त्रागार लूट काण्ड (1930)।

3. किसान आंदोलन 216

नील आंदोलन (1859–60)

पाबना (1873–1876)

दक्कन विद्रोह (1874)

कूका आंदोलन (1872)

रामोसी किसानों का विद्रोह

ताना भगत आंदोलन (1914)

अखिल भारतीय किसान सभा (1936)

चम्पारन सत्याग्रह (1917)

खेड़ा (1918)

बारदोली सत्याग्रह (1928)

4. जनजाति आंदोलन 217

मोपला विद्रोह (1920)

मुण्डा विद्रोह (1893–1900)

अहोम विद्रोह (1828–1830)

संथाल विद्रोह (1854–56)

भील विद्रोह (1825–31)

रामोसी विद्रोह (1822–29)

5. छात्रसंघ आंदोलन 218

यंग बंगाल आंदोलन

6. मजदूर आंदोलन 218

अहमदाबाद मील मजदूर आंदोलन

7. राष्ट्रीय आंदोलन 219

1857 की क्रांति

बंगाल विभाजन (1905)

स्वदेशी आंदोलन का चरमोत्कर्ष (1908)

होमरूल आंदोलन (1916) गृह शासन

माण्टेग्यु घोषणा/भारत का मेग्नाकार्टा

रोलेक्ट एक्ट – 1919

जलियावाला बाग हत्याकाण्ड (1919)

हंटर कमेटी (1919)

खिलाफत आंदोलन

असहयोग आंदोलन (1920–22)

चौरा–चौरी काण्ड (1922)

स्वराज दल (1923)

बरसाड आंदोलन (1923–24)

बायोकोम सत्याग्रह (1924–25)

साइमन कमीशन (1927)

नेहरू रिपोर्ट (1928)

बारदोली सत्याग्रह (1928)

जिन्ना की 14 सूत्रीय मांगे (1929)

कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929)

पूर्ण स्वराज दिवस (26 जनवरी 1930)

गांधी जी की 11 सूत्रीय मांगे (1930)

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)

दाण्डी यात्रा (1930)

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930)

गाँधी–इरविन समझौता (1931) दिल्ली पैक्ट,

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931)

द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन (1932)

मैक्डोनाल्ड अवार्ड/सांप्रदायिक निर्णय (1932)

पूना पैक्ट (1932)

तृतीय गोलमेज सम्मेलन (1932)

श्वेत पत्र (1932)

गाँधीजी और हरिजन उत्थान (1932)

कांग्रेस समाजवादी दल (1934)

भारत का पहला आम चुनाव (1936–37)

सिकंदर–जिन्ना पैक्ट (1937)

त्रिपुरी अधिवेशन (1939)

मुक्ति दिवस (1939)

पाकिस्तान की माँग (1940)

अगस्त प्रस्ताव/लिनलिथगो प्रस्ताव (1940)

व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)

क्रिप्स प्रस्ताव (30 मार्च, 1942)

भारत छोड़ो आंदोलन (8 अगस्त, 1942)

सी. राजगोपालाचारी फार्मूला (1944)

लॉर्ड वेवेल योजना (1945)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

शिमला सम्मेलन (1945)
नौसेना विद्रोह (1946)
केबिनेट मिशन (1946)
सीधी कार्यवाही दिवस (1946)
1946 का निर्वाचन, अंतरिम सरकार का गठन
एटली की घोषणा
माउंटबेटन योजना प्रस्तुत (1947)
भारत का स्वतंत्रता संग्राम (4 जुलाई, 1947)
पाकिस्तान का निर्माण
फारवर्ड ब्लॉक औद आजाद हिन्द फौज का गठन।

- **गांधीवादी युग** 245-246
- **भारतीय इतिहास के प्रमुख व्यक्तित्व** 247-256
  कांग्रेस, राजनीति, समाज सुधारक, प्रशासन, क्रांतिकारी
- **स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित : प्रमुख पुस्तकें** 257-258
- **भारत का स्वतंत्रता संघर्ष : महत्वपूर्ण तथ्य** 259-260
- **भारत के महान शहीद** 261
- **उपाधि, प्राप्तकर्ता एवं दाता** 262
- **प्रमुख व्यक्तियों के कथन एवं नारे** 263-264
- **पं. जवाहरलाल नेहरू मंत्रिमण्डल** 265-268
- **लाल बहादूर शास्त्री** 269-273
- **चंद्रशेखर** 273
- **पी.वी. नरसिम्हाराव** 273
- **अटल बिहारी वाजपेयी** 274

—00—

प्रथम खण्ड

प्राचीन भारत का इतिहास

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

इतिहास जानने के स्रोत

A. साहित्यिक स्रोत
- I. धार्मिक ग्रन्थ
- II. लौकिक साहित्य
- III. विदेशी यात्रियों का यात्रा विवरण

B. पुरातात्विक स्रोत
- I. वास्तुकला (इमारत, स्मारक आदि)
- II. चित्रकला, अभिलेख
- III. सिक्के एवं अन्य वस्तुएँ

A. साहित्यक स्रोत

I. धार्मिक ग्रन्थ : इसे हिन्दु धर्मग्रन्थ साहित्य भी कहा जाता है। यह तीन हैं–

| i. वैदिक साहित्य | ii. जैन साहित्य | iii. बौद्ध साहित्य |

i. वैदिक साहित्य – वैदिक धर्मग्रन्थ को ब्राह्मण धर्मग्रन्थ भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित साहित्य हैं–

a. वेद – संकलनकर्ता – महर्षि कृष्ण द्वैपायन (वेदव्यास)
- वेद को विश्व में प्रथम लिखित ग्रन्थ माना जाता है।
- वेद का अर्थ 'ज्ञान' है।
- वेदों को अपौरूषेय अर्थात् देवकृत माना गया है।

क्रमशः वेद चार प्रकार के हैं–

(1) ऋग्वेद	(2) सामवेद
(3) यजुर्वेद	(4) अथर्ववेद

- ऋग्वेद, सामवेद एवं यजुर्वेद इन तीनों के संग्रह को 'वेदत्रयी' कहा जाता है।
- उपरोक्त चारों वेदों को 'संहिता' कहा जाता है।

ऋग्वेद
(1500–1000 ई.पू.)

- विश्व का सबसे प्राचीनतम वेद व रचना है।
- इसमें 10 मण्डल एवं 1028 शुक्तियाँ एवं 10,580 श्लोक (ऋचाएँ) मंत्र है।

ऋग्वेद के 10 मण्डल

मण्डल	रचनाकर्ता	विशेष
प्रथम एवं दसवां		सबसे नवीनतम मण्डल दसवें मण्डल के पुरूष सुक्त में शुद्र का वर्णन है।
दूसरा मण्डल		
तृतीय मण्डल	विश्वामित्र	गायत्री मंत्र का उल्लेख
चतुर्थ मण्डल	वामदेव	कृषि कार्य का उल्लेख
पंचम मण्डल	अत्रि	
षष्ठममण्डल	भारतद्वाज	
सप्तम मण्डल	वशिष्ट	
अष्ठम मण्डल	कण्व ऋषि	बालखिल्य परिशिष्ट
नवम मण्डल	पवमान अंगीरा	सोमदेव का वर्णन

- ऋग्वेद के पढ़ने वाले को 'होता' कहते है।
- ऋग्वेद की प्रथम ऋचा अग्नि देवता के प्रति है।
- ऋग्वेद में वर्णित धर्म का आधार प्रकृति पूजा है।
- ऋग्वेद के अधिकांश भाग की रचना सप्तसैंधव प्रदेश में हुई।
- ऋग्वेद और जेदावेस्ता (ईरानी ग्रन्थ) में समानता पायी जाती है।
- ऋग्वेद में इन्द्र के लिए 250 एवं अग्नि के लिए 200 श्लोकों की रचना की गई है।
- ऋग्वेद की 5 शाखाएँ हैं– शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शारवायन व मांडूकायन।
- ऋग्वेद से हमें आर्यों के जीवन की राजनीतिक व सांस्कृतिक जीवन के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

> ऋग्वेद में **'दशराज्ञ युद्ध'** का वर्णन मिलता है, जो भरत कबीले के राजा सुदास व पुरु कबीले के मध्य हुआ था। भरत कबीले जन के प्रमुख सुदास थे, जिनके मुख्य पुरोहित **'वसिष्ठ'** थे, जबकि इनके विरोधी दस जनों (आर्य व अनार्य) के संघ के प्रमुख पुरोहित **'विश्वामित्र'** थे। भरतजन के नेता सुदास ने रावी नदी (परूषणी नदी) के तट पर दस राजाओं के संघ को पराजित किया था।

सामवेद

- शाब्दिक अर्थ – 'गान'
- विषय वस्तु – संगीत से सम्बंधित
- वाचनकर्ता – उद्‌गाता
- कुल ऋचाएँ – 1875 (75 के अतिरिक्त शेष ऋग्वेद से)
- विशेष – भारतीय संगीत का जनक
  – सामवेद में संकलित मंत्रों को देवताओं की स्तुति के समय गाया जाता है।

यजुर्वेद

- शाब्दिक अर्थ – यज्ञ
- विषय वस्तु – यज्ञ एवं कर्मकाण्ड
- वाचनकर्ता – 'अध्वर्यु'
- विशेष – यजुर्वेद गद्य व पद्य वाला वेद है।

अथर्ववेद

- विषय वस्त – यज्ञ एवं कर्मकाण्ड
- वाचनकर्ता – 'ब्रह्मा'
- रचना – अनार्यों द्वारा
- विशेष – यह सबसे नवीन वेद है।
  – इसके दो भाग पिप्पलाद व शौनक हैं।
  – इसमें 20 काण्ड, 731 सूक्त एवं 6000 मंत्र हैं।
  – इसकी रचना अथवर्ण तथा आंगिरस ने की।
  – इसमें सर्वाधिक उल्लेखनीय विषय 'आयुर्विज्ञान' है।
  – सभा व समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
  – ब्रह्मज्ञान, औषधि प्रयोग, टोना–टोटका के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
  – अथर्ववेद के अन्य नाम अथर्वाङ्गिरसवेद, ब्रह्मवेद, महीवेद, भैषज्यवेद।

b. ब्राह्मण साहित्य

1. ब्राह्मण ग्रन्थ

- विषय – यज्ञ, पूजा, पाठ एवं कर्मकाण्ड
- उद्देश्य – यज्ञ व कर्मकाण्डों के विधान एवं इसकी क्रियाओं को भलि–भाँति समझने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना हुई।
- तैतिरीय – मनुष्य का आचरण देवों के समान होना चाहिए। मन ही सर्वोच्च प्रजापति है।
- गोपथ – ऊंकार तथा गायत्री की महिमा का वर्णन, कैवल्य की अवधारणा का उल्लेख है।
- विशेष – ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में राज्याभिषेक के नियम दिए गए हैं।
  – ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शतपत ब्राह्मण ग्रन्थ है।

> प्रत्येक वेद के अपने–अपने ब्राह्मण ग्रन्थ होते हैं –

वेद	संबंधित ब्राह्मण ग्रन्थ
1. ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि
2. यजुर्वेद	(1) शुक्ल यजुर्वेद – शतपथ (2) कृष्ण यजुर्वेद – तैत्तिरीय
3. सामवेद	पंचविङ्ग, जैमिनी, ताण्ड्य
4. अथर्ववेद	गोपथ

2. आरण्यक

- इसमें दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों जैसे आत्मा, मृत्यु, जीवन आदि विषयों का वर्णन है।
- इन ग्रन्थों का मनन अरण्य अर्थात् वन में होने के कारण आरण्यक पड़ा।
- ब्राह्मणों का अंतिम भाग है। कुल संख्या – 6

3. उपनिषद् (रचनाकाल – 800–500 ई.पू.)

- इसका अर्थ **'समीप या पास बैठना'** है।
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है।
- छन्दोग्य उपनिषद् में पुनर्जन्म का वर्णन है।
- यम नचिकेता संवाद कठोपनिषद् में वर्णित है।
- उपनिषदों की रचना उत्तर वैदिक काल में हुई है।
- इसे वेदांत या वेदों का अंतिम भाग भी कहा जाता है।
- ब्रह्म विषयक होने के कारण 'ब्रह्मविद्या' भी कहा जाता है।
- चारों आश्रम का सर्वप्रथम उल्लेख जंबालो उपनिषद् में हुआ है।
- उपनिषद् वैदिक साहित्य के अंतिम भाग व सारभूत सिद्धांतों का प्रतिपादक है।
- उपनिषदों में दर्शनशास्त्र के ज्ञान पक्ष पर सबसे अधिक जोर दिया गया है।
- ऋषि याज्ञवल्क्य के जीवन पर वृहदारण्यक उपनिषद् में प्रकाश डाला गया है।
- उपनिषदों की कुल संख्या 108 है, जिनमें 13 को ही प्रामाणिक माना गया है।
- इसमें आत्मा–परमात्मा एवं संसार के संदर्भ में प्रचलित दार्शनिक विचारों का संग्रह है।
- भारत का प्रसिद्ध राष्ट्रीय आदर्श वाक्य **'सत्यमेव जयते'** मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- इसमें कर्मकाण्डों की आलोचना तथा सम्यक विश्वास व ज्ञान के तत्वों पर जोर दिया गया है।

4. वेदांग

- इसे वेदों का अंग माना गया है। अध्ययन में मदद करता है।
- कुल संख्या – 6 (शिक्षा, व्याकरण, ज्योतिष, कल्प, निरुक्त, छंद)

5. महाकाव्य (अंतिम संकलन)

- इनकी संख्या दो है –

(1) रामायण

- रचना काल – अंतिम संकलन 400 इसवीं
- अन्य नाम – चतुर्विंशति, साहस्ती संहिता।
- भाषा – संस्कृत
- रचयिता – वाल्मिकी
- कुल श्लोक – 24000

(2) महाभारत

- रचना काल – अंतिम संकलन 400 ईसवी
- अन्य नाम – जयसंहिता, शतसाहस्ती संहिता।
- रचयिता – वेदव्यास
- कुल श्लोक – 1 लाख
- कुल पर्व – 18

6. पुराण

- रचनाकाल –3–4 सदी ईसवी
- पुराणों को 'पंचम वेद' माना गया है।
- प्रामाणिक पुराण की कुल संख्या 18 है।
- 'वायु पुराण' में गुप्त वंश का वर्णन मिलता है।
- 'विष्णु पुराण' में मौर्य वंश का वर्णन मिलता है।
- प्राचीन आख्यानों से युक्त ग्रन्थ को पुराण कहते हैं।
- सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक पुराण, 'मत्स्य पुराण' है।
- पुराणों के रचनाकार **लोमहर्ष** व उसका पुत्र **उग्रसवा**
- 'मत्स्य पुराण' में आंध्र सातवाहन वंश का वर्णन मिलता है।
- 'अग्नि पुराण' में तांत्रिक पद्धति का उल्लेख है। इसी में ही गणेश पूजा का प्रथम बार उल्लेख मिलता है।
- पुराणों में ऐतिहासिक सूचनाएँ वंशानुचरित में मिलती हैं, अर्थात् इनमें राजाओं की वंशावलियाँ पायी जाती हैं।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

वेदों का वर्गीकरण (चार भाग – वेदव्यास)

वेद	उपवेद	उपवेद के प्रवर्तक	ब्राम्हण ग्रंथ	पुरोहित	विषय	रचनाकाल
ऋग्वेद	आयुर्वेद	प्रजापति (ब्रह्मा)	एतरेय, कौषीतकि	होता	मंत्र एवं स्तुति	1500-1000 BC
सामवेद	गंधर्ववेद	नारद	पंचविंश, षड्विंष, जैमिनी, ताण्ड्य	उद्गाता	संगीत	1000-600 BC
यजुर्वेद	धनुर्वेद	विश्वामित्र	शतपथ, तैत्तिरीय	अध्वर्यु	यज्ञ एवं कर्मकाण्ड	1000-600 BC
अथर्ववेद	शिल्पवेद	विश्वकर्मा	गोपथ	ब्रम्हा	चिकित्सा एवं जादू–टोना	1000-600 BC

अन्य

ब्राम्हण साहित्य	विषय
ब्राम्हण ग्रंथ	यज्ञ, कर्मकाण्ड
आरण्यक	दार्शनिक, रहस्यात्मक
उपनिषद	ज्ञान, आत्मा, ब्रहम, दर्शन
स्मृति ग्रंथ	कानून, सामाजिक विधि निषेध

7. दर्शन – इनकी संख्या 7 मानी गई है–

दर्शन	प्रतिपादक
सांख्य	– कपिल
न्याय	– गौतम (न्यायसूत्र)
वैशेषिक	– कणाद व उलूक
योग	– पातंजलि (योगसूत्र)
पूर्व मीमांसा	– जैमिनी
उत्तर मीमांसा (वेदांत)	– बादरायण
चार्वाक	– चार्वाक (लोकायत)

8. स्मृति ग्रन्थ –

- विषय – विधि संहिता
- रचनाकर्ता – **मनुस्मृति**
- रचनाकाल – 200 ई.पू.–200 ई (सबसे प्राचीन स्मृति)
- अन्य नाम – धर्मशास्त्र

विशेष

- स्मृति को धर्मशास्त्र भी कहा गया है।
- इसके माध्यम से समाज में प्रचलित विधि की जानकारी प्राप्त होती है।
- संभवतः 'मनुस्मृति' सबसे प्राचीन स्मृति है, जिस पर चार लोगों ने टीका लिखा है–
  1. मेधातिथि 2. गोविन्दराय
  3. कुल्लूकभट्ट 4. भारूचि
- याज्ञवल्क्य स्मृति पर तीन लोगों ने टीका लिखा–
  1. विज्ञानेश्वर, 2. विश्वरूप, 3. अपरार्क
- मेघातिथि ने सतीप्रथा के विरोध में तर्क प्रस्तुत किए हैं।

स्मृतियाँ	काल
मनुस्मृति	– 200 ई.पू.–200 ई.
याज्ञवल्क्य स्मृति	– 100 ई.पू.–300 ई.
नारद स्मृति	– 300–400 ई.
पराशर स्मृति	– 300–500 ई.
बृहस्पति स्मृति	– 300–500 ई.
कात्यायन स्मृति	– 600 ई.

9. उपवेद – प्रत्येक वेद के अपने–अपने उपवेद होते हैं–

वेद	उपवेद
ऋग्वेद	– आयुर्वेद
सामवेद	– गंधर्ववेद
यजुर्वेद	– धनुर्वेद
अथर्ववेद	– शिल्पवेद

10. सूत्र

- रचना – छठी शताब्दी ई.पू. से ई. संवत्
- कम शब्दों में अधिक बात कहने का प्रयास
- मुख्यतः चार –
  1. कल्प सूत्र – कर्मकांड व रीति–रिवाज
  2. श्रौत सूत्र – महायज्ञ
  3. गृह सूत्र – गृह संस्कार
  4. धर्म सूत्र – धर्म या विधि
- **शुल्व सूत्र** – बलि देव व अग्नि देव के परिमाण व रचना की चर्चा (यह मूलतः श्रौत सूत्र से संबंधित है।)

c. जैन साहित्य–

- जैन धर्मगंन्थ को **'आगम साहित्य'** के नाम से भी जाना जाता है।

d. बौद्ध साहित्य–

- बौद्ध धर्मगंन्थ से संबंधित साहित्य को 'पीटक साहित्य' के नाम से भी जाना जाता है।
- इनकी संख्या तीन हैं –
  (1) सुत्त पिटक, (2) विनय पीटक,
  (3) अभिधम्म पीटक।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

II. लौकिक साहित्य

➤ इसमें धार्मिक जीवन के साथ राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन का भी वर्णन मिलता है।

साहित्य	साहित्यकार	रचनाकाल	विषयवस्तु	विशेष
अष्टाध्यायी	पाणिनी	5वीं शताब्दी ई.पू.	व्याकरण	महापद्मनंद के मित्र थे
महाभाष्य	पतंजली	2री शताब्दी ई.पू.	व्याकरण	
गार्गी संहिता	गार्गी	प्रथम शताब्दी ई.पू.	यवन आक्रमण का उल्लेख	
अर्थशास्त्र	कौटिल्य (चाणक्य)	3–2री शताब्दी ई.पू.	राजनीति, प्रशासन	(भारत का पहला राजनीतिक ग्रन्थ) 15 खण्ड, 6000 श्लोक
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	4–5वीं शताब्दी ई. (गुप्तकाल)	मौर्यकालीन राजनीतिक जीवन का वर्णन	(नंद वंश का पतन एवं मौर्य वंश की स्थापना का वर्णन)
देवीचंद्रगुप्तम्			चंद्रगुप्त से संबंधित	
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्तकाल	एक व्यापारी का एक कणिका से प्रेम संबंध का वर्णन	
रघुवंशम्	कालिदास		गुप्त नरेश समुद्रगुप्त की विजय का वर्णन	
मालविकाग्निमित्रम्	--//--	4–5वीं शताब्दी ई.	शुंग वंश की जानकारी	पुष्यमित्र शुंग एवं उनके पुत्र अग्निमित्र के बारे में वर्णन
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	--//--		हस्तीनापुर के राजा दुष्यंत एवं शकुन्तला के सम्बंधों का वर्णन	
मेघदुतम्	--//--		यक्ष कथा का वर्णन	छत्तीसगढ़ के रामगढ़ की पहाड़ी में लिखा गया।

thejobsyogi.com

ऋतुसंहारम्	--//--		ऋतु के बारे में वर्णन	
विक्रमोर्वशीयम्	--//--		राजा पुरूरवा तथा उर्वशी के प्रेम प्रसंग	
कुमारसम्भवम्	--//--		शिव पार्वती का प्रसंग	
नीतिसार	कामन्दक		गुप्तकालीन राजतंत्र पर प्रकाश	
रामचरित	संध्याकरनन्दी		बंगाल के शासक रामपाल की जीवनकथा	
स्वप्नवासवदत्तम्	भास	तृतीय शताब्दी ई	वासवदत्ता के प्रेम सम्बन्धों का वर्णन	
हर्षचरित	बाणभट्ट	7वीं शताब्दी ई.	हर्षवर्धन के बारे में वर्णन	
राजतरंगिणी	कल्हण	12वीं शताब्दी	कश्मीर के शासन का वर्णन	
विक्रमांकदेवचरितम	विल्हण	12वीं शताब्दी	चालुक्य वंश का वर्णन	

अन्य रचनाएं

रचना	रचनाकार
अष्टाध्यायी	पाणिनी
अर्थशास्त्र	चाणक्य
इण्डिका	मेगस्थनीज
पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
कामसूत्र	वात्स्यायन
सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
वृहत्संहिता	वाराहमिहिर
पंचसिद्धांतिका	वाराहमिहिर
कथासरित्सागर	सोमदेव
किरातार्जुनीयम्	भारवि

रचना	रचनाकार
हर्षचरित्	वाणभट्ट
कादम्बरी	वाणभट्ट
नागानन्द	हर्षवर्धन
रत्नावली	हर्षवर्धन
प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन
मालतीमाधव	भवभूति
मत्तविलासप्रहसन	महेन्द्रवर्मन
कर्पूरमंजरी	राजशेखर
वृहत्कथामंजरी	क्षेमेन्द्र
गीतगोविन्द	जयदेव
पृथ्वीराजरासो	चन्दरबरदाई

Scanned with CamScanner

यूनानी यात्रियों का यात्रा विवरण

यात्री	रचना	समय	विषयवस्तु
1. टेसियस		ईरान का राजवैद्य	भारत के संबंध में विवरण आश्चर्यजनक कहानियों से परिपूर्ण।
2. हेरोडोट्स	'हिस्टोरिका'	5वीं शताब्दी ई.पू.	इतिहास का जनक कहा जाता है। पुस्तक में भारत–फारस के संबंधों का वर्णन
3. नियार्कस,		4–3री शताब्दी ई.पू.	सिकंदर के साथ भारत आने वाले लेखक
4. आनेसिक्रिटस,		4–3री शताब्दी ई.पू.	सिकंदर के साथ भारत आने वाले लेखक
5. आरिस्टोबुलस		4–3री शताब्दी ई.पू.	सिकंदर के साथ भारत आने वाले लेखक
6. मेगस्थनीज	'इण्डिका'	चंद्रगुप्त मौर्य के समय	यह यूनानी राजा सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था, जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। इसने अपने पुस्तक में मौर्य युगीन समाज व संस्कृति के विषय में लिखा है।
7. डाईमेकस		बिन्दुसार के दरबार में	यह सीरिया नरेश एण्टीयोकस का राजदूत था, जो में आया था। इसका विवरण भी मौर्य युग से संबंधित है।
8. डायोनिसियस		बिन्दुसार के राजदरबार में	यह मिस्र नरेश टॉल्मी फिलाडेल्फस का राजदूत था, जो आया था।
9. प्लिनी	नेचुरल हिस्टोरिका	प्रथम शताब्दी	इसमें भारतीय पशुओं, पेड़–पौधों, खनिज पदार्थों आदि के बारे में विवरण मिलता है। प्रथम सदी में भारत–रोम व्यापार का विस्तृत वर्णन।
10. टॉल्मी	ज्योग्राफिका	दूसरी शताब्दी में	'भारत का भूगोल' नामक पुस्तक लिखी।
11. पेरीप्लस ऑफ द इरिथियन सी			इस पुस्तक के लेखक के बारे में जानकारी नहीं मिलती है। इस पुस्तक में भारत के बन्दरगाहों व व्यापारिक वस्तुओं के बारे में जानकारी मिलती है। लेखक प्रथम ई. सन् में हिन्द महासागर की यात्रा पर आया था।

thejobsyogi.com

अरबी, फारसी एवं तुर्की यात्रियों का यात्रा विवरण

यात्री	रचना	समय	विषयवस्तु
1. सुलेमान		उत्तर गुप्तकाल	पाल व प्रतिहार वंश के बारे में वर्णन
2. अलबरूनी	'तहकीक–ए–हिन्द'	11वीं शताब्दी	1017 ई. में मोहम्मद गजनवी के साथ भारत आया। राजपूत कालीन समाज, धर्म, रीति–रिवाज। अलबरूनी, सभी विदेशी लेखकों में सर्वाधिक विद्वान था।
3. फिरदौसी	'शाहनामा'	11वीं शताब्दी	1017 ई. में मोहम्मद गजनवी के साथ भारत आया।
4. अलीअहमद	'चाचनामा'		
5. मिनहाज–उल–सिराज	'तबकात–ए–नासिरी'	गुलाम वंश	
6. जियाउद्दीन बरनी	'तारीख–ए–फिरोजशाही'	तुगलक वंश	
7. अबुल फजल	'अकबरनामा'	मुगल वंश	

Scanned with CamScanner

चीनी यात्रियों का यात्रा विवरण

यात्री	रचना	समय	विषयवस्तु
1. फाह्यान	'फू–की–ओकी'	चंद्रगुप्त द्वितीय	➤ मध्य भारत का वर्णन किया। ➤ भारत आने का इनका उद्देश्य प्रामाणिक बौद्ध ग्रंथ एकत्रित करना था। यह भारत में भूमि मार्ग से आया और जल मार्ग से ही वापस चला गया।
2. ह्वेनसांग	'सी–यू–कि'	हर्षवर्धन के शासनकाल	➤ यात्रियों का राजकुमार के नाम से जाना जाता था। ह्वेनसांग ने नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की। ➤ संपूर्ण भारत का वर्णन किया। यह भारत में भूमि मार्ग से आया और भूमि मार्ग से ही वापस चला गया।
3. इत्सिंग		7वीं शताब्दी के अन्त में	➤ इसने अपने विवरण में 'नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय' का वर्णन किया।
4. चाऊ–जू–कुआ		चोलकाल	➤ चोलकालीन शासन पर प्रकाश डाला।
5. तारकनाथ तिब्बती यात्री			➤ कंग्युर तथा तंग्युर

यूरोपीय यात्रियों का यात्रा विवरण

यात्री	देश	समय	विषयवस्तु
1. मार्कोपोलो	इटली का निवासी	13वीं शताब्दी में	➤ चीन की खोज के दौरान (13वीं शताब्दी में) भारत से होकर गुजरा। दक्षिण के पाण्ड्य राज्य का वर्णन।
2. वास्कोडिगामा	पुर्तगाली यात्री	15वीं शताब्दी में	➤ केप ऑफ गुड होप' जलमार्ग से भारत आने वाला प्रथम यूरोपी ➤ 1498 में केरल के कालीकट, जमोरिन के दरबार में उतरा था।

पुरातात्विक स्रोत

अभिलेख :-

1. **बोगजकोई अभिलेख/मितन्नी अभिलेख**

- ➤ विश्व का प्रथम अभिलेख
- ➤ एशिया माईनर से प्राप्त (मध्य एशिया)
- ➤ 14वीं शताब्दी ई.पू. में निर्मित
- ➤ वैदिक देवता इंद्र, मित्र, वरूण, नासत्य के नाम का उल्लेख है।

2. **भारतीय अभिलेख**

- ➤ भारत में अभिलेख की परम्परा अशोक के शासनकाल में प्रारंभ हुई।
- ➤ अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरमेइक व यूनानी लिपियों में मिलते हैं। अधिकांश ब्राह्मी लिपि में खुदे हैं।
- ➤ ब्राह्मी लिपि बायीं से दायीं ओर एवं खरोष्ठी लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती है।

i. **मास्की अभिलेख** – कर्नाटक
ii. **गुर्जरा अभिलेख** – मध्य प्रदेश
iii. **नेत्तुर** – कर्नाटक
iv. **उडेगोलम** – कर्नाटक

विशेष – उपरोक्त अभिलेखों में अशोक के व्यक्तिगत नाम **(अशोक देवनाम प्रियदर्शी)** का वर्णन मिलता है।

3. **अन्य अभिलेख**

(1) **जूनागढ़/गिरनार अभिलेख**
स्थान – गुजरात
वर्णन – शक् नरेश रूद्रदामन के शासनकाल का
विशेष – संस्कृत में लिखा पहला अभिलेख

(2) **नासिक अभिलेख** –
स्थान – महाराष्ट्र
वर्णन – सातवाहन नरेश पुलुमावी के शासन काल में गौतमी पुत्र शातकर्णी के ऊपर लिखा गया।

(3) **प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख**
स्थान – प्रयागराज (उत्तरप्रदेश)
विशेष – समुद्रगुप्त द्वारा निर्मित (हरिषेण द्वारा लिखित)

(4) **ग्वालियर अभिलेख**
स्थान – मध्य प्रदेश
विशेष – राजा भोज द्वारा (प्रतिहार नरेश)

(5) **भीतरगाँव अभिलेख**
स्थान गुप्त – उत्तर प्रदेश
विशेष – गुप्त शासक स्कंदगुप्त द्वारा

(6) **एहोल प्रशस्ति अभिलेख**
स्थान – कर्नाटक
विशेष – रविकीर्ति द्वारा चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय की प्रशस्ति में लिखा गया

(7) **गरूड़ स्तंभ अभिलेख**
स्थान – मध्य प्रदेश, बेसनगर (विदिशा)
विशेष – यवन राजदूत हेलियोडोरस द्वारा।
– भारत में भागवत धर्म के विकसित होने का साक्ष्य।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

(8) एरण अभिलेख

स्थान – मध्य प्रदेश
विशेष – भानुगुप्त के द्वारा (सति होने का उल्लेख) वाराह प्रतिमा पर हूण राजा तोरमाण के लेखों का विवरण।

(9) देवपाड़ा अभिलेख

स्थान – पश्चिम बंगाल
शासक – विजयसेन

(10) हाथीगुम्फा अभिलेख

स्थान – ओड़िशा
विशेष – कलिंगराज खारवेल (तिथि रहित अभिलेख)

(11) मंदसौर अभिलेख

स्थान – मध्य प्रदेश
विशेष – मालवा नरेश यशोवर्धन द्वारा

भारत में सिक्कों का इतिहास :-

- **सिक्कों का प्रचलन** – मौर्यकाल में प्रारंभ
- **सबसे प्राचीनतम सिक्के** – आहत सिक्के या पंचमार्क (चांदी)
- सर्वप्रथम सोने के सिक्के – **यवनों द्वारा**
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के – **कनिष्क द्वारा** (कुषाण काल)
- सोने के सर्वाधिक सिक्के – **गुप्तकाल में**
- अभिलेख के रूप में सिक्के – **यवनों के द्वारा**

विशेष –

- भारत में प्राचीनतम मुद्राएँ छठी शताब्दी ई.पू. में प्रचलित (लेख नहीं)
- आहत या पंचमार्क सिक्कों को साहित्य में कर्षापण कहा गया है।
- सर्वप्रथम यूनानी शासकों के मुद्राओं पर लेख एवं तिथियाँ उत्कीर्ण की गई।
- **समुद्रगुप्त** की मुद्राओं पर 'यूप', 'अश्वमेघ यज्ञ' और 'वीणा' का चित्र।
- सातवाहन नरेश **यज्ञ श्री शातकर्णि** की मुद्रा पर 'जलपोत' का चित्र उत्कीर्ण।

मूर्तिकला :-

- प्राचीन भारत में मूर्तिकला की निम्नलिखित दो शैलियाँ प्रचलित थी –

(1) गांधार कला शैली

कला का जन्म	–	कुषाण काल
प्रयुक्त सामाग्री	–	स्लेट पत्थरों से निर्मित
विकास क्षेत्र	–	उत्तर पश्चिम सीमांत क्षेत्र
मूर्ति की विशेषता	–	आध्यात्मिक व योगीमुद्रा
धार्मिक प्रभाव	–	मुख्यतः बौद्ध चित्रकला
अन्य नाम	–	इंडो–बैक्ट्रिया शैली या
	–	भारतीय यूनानी शैली
	–	विदेशी कला शैली

(2) मथुरा कला शैली

कला का जन्म	–	कुषाण काल
प्रयुक्त सामाग्री	–	लाल बलुआ पत्थर
विकास क्षेत्र	–	मथुरा व आस–पास का क्षेत्र
मूर्ति की विशेषता	–	बुद्ध की प्रसन्न चित्र मुद्रा
धार्मिक प्रभाव	–	हिन्दू, जैन और बौद्ध
अन्य नाम	–	देशज व भारतीय कला शैली

विशेष – भारत में सर्वप्रथम मूर्तिकला का प्रारंभ कनिष्क के शासनकाल में हुआ।

चित्रकला :-

- **अजंता** – चित्रकला में 'माता–शिशु' और 'मरणासन्न राजकुमारी' का चित्र शाश्वत भावों की अभिव्यंजना करते हैं, जो गुप्तकाल की कलात्मक पराकाष्ठा का प्रमाण है।
- **एलोरा** – राष्ट्रकूट वंश के समय निर्माण हुआ।
  – एलोरा में इन्द्र सभा जैन धर्म से सम्बंधित है।
  – एलोरा हिन्दू, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों से सम्बंधित है।
- **बाघ की गुफा** – 1818, डेंजर फील्ड

विशेष –

- भारत में चित्रकला का सर्वप्रथम उल्लेख अजंता की गुफा से प्राप्त हुआ।
- अजंता के गुफा में 29 चित्रकला प्राप्त हुए। (खोज – 1819, जेम्स अलेक्जेंडर)
- 1 और 2 अजंता की गुफाओं में सबसे नवीन है।
- 9वीं व 10वीं सबसे प्रारंभिक व शुंगकालीन थे।

भवन, स्मारक एवं मंदिर :-

- नागर शैली – मंदिरों में उत्तर भारत की कला शैली
- 'द्रविड़ शैली' – दक्षिण भारत की कला शैली
- 'बेसर शैली' – दक्षिणापथ की कला शैली
- विशेष – बेसर शैली नागर व द्रविड़ का मिश्रण है।

खुदाई से प्राप्त स्मारक एवं भवनों के अवशेष

(1) हड़प्पा सभ्यता
(2) पाटलिपुत्र – चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रसाद
(3) कौशाम्बी – महाराजा उदयन
(4) अतंरजीखेड़ा – लोहे के प्रयोग के साक्ष्य
(5) पांडिचेरी के अरिकामेडु – रोमन मुद्रा, बर्तन आदि क अवशेष
(6) जावा में निर्मित – बोरोबुदूर मंदिर (बौद्ध धर्म की शाखा) (8वीं शताब्दी में निर्मित)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

पाषाणकालीन स्थल

- आग पर नियंत्रण करना सीख लिया।

क्र.	स्थल	राज्य	विशेषता
01	सोहन नदी घाटी		भारत में सबसे पुराना हस्तकुठार (250000 वर्ष)
02	लोहंदा नाला	बेलन घाटी (उ.प्र.)	पशु की हड्डी से बनी मूर्ति
03	हथनौरा	मध्य प्रदेश	हाथी का सबसे पुराना जीवाश्म
04	पल्लवरम्	तमिलनाडु	सर्वप्रथम पुरातात्विक औजार 1863 ई. में राबर्ट ब्रुस फुट द्वारा खोजा गया।
05	नर्मदा घाटी	मध्यप्रदेश	भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य

मध्य पाषाणकालीन स्थल

क्र.	स्थल	राज्य	विशेषता
01	आदमगढ़	मध्य प्रदेश	प्रारंभिक आवास एवं पशुपालन के साक्ष्य
02	भीमबेटका	मध्यप्रदेश	प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला
03	बागौर	राजस्थान	प्रारंभिक पशुपालन का संकेत
04	सांभर झील निक्षेप	राजस्थान	प्रारंभिक वृक्षारोपण का संकेत
05	महदहा	उत्तर प्रदेश	एकल एवं युग्म शवाधान का प्राचीनतम साक्ष्य, हड्डी एवं सिंग निर्मित उपकरण
06	सरायनाहर राय	उत्तर प्रदेश	युद्ध का प्रारंभिक साक्ष्य, सामूहिक शवाधान का साक्ष्य

नव पाषाणकालीन स्थल

क्र.	स्थल	राज्य	विशेषता
01	मेहरगढ़	ब्लूचिस्तान (पाक)	कृषि, कृषक बस्ती एवं पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य
02	लहुरादेव	उत्तरप्रदेश	नवीनतम खोजों के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थान
03	बुर्जहोम	कश्मीर	गर्त आवास, मनुष्य के शव के साथ पालतू पशु कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य
04	गुफकराल	कश्मीर	गर्त आवास, गेंहूँ, जौ व मसूर के जले दाने की प्राप्ति
05	कोल्डिहवा	उत्तर प्रदेश	धान (चावल) की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य
06	चिराँद	बिहार	हिरण के सिंग से निर्मित उपकरण की प्राप्ति
07	चौपानीमाड़ी	उत्तर प्रदेश	विश्व के प्राचीनतम मृद्भांड की प्राप्ति
08	नागार्जुन कोंडा	आन्ध्र प्रदेश	नव पाषाण काल में युग्म शवाधान का एकमात्र साक्ष्य
09	संगनकल्लू	कर्नाटक	राख के टीले (मौसमी शिविर के जले अवशेष)

ताम्र पाषाणिक संस्कृतियाँ

क्रमांक	संस्कृति	राज्य	काल	विशेषता
01	कायथा	मध्य प्रदेश	2000–1800 ई.पू.	तांबे के कंगन एवं कुल्हाड़ी
02	मालवा	मध्य प्रदेश	1500–1200 ई.पू.	अपने मृतभाडों की उत्कृष्ठता के लिए प्रसिद्ध चरखे एवं तकलियाँ प्राप्त
03	जोर्वे	महाराष्ट्र	1400–700 ई.पू.	सभ्यता– ग्रामीण (मुख्यत:)
04	नवदाटोली	मध्य प्रदेश	1600–1300 ई.पू.	इस महाद्वीप का सबसे विस्तृत उत्खनित,ताम्रपाषणिक ग्राम स्थल
05	आहाड़ एवं गिलुन्द	राजस्थान		प्राचीन नाम – ताम्रवती
06	इलामगांव			मातृदेवी

—00—

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

इतिहास

➤ इतिहास को तीन भागों में बँटा गया है –

1. **प्रागऐतिहासिक काल**
   - सिन्धु घाटी सभ्यता से पूर्व का काल
   - कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं
2. **आद्यऐतिहासिक काल**
   - सिन्धु घाटी सभ्यता को शामिल किया गया है।
   - लिखित साक्ष्य उपलब्ध है परन्तु पढ़ा व समझा नहीं जा सकता।
3. **ऐतिहासिक काल**
   - ऋग्वेदिक काल से वर्तमान तक
   - लिखित साक्ष्य उपलब्ध

विशेषः–

- ➤ पृथ्वी में मनुष्य की उत्पत्ति के प्रमाण – 10 लाख वर्ष पूर्व
- ➤ ज्ञानी मानव (होमो सैपियंस) का प्रारंभ – 30 या 40 हजार वर्ष पूर्व
- ➤ हाल ही में महाराष्ट्र के बोरी नामक स्थान से प्राप्त अवशेषों के अनुसार पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति – 14 लाख वर्ष पूर्व

प्रागऐतिहासिक काल या प्राक् इतिहास

➤ इसे पाषाण काल (पत्थरों का काल) भी कहा जाता है।
➤ इसे तीन भागों में बँटा गया है–

(1) पूर्व पाषाणकाल/पुरा पाषाणकाल
(2,50,000 ई.पू. से प्रारंभ)

जीवन	–	जंगली, शिकारी एवं खाद्य संग्राहक
उदाहरण	–	भीमबेटका एवं आदमगढ़ की गुफा, मध्यप्रदेश
भोजन	–	शिकार व आखेट पर निर्भर
मुख्य औजार	–	पत्थरों से निर्मित (कोड उपकरण)
	–	चकमक का आविष्कार

(2) मध्य पाषाणकाल

➤ मुख्य औजार – बहुत छोटे होते थे, जिन्हें माइक्रोलीथ के नाम से भी जाना जाता है। (उदा.– मेहरगढ़)
➤ क्वार्टजाइट पत्थरों के लघु औजारों का प्रयोग होता था।

(3) उत्तर पाषणकाल/नव पाषणकाल
(3500 ई.पू. से 1000 ई.पू.)

➤ प्रमुख औजार – पॉलिशरूट औजारों के साथ–साथ धातु के औजारों का प्रयोग किया जाता था।
➤ प्रारंभ – कृषि की शुरूआत हुई।

विशेष –

- ➤ ग्राम संस्कृति का प्रारंभ
- ➤ मृदभाण्ड का निर्माण प्रारंभ
- ➤ पहिये का आविष्कार हुआ, जिससे आवागमन सुलभ हुआ।
- ➤ मनुष्य में स्थायी निवास की प्रवृत्ति इसी काल से मानी जाती है।
- ➤ भारत में धान की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य–कोल्डीहवा (उ.प्र.) नामक स्थान से प्राप्त। (लगभग 7000–6000 ई.पू.)

आद्यऐतिहासिक काल

- ➤ इसे ताम्र–कांस्य युगीन सभ्यता भी कहते हैं।
- ➤ **सिन्धु–हड़प्पा घाटी सभ्यता** और **केल्कोलिथक ऐज** के नाम से भी जाना जाता है।
- ➤ सर्वप्रथम मनुष्य के द्वारा जिस धातु का प्रयोग औजारों में किया गया वह थी– **ताँबा** (5000 ई.पू.)।
- ➤ ताम्र पाषाण **'मालवा संस्कृति'** के अवशेष **नवदाटोली** व **महेश्वर** से प्राप्त हुए।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

सिन्धु घाटी सभ्यता

सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज से जुड़े लोगों में **सर्वप्रथम चार्ल्स मेसन** का नाम आता है, जिन्होंने इसे **नगरीय सभ्यता** की बात कही थी। जबकि **कनिंघम** ने इस सभ्यता को **कुषाण कालीन** होने का अनुमान लगाया था।

सर जॉन मार्शल ने इन स्थानों का व्यवस्थित उत्खनन आरंभ करवाया तथा इसे **मिस्र, मेसोपोटामिया** की सभ्यता के समकालीन बताया और साथ ही इसका नामकरण भी किया।

महत्वपूर्ण तथ्य

I. नामकरण

- जॉन मार्शल – 'सिन्धु घाटी सभ्यता'
- यूनानी – 'सिण्डन'
- मेसोपोटामिया – 'मेलुहा'

- हड़प्पा की **खोज सर्वप्रथम** हुई। अतः इसे वर्तमान में भी 'हड़प्पा सभ्यता' के नाम से पुकारा जाता है।

II. भौगोलिक स्थिति

- अफगानिस्तान – पूर्वी भाग
- पाकिस्तान – सम्पूर्ण भाग
- भारत – उत्तर–पश्चिमी भाग (गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, जम्मू–कश्मीर)

III. आकार/विस्तार

- आकार – त्रिभुजाकार
- विस्तार – लगभग 13 लाख वर्ग किमी. (12,99,600 वर्ग किमी)

मांडा (J&K)
सुत्कागेंडोर (PAK)
आलमगिरपुर (UP)
दैमाबाद (MH)

- विशेष – मिस्र, सुमेरियन (इजराईल), मेसोपोटामिया (इराक) की सभ्यता से अधिक विस्तृत था।

IV. काल या समयावधि

- कार्बन–14 – 2300–1750 ई.पू. (वैज्ञानिक मान्यता)
- जॉन मार्शल – 3250–2750 ई.पू.
- मार्टीमर व्हीलर – 2500–1700 ई.पू.
- सामान्यतः – 3000–1500 ई.पू.

V. खोज

- रायबहादुर दयाराम साहनी

VI. राजधानी

- जुड़वा राजधानी – 1. मोहनजोदड़ो 2. हड़प्पा

VII. प्रमुख नगर

8 स्थानों को नगर की संज्ञा दी जाती है–

1. हड़प्पा	– पाकिस्तान
2. मोहनजोदड़ो	– पाकिस्तान
3. चन्हूदड़ो	– पाकिस्तान
4. कालीबंगा	– राजस्थान
5. लोथल	– गुजरात
6. राखीगढ़ी	– हरियाणा
7. बनवाली	– हरियाणा
8. धौलावीरा	– गुजरात

अन्य नगर
गुजरात –
9. रंगपुर
10. सुरकोतड़ा
पंजाब –
11. रोपड़

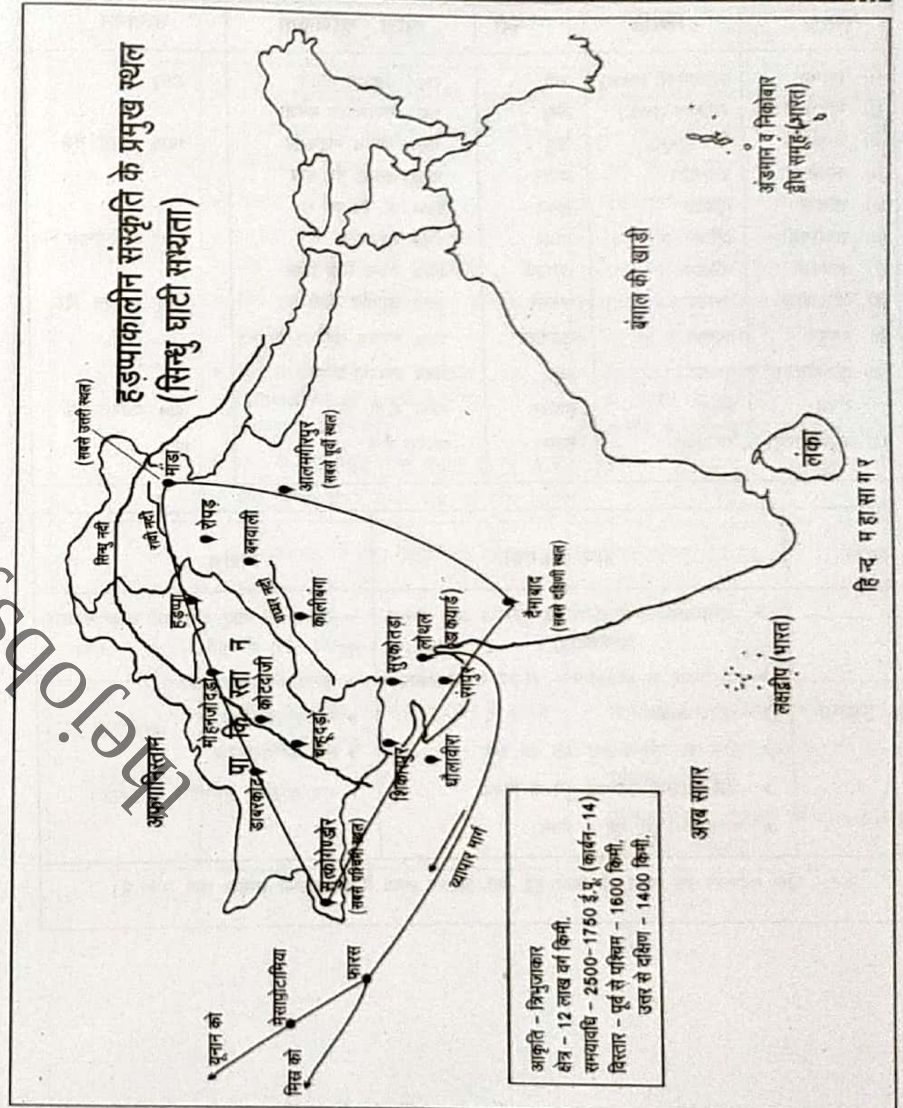

स्थान	स्थिति	नदी	खोज/खोजकर्ता	उत्खनन
(1) हड़प्पा	माण्टगोमरी (PAK)	रावी	1921, दयाराम साहनी	1923
(2) मोहनजोदड़ो	लरकाना (PAK)	सिंधु	1922, राखलदास बनर्जी	
(3) चन्हूदड़ो	सिंध (PAK)	सिंधु	1931, गोपाल मजुमदार	1935, जे.एच. मैके
(4) कालीबंगा	राजस्थान	घग्घर	1953, अमला नंद घोष	
(5) लोथल	गुजरात	भोगवा	1954, डॉ. रंगनाथ राव	
(6) राखीगढ़ी	हरियाणा	घग्घर	1969, सूरजभान	1997, अमरेन्द्रनाथ मिश्र
(7) बनावली	हरियाणा	सरस्वती	1973, रवीन्द्र सिंह विस्ट	
(8) धौलावीरा	गुजरात	मानसर	1968, जगपति जोशी	1991, आर.एन. विस्ट
(9) रंगपुर	गुजरात	सुकभादर	1954, रंगनाथ राव	
(10) सुरकोतड़ा	गुजरात	दास्त	1964, जगपति जोशी	
(11) रोपड़	पंजाब	सतलज	1950, बी.बी. लाल	1954, यज्ञदत्त शर्मा
(12) आलमगीरपुर	उत्तरप्रदेश	हिंडन	यज्ञदत्त शर्मा	1958

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
I. हड़प्पा	➤ अन्नागार – दो कतारों में कुल 12 अन्न भण्डार (धान्यकोठार) ➤ दो प्रकार के कब्रिस्तान – **R-37 व H प्रकार** ➤ श्रमिक आवास ➤ टिले का नाम माउण्ट 'AB' एवं 'एफ' ➤ जले हुए गेहूँ, जौ एवं भूंसे के तिनके ➤ पश्चिम – दुर्ग, पूर्व – निम्न।	➤ स्त्री–मूर्तियाँ (मातृ देवी) बड़ी संख्या में प्राप्त। ➤ एक योगी की मूर्ति ➤ कांस्य की इक्का गाड़ी ➤ मछुआरे का चित्र ➤ शंख का बना बैल ➤ गाय, घोड़ा – मृण्मूर्तियों का अभाव।
नोटः– चूंकि सर्वप्रथम इस स्थान की खोज हुई, अतः वर्तमान समय में इसे हड़प्पा सभ्यता कहा जाता है।		

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
II.मोहनजोदड़ो	➤ नृत्यरत (नृत्यांगना) नारी की मूर्ति (कांस्य की) ➤ नृत्यरत नग्न स्त्री की कांस्य प्रतिमा सैंधवशिल्प का सर्वोत्तम नमुना। ➤ शतरंज ➤ पशुपति शिव पद्मासन मुद्रा ➤ योगी (पशुपति) की मूर्ति (मुहर पर) ➤ तीन मुख वाला एक पुरूष ध्यान की मुद्रा में। ➤ पुजारी की मूर्ति ➤ सूती वस्त्र व ऊनी वस्त्र का साक्ष्य ➤ कुबड़वाले बैल की आकृति युक्त मुहरें ➤ हाथी का कपालखण्ड ➤ घोड़े के दाँत (परंतु सिन्धु सभ्यता के पूर्व के हैं) ➤ भैंसा, गैण्डा, हिरण, हाथी, बाघ, घड़ियाल, मछली	➤ हड़प्पा सभ्यता की राजधानी व सबसे बड़ा नगर। ➤ इसे **सिन्ध का बाग** व **नख्लीस्तान** कहते हैं। ➤ **पकी ईंट** का प्रयोग 4 : 2 : 1 ➤ **अन्नागार** – सबसे विशाल भवन ➤ **वृहत् स्नानागार** – तत्कालीन विश्व का 'आश्चर्यजनक निर्माण' (मार्शल) ➤ पुरोहित आवास एवं सभा भवन ➤ गले हुए ताँबे के ढेर ➤ एक मुद्रा पर आधा भाग मानव व आधा भाग बाघ की आकृति का अंकन ➤ सलखेडो से निर्मित पुरोहित का धड़ (19 सेमी लम्बा)
➤ मोहनजोदड़ो से प्राप्त पशुपति की मुहर पर बैल का चित्र अंकित नहीं है।		

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
III. चन्हूदड़ो (औद्योगिक नगर)	➤ गुरिया एवं मनका निर्माण के कारखाने के अवशेष ➤ प्रसाधन सामग्री के साक्ष्य	➤ किसी भी दुर्ग का अवशेष नहीं मिला। ➤ चन्हूदड़ो एकमात्र पुरास्थल है, जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं। ➤ झूकर एवं झांगर संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुए। (पूर्व हड़प्पा संस्कृति)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
IV. कालीबंगा (काँच की चुड़ियाँ, धार्मिक नगर)	➤ जूते हुए खेत के साक्ष्य (खाँचेदार खेत) ➤ हलरेखा ➤ खिलौना गाड़ी के पहिए ➤ चना एवं सरसों की खेती ➤ भूकम्प के प्राचीनतम साक्ष्य का प्रमाण	➤ कच्ची ईंटों के साक्ष्य और नक्काशीदार ईंट सिन्धु डिजाईन वाली बेलनाकार मुहरें ➤ अलंकृत फर्श (सरेन्द्रित वृत्त का डिजाईन) ➤ कुछ विद्वानों ने इसे सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी माना है। ➤ यज्ञ वेदिकाएँ या हवन कुण्ड

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
V. लोथल (बंदरगाह शहर)	➤ नाव ➤ गोदीबाड़ा ➤ धान की भूसी ➤ मनके की दुकानें ➤ फारस की खाड़ी की मोहर ➤ अन्न पीसने की चक्की ➤ दिशा मापक यंत्र	➤ कौआ व लोमड़ी का चित्रित मृदभांड ➤ युगल शवाधान ➤ हाथी दाँत का पैमाना ➤ घोड़े की संदिग्ध मूर्तिका (टेराकोटा) ➤ घोड़ों की मृण्मूर्तियाँ ➤ औद्योगिक नगर – मिस्र और मेसोपोटामिया ➤ यह छः खण्डों में विभक्त था।
➤ यहाँ अग्नि पूजा की परम्परा प्रचलित थी। (अग्निवेदी का साक्ष्य)		

स्थान	विशेष
VI. राखीगढ़ी	➤ भारत में हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल

स्थान	विशेष
VII. बनावली	➤ हल का टेराकोटा प्राप्त हुआ है ➤ शतरंज के बिसात या जाल के आकार का नगर योजना ➤ मिट्टी का खिलौना हल, अच्छे किस्म के जौ के साक्ष्य

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
VIII. धौलावीरा	➤ तौल के बांट ➤ लिपिगत लेख ➤ सोने के छल्ले ➤ चूने पत्थर से निर्मित स्थापत्य नमूने ➤ झूकड़ शैली के बर्तन प्राप्त ➤ यहाँ से मध्यमा प्राप्त।	➤ नवीनतम स्थल तथा इसे भारत में स्थित सिन्धु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। (क्षेत्रफल के आधार पर) ➤ सिन्धु सभ्यता की तीनों अवस्थाएँ मिली हैं ➤ जल प्रबंधन की उत्तम व्यवस्था थी। ➤ नगर के मध्य खुले मैदान को 'रंग महल' की संज्ञा दी गई है।

स्थान	विशेष
IX. रंगपुर	➤ चावल (धान) के साक्ष्य, कच्ची ईंटों के दुर्ग, बांट आदि।

स्थान	विशेष
X. सुरकोतड़ा	➤ घोड़े की हड्डी, बर्तन में शवाधान

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
XI. रोपड़	➤ कुत्ते का मालिक के साथ दफनाने का साक्ष्य ➤ ताँबे की कुल्हाड़ी ➤ आभूषण, चार्ट आदि।	➤ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सर्वप्रथम खोजा गया स्थल।

स्थान	प्राप्त सामग्री	विशेष
XII. आलमगीरपुर	➤ रोटी बेलने की चौकी	➤ यह गंगा–यमुना दोआब में पहला स्थल था, जहाँ से हड़प्पाकालीन अवशेष मिले। ➤ हड़प्पा संस्कृति का सबसे पूर्वी स्थल।

स्थान	विशेष
XIII. मांडा	➤ विकसित हड़प्पा संस्कृति का सबसे उत्तरी स्थल।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों का जीवन

परिवार – मातृसत्तात्मक

I. शासन व्यवस्था – प्रजातांत्रिक

व्हीलर	–	मध्यम वर्गीय जनतंत्रात्मक शासन, जिस पर धार्मिक प्रभाव
पिग्गट	–	पुरोहित वर्ग का शासन में प्रभाव
मैके	–	प्रतिनिधि शासन

II. सामाजिक जीवन

समाज	–	मातृसत्तात्मक
आभूषण	–	कण्ठार, कर्णफूल, करधनी, पाजेब
मनोरंजन	–	शिकार, पशु–पक्षियों को आपस में लड़ाना, चौपड़, पासा खेलना।
विशेष	–	दाह संस्कार की तीनों विधियाँ प्रचलित थीं।
	–	जलाकर अवशेषों को बर्तनों में एकत्र कर दफनाना, पशु–पक्षियों के लिए छोड़ना भी प्रचलित।

III. धार्मिक जीवन

उपासक/पुजारी	–	प्रकृति के
मुख्य इष्ट देव	–	मातृदेवी (भूमि)
विशेष	–	देवी एवं देवताओं दोनों की पूजा करते थे।
अन्य देवता	–	पशुपति शिव, कुबड़वाला बैल, पीपल वृक्ष (कूबड़वाला सांड विशेष पूजनीय)
धार्मिक प्रथाएँ	–	जादू–टोना, ताबीजों का प्रयोग, मूर्ति पूजा आदि का चलन था, किन्तु मंदिरों का निर्माण नहीं होता था।
	–	पशुबलि प्रथा भी प्रचलित थी।
	–	भूत–प्रेत एवं तंत्र–मंत्र में विश्वास
	–	पुनर्जन्म में विश्वास
विशेष	–	नारी के गर्भ से पौधा उगने का साक्ष्य प्राप्त। धरती की उर्वरता को देवी मानकर पूजा जाता था।

IV. आर्थिक जीवन

प्रथम मुख्य व्यवसाय	–	कृषि।
द्वितीय मुख्य व्यवसाय	–	पशुपालन।
तृतीय मुख्य व्यवसाय	–	व्यापार।
कृषि	–	क्रमशः जौ, गेहूँ, कपास तथा गन्ना मुख्य फसल थे।
अन्य फसल	–	धान, सरसों, मटर, तिल (कुल 9 फसलें पहचानी गई हैं।) **सिंचाई व्यवस्था** थी।
विशेष	–	संभवतः हड़प्पा सभ्यता के लोग ही सर्वप्रथम कपास उगाना प्रारंभ किए, जिस कारण इस सभ्यता को यूनानियों द्वारा सिण्डन सभ्यता भी कहा जाता था।
व्यापार	–	व्यापार और वाणिज्य उन्नत दशा में था।
	–	जल एवं थल दोनों मार्गों से व्यापार होता था।

प्रमुख आयात–

(1) **टिन, रांगा, चाँदी** – अफगानिस्तान, ईरान
(2) **लाजवर्थ, मणि, नीलरत्न** – बदख्शां
(3) **फिरोजा** – खुरासान (ईरान)
(4) **ताँबा** – खेतड़ी (राजस्थान) एवं ब्लुचिस्तान
(5) **सोना** – कोलार (कर्नाटक), अफगानिस्तान, फारस
(6) **जेड पत्थर** – पामीर
(7) **सुलेमानी नग** – सौराष्ट्र
(8) **नीलमणि** – महाराष्ट्र

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग दक्षिण भारत, मेसोपोटामिया, मिश्र तथा रोम व अफगानिस्तान से व्यापार करते थे। सिन्धु घाटी से कपास रोम को निर्यात की जाती थी।
- चाँदी का प्रयोग पहली बार सैंधव सभ्यता (हड़प्पा) के द्वारा किया गया।
- सिन्धु घाटी में प्रचलित मुहरें सेलखड़ी (चूना + मिट्टी) से निर्मित थे।
- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों को सोना, चाँदी व ताँबे का ज्ञान था, परंतु लोहे का नहीं
- सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख निवासी द्रविड़ एवं भूमध्यसागरीय थे।
- इन्होंने अफगानिस्तान में एक वाणिज्य उपनिवेश (व्यापारिक बस्ती) 'शोर्तगुई' भी स्थापित किया।
- सूती वस्त्र, बुनाई एवं सीप उद्योग विकसित था।

विनिमय का माध्यम

- चाँदी, सोना से अधिक प्रचलित था।
- इस सभ्यता में मुद्रा प्रचलन नहीं था।
- वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी।

माप-तौल

- तौल या तराजू की जानकारी थी।
- बाट प्रायः घनाकार होता था।
- तौल की द्विचर या दाशमिक प्रणाली प्रचलित थी, जिसमें 16 के अवतकों का व्यवहार होता था।

पशुपालन

प्रमुख वन्यजीव	–	हाथी, बाघ, चीता, गेंडा, हिरण
पालतू पशु	–	गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़, कुत्ता, बिल्ली, ऊँट
पक्षी	–	बत्तख, मोर, तोता (जंगली), कबूतर
विशेष	–	गाय, हाथी, बाघ एवं चीता के अवशेषों की प्राप्ति का उल्लेख मिलता है। किन्तु शेर का उल्लेख नहीं।

V. नगर नियोजन

- सिंधु सभ्यता की सर्वप्रमुख विशेषता उनका नगर नियोजन था।
- नगरों में सड़कें पक्की बनी थीं।
- सड़कें एक–दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- सड़कें नगरों को तारांकित भाग में काटती थीं।
- सड़कों के दोनों ओर (किनारे) पक्की नालियाँ बनी थीं।
- प्रत्येक चौराहे पर बाजार के लिए चबूतरे बनाए जाते थे।
- जल निकासी की उत्तम व्यवस्था।

मकान नियोजन

- घर पक्की ईंटों के बने थे।
- दो मंजिला भवन के साक्ष्य प्राप्त हुए।
- घर के बीच में आंगन बना था।
- आंगन के चारो ओर कमरे बने हुए थे।
- अलग से रसोई व स्नानगृह बने हुए थे।
- प्रत्येक कमरे में रोशनदान बने होते थे।
- मकानों का वास्तुकला जाल की तरह था।
- मकान का मुख्य द्वार सड़क के पीछे खुलता था।

VI. शिल्प

- कांस्य या ताम्र युगीन संस्कृति थी।
- लोहे का ज्ञान यहाँ के लोगों को नहीं था।
- मिट्टी की मुद्रा एवं मूर्ति का निर्माण महत्वपूर्ण शिल्प
- कुम्हार चाक से परिचित थे।
- बैलगाड़ी व नावों का निर्माण किया जाता था।
- धातु मूर्तियां लुप्त मोम या मधूच्छिष्ट विधि (Lost Wax) से बनाई जाती थी।

VII. कला

- मूर्तिकला व चित्रकला का ज्ञान था।
- मुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में गाय और घोड़े का चित्रण नहीं मिलता है।
- मुँहरें सेलखड़ी की निर्मित थी, अधिकांश चौकोर हैं। जो चूना एवं मिट्टी से बनाई जाती थीं।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

VIII. लिपि

- भाव चित्रात्मक लिपि
- दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी।
- जिसे पढ़ा नहीं जा सकता।

पतन के कारण

- बाढ – प्रो. मार्शल एवं मैके
- आर्यों का आक्रमण – मार्टीमर व्हीलर
- जलवायु परिवर्तन – अम्लानंद घोष
- भू–तात्विक परिवर्तन – एम.आर. साहनी

अन्य प्रमुख तथ्य

- सिन्धु घाटी सभ्यता अपने नगर परियोजना के कारण अधिक जानी जाती है।
- लोथल में दफनाने की युग्मित प्रथा पाई गई है। **मृतक संस्कार**– दफनाना सर्वाधिक प्रचलित थी।
- पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को 'एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानियाँ' कहा है।

अन्य तथ्य

- मुख्य नदी – सिन्धु
- सर्वप्रथम उल्लेख – चार्ल्स मैसन (1826)
- द्वितीय उल्लेख – चार्ल्स एण्ड विलियम ब्रन्टन (1856)
- मुहरें प्रकाशित – अलेक्जेन्डर कनिंघम (1872)
- समलकालीन सभ्यता – (1) मिस्र (2) मेसोपोटामिया (3) यूनानी (4) चीनी
- मुहरों के अतिरिक्त सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि नमूने मृदभाण्डों पर प्राप्त हुए हैं।

- सैंधव सभ्यता का राजस्थान, अफगानिस्तान, ईरान, मध्य एशिया, सुमेर बहरीन के साथ व्यापारिक संबंध था।
- मिस्र, सुमेर, मेसोपोटामिया एवं चीन की सभ्यताएँ सैंधव सभ्यता के समकालीन थीं।
- प्राचीन सरस्वती नदी का विनसन स्थान पर लुप्त होना माना गया है।

ऋग्वैदिक काल
(अवधि : 1500–1000 ई.पू.)

- इस काल के इतिहास को जानने में मुख्य स्रोत ऋग्वेद है।
- इस काल में ऋग्वेद की रचना होने के कारण इस काल को ऋग्वैदिक काल कहा जाता है।
- ऋग्वेद का वर्णन इतिहास जानने के स्त्रोत में देखें।

ऋग्वैदिक काल की विशेषताएँ

I. राजनीतिक व्यवस्था एवं प्रशासनिक इकाई–

- i) ऋग्वेदिक समाज की सबसे छोटी इकाई **परिवार या कुल** होती थी। परन्तु ऋग्वेद में 'कुल' शब्द का उल्लेख नहीं है। कुल का मुखिया – **कुलप**
- ii) परिवार के लिए 'गृह' शब्द का उल्लेख
- iii) कई 'परिवार' मिलकर 'ग्राम' तथा कई 'ग्राम' मिलकर 'विश' तथा कई 'विश' मिलकर 'जन' का निर्माण करते थे।
- iv)

इकाई	प्रमुख/मुखिया
राष्ट्र (सबसे बड़ी इकाई)	सम्राट
जन	राजन्
विश	विशपति
ग्राम	ग्रामणी
कुल (सबसे छोटी इकाई)	कुलप

- v) ऋग्वेद में 'जन' शब्द का प्रयोग 275 बार हुआ है। विश का उल्लेख 170 बार
- vi) जन प्रमुख 'राजन' कहलाता था तथा राजन से आशय राजा से नहीं होता था।
- vii) राजतंत्र की शुरूआत नहीं हुई थी।
- viii) राजा का चुनाव 'समिति' नामक संस्था करती थी।
- ix) विदथ, आर्यों की प्राचीनतम परिषद् थी। युद्ध की लूट का बंटवारा इसी परिषद् में होता था। इसे जनसभा भी कहा जाता था।
- x) सभा – कुछ चुने हुए सदस्यों से मिलकर बनती थी।
- xi) प्रमुख अधिकारी –
  - पुरोहित – महत्वपूर्ण अधिकारी व राजा का गुरु
  - सेनानी – सेना प्रधान
  - ग्रामणी – गाँव का सैनिक संगठन
  - वाजपति – चारागाह या गोचर भूमि का अधिकारी
  - उग्र – पुलिस
  - स्पश – गुप्तचर
  - पुरप – दुर्गपति

II. सामाजिक व्यवस्था

- i) ऋग्वेदिक समाज पितृसत्तात्मक, परिवार संयुक्त एवं स्त्रियों की स्थिति समाज में सम्मानीय थी।
- ii) विवाह नामक संस्था की स्थापना
- iii) बाल विवाह नहीं होता था।
- vi) नियोग प्रथा, पुनर्विवाह, बहुपति विवाह का अस्तित्व था।
- v) जाति प्रथा का विकास नहीं
- vi) व्यवसाय के आधार पर समाज पुरोहित, योद्धा एवं सामान्य जन में बंटा था।
- vii) छुआछूत का प्रचलन नहीं था। समाज समतावादी था।
- viii) वर्ण व्यवस्था के प्रमाण – आर्यों को गौर वर्ण एवं दासों को कृष्ण वर्ण कहा गया था।
- ix) वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म था।
- x) दसवें मण्डल पुरूषसूक्त में चतुवर्णों का उल्लेख है।
- xi) ब्राह्मण की उत्पत्ति – परम पुरुष (ब्रह्मा) के मुख से
  - क्षत्रिय – भुजाओं से
  - वैश्य – जांघों से
  - शूद्र – पैरों से

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- xii) ऋग्वेद में अनार्यों को अव्रत, मृध्रवाच एवं अनास भी कहा गया है।
- xiii) शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को पति की अर्द्धांगिनी कहा गया है।
- xiv) **जायेदस्तम** अर्थात् पत्नी ही गृह है।
- xv) स्त्रियों की स्थिति सम्मानीय थी, पति के साथ यज्ञ कार्य में सम्मिलित।
- xvi) लड़कियों का भी उपनयन संस्कार किया जाता था।
- xvii) बाल विवाह एवं बहु–विवाह का प्रचलन नहीं था।
- xviii) सतीप्रथा एवं पर्दाप्रथा का प्रचलन नहीं।
- xix) विधवा विवाह, अन्तर्जातीय एवं पुनर्विवाह का अस्तित्व
- xx) **विवाह की आयु** लगभग 16–17 वर्ष
- xxi) **अमाजू** – जीवनभर अविवाहित रहने वाली लड़की
- xxii) **दहेज प्रथा प्रारंभ** – इस समय दहेज में गाय दी जाती थी।
- xxiii) सतीप्रथा, पर्दाप्रथा प्रचलित नहीं था।
- xxiv) पशुओं की पूजा नहीं
- xxv) पूजा की विधि – स्तुति पाठ एवं बलि
- xxvi) बहुदेववाद, एकात्मवाद एवं एकेश्वरवाद का उल्लेख
- xxvii) मंदिर या मूर्ति पूजा का उल्लेख नहीं
- xxviii) पुनर्जन्म में विश्वास

III. आर्थिक जीवन – (सभ्यता – ग्रामीण)

- i) प्रजा स्वयं राजा को उसका अंश स्वेच्छतया दे देती थी, जिसे 'बलि' (चढ़ावा) कहा जाता था।
- ii) मुख्य व्यवसाय – पशुपालन एवं कृषि
- iii) बिक्री का माध्यम – वस्तु विनिमय, गाय, निष्क आदि।
- iv) गाय का प्रयोग मुद्रा के रूप में (विनिमय का मुख्य साधन)। अतः गाय का धार्मिक एवं सामाजिक की अपेक्षा आर्थिक महत्व अधिक था।
- v) इस काल के उत्तरार्ध में कृषि की शुरूआत
- vi) मुख्य उपज 'जौ' थी, जिसके लिए 'यव' शब्द का प्रयोग किया गया।
- vii) कृषि उपज के लिए एक अन्य शब्द 'धान्य' का प्रयोग भी होता था।
- viii) **अन्य व्यवसाय** – बढ़ई, बुनकर, रथकर, चर्मकार, कुम्हार आदि था। इनमें बढ़ई प्रमुख था, क्योंकि वह युद्ध सामग्री का निर्माण करता था।

नोट:– निष्क – स्वर्ण आभूषण या सोने की मुद्रा।
मन – तौल की ईकाई

- ix) रयि (संपत्ति) की गणना मुख्यतः मवेशियों से की जाती थी।
- x) कपास का उल्लेख नहीं
- xi) व्यापार स्थल एवं जल दोनों रास्तों से
- xii) **गोधुलि** – समय की माप के लिए प्रयुक्त
- xiii) **गवयतु** – दूरी की माप के लिए प्रयुक्त
- xiv) गाय को पवित्र माना जाता था और उसे अघन्य कहा जाता था।
- xv) राजा भूमि का स्वामी नहीं होता था।
- xvi) **उर्वरा** – जुते हुए खेत को कहा गया।
- xvii) **लांगल** – हल
- xviii) **खनिलिमा** – सिंचाई के लिए खोदकर प्राप्त किया गया जल
- xix) सीता – हल से बनी नाली
- xx) पर्जन्य – बादल
- xxi) खिल्य – भूमि की माप की इकाई

IV. धार्मिक जीवन –

- i) बहुलदेववादी, मुख्य रूप से प्रकृति के उपासक, पुरूष देवता की प्रधानता
- ii) **मुख्य देव – इन्द्र** (250 बार वर्णन) – युद्ध में आर्यों का नेतृत्व करने वाला, वर्षा का देवता

द्वितीय – **अग्नि** (200 बार वर्णन) (मनुष्य और देवता के मध्य मध्यस्थ की भूमिका)

तृतीय – वरूण – 'ऋतस्यगोपा' अर्थात् ऋतु का संरक्षक व जल निधि का देवता माना गया है। आकाश, पृथ्वी और सूर्य का निर्माता। 7वाँ मण्डल वरूण देव को समर्पित है।

अन्य – सोम–वनस्पति का देवता, दयौ (आकाश) –देवों में सबसे प्राचीन

– मरूत – तूफानों का देवता

नोट:– वरूण को असुर भी कहा गया है, जो ईरान के 'अहुरमज्दा' से समानता रखता है।

- iii) देवताओं का वर्गीकरण –
  1. पृथ्वी के देवता – पृथ्वी, अग्नि, सोम तथा नदियाँ
  2. अंतरिक्ष के देवता – इन्द्र, वायु, मरूत, पर्जन्य
  3. आकाश के देवता – विष्णु, सूर्य, सविता, वरूण
- iv) **मूल्यवान धन** – गाय (इसके लिए कई युद्ध लड़े जाते थे)
- v) पुरोहितों को गाय दक्षिणास्वरूप दी जाती थी।
- vi) **विशेष**– इस काल में चार विदूषी महिलाएँ भी थीं–
  1. अपाला 2. विस्मभरा
  3. घोषा 4. सिक्ता
  5. लोपामुद्रा

V. न्याय व्यवस्था

- i) धर्म पर आधारित
- ii) पशुओं की चोरी सर्वाधिक
- iii) अधिकांश युद्ध गाय को लेकर
- iv) ऋग्वेद में युद्ध का पर्याय गविष्टि (गाय का अन्वेषण) है।
- v) मृत्युदण्ड की प्रथा नहीं थी।
- vi) एक व्यक्ति को शतदाय कहा जाता था, क्योंकि उसके जान की कीमत 100 गाय थी।

VI. ऋग्वैदिक काल में आर्यों का वर्णन–

- सर्वप्रथम आर्यों ने प्रवेश किया।
- आर्यों ने सर्वप्रथम सप्त सैंधव प्रदेश में निवास किया।
- सप्त सैंधव प्रदेश से आशय सात नदियों से है।
- सैंधव काल की 7 नदियां और उनका वैदिक नाम –

आधुनिक नाम		प्राचीन नाम
1. सिन्धु	–	हिरण्यनी (आर्थिक महत्व के कारण), सुवासा, ऊर्णावत्ती
2. झेलम	–	वितस्ता
3. रावी	–	पुरूष्णी
4. चिनाब	–	अस्किनी
5. सतलज	–	शतुद्रि
6. व्यास	–	विपाशा
7. घग्घर	–	सरस्वती (अन्य– नदीतमा (नदियों की माता), नदियों की अग्रवती, कविता की देवी)

- ऋग्वेद में उल्लेखित सभी नदियों में सिन्धु प्रमुख नदी व सरस्वती सबसे पवित्र नदी मानी गई है।
- ऋग्वेद में सर्वाधिक बार उल्लेख **पिता का** (335 बार) हुआ है।
- गायत्री मंत्र '**सविता**' नामक देवता को संबोधित है।
- ऋग्वेद में '**दसराज्ञ युद्ध**' का वर्णन मिलता है। यह युद्ध भरत जन प्रमुख **सुदास** व **शेष** जनों के मध्य रावी नदी के तट पर लड़ा गया। भरत जन की विजय एवं भारत का निर्माण हुआ।

आर्यों के आगमन का कालानुक्रम –

(1) मैक्स मूलर	–	1500 ई.पू. (सर्वमान्य)
(2) विंटर नित्ज	–	2500 ई.पू.
(3) बाल गंगाधर तिलक	–	6000 ई.पू.

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

आर्यों के मूल स्थान का अनुमान -

- सामान्य तौर पर – मध्य एशिया से
- दयानंद सरस्वती – तिब्बत से ('सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन' में उल्लेख)
- लोकमान्य तिलक – उत्तर ध्रुव से ('द आर्कटिक होम ऑफ द आर्यंस' में उल्लेख)
- मैक्स मूलर – मध्य एशिया से
- अविनाश चन्द्रदास – सप्तसैंधव प्रदेश से ('रिग्वेदिक इंडिया' नामक पुस्तक में उल्लेख)
- एडवर्ड मेयर, कीथ – मध्य एशिया के पामीर क्षेत्र से
- के.के. शर्मा – हिमालय (मानस) से

सर्वाधिक प्रमाणिक मत – आल्पस पर्वत के पूर्वी भाग में स्थित 'यूरेशिया' से

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- रत्नी – सूत, रथकार तथा कम्मादि नामक अधिकारी कहे जाते थे, जिनकी संख्या राजा सहित 12 थी।
- परिपशु – एक प्रकार का यज्ञ
- **पणि** – व्यापार में दूर–दूर तक जाने वाले व्यक्ति कहलाते थे।
- पुरपथरिष्णु – दुर्गों को गिराने के लिए एक यंत्र।
- **बेकनाट** (सूदखोर) – ऋण देकर ब्याज लेने वाला व्यक्ति।
- आर्यों की भाषा संस्कृत थी।
- चावल का उल्लेख नहीं है।
- गेरूवर्ण मृतभांड ऋग्वेद कालीन है।
- सामाजिक संगठन का आधार 'गोत्र' था।
- हिमालय पर्वत की मूंज चोटी का उल्लेख है।
- ऋग्वैदिक आर्य लेखन कला से अपरिचित थे।
- आर्यों का दक्षिण प्रसार 'अगत्स्य ऋषि' के नेतृत्व हुआ।
- हिमालय पर्वत से परिचित थे, परंतु विंध्य या सतपुड़ा से नहीं
- सर्वप्रथम चावल अथर्ववेद में 'व्रीही' नाम से उल्लेखित है।

उत्तरवैदिक काल
(अवधि : 1000-600 ई.पू.)

इस काल में अन्य तीन वेदों की रचना हुई। इस कारण इसे उत्तर वैदिक काल कहा जाता है। साथ ही ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों की रचना हुई।

भौगोलिक विस्तार -

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार आर्यों के पूर्वी क्षेत्र में विस्तार हुआ तथा 'सदानीरा' (गंडक नदी) के वनों को जलाकर निवास योग्य बनाया गया। आर्यों का मुख्य संकेन्द्रण इसी गंगा घाटी पर था। संभवतः विद्या उनके प्रदेश की दक्षिणी सीमा थी। इस क्षेत्र को आर्यावत कहा गया।

सामाजिक जीवन -

i) **परिवार** – पितृसत्तात्मक, संयुक्त

ii) **स्त्रियों की दशा में गिरावट**
- – मैत्रायणी संहिता में स्त्री को छूत और मदिरा की श्रेणी में रखा गया।
- – स्त्रियों के लिए उपनयन संस्कार प्रतिबंधित हो गया।

iii) **प्रचलित प्रथा**
- – अंतर्वर्णीय विवाह, बहुविवाह, विधवा विवाह, नियोग प्रथा, दहेज प्रथा का

iv) **प्रथा प्रचलन में नहीं**
- – बाल विवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा का

v) **वर्ण व्यवस्था का जन्म**
- – उत्तरवैदिक काल में समाज स्पष्ट रूप से चारों वर्णों में विभाजित हो चुका था।
- – वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म न होकर जन्म हो चुका था।
- – जाति व्यवस्था कठोर थी।

v) **गोत्र व्यवस्था प्रारंभ** – समगोत्रीय विवाह वर्जित।

vi) **आश्रम व्यवस्था प्रारंभ**
- – जीवन को 100 वर्षों का मानकर ब्रम्हचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास में बांटा गया।

vii) **पुरूषार्थ की संकल्पना**
- – चार क्रमशः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। सबसे महत्वपूर्ण पुरूषार्थ धर्म।

viii) नगरों का विकास होने लगा।

ix) उत्तरवैदिक काल में राजा के राज्याभिषेक के समय राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता था।

धार्मिक जीवन -

i) बहुलदेववादी
- प्रमुख देव प्रजापति (ब्रह्मा) के साथ–साथ त्रिदेव
- ऋग्वेद काल के पशुओं के देवता 'रूद्र' को अब शिव के रूप में पूजा जाने लगा।
- यज्ञ एवं कर्मकाण्ड की जटिलता
- यज्ञ में पशुबलि का प्रचलन

ii) षड्दर्शन का बीजारोपण

iii) आत्मा एवं परमात्मा में एकत्व अद्वैतवाद की स्थापना

iv) ज्ञान मार्ग को प्रमुखता

v) मोक्ष ही अंतिम लक्ष्य निर्धारित

vi) गृहस्थी को पाँच महायज्ञों का अनुष्ठान करना अनिवार्य – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्य यज्ञ, भूतयज्ञ

vii) षोड्स संस्कार – स्मृति ग्रन्थों में 16 संस्कार, उल्लेख

viii) उपनिषदों का संकलन – 600 ई.पू.

नोट:– ब्राह्मणों का पुरोहिती पर एकाधिकार स्थापित। इन्हें दान में गाय, सोना व वस्त्र प्राप्त। परन्तु भूमिदान का उल्लेख नहीं।

आर्थिक जीवन -

i) **लोहे की खोज**
- 600 ई.पू. में हुई, जिससे इनके औजारों व उपकरणों का कृषि कार्यों में उपयोग बढ़ा व कृषि में गुणोत्तर वृद्धि हुई।
- लोहे को श्याम या कृष्ण अयस व ताँबे को लोहित अयस कहा गया है। (अथर्ववेद)
- लोहे की खोज के कारण औजार निर्माण प्रमुख, लोहार, धातुकार, कुम्हार, बढ़ई, चर्मकार आदि व्यवसाय प्रचलित हुआ।

ii) **कृषि क्रांति**
- चावल व गेंहूँ इनकी मुख्य फसल हो गई थी।
- अन्न को ब्रह्म कहा गया। (तैत्तिरीय उपनिषद् में)
- हल को 'सीर' कहा गया। (यजुर्वेद में)

iii) **पशु पालन** – मुख्य पशु, गाय

iv) **व्यापार** –
- वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित
- लेन–देन का माध्यम गाय एवं निष्क
- मुद्रा प्रणाली का प्रचलन नहीं
- बलि, शुल्क अर्थात् कर

राजनीतिक जीवन -

- उत्तरवैदिक काल में **राजतंत्र** ही शासन का प्रमुख आधार था।
- राजा की उत्पत्ति का सिद्धांत सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में
- राजा राष्ट्र (क्षेत्र) का स्वामी होता था।
- राजा का पद वंशानुगत हो गया।
- लेकिन कबीले का रूप जनपदों ने ले लिया।
- कुल 16 जनपद

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- छोटे कबीलों के संचयन से जनपद बने।
  भरत + पुरू = कुरू, तुर्वस + कृवि = पंचाल
- कर की अदायगी अन्न एवं पशु के रूप में
- करों की नियमित वसूली इसी काल में प्रारंभ हुई।
- **प्रमुख अधिकारी** – पुरोहित, सेनापति, संग्राहित्री (कर संग्राहक), राज महिसी, भागदुघ (भू–राजस्व एकत्र करता था), पालागल (संदेशवाहक)।
- ग्रामीण सभ्यता
- आय का 16वाँ भाग कर के रूप में
- अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
- सभा में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित था।
- संपूर्ण उत्तर भारत में आर्यों का प्रसार हुआ।
- अब राजा का कार्य पशु–पक्षी व प्रजा की रक्षा मात्र का नहीं बल्कि राज्य क्षेत्र की रक्षा व विस्तार का था।
- पुरोहितों को राजा द्वारा दलितास्वरूप उपाधि भेंट की गई।

महत्वपूर्ण तथ्य –

- 'निष्क' और 'शतमान' मुद्रा की इकाई थी।
- कौशाम्बी नगर में प्रथम बार पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है।
- 'गोत्र' नामक संस्था का जन्म उत्तरवैदिक काल में हुआ।

वैदिक कालीन प्रमुख यज्ञ

क्र.	यज्ञ	विशेषता
1.	राजसूय	राजा के राज्याभिषेक के अवसर पर
2.	अश्वमेघ	राजा की शक्ति का प्रतीक अश्व दौड़ाकर, राज्य विस्तार का सूचक
3.	वाजपेय	रथदौड़ द्वारा प्रजा का मनोरंजन व शौर्य प्रदर्शन
4.	अग्निष्टोम	पति–पत्नी द्वारा 1 वर्ष सात्विक जीवन–यापन के उपरान्त पशुबलि व सोमपान
5.	पुरुषमेघ	मनुष्य की बलि
6.	व्रात्यस्तोम	अनार्यों का आर्य समाज में प्रवेश

आर्यों द्वारा किए जाने वाले यज्ञ

क्र.	यज्ञ	विशेषता
1.	ब्रह्म या ऋषि यज्ञ -	प्राचीन ऋषियों के प्रति कृतज्ञता
2.	देव यज्ञ	देवताओं के प्रति कृतज्ञता
3.	पितृ या नृ यज्ञ	पितरों का तर्पण
4.	मनुष्य यज्ञ	अतिथि सत्कार
5.	भूत यज्ञ (बलि)	समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता

महाजनपद काल

16 महाजनपदों का विस्तार – अफगानिस्तान से पं. बंगाल व सिंधु से गोदावरी नदी के मध्य बुद्ध के जन्म के पूर्व 6वें शताब्दी ई.पू. में भारतवर्ष 16 जनपदों में बंटा हुआ था। इसकी जानकारी हमें बौद्ध ग्रन्थ के अंगुत्तर निकाय से मिलती है।

क्र.	महाजनपद	राजधानी	आधुनिक स्थान
01)	अंग	चम्पा	भागलपुर, मुंगेर (बिहार)
02)	मगध	गिरिव्रज/राजगृह	पटना, गया (बिहार)
03)	काशी	वाराणसी	बनारस (वाराणसी) के आस–पास (उ.प्र.)
04)	वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद, मिर्जापुर के आस–पास (उ.प्र.)
05)	वज्जि	वैशाली/विदेह/मिथिला	मुजफ्फरपुर व दरभंगा के आस–पास (बिहार)
06)	कोसल	श्रावस्ती/अयोध्या	फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)
07)	अवन्ती	उज्जैन/महिष्मती	मालवा (मध्य प्रदेश)
08)	मल्ल	कुशावती (कुशीनगर)	देवरिया, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
09)	पांचाल	अहिच्छत्र, काम्पिल्य	बरेली, बंदायू, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)
10)	चेदी	शक्तिमती	बुन्देलखण्ड
11)	कुरू	इन्द्रप्रस्थ	आधुनिक दिल्ली, मेरठ, हरियाणा का कुछ क्षेत्र
12)	मत्स्य	विराटनगर	जयपुर, अलवर, भरतपुर (राजस्थान)
13)	कम्बोज	हाटक	हजारा जिला (पाकिस्तान)
14)	शूरसेन	मथुरा	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
15)	अश्मक	पोटली/पोतन	नर्मदा व गोदावरी नदी के मध्य का क्षेत्र (महाराष्ट्र)
16)	गान्धार	तक्षशिला	रावलपिण्डी व पेशावर (पाकिस्तान)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

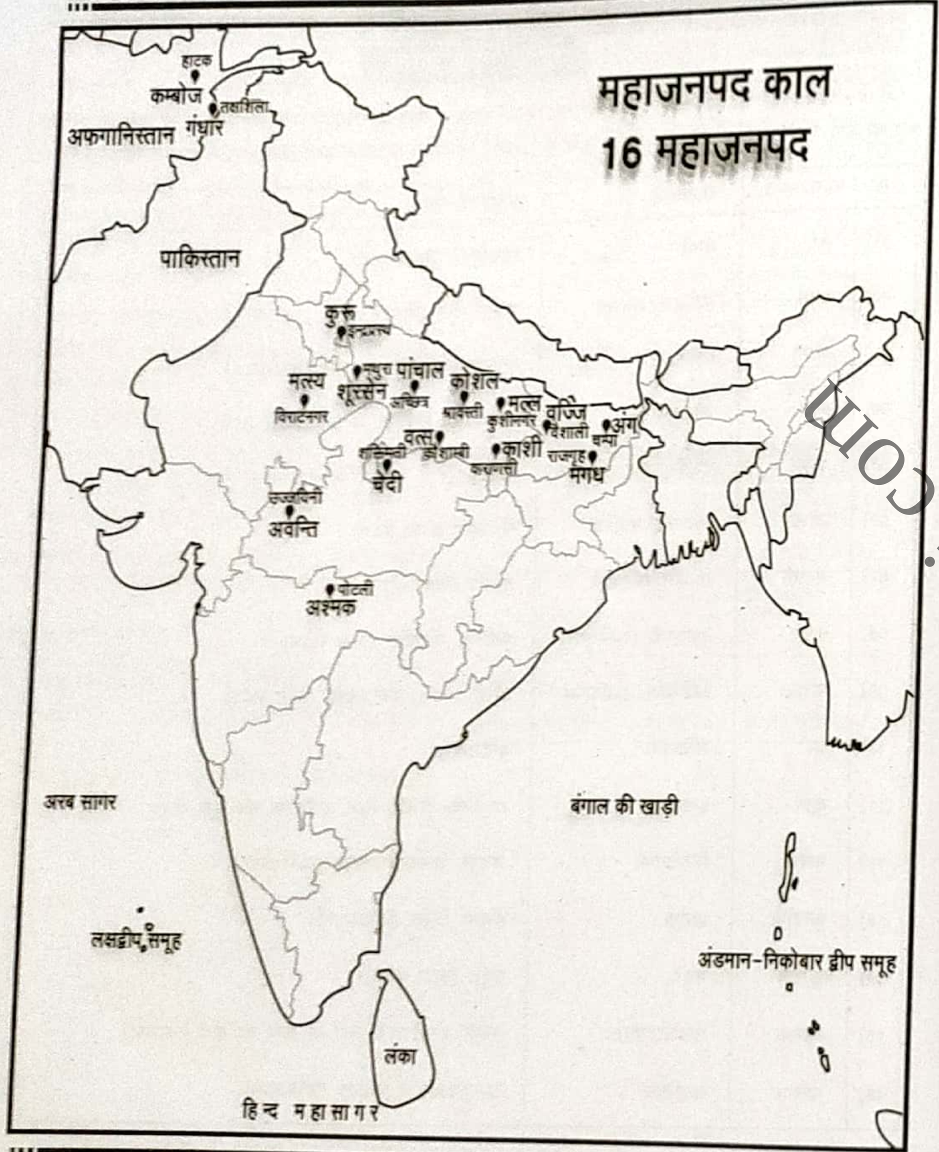

विशेष :-

- काशी महाजनपद सूती व रेशमी वस्त्र हेतु प्रख्यात था।
- जैन ग्रन्थ 'भगवतीसूत्र' में भी इन महाजनपदों की सूची मिलती है।
- सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद – मगध
- वज्जि और मल्ल गणतंत्रात्मक राज्य थे, अन्य सभी राजतंत्रात्मक थीं।

विवाह की पद्धतियाँ –

- ऋग्वैदिक काल के प्रारंभ में विवाह की दो पद्धतियाँ प्रचलित थीं–

(1) **अनुलोम विवाह** – उच्च कुल का लड़का व निम्न कुल की लड़की के मध्य

(2) **प्रतिलोम विवाह** – निम्न कुल का लड़का व उच्च कुल की लड़की के मध्य

- कुछ समय पश्चात् विवाह के 8 (आठ) प्रकार प्रचलित हुए, जो निम्नानुसार हैं–

(1) **ब्रह्म विवाह** – समान वर्ण में विवाह

(2) **देव विवाह** – यज्ञ कर्म करने वाले के साथ कन्या का विवाह

(3) **आर्श विवाह** – कन्या के पिता को वर एक जोड़ी बैल प्रदान करता है।

(4) **प्रजापत्य विवाह** – बना किसी लेन–देन के योग्य वर से विवाह

- उपर्युक्त चारों विवाह को समाजस्वीकृत माना गया है।

(5) **असुर विवाह** – कन्या को उसके माता–पिता से खरीद लिया जाता है। इसे निकृष्ट माना जाता है।

(6) **गंधर्व विवाह** – प्रेम संबंधों पर आधारित विवाह

(7) **राक्षस विवाह** – अपहरण कर विवाह

(8) **पैशाच विवाह** – यह विवाह प्रायः विश्वासघात द्वारा किया जाता है।

—00—

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

प्राचीन भारत में धार्मिक विकास

जैन धर्म

- संस्थापक – ऋषभदेव
- वास्तविक संस्थापक – महावीर स्वामी
- प्रथम तीर्थंकर – ऋषभ देव
  प्रतीक चिन्ह – सांड (विष्णु का अवतार भागवत पुराण में)
- 23वें तीर्थंकर – पार्श्वनाथ
  प्रतीक चिन्ह – साँप
- प्रथम अनुयायी – वामा (माता), प्रभावती (पत्नी)
- सर्वाधिक बल – अहिंसा
- मोक्ष प्राप्ति – कायाक्लेश तथा तपश्चर्या से ही संभव
- प्रतिपादन – चार महाव्रतों का प्रतिपादन किए–
  1. अहिंसा
  2. सत्य
  3. अपरिग्रह (संपत्ति अर्जन न करना)
  4. अस्तेय (चोरी न करना)

विशेष –

- जैन धर्म 'जिन' शब्द से बना है।
- जैन अनुयायियों को 'निर्ग्रंथ' कहा गया।
- 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर **महावीर स्वामी** थे।
- जैन धर्म में ज्ञान प्राप्ति को 'जिन' कहा जाता है।
- वैदिक धर्म के पश्चात् भारत में प्रचलित दूसरा धर्म
- जैन धर्म में जैन गुरूओं को तीर्थंकर कहा जाता है।
- जिन का अर्थ है, विजेता अर्थात् जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो।

- प्रारंभिक जैन धर्म का इतिहास – भगवतीसूत्र, कल्पसूत्र तथा परशिष्ट पर्वन् ग्रन्थ में।
- तीर्थंकर का अर्थ – संसार सागर से पार कराने के लिए औरों को मार्ग बताने वाला।

महावीर स्वामी

1. महावीर स्वामी के जीवन से सम्बंधित लोग

- नाम – महावीर स्वामी
- बचपन का नाम – वर्धमान
- अन्य नाम – जितेन्द्रीय नारायण, अर्ह, निर्ग्रंथ, जिन, केवलिन, सर्वज्ञानी
- पिता का नाम – सिद्धार्थ (क्षत्रिय वर्ण एवं ज्ञातृक कुल)
- माता का नाम – त्रिशला अथवा विदेहदत्ता (लिच्छवी कुल की प्रमुख चेटक की बहन)
- पत्नी का नाम – यशोदा (कुण्डिन्य गोत्र की कन्या)
- पुत्री का नाम – अनोज्जा प्रिदर्शना
- बड़ा भाई – नंदिवर्धन
- प्रथम शिष्य – जामाली (दामाद)
- प्रथम शिष्या – चंदना
- सर्वप्रथम शिक्षा – मेघकुमार

2. महावीर स्वामी के जीवन से सम्बंधित तिथि

- जन्म – 540 ई.पू.
- मृत्यु या निर्वाण – 468 ई.पू. (जीवन काल 72 वर्ष)
- ज्ञान प्राप्ति – 12 वर्ष तप करने के पश्चात् 42 वर्ष की उम्र में (30.12.42)
- गृहत्याग – 30 वर्ष की उम्र में

प्रथम जैन संगीति (322 ई.पू.)

स्थान – पाटिलपुत्र (पटना)
शासक – चन्द्रगुप्त मौर्य
अध्यक्ष – स्थूलभद्र
विशेष – जैन धर्म के महत्वपूर्ण 12 अंगों का प्रणयन किया गया।
– इस सम्मेलन के पश्चात् जैन धर्म दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया–

1. **श्वेताम्बर सम्प्रदाय**

प्रेरणा – स्थूलभद्र
विस्तार – विंध्यांचल पर्वत से उत्तर में प्रचलित
विशेष – श्वेत वस्त्र धारण करते थे।
– पार्श्वनाथ इसी सम्प्रदाय से सम्बंधित थे।

2. **दिगम्बर सम्प्रदाय**

प्रणेता – भद्रबाहु
विस्तार – विंध्यांचल पर्वत से दक्षिण में प्रचलित
विशेष – वस्त्रों का त्याग
– महावीर स्वामी एवं चंद्रगुप्त मौर्य इसी सम्प्रदाय से सम्बंधित थे।

द्वितीय जैन संगीति (512 ई.)

स्थान – वल्लभी (गुजरात)
शासक – उत्तर गुप्तकाल
अध्यक्ष – देवाधि क्षमाश्रवण (देवर्धिगणि)
विशेष – आगम ग्रंथ या जैन ग्रंथ का अंतिम रूप से संकलन किया गया।

3. महावीर स्वामी के जीवन से सम्बंधित स्थल

- जन्म स्थान – कुण्डल ग्राम वैशाली (उत्तरप्रदेश)
- तपो स्थल – जृम्भिका ग्राम, ऋजुपालिका नदी, साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ।
- निर्वाण स्थल – पावापुरी साल वृक्ष के नीचे।
- प्रथम उपदेश – वितुलांचल पर्वत, राजगृह

महावीर स्वामी का जैन दर्शन या सिद्धांत

- जैन धर्म निवृत्तिमूलक धर्म है, जिसकी मान्यता है कि संसार दुःखमय है और संसार से मुक्त होकर ही दुःखों से मुक्त हुआ जा सकता है। लेकिन जब तक किसी जीव का कार्यकाल शेष है, वह जन्म–पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त नहीं हो सकता।

01. त्रिरत्न

- सम्यक् श्रद्धा – सत्य में विश्वास
- सम्यक् ज्ञान – सत्य का ज्ञान
- सम्यक् आचरण – सच्चरित्रता एवं सदाचरण का पालन करते हुए बाह्य जगत के विषय के प्रति सम दुःख सुख भाव से उदासीनता ही सम्यक आचरण है।

जैन मतानुसार त्रिरत्न का आचरण करने से कर्मफल से छुटकारा और जन्मचक्र से मुक्ति पायी जा सकती है।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

02. पंचमहाव्रत

(1) सत्य या अमृषा (2) अहिंसा (3) अस्तेय
(4) अपरिग्रह (5) ब्रह्मचर्य

नोट– उपरोक्त चार व्रत को पार्श्वनाथ द्वारा तथा पांचवाँ व्रत ब्रह्मचर्य को महावीर स्वामी द्वारा शामिल किया गया।

➤ 'पंच अणुव्रत' के रूप में गृहस्थों हेतु पंचमहाव्रत के नियमों को शिथिल किया गया।

03. स्यादवाद/अनेकान्तवाद

➤ इसे सप्त भंगीनय भी कहा जाता है। ये संख्या में सात हैं–

1. है
2. नहीं है
3. है और नहीं है
4. कहा नहीं जा सकता
5. है किन्तु कहा नहीं जा सकता
6. नहीं है और कहा नहीं जा सकता है
7. है नहीं है और कहा नहीं जा सकता है।

➤ स्यादवाद – ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है।

04. अनीश्वरवाद

➤ सृष्टिकर्ता ईश्वर नहीं है। इसलिए इसे अनीश्वरवादी धर्म कहा जाता है।

➤ जैन मतानुसार संसार 6 द्रव्यों से मिलकर बना है–

(1) जीव (2) पुद्गल (मौलिक पदार्थ) (3) धर्म
(4) अधर्म (5) आकाश (6) काल।

➤ जैन मान्यता है कि संसार वास्तविक, परिवर्तनशील और शाश्वत है।

05. कर्मवाद

➤ कर्मवाद को स्वीकार करता है।

06. अनेकात्मवाद

➤ आत्मा पर विश्वास करता है। हर वस्तु में आत्मा होती है। आत्मा को असीम माना गया है।

07. पुनर्जन्म

➤ पुनर्जन्म पर विश्वास

08. मोक्ष

09. निर्वाण

➤ सांसारिक बंधन से मुक्ति ही निर्वाण है, जो त्रिरत्न अनुशीलन पर मृत्युपरांत प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए भिक्षुक जीवन आवश्यक माना गया है। जैन धर्म में निर्वाण जीव का अंतिम लक्ष्य माना गया है।

10. कायाक्लेश

➤ अहिंसा पर अत्यधिक बल, स्वयं को कष्टों में रखना, आत्महत्या भी स्वीकार्य।

11. कैवल्य

➤ ज्ञान प्राप्ति के बाद जैन मुनियों को **"कैवल्य"** प्राप्त होता है।

मान्यताएँ –

(1) ब्राह्मणों व वेदों की सर्वोच्चता का खण्डन
(2) यज्ञ – आहुतियों एवं पशुबलि का विरोध
(3) मूर्ति पूजा का विरोध
(4) 'कर्म' एवं 'आत्मा' के सिद्धांत को स्वीकारा।
(5) देवताओं के अस्तित्व को स्वीकारा गया, किंतु उन्हें 'जिन' से नीचे माना गया।
(6) 'नारियों' के लिए भी निर्वाण संभव
(7) वर्ण व्यवस्था की निंदा की एवं समानता पर बल (महावीर ने वर्ण व्यवस्था की निंदा की है।)
(8) सभी जाति एवं वर्ग के लोगों के लिए निर्वाण संभव।

प्रचार –

(1) महावीर की प्रचार की भाषा प्राकृत थी।
(2) पार्श्वनाथ ने जैन संघ स्थापित किया था।
(3) महावीर स्वामी ने अपने अनुयायियों को 11 अंगों को गणधर बनाकर संघ व्यवस्था से अपने मत का प्रचार किया।
(4) जैन धर्म कभी स्पष्टतया अपने आप को ब्राह्मण धर्म से पृथक नहीं कर पाया। इसलिए यह अधिक संख्या में लोगों को आकृष्ट करने में असफल रहा।

विशेष – जैन धर्म के प्रचार–प्रसार का प्रमुख कारण राजवंश का संरक्षण

जैन साहित्य –

(1) कल्पसूत्र – भद्रबाहु, जैन तीर्थकरों की जीवनी
(2) आचरांगसूत्र – जीवक चिंतामणि (संगमकाल)
(3) भगवतीसूत्र
(4) परिशिष्ट पर्वन् – हेमचंद (11वीं शताब्दी) जैन लेखकों में सर्वश्रेष्ठ
(5) आदिपुराण – जिनसेन

नोट:– 1) जैन विद्वानों में संस्कृत का सबसे बड़ा विद्वान जयचंद था।
2) अधिकांश जैन साहित्य अर्द्धमागधी भाषा में लिखा गया है।

जैन स्थापत्य –

हाथीगुम्फा मंदिर	– ओड़िशा
दिलवाड़ा जैन मंदिर	– माऊण्ट आबू, राजस्थान
गोमतेश्वर प्रतिमा	– श्रवणबेलगोला, कर्नाटक
पार्श्वनाथ एवं आदिनाथ मंदिर	– खजुराहो, मध्यप्रदेश
सिंह गुफाएँ	– उदयगिरि, मध्यप्रदेश
इन्द्रसभा	– एलोरा, महाराष्ट्र
पार्श्वनाथ पहाड़ी	– झारखण्ड

जैन धर्म के समर्थक राजा –

उदायिन बिम्बिसार अजातशत्रु चंद्रगुप्त मौर्य
बिंदुसार खारवेल चालुक्य राष्ट्रकूट

जैन धर्म ग्रहण करने वाले शासक –

➤ उदयन, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

महत्वपूर्ण तथ्य –

- 18 पापों का उल्लेख है।
- व्यूहवाद में विश्वास नहीं।
- मथुरा कला का संबंध जैन धर्म से है।
- जैन भिक्षुओं को 'सोना' छूना मना था।
- नारी को भी निर्वाण प्राप्त का अधिकार है।
- आरंभ में मूर्ति पूजा का प्रचलन नहीं था।
- महावीर स्त्रियों के संघ में प्रवेश के समर्थक थे।
- अधिकांश धार्मिक ग्रन्थ अर्धमागधी भाषा में लिखे गए।
- महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'कल्पसूत्र' संस्कृत में लिखा गया है।
- **बसदि** – 5वीं सदी में कर्नाटक में स्थापित जैन मठ
- 'नायधम्म कथासुत्त' में महावीर की शिक्षाओं का संग्रह है।
- जैन धर्म का प्रथम घेरा/मुख्य उपदेशक – आर्य सुधर्म
- मोक्ष एवं निर्वाण हेतु कठिन तपस्या एवं कायाक्लेश पर बल
- मगध के राजा बिम्बिसार तथा कोशल नरेश प्रसेनजीत दोनों के महावीर तथा गौतम बुद्ध के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे।
- जैन धर्म की उन्नति का काल – गुजरात के चालुक्य अथवा सोलंकी वंशी शासकों का काल
- कालांतर में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के लोगों ने महावीर एवं अन्य तीर्थंकर की पूजा आरंभ कर दी।
- वाणिज्य एवं व्यापार को महत्व, क्योंकि इसमें जीव हिंसा की संभावना नहीं।
- 'नांदीसूत्र' तथा 'अनुयोग द्वार' जैनियों के स्वतंत्र ग्रन्थ एवं विश्वकोष हैं।
- खजुराहो में जैन मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों द्वारा किया गया।
- जैन मतानुयायी कृषि एवं युद्ध के विरोधी थे, क्योंकि इससे जीव हिंसा होती थी।
- जैन मतावलम्बियों ने आम बोल–चाल की भाषा प्राकृत को अपनाया।
- **सलेखना** अर्थात् आत्महत्या (उपवास रहकर) : कायाक्लेश द्वारा शरीर त्याग
- सल्लेखना विधि द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य ने श्रवणबेलगोला में शरीर का परित्याग किया। (अकाल से निपटने में असफल)
- जैन धर्म ने अपने आध्यात्मिक विचारों को **सांख्य दर्शन** से ग्रहण किया।
- जैन साहित्य को **आगम** कहा गया है। जैन साहित्य के सबसे प्राचीन एवं अधिकृत ग्रंथ '14 पूर्वों व पर्वों' को माना जाता है। इनका ज्ञान महावीर ने सीधे उनके शिष्यों को दिया।
- प्रथम जैन परिषद् में विवाद होने पर स्थूलभद्र ने पर्वों को 12 अंगों में संकलित किया। किन्तु अब केवल 11 अंग ही बचे हैं। एक भाग लुप्त हो गया।
- जैन धर्म के प्रचार एवं विकास हेतु महत्वपूर्ण कार्य – राजा सम्प्रति (चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र) (अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के लिए किए गए कार्यों के समान)

—00—

बौद्ध धर्म

गौतम बुद्ध का परिचय

1. गौतम बुद्ध के जीवन से सम्बंधित लोग

मूल नाम	–	सिद्धार्थ (शाक्य क्षत्रिय कुल)
अन्य नाम	–	बुद्ध, तथागत, गौतम बुद्ध, महात्मा बुद्ध, शाक्यमुनि, एशिया के ज्योतिपुंज
पिता का नाम	–	शुद्धोधन (शाक्यगण के मुखिया थे)
माता का नाम	–	मायादेवी/महामाया (कोलिय वंशी थीं)
मौसी तथा विमाता	–	महाप्रजापति गौतमी, पालन करने वाली माता
पत्नी का नाम	–	यशोधरा (शाक्यवंशीय), बिम्बा, गोपा
पुत्र का नाम	–	राहुल
आरंभिक गुरू	–	आचार्य आलार कलाम (सांख्य दर्शन)
दूसरे गुरू	–	रूद्रक रामपुत्त (राजगृह)
प्रथम शिष्य	–	आनंद (प्रिय शिष्य, उपाली)
प्रथम शिष्या	–	माता गौतमी
अन्य शिष्य	–	सारिपुत्र, मोग्गलन, कश्यप
बुद्ध के मित्र	–	बिम्बिसार
सारथि	–	चन्ना/चाण
घोड़ा	–	कंथक
खीरका	–	सुजाता (भोजन कराने वाली कृषक कन्या)

2. गौतम बुद्ध के जीवन से सम्बंधित तिथि

जन्म	–	563 ई.पू. (वैशाख कृष्ण पूर्णिमा को)
विवाह	–	16 वर्ष की आयु में
गृह त्याग	–	29 वर्ष की आयु में
तपस्या	–	6 वर्ष, कठिन तप (29/06/35)
ज्ञान प्राप्ति	–	35 वर्ष की आयु में (वैशाख पूर्णिमा)
निर्वाण	–	483 ई.पू. (80 वर्ष की अवस्था में)

बौद्ध संगीति या महासम्मेलन

प्रथम बौद्ध संगीति

वर्ष	–	483 ई.पू.
स्थान	–	राजगृह (सप्तपर्णि गुफा में)
शासक	–	अजातशत्रु
अध्यक्ष	–	महाकस्यप
विशेष	–	बौद्ध धर्म के दो पिटकों का संग्रह किया गया– (1) सुत्त. (2) विनय

द्वितीय बौद्ध संगीति

वर्ष	–	383 ई.पू.
स्थान	–	वैशाली
शासक	–	कालाशोक
अध्यक्ष	–	सर्वकामी/सब्बकामि
विशेष	–	बौद्ध धर्म का दो संघ में विभाजन हो गया (1) स्थावीर (रूढ़िवादी) (2) महासंघिक (प्रगतिशील)

तृतीय बौद्ध संगीति

वर्ष	–	251 ई.पू.
स्थान	–	पाटलिपुत्र (मगध–पटना)
शासक	–	अशोक
अध्यक्ष	–	मोगलीपुत्त तिस्स
विशेष	–	अभिधम्म पीटक संग्रह किया गया।
	–	तिस्स ने 'कथावस्तु' ग्रन्थ की रचना की।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

➤ चतुर्थ बौद्ध संगीति

वर्ष – प्रथम शताब्दी ईसवीं (100 शताब्दी ई.)	
स्थान – कुण्डलवन, कश्मीर	
शासक – कनिष्क	
अध्यक्ष – वसुमित्र	
उपाध्यक्ष – अश्वघोष	
विशेष – बौद्ध धर्म, दो सम्प्रदायों में बंट गया 1. हीनयान, 2. महायान – वसुमित्र द्वारा 'महाविभाष सूत्र' का संकलन	

3. गौतम बुद्ध के जीवन से सम्बंधित स्थल

➤ जन्म स्थान – नेपाल का तराई क्षेत्र में, ग्राम लुम्बिनी (कपिलवस्तु गणराज्य)

➤ गृहत्याग – 29 वर्ष की उम्र में (महाभिनिष्क्रमण)

➤ तपोस्थल – बोधगया में पीपल वृक्ष के नीचे (महाबोधी)

➤ ज्ञान प्राप्ति – निरंजना नदी के तट पर, पीपल वृक्ष के नीचे, बोधगया में (सम्बोधी)

➤ निर्वाण स्थल – कुशीनारा (पूर्वी उत्तर प्रदेश)

➤ प्रथम उपदेश – सारनाथ

➤ अंतिम उपदेश – कुशीनारा (सुभद्र)

➤ सर्वाधिक उपदेश – श्रावस्ति

➤ सर्वाधिक प्रचार – कोशल राज्य (21 वास किए)

बुद्ध के जीवन से संबंधित बौद्ध धर्म के प्रतीक या चिन्ह

घटना	प्रतीक
जन्म	– कमल एवं सांड
गृहत्याग	– घोड़ा
ज्ञान	– पीपल (बोधि वृक्ष)
निर्वाण	– पदचिन्ह
मृत्य	– स्तूप
प्रथम प्रवचन	– चक्र
घोड़ा	– कांथक
सुजाता	– खीरका
भोजन कराने वाली कृषक कन्या उपवास तोड़ा।	

बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाएँ व उनका सम्बोधन

घटनाएँ	सम्बोधन
1. गृहत्याग –	महाभिनिष्क्रमण
2. ज्ञान प्राप्ति –	सम्बोधि
3. उपदेश प्रदान –	धर्मचक्र प्रवर्तन
4. मृत्यु (निर्वाण) –	महापरिनिर्वाण

➤ सिद्धार्थ जब कपिलवस्तु की सैर पर निकले, तो उनका हृदय निम्नलिखित व क्रमशः चार दृश्यों को देखकर द्रवित हुआ–

(1) बूढ़ा व्यक्ति (2) एक बीमार व्यक्ति

(3) शव (4) एक सन्यासी।

➤ जरामरण – संसार में व्याप्त हर प्रकार के दुःख का सामूहिक नाम।

➤ निर्वाण – बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य।

➤ निर्वाण का अर्थ है – दीपक का बुझ जाना अर्थात् जीवन–मरण चक्र से मुक्त हो जाना। इसी जीवन (जन्म) में प्राप्त

➤ महापरिनिर्वाण – मृत्यु के बाद भी संभव

➤ उपसम्पदा – संघ में प्रवेश पाने वाला

➤ पतिमोक्ख – बौद्ध भिक्षुओं के लिए विधि निषेधों का संग्रह

➤ चैत्य – बौद्ध भिक्षुओं का पूजागृह

➤ विहार – बौद्ध भिक्षुओं कानिवास स्थल

➤ स्तूप – किसी वस्तु का ढेर

➤ स्थाविर या थेरवादी – परंपरागत नियम में आस्था रखने वाले सम्प्रदाय

➤ महासांघिक अथवा सर्वास्तिवादी – परिवर्तन के साथ नियम को स्वीकार करने वालों के सम्प्रदाय।

बौद्ध एवं जैन धर्म से संबंधित प्रमुख स्थल

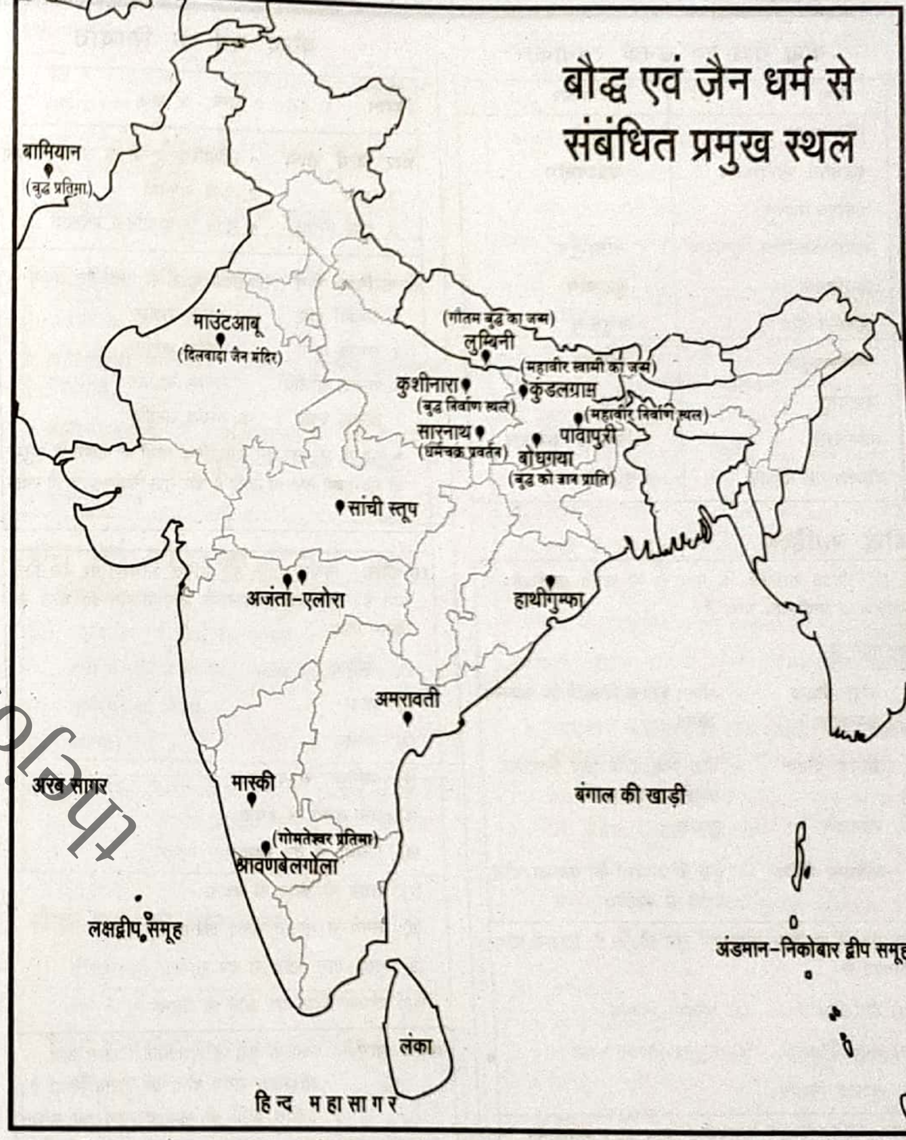

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

बौद्ध ग्रंथ एवं उनके रचनाकार

ग्रंथ	रचनाकार
मिलिन्दपण्हो	नागसेन
बुद्धचरित, सौन्दरानन्द,	अवश्वमोघ
शारिपुत्र प्रकरण	
माध्यमिककारिका, शून्यवाद	नागार्जुन
विशुद्धिमग्ग	बुद्धघोष
अभिधम्म कोश	वसुबन्धु
महाविभाषसूत्र	वसुमित्र
कथावस्तु	तीस
मणिमेखलै	सितलई सत्तनार
दीपवंश एवं महावंश	बुद्धघोष

बौद्ध साहित्य

इसे 'पीटक साहित्य' के नाम से भी जाना जाता है। ये मौलिक व प्राचीनतम ग्रन्थ हैं।

यह तीन हैं–

1. **सुत्त पीटक** – गौतम बुद्ध के शिक्षाओं का संकलन
   रचनाकार – आनंद
2. **विनय पीटक** – बौद्ध भिक्षुओं के लिए निर्धारित अनुशासन का वर्णन
   रचनाकार – नुपालि
3. **अभिधम्म पीटक** – बुद्ध के उपदेशों की व्याख्या/बौद्ध दर्शन से संबंधित

➤ उपरोक्त में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुत्त पीटक है, जिसके पाँच निकाय हैं–

(1) दीर्घ निकाय (2) मज्झिम निकाय
(3) संयुक्त निकाय (4) अंगुत्तर निकाय
(5) खुद्दक निकाय।

नोटः– जातक कथाएँ खुद्दक निकाय से संबंधित हैं।

बौध्द धर्म के सिध्दांत

त्रिरत्न – 1. बुद्ध 2. धम्म 3. संघ

चार आर्य सत्य – सांसारिक दुःखों के संबंध में दिए
1. दुःख 2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध 4. दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा

आष्टांगिक मार्ग– सांसारिक दुःखों से मुक्ति हेतु उपाय –
1. सम्यक् दृष्टि 2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वाणी 4. सम्यक् कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव 6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति 8. सम्यक् समाधि

➤ बुद्ध के अनुसार इन आष्टांगिक मार्गों के पालन से मनुष्य की भव तृष्णा नष्ट हो जाती है और उसे निर्वाण प्राप्त हो जाता है।

10 शील – निर्वाण प्राप्ति हेतु सैनिक आचरण पर बल दिया गया है। इसे सरल बनाने के लिए उन्होंने 10 शील का विधान दिया–
(1) अहिंसा
(2) सत्य
(3) अस्तेय
(4) व्यभिचार से बचना
(5) धन संचय से बचना
(6) स्त्रियों से दूर रहना
(7) शराब के सेवन से बचना
(8) समय से भोजन ग्रहण करना
(9) नृत्य–गान आदि से दूर रहना।
(10) कोमल शैय्या पर सोने से बचना

मध्यम मार्ग– महात्मा बुद्ध ने अत्यधिक विलास और अत्यधिक संयम दोनों का विरोध किया है। उन्होंने दोनों के मध्य के मार्ग को उचित माना।

प्रतीत्यसमुत्पाद –
➤ बुद्ध के उपदेशों का सार एवं उनकी संपूर्ण शिक्षाओं का आधार स्तंभ है।
➤ इसका अर्थ है– संसार की सभी वस्तुएँ कार्य और कारण पर निर्भर करती हैं।
➤ प्रतीत्यसमुत्पाद दुःख समुदाय की व्याख्या करता है।

बौद्ध धर्म की मान्यताएँ

1. **अनीश्वरवादी**
2. **अनात्मवादी**, किन्तु कर्म, कर्मफल व पुनर्जन्म की मान्यता (विश्वास)
3. **प्रतीत्यसमुत्पाद** – जन्म–पुनर्जन्म का चक्र, जिसको महात्मा बुद्ध ने 12 चरण बताए हैं।
4. **क्षणभंगुरवाद**

बौद्ध धर्म की मुख्य शिक्षाएँ

(1) वेदों की सर्वोच्चता का खण्डन
(2) जाति प्रथा के दोषों का खण्डन
(3) शूद्रों व नारियों के लिए निर्वाण प्राप्ति संभव
(4) मूर्तिपूजा का विरोध
(5) अहिंसा।

अन्य उपदेश –अनीश्वरवाद, कर्मवाद, पुनर्जन्म, अनात्मवादी, निर्वाण, प्रतीत्यसमुत्पाद, मध्यम प्रतिपदा/मध्यम मार्ग।

बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय

(1) हीनयान

➤ अर्थ – निम्नमार्गी के लोग
➤ बुद्ध के उपदेशों का कठोरता से पालन
➤ इसे 'लघु चक्र' भी कहा जाता है।
➤ केन्द्र – कौशाम्बी
➤ व्यक्तिगत निर्वाण पर बल (व्यक्तिवादी धर्म) रूढ़िवादी
➤ दक्षिण एशियाई देशों में इसका प्रचलन (श्रीलंका, बर्मा, जावा)
➤ बुद्ध को महापुरूष मानते थे।
➤ मूर्तिपूजा के विरोधी
➤ सभी ग्रन्थ पाली भाषा में

विशेष – हीनयान एवं महायान शाखा में प्रमुख अंतर बुद्ध की मूर्ति पूजा का था।

(2) महायान

➤ अर्थ – उत्कृष्टमार्गी लोग
➤ उदार एवं परिवर्तनशील (सुधारवादी)
➤ मूर्तिपूजा के समर्थक
➤ बुद्ध को अवतार मानकर उसकी पूजा प्रारंभ (आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास) ललित विस्तार ग्रन्थ – बुद्ध के जीवन की गाथा
➤ 'पाली' के स्थान पर 'संस्कृत' का प्रयोग
➤ केन्द्र – मथुरा
➤ सभी के लिए निर्वाण की कामना
➤ पूर्वी एशियाई देशों में प्रचलन (तिब्बत, चीन, कोरिया, मंगोलिया, जापान)
➤ महायान में बोधिसत्व की संकल्पना है। सबसे प्रतिष्ठित बोधिसत्व को लगभग देवता माना जाता है। जैसे–
(1) **अवलोकितेश्वर** (पद्मपणि) – काम का अवतार
(2) **मैत्रेय** – भावी बोधिसत्व
(3) **देवीतारा** (प्रसापारमिता) – प्रजा की अवतार

नोट :– भारत में बौद्ध धर्म मुख्यतः अरूणाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, नागालैण्ड, सिक्किम में।

(3) वज्रयान

➤ **जन्म** – सातवीं शताब्दी
➤ **तंत्रवाद से प्रभावित** (तंत्र–मंत्र, जादू–टोना पर बल)
➤ **केन्द्र** – पूर्वी भारत
➤ बुद्ध की पत्नी के रूप में 'तारा' की पूजा
➤ इस सम्प्रदाय के कारण बौद्ध धर्म पतन की ओर अग्रसर

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

संघ

- गणतंत्रात्मक प्रणाली पर आधारित था।
- बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं के प्रसार के लिये 'संघ व्यवस्था' आरंभ की।
- प्रवेश के समय तीन संकल्प इंद्रियनिग्रह, अपरिग्रह, श्रद्धा
- अल्पवयस्क (15 वर्ष से कम), सैनिक, दास, चोर, हत्यारे, रोगी, ऋणी व्यक्ति सदस्य नहीं बन सकते।

बौद्ध धर्म के अनुयायी शासक

(1) बिम्बिसार (2) अजातशत्रु
(3) उदयन (4) प्रसेनजीत (कोशल)
(5) अशोक (6) कनिष्क
(7) हर्षवर्धन

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

- बौद्ध संघों में भ्रष्टाचार का प्रवेश
- संस्कृत भाषा का प्रयोग
- हर्ष के शासनकाल के बाद महत्वपूर्ण शासकों का समर्थन नहीं।

बौद्ध धर्म के पूर्ववर्ती धार्मिक सम्प्रदाय –

सम्प्रदाय	संस्थापक
1) आजीवक (भाग्यवादी)	मक्खलि गोशाल
2) अक्रियावादी	पूरण कस्सप
3) उत्छेदवाद (भौतिकवादी)	अजित केश–कम्बलिन

षड्दर्शन के अतिरिक्त अन्य दर्शन

(1) बौद्ध दर्शन – गौतम बुद्ध
(2) जैन दर्शन – महावीर
(3) अद्वैतवाद – शंकराचार्य
(4) विशिष्टाद्वैतावाद – रामानुजाचार्य
(5) द्वैताद्वैतवाद – निम्बकाचार्य
(6) शुद्ध द्वैतावाद – वल्लभाचार्य

प्राचीन काल में बौद्ध शिक्षा के केन्द्र

1. नालंदा (बिहार) – कुमार गुप्त ने स्थापित किया। – महायान शाखा से सम्बंधित था।
2. वल्लभी (गुजरात) – हीनयान शाखा से सम्बंधित था।
3. विक्रमशीला (बिहार) – पाल शासक धर्मपाल ने स्थापित किया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –

- वैशाली की 'आम्रपाली' उनकी शिष्या बनीं।
- बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र – अजंता, एलोरा
- बख्तियार खिलजी ने बौद्ध मठों को नष्ट किया।
- बौद्ध धर्म के पतन का काल – 11वीं–12वीं शताब्दी
- बौद्ध धर्म का वर्णन दीर्घनिकाय के सिगालोवादसुत्त में
- नागार्जुन की तुलना 'मार्टिन लूथर' से की जाती है।
- **'रूम्मनदेई स्तम्भ'** बुद्ध के जन्म स्थान का सूचक है।
- 'द लाईट ऑफ़ दी एशिया' सर एडविन आर्नाल्ड की पुस्तक है।
- बौद्ध भिक्षु पिण्डोला के प्रभाव से वत्सराज उदयन बौद्ध बना।
- बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु वैशाली में बिताई थी।
- बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा उनके जीवन की मारविजय घटना से संबंधित है।
- बौद्ध संघ में स्त्रियों को प्रवेश की अनुमति बुद्ध द्वारा वैशाली में दी गई थी।
- विज्ञानवाद अथवा योगाचार संम्प्रदाय की स्थापना मैत्रेय अथवा मैत्रेयनाथ ने किया था।
- बौद्ध धर्म में महिलाओं का प्रवेश बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद के कहने पर किया गया।
- बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में पाँच ब्राह्मण शिष्यों को वाश्य, कोडिण्य, अश्वजीत, भद्रक, महानाम दिए।
- बौद्ध धर्म की सबसे प्रमुख विशेषता, जिसने इसके प्रचार में सहायता की थी, वह थी लोक भाषा का प्रयोग

- विभिन्न प्राचीन भारतीय लिपियों का उल्लेख करने वाला बौद्ध ग्रंथ **'ललितविस्तार'** है।
- गृहत्याग के उपरान्त सर्वप्रथम वैशाली के नजदीक अलारकलाम के आश्रम गए और उन्हें गुरू बनाया।
- मृत्यु के बाद बुद्ध के शरीर के अवशेष को आठ भागों में बांटकर उस पर आठ स्तूपों का निर्माण कराया गया।
- कृष्णा नदी के तट पर नागार्जुन कोंडा महायान संप्रदाय का महत्वपूर्ण केन्द्र था, जिसका संबंध नागार्जुन से था।
- बुद्ध के वर्षा काल का निवास स्थान –
  1. **वेलुवन** – राजा बिम्बिसार द्वारा निर्मित
  2. **जेतवन** – निर्माण जेतराजकुमार द्वारा

—000—

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत में साम्राज्यों का उदय

मगध साम्राज्य

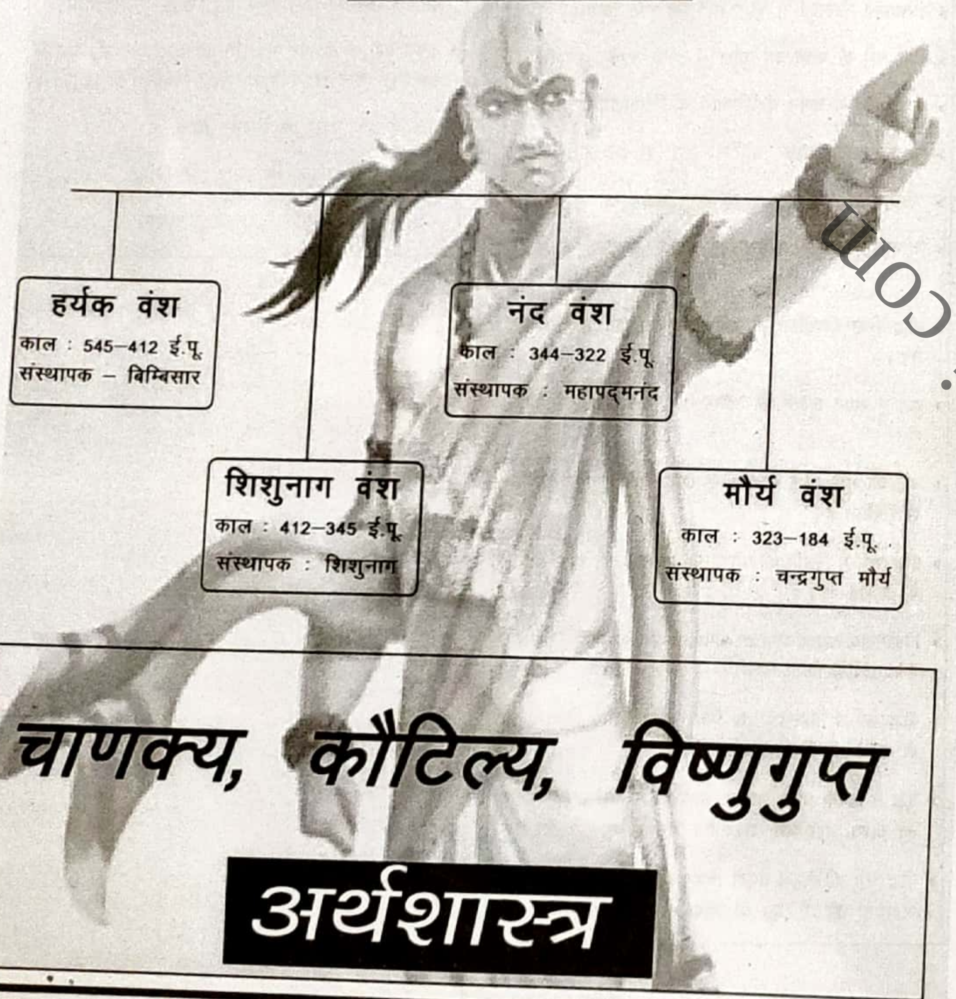

हर्यक वंश
काल : 545–412 ई.पू.
संस्थापक – बिम्बिसार

शिशुनाग वंश
काल : 412–345 ई.पू.
संस्थापक : शिशुनाग

नंद वंश
काल : 344–322 ई.पू.
संस्थापक : महापद्मनंद

मौर्य वंश
काल : 323–184 ई.पू.
संस्थापक : चन्द्रगुप्त मौर्य

चाणक्य, कौटिल्य, विष्णुगुप्त

अर्थशास्त्र

हर्यक वंश (पितृहंता वंश)

प्रथम शासक : बिम्बिसार (545-493 ई.पू.)

- राजधानी – गिरिव्रज
- उपनाम – श्रेणिक
- पत्नी – कोशल देवी (प्रसेनजीत की बहन)
  – चेल्लना (लिच्छवी प्रमुख चेटक की बहन)
  – क्षेमा (मद्र की राजकुमारी)
- पुत्र – अजातशत्रु
- दरबारी – जीवक (आयुर्वेद आचार्य)
- मित्र – गौतम बुद्ध
- स्थापत्य – राजगृह नगर बसाया
- धर्म – बौद्ध (जैन व ब्राह्मण धर्म के प्रति सहिष्णु)
- विशेष – इसने अपने साम्राज्य की स्थापना के लिए 'त्रियक नीति' अपनायी।
  1. युद्ध 2. विवाह 3. मैत्री

- बिम्बिसार महात्मा बुद्ध के मित्र व संरक्षक थे।
- युद्ध द्वारा अंग व चम्पा को जीता व साम्राज्य बनाया।
- बेलूवन नामक उद्यान गौतम बुद्ध को दान में दिया।
- अवंति के राजा प्रद्योत के ईलाज के लिए आयुर्वेद आचार्य जीवक को भेजा।
- कुशल प्रशासन की आवश्यकता पर सर्वप्रथम जोर दिया।

द्वितीय शासक : अजातशत्रु

- शासन काल – 493–461 ई.पू.
- राजधानी – राजगृह (बिहार)
- उपनाम – कुणिक
- अन्य नाम – पितृहंता
- धर्म – बौद्ध
- स्थापत्य – राजगृह में स्तूप बनवाया
- आयोजन – प्रथम बौद्ध संगीति (राजगृह)
- युद्ध – काशी एवं वज्जि संघ को जीता
- नवीन हथियार – रथमूसल व महाशिलाकंटक का प्रयोग किया।
- विशेष – यह साम्राज्यवादी था।
  – पिता की हत्या कर राजगद्दी पर बैठा।
  – शक्ति सम्पन्न राज्य के रूप में मगध का उत्कर्ष अजातशत्रु के काल से माना जाता है।
  – इनके शासन काल के 8वें वर्ष में बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ।

तृतीय शासक : उदायिन

- काल – 461–445 ई.पू.
- राजधानी – पाटिलपुत्र (पटना)
- धर्म – जैन धर्मावलंबी
- स्थापत्य – गंगा व सोन नदी के संगम पर पाटिलपुत्र शहर बसाया
- विशेष – पिता की हत्या कर राजगद्दी पर बैठा।
  – इतिहास में इसे भी पितृहंता कहा जाता है।

अंतिम शासक : नागदशक

- काल – 412 ई.पू. तक
- अन्य नाम – दर्शक (पुराणों में)
- विशेष – नागदशक की हत्या करके इसके सेनापति शिशुनाग ने शिशुनाग वंश की स्थापना की।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

शिशुनाग वंश
(काल : 412–345 ई.पू.)

- **संस्थापक** – शिशुनाग
- **राजधानी** – वैशाली
- **विशेष** – मगध साम्राज्य का विस्तार उत्तरी भारत में मालवा से बंगाल तक

द्वितीय शासक – कालाशोक

- **कार्यकाल** – 394 से 366 ई.पू.
- **राजधानी** – पाटलीपुत्र
- **अन्य नाम** – काकवर्ण
- **आयोजन** – द्वितीय बौद्ध संगीति, वैशाली में (383 ई.पू.)
- विशेष – यहाँ से पाटिलपुत्र स्थायी रूप से प्राचीन भारत की राजधानी बनी।

अंतिम शासक : नंदिवर्धन

- **विशेष** – नंदिवर्धन की हत्या करके महापद्मनंद ने नंद वंश की स्थापना की।

नंद वंश
(काल : 344–322 ई.पू.)

- **संस्थापक** – महापद्मनंद
- **उपाधि** – 'सर्वक्षत्रिय हंता' (क्षत्रियों का नाश करने वाला)
  – अनुल्लंघित शासक, भार्गव, एकराट, पृथ्वी का राजा आदि।
- **युद्ध** – कलिंग विजय (खारवेल के **हाथीगुम्फा अभिलेख** में उल्लेख)
- **विशेष** – उग्रसेन इसे 'महाबोधि वंश' कहता है।
  – महापद्मनंद को मगध साम्राज्य का प्रथम शूद्र शासक माना जाता है।

द्वितीय शासक : घनानंद

- सिकन्दर का समकालीन
- मगध साम्राज्य का सबसे विशाल सेना वाला शासक
- यूनानी (ग्रीक) द्वारा **अग्रमीज, जैन्द्रमीज** भी कहा जाता था।
- इन्हीं के शासनकाल में 326 ई.पू. में सिकंदर ने भारत के पश्चिमी तट पर आक्रमण किया।

मौर्य वंश
(काल : 322–184 ई.पू.)
(संस्थापक : चन्द्रगुप्त मौर्य)

- **पृष्ठभूमि** – 323 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य के सहयोग से नंद वंश के अंतिम शासक घनानंद को पराजित करके मगध पर मौर्य वंश की स्थापना की।

मौर्य वंश की जानकारी के स्रोत

कौटिल्य	–	अर्थशास्त्र
मेगस्थनीज	–	इण्डिका
अशोक के	–	अभिलेख
विशाखदत्त	–	मुद्राराक्षस
बौद्ध ग्रन्थ	–	दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान,
पुराण	–	विष्णु पुराण,
भद्रबाहु	–	कल्पसूत्र
हेमचन्द	–	परिशिष्ट पर्व
रूद्रदामन	–	जूनागढ़ अभिलेख
सोमदेव	–	कथासरित्सागर
क्षेमेन्द्र	–	वृहतकथामंजरी
फाह्यान	–	फु–की–ओ–की
व्हेनसांग	–	सी–यू–की व इत्सिंग का यात्रा विवरण आदि।

1. चन्द्रगुप्त मौर्य

- **संस्थापक** – चन्द्रगुप्त मौर्य
- **शासनकाल** – 322 से 298 ई.पू.
- **राजधानी** – पाटलीपुत्र
- **गुरू व महामंत्री** – चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुगुप्त)
- **धर्म** – जैन

- **साम्राज्य** – चन्द्रगुप्त मौर्य के पास 6 लाख की सेना थी।
  – विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाला वह भारत का प्रथम शासक था।
  – चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य विस्तार उत्तर–पश्चिम में ईरान की सीमा तक, दक्षिण में उत्तरी कर्नाटक (मैसूर) तक, पूर्व में मगध तक तथा पश्चिम में सोपारा व सौराष्ट्र तक था।

- **उपलब्धि** – नंदों का उन्मूलन किया।
  – सेल्युकस को पराजित कर संधि के लिए विवश किया।
  – उत्तरी–पश्चिमी भारत को सिकंदर के उत्तराधिकारियों से मुक्त किया।

- **प्रशासन** – चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन में संपूर्ण भारत को चार प्रांतों में बांटा गया–

प्रान्त	राजधानी
1. उत्तरापथ	तक्षशिला
2. दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
3. अंवतिका	उज्जैन
4. प्राची	पाटलीपुत्र

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

अन्य प्रमुख तथ्य –

- इस युद्ध का वर्णन 'एप्पियानस' ने किया।
- 322 ई.पू. में प्रथम जैन संगीति आयोजित।
- 'जस्टिन' ने चन्द्रगुप्त मौर्य को 'सेण्ड्रोकोट्स' कहा।
- महावंश की टीका में उसे 'सकल जम्बूद्वीप का शासक' कहा गया है।
- 'विलियम जोंस' ने सर्वप्रथम बताया कि चन्द्रगुप्त मौर्य ही 'सेन्ड्रोकोट्स' हैं।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन की प्रामाणिक तिथि का पता यूनानी स्रोत से चलता है।
- वर्तमान में यहाँ बहुत बड़ी 'गोमतेश्वर की प्रतिमा' स्थापित है।
- 'जस्टिन' नामक यूनानी विद्वान ने चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना को डाकुओं का गिरोह कहा।
- सेल्युकस ने अपने राजदूत 'मेगस्थनीज' को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में अर्थात् भारत भेजा।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम का पहला अभिलेख रूद्रदामन के जुनागढ़ अभिलेख से प्राप्त।
- जाति के विषय में मतभेद है– ब्राह्मण साहित्य 'शूद्र', बौद्ध एवं जैन ग्रन्थ 'क्षत्रिय' कुल का मानते हैं।
- सौराष्ट्र के गवर्नर 'पुष्यगुप्त' ने उसके निर्देश पर 'सुदर्शन झील' बनवायी। (गिरनार पहाड़ी, गुजरात)
- हिन्दुकुश पर्वत की सीमा पर 305 ई.पू. में चंद्रगुप्त मौर्य और यूनानी शासक सेल्युकस का युद्ध हुआ। जिसमें सेल्युकस पराजित हुआ, फलतः दोनों के बीच संधि हुई। संधि की शर्तों के तहत् सेल्युकस ने अपनी पुत्री **हेलना** का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ किया। फलतः दहेज स्वरूप चन्द्रगुप्त मौर्य को अराकोसिया, एरिया, जेड्रोसिया एवं पेरीपेमिसदाई क्षेत्र दिया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने जीवनकाल के अंतिम समय में भद्रबाहु के प्रभाव में आकर जैन धर्म ग्रहण किया तथा 'श्रवणबेलगोला' (मैसूर, कर्नाटक) में स्थित चन्द्रगिरि पहाड़ी पर 298 ई.पू. में उपवास के द्वारा (सल्लेखना विधि से) शरीर त्याग दिया। (चन्द्रगिरि)
- चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था का चरम लक्ष्य– "प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा की भलाई में ही उसकी भलाई है। राजा को जो अच्छा लगे वह हितकर नहीं है वरन् हितकर वह है जो प्रजा को अच्छा लगे।"– चाणक्य के अर्थशास्त्र में।

द्वितीय शासक : बिन्दुसार (चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र)

- **शासन काल** – 298 से 273 ई.पू.
- **अन्य नाम** – 'अमित्रो चेड्स' (अमित्रघात) यूनानी द्वारा
  – मद्रसागर, सिंहसेन, एकदण्डी
- **धर्म** – आजीवक सम्प्रदाय
- **युद्ध** – बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में दो बार विद्रोह हुआ। पहला विद्रोह को दबाने के लिए बिन्दुसार ने अशोक को और बाद में सुसीम को भेजा। (दिव्यावदान में)
  – बिन्दुसार दो समुद्रों का विजेता था अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी

विशेष –

- प्लिनी के अनुसार मिस्र का राजा **'टॉलमी द्वितीय फिलाडेल्फस'** ने अपने राजदूत **'डायोनिसस'** को भेजा था।
- स्ट्रैबो के अनुसार इसके दरबार में सीरिया का शासक 'एण्टियोकस प्रथम' ने अपना राजदूत **'डाईमेकस'** को भेजा था।
- बिन्दुसार ने सीरिया के शासक से तीन चीजें– मीठी मदिरा, सूखी अंजीर व दार्शनिक मांगे थे, जिसमें दार्शनिक भेजने से मना कर दिया गया।
- आर्यमंजूश्रीमूलकल्प के अनुसार बिन्दुसार के राज्य का संचालन चाणक्य करता था।
- चाणक्य ने तीन मौर्य राजाओं के राज्य का संचालन किया था।
- चाणक्य की मृत्यु के बाद **'राधागुप्त'** उसका उत्तराधिकारी बना।

भारत का राजनीतिक एकीकरण

सम्राट अशोक

1. अशोक से संबंधित लोग –

- पूरा नाम – सम्राट अशोक
- अन्य नाम – देवनामप्रिय, बुद्धशाक्य
- माता – सुभद्रांगी
- पिता – बिन्दुसार
- पहली पत्नी – देवी (विदिशा के व्यापारी की बेटी)
- दूसरी पत्नी – कारूवाकी (कलिंग की राजकुमारी)
- प्रथम पुत्र – महेन्द्र (देवी का संतान)
- द्वितीय पुत्र – तीवर (कारूवाकी का संतान)
- पुत्री – संघमित्रा
- गुरू – मोगलीपुत्ततीस्स
- बौद्ध धर्म ग्रहण – निग्रोथ से प्रभावित होकर किया
- बौद्ध धर्म की दिक्षा – उपगुप्त (बौद्ध भीक्षु)
- सेनापति – राधागुप्त
- गवर्नर – यवनराज तुशास्प
- टीकेन्थैलर – सर्व प्रथम अशोक के अभिलेख को खोजा (1750)
- जेम्स प्रिंसेप – सर्वप्रथम अशोक के अभिलेख को पढ़ने में सफलता प्राप्त की (1837)
- धर्म – बौद्ध
- मुद्रा – कर्षापण (पण)
- भाषा – पाली (अधिकांश अभिलेख की भाषा प्राकृत)

2. अशोक से संबंधित महत्वपूर्ण तिथि –

- शासन काल – 273 से 232 ई.पू.
- मगध सिंहासन पर – 273 ई.पू.
- राज्याभिषेक – 269 ई.पू.
- कलिंग विजय – 261 ई.पू.
- राजधानी – पाटलीपुत्र
- धर्म – बौद्ध
- मुद्रा – कर्षापण (पण)
- भाषा – पाली (अधिकांश शिलालेख की भाषा प्राकृत)

■ कलिंग विजय का कारण –

- दक्षिण भारत पर विजय प्राप्त करना।
- साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीति के कारण।
- लूटेरों के कारण (समुद्री लुटेरे कलिंग में रहते थे)
- हाथी प्राप्त करने के लिए (कलिंग हाथियों के लिए प्रसिद्ध था)
- कलिंग को व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से महत्वपूर्ण समझने के कारण

■ अशोक का धम्म –

- यह कोई **पृथक धर्म नहीं** था। अशोक ने अपनी प्रजा के कल्याण तथा नैतिक उत्थान के लिए जो आचार संहिता बनायी थी, इसे ही **'अशोक का धम्म'** कहा गया। धम्म पाली भाषा का शब्द है।
- अशोक के धम्म शब्द का अभिप्राय माता–पिता की सुश्रुषा, जीवों के प्रति अहिंसा तथा खर्च और बचत दोनों में मिताचार था।

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

- धम्म की परिभाषा दीर्घ निकाय के 'राहुलोवादसुत्त' विषय से ली गई है।
- अशोक ने अपने धम्म के विकास एवं देख–रेख के लिए जिन अधिकारियों की नियुक्ति कि उन्हें 'धर्म महापात्र' कहा गया।
- अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को दक्षिण एशियाई देशों (श्रीलंका) में भेजा।
- अशोक का त्रिसंघ या त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और संघ में विश्वास था। (भब्रूगढ़ लघु शिलालेख)
- उन गुणों का वर्णन जो धम्म का निर्माण करते हैं, दूसरे एवं सातवें शिलालेख में
- धर्म श्रावण, अशोक द्वारा जनता को दिया गया 'धर्म संदेश'

■ अशोक के शिलालेख –

- शासनादेश व सीमाओं के निर्धारण का वर्णन है।
- मुख्य भाग – 14 वृहद् शिलालेख
  - लघु शिलालेख
  - सात (7) स्तंभलेख
  - गुफा अभिलेख
  - लघु स्तंभलेख

■ अशोक के वृहद् शिलालेख –

- कुल संख्या 14 जो 8 स्थानों से प्राप्त हुए–

1. शाहबाजगढ़ी – पाकिस्तान (खरोष्ठी लिपि)
2. मानसेहरा – पाकिस्तान (खरोष्ठी लिपि)
3. गिरनार या जुनागढ़ अभिलेख – गुजरात (ब्राह्मी लिपि)
4. सोपारा – महाराष्ट्र (ब्राह्मी लिपि)
5. एर्रगुडी – आन्ध्र प्रदेश (ब्राह्मी लिपि)
6. जौगढ़ – ओड़िशा (ब्राह्मी लिपि)
7. धौली – ओड़िशा (ब्राह्मी लिपि)
8. काल्सी – उत्तराखण्ड (ब्राह्मी लिपि)

- अशोक ने 13वाँ शिलालेख (पृथक शिलालेख) में कलिंग विजय का वर्णन किया गया है।

अशोक के प्रमुख शिलालेखों के विषयों का वर्णन निम्नलिखित है–

- **प्रथम शिलालेख** – पशुबलि की निन्दा की गई है।
- **पांचवाँ शिलालेख** – 'धर्म महामात्रों' के नियुक्ति एवं प्राणियों के वध को वर्जित करने का उल्लेख
- **आठवाँ शिलालेख** – तीर्थ/धर्म यात्राओं का उल्लेख है।
- **नौवाँ शिलालेख** – दासों व सेवकों के प्रति शिष्ट व्यवहार, गुरूजन का सम्मान
- **दसवाँ शिलालेख** – धम्म नीति की श्रेष्ठता पर बल (धम्म विजय)
- **तेरहवाँ शिलालेख** – कलिंग युद्ध का वर्णन व अशोक के हृदय परिवर्तन की बात कही गई है।
- **पृथक कलिंग शिलालेख** – अशोक ने प्रजा के प्रति पितृतुल्य भाव प्रकट किया है। (सभी मनुष्य/प्रजा मेरी संतानें है)

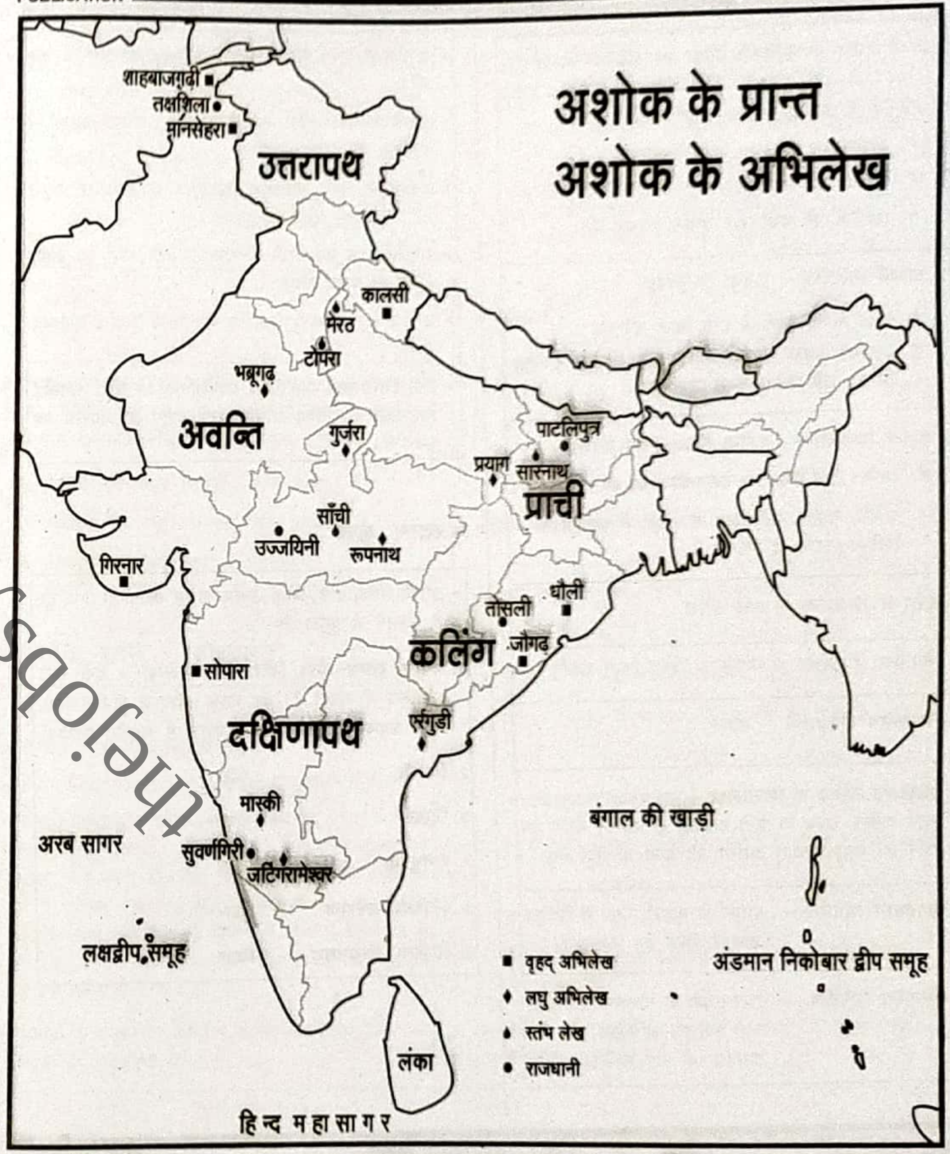

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

लघु शिलालेख –

- इनमें अशोक के व्यक्तिगत जीवन का इतिहास मिलता है।

1. भब्रू गढ़ शिलालेख – जयपुर (राजस्थान)
   - अशोक का बौद्ध धर्म के प्रति आस्था
   - अशोक को मगध का सम्राट घोषित किया गया है।
   - **अशोक के धम्म का वर्णन** मिलता है।
2. **मास्की** शिलालेख – रायचुर (कर्नाटक)
   - 1915 में सी. बैडन के द्वारा खोज की गई।
   - सर्वप्रथम अशोक का वास्तविक नाम **'अशोक देवनाम प्रियम'** इसी शिलालेख से प्राप्त हुआ।
3. **गुर्जरा** शिलालेख – दतिया जिला (मध्य प्रदेश)
   - उपरोक्त तीनों में अशोक 'देवनामप्रिय' का वर्णन मिलता है।
   - मास्की, गुर्जरा, उडेगोलम के लेखों में अशोक के व्यक्तिगत नाम भी मिलता है।
4. **एर्रगुड़ी** शिलालेख – आंध्र प्रदेश
5. **रूपनाथ** शिलालेख – जबलपुर जिला (मध्य प्रदेश)
6. **महास्थान** शिलालेख – बंगाल

- **धौली एवं जौगढ़ के शिलालेख** – पृथक कलिंग प्रशासन। इसमें कलिंग राज्य के प्रति अशोक के शासन नीति का वर्णन है। (युद्ध पश्चात् कलिंग की प्रजा के हित हेतु)
- **महास्थान** अभिलेख – बंगाल के बोहरा जिले में स्थित। काकणी सिक्के का उल्लेख।
- **सोहगौरा** अभिलेख – उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले से प्राप्त एकमात्र अभिलेख जो 'ताम्रपत्र' के रूप में है।

विशेष –

- अशोक ने अपने शासनकाल में अभिलेख की परम्परा शुरू की।
- इसके अभिलेख तीन लिपियों आर्मेइक, खरोष्ठी, ब्राम्ही में प्रचलित थी। (अन्य – ग्रीक)
- अशोक ने अपने अधिकांश शिलालेख या अभिलेख प्राकृत भाषा व ब्राम्ही लिपि में खुदवाए।
- राष्ट्रीय भाषा एवं लिपि के रूप में पाली भाषा एवं ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया।
- शार–ए–कूना (कंधार) शिलालेख दो भाषाओं (ग्रीक व आर्मेइक) में है।
- सभी शिलालेखों का विषय प्रशासनिक था परंतु रुम्मेनदेई शिलालेख का विषय आर्थिक था। इसमें अर्थव्यवस्था का वर्णन है।

स्तम्भ लेख –

- इनकी संख्या 7 है, जो 6 अलग–अलग स्थानों से प्राप्त हुए हैं, जिनमें से प्रमुख हैं–

1. **प्रयाग स्तम्भ लेख** (कौशाम्बी अभिलेख) – इसे रानी अभिलेख भी कहते हैं। यह पहले कौशाम्बी में स्थित था, जिसे अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित किया।
2. **दिल्ली** – मेरठ
3. **दिल्ली** – टोपरा
4. **रामपुरवा** – बिहार
5. **लौरिया अरेराज** – बिहार
6. **लौरिया नन्दनगढ़** – बिहार

लघु स्तम्भ लेख–

- इसमें अशोक के राजकीय घोषणाओं का उल्लेख है–

1. सारनाथ – वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
2. सांची – रायसेन (मध्य प्रदेश)
3. रूम्मनदेई – नेपाल की तराई (नेपाल)
   – कर नीति की जानकारी। कलिंग युद्ध के बाद भेरी घोष की जगह धम्म घोष को अपनाया।

स्तूप–

- 'स्तूप' मौर्य कला का सर्वोत्तम वास्तुकला है। अशोक ने स्तूप निर्माण परंपरा को प्रोत्साहन दिया। 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया। (बौद्ध जनश्रुति) प्रमुख स्तूप –

1. **साँची का स्तूप** (रायसेन, मध्य प्रदेश)
2. **भरहुत का स्तूप** (सतना, मध्य प्रदेश)
3. **धर्मराजिका का स्तूप** (तक्षशिला)

अशोक स्तंभ – सारनाथ

- **निर्माण** – 250 ई.पू. (सम्राट अशोक द्वारा)
- **ऊँचाई** – 7 फीट (आधार सहित)
- Lion Capital (वर्तमान में सारनाथ म्यूजियम में रखा है।)
- बलुआ पत्थर से निर्मित 1950 में अशोक स्तंभ के शीर्ष भाग जिसमें कमल फूल के ऊपर गोलाकार आधार में घोड़ा, बैल, हाथी और सिंह का चित्र अंकित है। इनके मध्य में अशोक चक्र बना हुआ है, जिसमें 24 तीलियाँ हैं। अशोक चक्र को भारत के तिरंगा में मध्य में ग्रहण किया गया है। अशोक स्तंभ में उत्कीर्ण 'सत्यमेव जयते' भारत का आदर्श वाक्य है।
- अशोक के साँची और सारनाथ के स्तम्भों पर एक साथ चार सिंहों की आकृतियाँ मंडित हैं।

साँची –

- रायसेन, मध्यप्रदेश
- सम्राट अशोक के द्वारा निर्मित
- साँची का प्राचीन नाम – **काकणाय और बौद्ध श्री पर्वत**
- साँची स्तूप विश्व धरोहर की सूची में शामिल है।
- बुद्ध के शिष्य मोग्लायन और सारीपुत्र की अस्थियाँ कांच की मंजूसा में दर्शन हेतु रखी गई हैं।

गुफाएँ–

- अशोक ने बाराबर पहाड़ी पर आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायियों के रहने के लिए कर्ण, चौपर, सुदामा व विश्व की झोपड़ी नामक चार गुफाओं का निर्माण करवाया।

अति महत्वपूर्ण तथ्य –

- 7वाँ अभिलेख सबसे लम्बा अभिलेख है।
- **कलिंग विजय** – राज्याभिषेक के 8वें वर्ष में
- अशोक अपने 99 भाईयों की हत्या कर शासक बना।
- अशोक साम्राट बनने से पहले 'अवंति का प्रांतपति' था।
- कलिंग की राजधानी – **'तोसली'** थी। (हाथीगुम्फा अभिलेख)
- राजतिलक के समय अशोक की आयु 15 वर्ष 6 माह थी।
- इसके समय नियुक्त 'प्रतिवेदक' घटनाओं की सूचना देते थे।
- नेपाल में **'ललितपत्तन'** नामक नगर बसाया। (तिब्बती जनश्रुति)
- 'देवनामप्रिय', 'देवनापियदशि' – अभिलेखों में अशोक के लिए सम्बोधन
- अशोक के गवर्नर **'यवनराज तुशास्य'** ने सुदर्शन झील से नहर बनवाया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर और उदेगोलम अभिलेखों में अशोक का व्यक्तिगत नाम मिलता है।
- रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य व अशोक के नाम का उल्लेख है।
- कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने 'भेरीघोष' की नीति को त्याग कर '**धम्म घोष**' को अपनाया।
- अशोक ने अपने शासन के 24वें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की। (राज्याभिषेक के 20वें वर्ष में)
- भारत में अभिलेखों द्वारा जनता को संबोधित करने का श्रेय अशोक को है। इसकी प्रेरणा उन्हें ईरानी शासक डेरियस (दारा प्रथम) से मिली।
- अशोक के रूम्मिनदेई अभिलेख से इसकी अर्थव्यवस्था की जानकारी मिलती है। (सबसे छोटा अभिलेख)
- **सोहगौरा अभिलेख** (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) व महास्थान अभिलेख (बंगाल) से ग्रामीण प्रशासन व दुर्भिक्ष काल कोषागार में से अनाज वितरण की जानकारी मिलती है।
- कल्हण की 'राजतंरगिणी' के अनुसार अशोक ने कश्मीर में वितस्ता (झेलम) नदी के किनारे '**श्रीनगर**' नामक नगर की स्थापना की।

अशोक के 13वें शिलालेख से ज्ञात –
- कलिंग युद्ध में करीब 1 लाख लोग मारे गए और डेढ़ लाख बंदी बनाए गए।
- भीषण नरसंहार से अशोक का मन द्रवित हो उठा और उसे युद्ध त्यागने की घोषणा की।

अशोक का साम्राज्य विस्तार –

उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत	– अफगानिस्तान
दक्षिण में	– कर्नाटक,
पश्चिम में	– काठियावाड़,
पूर्व में	– बंगाल की खाड़ी तक।

'राजतरंगिणी' के अनुसार
- अशोक भगवान शिव की पूजा करता था।
- अशोक ने कश्मीर में विजयेश्वर नामक शैव मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।
- अशोक का सहयोगी सेनापति – **राधागुप्त**

अशोक के उत्तराधिकारी

- विद्वानों में इस संबंध में मतभेद है।
- संभवतः तीवर, जालोक, कुणाल तथा महेन्द्र अशोक के पुत्र थे। अधिकांश इतिहासकार कुणाल को अशोक का उत्तराधिकारी मानते थे। (232–224 ई.पू.)
- कुणाल के बाद उसका पुत्र दशरथ (224–216 ई.पू.) सम्राट बना। यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था व इसने नागार्जुन गुफाएँ आजीवकों को समर्पित की।
- अंतिम सम्राट – **वृहद्रथ**

मौर्य प्रशासन

कौटिल्य का प्रशासन

- अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने 4 विधाओं का उल्लेख किया है –
  1. आन्वीक्षिकी (दर्शन एवं तर्क)
  2. त्रयी (धर्म-अधर्म वेदों का ज्ञान)
  3. वार्ता (कृषि, व्यापार आदि)
  4. दण्डनीति (शासन कला या राजनीति शास्त्र)

- अर्थशास्त्र का प्रतिपाद्य विषय – दण्डनीति

रचना काल	– 4थी व 3री शताब्दी ई.पू.
भाषा	– संस्कृत
रचना शैली	– गद्य + पद्य
विषय सामाग्री	– 15 अधिकरण में बांटकर वर्णन

राज्य की उत्पत्ति का सिद्धांत –

कौटिल्य का मत्स्यन्याय एवं अनुबंधवाद –
- कौटिल्य के अनुसार, प्रारंभ में समाज में नियम-विनिमय न होने से समाज में अराजकता व्याप्त था, इस कारण समाज में सबल का राज था। इस अराजकता से परेशान होकर लोगों ने वैवस्वत के पुत्र 'मनु' को अपना राजा बनाया। मनु और प्रजा के बीच समझौता (अनुबंध) हुआ, कि प्रजा राजा को अन्न की उपज का 6वाँ भाग देगी, व्यापार की आय का 10वाँ भाग, तथा हरण्य की आय का कुछ भाग देगी।

कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत- (राज्य के अंग)

(1) स्वामी (The King)	(2) अमात्य
(3) जनपद	(4) दुर्ग
(5) कोष	(6) दण्ड/सेना
(7) मित्र	

प्रशासन

1. राजा
2. मंत्रिपरिषद (अमात्य)
3. राज्य की वैदेशिक नीति
4. राजदूत
5. गुप्तचर विभाग
6. दण्ड व्यवस्था
7. न्याय व्यवस्था
8. प्रशासन
9. कोष एवं अर्थव्यवस्था
10. राज्य की रक्षा व्यवस्था
11. स्थानीय शासन

राजा

राजा	– राज्य के सात अंगो में राजा को ही राज्य का सर्वोच्च एवं प्रधान अंग माना है। उन्होंने राजतंत्रीय शासन व्यवस्था का समर्थन किया और राजा को शासनतंत्र का धुरी माना।
विचारधारा	– उन्होंने राजा को प्लेटो की भांति दार्शनिक विचारधारा का समर्थन किया और राजा को आदर्श व्यक्तित्व माना।
गुण	– ऊँचे कुल का हो – देवी बुद्धि तथा देवी शक्ति हो। – धार्मिक हो – लक्ष्य ऊँचा हो – क्रोध लोभ, मोह, पर पूर्ण नियंत्रण हो। – शिक्षा प्राप्त हो।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

राजत्व का सिद्धांत–

1. Great Man Theory
2. Trait Theory

राजा की दिनचर्या – उन्होंने राजा के 24 घण्टों को, 16 घड़ियों में बांटकर वर्णन किया।

राजा का कर्त्तव्य–

1. वर्णाश्रय धर्म बनाये रखना
2. दण्ड की व्यवस्था करना
3. जनकल्याणकारी कार्य करना
4. नियुक्ति सम्बंधी कार्य
5. आत्मरक्षा
6. युद्ध करना
7. आंतरिक सुरक्षा
8. विदेश नीति।

मंत्रिपरिषद् या अमात्य –

- अर्थशास्त्र के अनुसार, मंत्रिपरिषद् के कार्य सर्वथा गोपनीय होना चाहिए।
- कौटिल्य के अनुसार, राज्य कार्य के संचालन के लिए मंत्रिपरिषद् आवश्यक है। परन्तु उनकी संख्या के बारे में स्पष्ट मत नहीं दिया। उनके अनुसार आवश्यकता एवं सामर्थ अनुसार संख्या होनी चाहिए। इनको बारह हजार पण वार्षिक वेतन दिया जाता था।
- बड़ी मंत्रिपरिषद् के अतिरिक्त एक छोटी उप–समिति होती है। इसमें 3 या 4 विशेष विश्वसनीय, अनुभवी मंत्री रहा करते हैं। इन्हें **'मंत्रिण'** कहा जाता है। यह वर्तमान के केबिनेट के समान होता था। इन्हें 48 हजार पण वार्षिक दिया जाता था।
- कौटिल्य के अनुसार, मंत्रिपरिषद् में योग्य तथा विश्वसनीय व्यक्तियों को भी शामिल किया जाए, इसके लिए निम्नांकित परीक्षण किया जाए–
  (1) धर्मोपधा – चरित्र का परीक्षण
  (2) अर्थोपधा (3) कामोपधा।

मंत्रिपरिषद् द्वारा राजा का नियंत्रण –

- कौटिल्य के अनुसार, राजा की स्थिति राज्य में प्रधान या सर्वोच्च है, परन्तु यदि राजा, कुपथगामी हो, तो मंत्रिपरिषद् का पर्याप्त नियंत्रण होता था।

वैदेशिक नीति–

- कौटिल्य की विदेश नीति अद्वितीय है। उन्होंने विदेश नीति में उचित, अनुचित सभी पक्षों को अपनाने पर बल दिया है। उन्होंने विषकन्या के प्रयोग का समर्थन किया है। विदेश नीति में राजा को साम, दाम, दण्ड, भेद चारों का प्रयोग करना चाहिए।

विदेश नीति के संदर्भ में दो सिद्धांत दिया–

1. **मण्डल सिद्धांत** – मण्डल सिद्धांत में कौटिल्य राज्यमण्डल में 12 राज्य गिनाता है। इसके केन्द्र में वह विजिगीषु राज्य को रखता है।
2. **शाडगुण्य** – षाडगुण्य का पालन करके कोई भी राज्य, स्थिरता या विकास को हासिल कर सकते हैं।
   – सन्धि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय एवं द्वैधीभाव

दण्ड व्यवस्था

- कौटिल्य ने निरंकुश राजतंत्र का समर्थन किया, परन्तु विधि को सर्वोच्च माना। कौटिल्य के अनुसार, राजा, विधि के शासन का संचालक होता है। कौटिल्य ने धर्म राज्य की कल्पना की। राजा को धर्म के बाद द्वितीय स्थान दिया गया।
- कौटिल्य ने विधि के 4 स्त्रोत माने – धर्म, व्यवहार, चरित्र एवं राजा।
- कौटिल्य के अनुसार, दण्ड का प्रयोग 3 दृष्टियों से किया जाना चाहिए –
  (1) समाज रक्षण
  (2) सुव्यवस्था
  (3) पृथ्वी एवं समाज रक्षा

उद्देश्य – (1) त्रयी का पालन
(2) आन्वीक्षिकी
(3) वार्ता

- कौटिल्य ने विधि के अनुसार 3 प्रकार के दण्डों का प्रयोग किया है –
  (1) अर्थ दण्ड
  (2) काय दण्ड
  (3) वन्धनागार दण्ड
- कौटिल्य के अनुसार, प्रजा से अधिक, राज्य कर्मचारियों को अधिक दण्ड देना चाहिए।
- करों की चोरी करने वाले को मृत्युदण्ड दिया जाता था।

न्याय व्यवस्था –

- कौटिल्य के न्याय प्रशासन का सर्वोच्च न्यायधीश राजा था। उसनें निष्पक्ष न्याय व्यवस्था का समर्थन किया है। कौटिल्य के अनुसार, स्वधर्म रक्षा के लिए न्याय व्यवस्था अनिवार्य है।
- कौटिल्य न्याय व्यवस्था को दो भागों में बांटा–
  1. **व्यवहार या धर्मस्थ न्यायालय**
     – यह वर्तमान के **दीवानी कोर्ट** के समान था।
  2. **कंटक शोधन न्यायालय**
     – यह वर्तमान के **फौजदारी न्यायालय** के समान था।
- कौटिल्य ने त्रिस्तरीय न्याय व्यवस्था पर बल दिया–
  1. **जनपद संधि न्यायालय** – गाँव स्तर पर
  2. **संग्रह न्यायालय** – दस गाँव के समूह पर
  3. **द्रोणमुख न्यायालय** – 400 ग्रामों के समूह पर
- कौटिल्य ने प्रत्येक न्यायालय में तीन न्यायधीश और तीन अमात्य रखने का व्यवस्था दिया है।
- कौटिल्य के मतानुसार साला, सहायक, दास ऋणकर्ता, शत्रु, अपंग एवं राज्य द्वारा दंडित व्यक्ति को साक्षी न बनाने का सलाह दिया।

राजस्व प्रशासन –

- कौटिल्य ने राजकोष को राज्य का आधार स्तम्भ माना है। उन्होंने राजस्व विभाग का मुख्य समाहार्ता तथा सन्नीधाता को राजकीय कोषाध्यक्ष माना है।

कौटिल्य ने राजस्व व्यय की दो मदें बतायी हैं–

1. **आवर्तक** – दिन–प्रतिदिन के व्यय
2. **अनावर्तक**– वार्षिक व्यय

- कौटिल्य ने आय व्यय की समुचित निरीक्षण के लिए महालेखापाल के पद बताया है। उन्होंने हिसाब विभाग के अध्यक्ष को गणित की संज्ञा दिया है। उन्होंने वित्तीय वर्ष का अंत आषाढ़ माह को माना है। कौटिल्य ने वैश्याओं पर भी कर लगाने की सजा दी है।

उन्होंने राजस्व के आधार पर ग्रामों को 6 प्रकार में बांटा है –

1. **परिहारिक** – ये ग्राम करमुक्त थे।
2. **हिरण्य** – ये ग्राम सुवर्ण मुद्रा में कर चुकाया करते थे।
3. **आयुधीय** – ये ग्राम सेना के लिए सैनिक प्रदान करते थे, अर्थात कर के रूप में सिपाही देते थे।
4. **कुप्य** – ये ग्राम कच्चे माल के रूप में कर देते हैं।
5. **विष्टि** – ये ग्राम राज्य के कार्यों में कर के रूप में मजदूर देते थे।
6. **कर प्रतिकर** – ये ग्राम घी, दूध या चमड़े आदि के रूप में कर दिया करते थे।

अर्थशास्त्र में 18 तीर्थों का उल्लेख –

1. **मंत्री** – राजा को परामर्श देना।
2. **पुरोहित** – राजा को धर्म एवं नीति के विषय में संकेत देना।
3. **सेनापति** – सेना का संचालन
4. **युवराज** – राज्य का उत्तराधिकारी होता है।
5. **दोवारिक** – राजमहल का निरीक्षक

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

6. सन्निधाता – राजकोष का अध्यक्ष
7. दण्डपाल – सेना की व्यवस्था करने वाला प्रमुख
8. अन्तरवेशिक – राजा का अंगरक्षक सेना
9. प्रशास्ता – शिल्पियों का प्रधानाधिकारी (राजकीय कागजातों को सुरक्षित रखने वाला)
10. समाहर्ता – राज्य की आय का संग्रह करने वाला
11. प्रदेष्टा – जिले का प्रमुख अधिकारी (फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश)
12. दुर्गपाल – राज्य के समस्त दुर्गों की देखभाल
13. पौर (नागरक) – राजधानी का प्रमुख शासक
14. अन्तपाल – सीमावर्ती प्रदेशों की रक्षा के लिए
15. नायक – सेना का संचालक
16. व्यावहारिक – धर्मस्थ न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश
17. कर्मान्तिक – खानों और उद्योगों का अध्यक्ष होता है।
18. मन्त्रिपरिषद् अध्यक्ष – प्रधानमंत्री

अर्थशास्त्र के अध्यक्ष प्रचार अध्याय में 26 अध्यक्षों का उल्लेख हैं जिनमें से ये 7 मुख्य हैं –

1. पण्याध्यक्ष – यह वाणिज्य विभाग का अध्यक्ष था।
2. सुराध्यक्ष – यह आबकारी विभाग का अध्यक्ष था।
3. सीताध्यक्ष – यह राजकीय कृषि विभाग का अध्यक्ष था।
4. मुद्राध्यक्ष – पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष।
5. संस्थाध्यक्ष – व्यापारिक मार्गों का अध्यक्ष।
6. मानाध्यक्ष – दूरी और समय से सम्बन्धित साधनों को नियंत्रित करने वाला।
7. अक्षपटलाध्यक्ष – महालेखाकार।

➤ अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को गूढ़ पुरूष कहा गया है। अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का वर्णन किया गया है –
1. संस्था – एक ही स्थान पर रहने वाला।
2. संचरा – प्रत्येक स्थान पर भ्रमण करने वाला।

प्रांतीय शासन –

प्रशासनिक इकाई	प्रमुख
प्रांत	कुमार/आर्यपुत्र
मण्डल	प्रदेष्टा/प्रादेशिक
जिले	स्थानिक
दस गाँव	गोप
ग्राम	ग्रामिक

नोट – प्रांत सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई थी।
– ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।

➤ गोप – जन्म–मरण का विवरण रखने वाला अधिकारी
➤ स्थानिक – बिक्री कर वसूल करने वाला अधिकारी
➤ मौर्य सेना – 6 लाख पैदल सेना, 50,000 अश्वरोही, 9000 हाथी, 8,000 रथ।
➤ विशेष – नौसेना का प्रमाण मिलता है।

➤ सैन्य प्रशासन – 6 विभाग, जिसमें प्रत्येक में 5 सदस्य थे –
1. हाथी सेना, 2. रथ सेना, 3. पैदल सेना, 4. अश्वरोही सेना, 5. नौसेना, 6. यातायात व रसद आपूर्ति सेना।

➤ पाटलीपुत्र का वर्णन
30 सदस्यीय समिति द्वारा, जिसमें 6 विभाग थे–
1. जनगणना 2. विदेशी यात्री
3. उद्योग 4. वाणिज्य–व्यापार
5. कर 6. शिल्पकला।

मौर्यकालीन आर्थिक स्थिति

➤ इस काल में राज्य की आय का प्रमुख स्रोत भूमि कर था। इस काल में भूमि कर उपज का 1/6 भाग था। समस्त भूमि राजा की होती थी।
➤ इस काल का पूर्वी तट पर प्रसिद्ध बंदरगाह ताम्रलिप्ति तथा पश्चिमी तट पर प्रमुख बंदरगाह भृगुकक्ष था।
➤ मेगस्थनीज के अनुसार बिक्री कर न देने वाले के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान था।

सिक्के

➤ मौर्य साम्राज्य की मान्य मुद्राएँ – मयूर, पर्वत, अर्द्धचंद्र की छाप वाली आहत रजत मुद्राएँ।

अशोक के सिक्के –
1. कर्षापण – चाँदी
2. पण – चाँदी
3. काकनी – ताँबा
4. सुवर्ण – सोने से निर्मित
5. माषक – ताँबे का बना होता था।

➤ रूपदर्शक – मुद्राओं का परीक्षण करने वाला अधिकारी

➤ प्रधान उद्योग सूत्री वस्त्र उद्योग था।
➤ मौर्यकाल में भारत एक कृषि प्रधान देश था। सबसे अधिक संख्या किसानों की थी।
➤ अदेवमातृक भूमि – ऐसी भूमि जिसमें बिना वर्षा ही अच्छी खेती होती थी।
➤ सीताभूमि – अर्थात् सरकारी भूमि, जिसकी देख–रेख सीताध्यक्ष नामक अधिकारी करता था।
➤ बलि – एक प्रकार का धार्मिक कर था।
➤ भाग – भूमिकर में राजा का एक हिस्सा (उपज का हिस्सा)
➤ हिरण्य – वह कर जो अनाज के रूप में न लेकर नकद रूप में लिया जाता था।
➤ वार्ता – कृषि, पशुपालन एवं व्यापार को संयुक्त रूप से कहा गया। (अर्थशास्त्र में)

विशेष –

➤ रेशम का आयात चीन से होता था।
➤ मौर्यकाल में व्यापार स्थल एवं जल दोनों मार्गों से
➤ सोपारा (महाराष्ट्र) पश्चिमी तट पर स्थित प्रमुख बंदरगाह
➤ भारत से मिस्र को निर्यात – हाथी दाँत, सीपी, मोती, रंग आदि।

मौर्यकालीन सामाजिक स्थिति

➤ मौर्यकालीन समाज के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मैगस्थनीज की इण्डिका व अशोक के अभिलेखों से मिलती है।
➤ मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को सात (7) भागों में विभाजित किया था–
1) दार्शनिक, 2) किसान, 3) अहीर, 4) कारीगर व शिल्पी, 5) सैनिक, 5) निरीक्षक, 7) सभासद।
➤ अर्थशास्त्र में शूद्रों को आर्य कहा गया है।
➤ मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था में दासों का महत्त्वपूर्ण स्थान था।
➤ स्मृतिकाल की तुलना में मौर्यकाल में स्त्रियों की स्थिति बेहतर थी–
☞ सती प्रथा का प्रचलन नहीं था।
☞ पुनर्विवाह एवं नियोग प्रथा का प्रचलन था।
☞ स्त्रियों को विवाह–विच्छेद (तलाक) की अनुमति थी।

➤ तक्षशिला शिक्षा व साहित्य का प्रधान केन्द्र था।
➤ कौटिल्य ने भारत के प्राचीन धर्मग्रन्थ को 'त्रयी धर्म' कहा है।
➤ मौर्यकाल में मूर्ति पूजा आरंभ। मंदिरों की स्थापना हुई।

मौर्य शासन के अंत के कारण

➤ कमजोर उत्तराधिकारी (डी.एन. झा)
➤ संकटग्रस्त आर्थिक स्थिति (डी.डी. कौशाम्बी)
➤ अशोक की अहिंसक तथा शांति प्रिय नीति (कई विद्वान)।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

मगध साम्राज्य में ब्राह्मण वंश का उदय

ब्राह्मण वंश–

1. शुंग वंश (185–73 ई.पू.)
2. कण्व वंश (75 ई.पू.)
3. सातवाहन या आंध्र वंश (60 ई.पू.–240 ई.)
4. वाकाटक वंश

शुंग वंश

(काल : 185–73 ई.पू.)
(संस्थापक : पुष्यमित्र शुंग)

स्रोत – दिव्यावदन, बाण का 'हर्षचरित', तारकनाथ का विवरण, पतंजलि का 'महाभाष्य', गार्गी संहिता, कालिदास का 'मालविकाग्निमित्रम्'।

- पुष्यमित्र शुंग मौर्य वंश के अंतिम शासक **वृहद्रथ** की हत्या कर मगध में शुंग वंश की स्थापना की। (पुष्यमित्र मौर्यों की सेना का सेनापति था)

पुष्यमित्र शुंग–

- राजधानी – विदिशा
- पुत्र – अग्निमित्र शुंग
- स्थापत्य – पुष्यमित्र शुंग द्वारा साँची के स्तूप में बाहर लकड़ी के जंगलों (खिड़कियाँ) के स्थान पर पत्थर के जंगले लगाए गए।
  – भरहुत बौद्ध स्तूप में लगे जंगले श्रेष्ठ उदाहरण है।
  – साँची के महान स्तूप का कटघरा
- रचना – सुप्रसिद्ध व्याकरणाचार्य '**पतंजलि**' पुष्यमित्र शुंग के समकालीन थे।
  – पतंजलि ने अष्टाध्यायी (पाणिनी) जैसे दुरूह ग्रन्थ पर महाभाष्य लिखा।
- युद्ध – पुष्यमित्र शुंग ने दो बार यवनों को पराजित किया। (पहला यवन नेता–डेमेट्रियस था)
  – पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म का विरोधी माना जाता था।
  – इनके द्वारा अशोक के 84 हजार स्तूपों को नष्ट करने का उल्लेख मिलता है।

विशेष –

- शुंग वंश मगध साम्राज्य का पहला ब्राम्हण वंश था।
- पुष्यमित्र शुंग पहला शासक था, जिन्होंने **अश्वमेध यज्ञ** किया तथा वैदिक धर्म को पुनः जीवित किया। (कुल दो यज्ञ)
- पुष्यमित्र शुंग को मगध में प्रथम ब्राह्मण राज्य स्थापित करने एवं ब्राह्मण धर्म के पुनरूद्धार का श्रेय दिया जाता है।

अग्निमित्र शुंग–

- कालीदास द्वारा रचित '**मालिकाग्निमित्र**' का नायक है।

वसुमित्र–

- युध्द – सिन्धु के तट पर यूनानी को परास्त किया।
- वर्णन – 'मालविकाग्निमित्र' में
- विशेष – यवन सेनापति **मिनान्डर** को हराया था। (द्वितीय यवन–शुंग संघर्ष)

भागभद्र–

- इस वंश का नौवां शासक था।
- इसके शासनकाल में तक्षशिला के यवन नरेश
- '**एण्टीयालकीड्स**' ने अपने राजदूत '**हेलियोडोरस**' को विदिशा में स्थित उसके दरबार में भेजा। जिसने भागवत् धर्म ग्रहण कर लिया।
- हेलियोडोरस का बेसनगर स्थित गरूण स्तम्भ तत्कालीन ब्राह्मण (भागवत) धर्म से संबंधित पहला प्रस्तर स्तम्भ था।

देवभूति–

- शुंग वंश का 10वाँ और अंतिम शासक **देवभूति** था।
- शुंग वंश ऐसा राजवंश था, जिसने हत्याकर सत्ता हथियाई और जिसका अन्त भी हत्या के द्वारा हुआ।

शुंगकालीन मुद्रा/सिक्के –

स्वर्ण मुद्रा – निष्क, दीनार, सुवर्ण
ताँबे का सिक्का – कर्षापण
चाँदी का सिक्का – पुराण अथवा धरण

विशेष –

- 'षड्दर्शन' का संकलन इसी काल में हुआ।
- 'मनुस्मृति' की रचना इसी राजवंश के समय हुआ।
- मनुस्मृति के बाद विष्णुस्मृति की रचना इसी काल में हुई।
- इस काल में महाभारत और रामायण का संकलन शुरू हुआ।
- शुंगों के शासनकाल में यवनों द्वारा भारत पर आक्रमण किया गया।
- बोध गया के मंदिर के चारो तरफ जंगले का निर्माण इसी काल में किया गया।
- इस काल में अजंता के गुफाओं का निर्माण आरंभ हुआ। गुफा नं. 9 और 10 शुंगकाल हैं।
- इस काल में पुराणों की रचना शुरू हुई। मत्स्य पुराण और वायु पुराण इस काल की रचना हैं।

कण्व वंश

- संस्थापक – वासुदेव कण्व
- विशेष – शुंग वंश के अंतिम शासक 'देवभूति' की हत्या कर 75 ई.पू. में कण्व वंश की स्थापना की।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

सातवाहन वंश
(60 ई.पू. से 240 ई. तक)
संस्थापक – सिमुक

- **पृष्ठभूमि** – अंतिम कण्व वंश के शासक **सुशर्मा** की हत्या कर सिमुक ने सातवाहन वंश की स्थापना की।
- **अन्य नाम** – सिमुक को सिन्धुक, शिशुक, शिप्रक एवं वृशल भी कहा जाता है।
- **राजधानी** – **प्रतिष्ठान** (पैठन) गोदावरी नदी के तट पर (महाराष्ट्र)
- **धम** – वैदिक धर्म
- **सिक्का** – सीसे का 'पोटीन' सिक्का
- **प्रतिद्वन्दी** – शक् इनके सबसे बड़े प्रतिद्वंदी थे।
- **विशेष** – राजाओं का नाम अपने माताओं के नाम पर रखने की परम्परा।

प्रथम पराक्रमी शासक – शातकर्णी प्रथम

- इसने '**दक्खिनापथपति**' की उपाधि धारण की।
- सातकर्णी प्रथम ने दो 'अश्वमेघ यज्ञ' और एक 'राज्ञसूर्य यज्ञ' करवाए थे।
- सातकर्णी प्रथम के बाद उसकी पत्नी 'नागनिका' ने संरक्षिका 'के तौर पर शासन किया।

द्वितीय पराक्रमी शासक – हाल

- **विवाह** – श्रीलंका की राजकुमारी '**लीलावती**' से।
- **रचना** – '**गाथासप्तशती**' (भाषा – प्राकृत)
- **दरबारी कवि** – '**गुणाढ्य**' (बृहत्कथा के रचयिता तथा '**शर्ववर्मन**' ('कातंत्र' संस्कृत व्याकरण)

तृतीय पराक्रमी शासक –
गौतमी पुत्र सातकर्णी (106–130 ई.)

- **उपाधि** – 'पश्चिम का स्वामी'
  'त्रि–समुद्र तोय–पिता–वाहन'
  'अद्वितीय ब्राह्मण'
- **समकालीन** – शून्यवाद के संस्थापक एवं माध्यमिक सम्प्रदाय के प्रवर्तक **नागार्जुन** इसी के समकालीन थे।
- **युद्ध** – सातवाहन काल का सबसे विस्तृत साम्राज्य वाला शासक
  – क्षत्रियों के दर्प को इन्होंने दमन किया।
  – शकों, यवनों एवं पल्लवों को परास्त किया।
- **विशेष** – सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक
  – इसके नासिक से दो एवं कार्ले से एक अभिलेख मिले हैं।

चतुर्थ पराक्रमी शासक
वाशिष्ठी पुत्र पुलुवामी (130–154 ई.)

- यह शक् नरेश रूद्रदामन से पराजित हुआ।
- रूद्रदामन की बेटी से विवाह किया। (जूनागढ़ अभिलेख)

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य –

- सातवाहनों ने **सीसे** के सिक्के चलवाए।
- सातवाहन ने **बौद्ध धर्म को संरक्षण** दिया।
- सातवाहनों की **भाषा प्राकृत** एवं **लिपि ब्राह्मी** थी।
- सातवाहनों का शासनकाल लगभग 300 वर्ष तक चला।
- सातवाहनों के समय खुदवाए गए गुफाओं में '**कार्ले की गुफा**' सबसे पुरानी व महत्वपूर्ण है। **बौद्ध धर्म** से संबंधित है।
- ब्राम्हणों को **भूमि अनुदान** देने की प्रथा का आरंभ सातवाहन शासकों ने ही प्रारंभ किया। यह '**अग्रहार**' कहलाता था।

—00—

प्राचीन भारत में विदेशी आक्रमण

- 500 ई.पू. से 500 ई. के इस समयावधि में भारत में कुल सात राजवंशों ने भारत पर आक्रमण किया जो निम्नलिखित हैं–
  1. ईरानी या फारसी
  2. यूनानी
  3. बैक्ट्रियन या यवन
  4. पार्थियन या पल्लव
  5. सिथियन या शक्
  6. यू–ची या कुषाण
  7. हूण

भारत में ईरानी (फारसी) आक्रमण

- भारत में **प्रथम विदेशी आक्रमण** ईरान के **हखामनी वंश** के राजाओं द्वारा किया गया।
- भारत में आक्रमण करने वाला प्रथम ईरानी शासक **कुरूष** था। (558–530 ई.पू.)
- कुरूष ने जेड्रोसिया के रेगिस्तानी रास्ते से होकर भारत में आक्रमण किया।

द्वितीय शासक :
दायरबहु/दारा प्रथम (522–480 ई.पू.)

- भारत को जीतने में सफलता प्राप्त की
- इस सफलता का उल्लेख उसके **बेहिस्तून**, **पर्सिपोलस** व '**नक्शे रूस्तम**' अभिलेखों में मिलता है।
- फारसियों ने भारत में **सिग्लोई सिक्के** चलाये, जो **भारत में प्रचलित प्रथम सिक्का** था।
- फारसी स्वर्ण मुद्रा **डरिक** तथा रजत मुद्रा **सिग्लोई** थी।
- यहीं से **सर्वप्रथम भारत में मुद्रा प्रचलन प्रारंभ** हुआ।

यूनानी आक्रमण

- भारत में आक्रमण करने वाला प्रथम यूनानी शासक **सिकंदर** था।

सिकंदर –

- **पिता** – फिलीप द्वितीय (मेसोडोनिया शासक)
- **गुरू** – अरस्तु
- **थल सेनापति** – **सेल्युकस निबेटर**
- **जल सेनापति** – **निर्याकस**
- **मृत्यु** – 323 ई.पू.
- **स्थान** – बेबीलोन (ईराक)
- **विशेष** – सिकंदर ने सर्वप्रथम विश्व विजय का लक्ष्य रखा था।
  – सिकंदर के साथ निर्याकस, आनेसिक्रिप्टस एवं अरिस्टोब्यूलस भारत आए थे।
- **युद्ध** – सिकंदर ने **326 ई.पू.** में भारत के **हिन्दूकश पर्वत** से होकर गांधार से (वर्तमान खैबर दर्रा) भारत में प्रवेश किया।
  – भारत में **पहला मुकाबला** तक्षशिला के शासक **आम्भी** से हुआ। आम्भी पराजित।
  – इसके पश्चात् सिकंदर का मुकाबला पौरव शासक राजा **पोरस** से **झेलम या वितस्ता** नदी के किनारे हुआ।
  – इसे वितस्ता युद्ध या **हाइडेस्पीज युद्ध** के नाम से जाना जाता है। पोरस पराजित हुआ।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- पोरस की बहादुरी से प्रभावित होकर, सिकंदर ने राजा पोरस से मित्रता कर ली। यह एकमात्र शासक था, जिससे सिकंदर ने मित्रता की।
- सिकंदर के आक्रमण के समय **भारत का शासक** घनानंद था। घनानंद की विशाल सेना के भय ने सिकंदर को वापस लौटने पर मजबूर किया।
- सिकंदर की सेना ने **व्यास नदी** को पार करने से इंकार कर दिया तथा सिकंदर यहाँ से वापस लौट गया।
- वापस **जलमार्ग** से लौटते समय इराक के **बेबीलोन** में इसकी मृत्यु हुई।

भारत में सिकंदर की सफलता के कारण

- भारत में **केन्द्रीय सत्ता** का अभाव।
- सिकन्दर की **फौज** की **श्रेष्ठता**।
- भारत में **देशद्रोही शासकों** की सहायता

सिकंदर का भारत पर आक्रमण के प्रभाव –

- मौर्य साम्राज्य की उत्पत्ति
- **गंधार कला शैली** का विकास (2री शताब्दी ई.पू.)
- भारत में **साहित्यक व ज्योतिष विद्या** का प्रसार हुआ।
- भारत के क्षेत्रीय राज्यों में एकीकरण की भावना उत्पन्न हुई।
- भारत में **सुडोल व लेखयुक्त मुद्रा** का प्रचलन प्रारंभ हुआ।
- भारत का यूरोप के साथ **जलमार्ग** व **स्थल मार्ग** से व्यापार प्रारंभ हुआ।
- यूनानी मुद्राओं के अनुकरण पर भारत में **'उलूक'** शैली के सिक्के ढाले गए।

भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशी

आक्रमणकारियों का क्रम –

- 1. बैक्ट्रियन (यवन) 2. सीथियन (शक)
  3. पार्थियन (पहलव) 4. यू–ची (कुषाण)

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर–पश्चिमी भारत में मध्य एशिया व यूनानी राजवंशों के शासन की स्थापना हुई। इसमें यूनानी और सीथियन जातियाँ प्रमुख हैं। यूनानी शासकों में बैक्ट्रियन एवं पार्थियन राजवंश हैं, जबकि सीथियन शक व कुषाण।

नोट:– यवन आक्रमणों का उल्लेख प्रथम शताब्दी में रचित 'गार्गी संहिता' में है।

बैक्ट्रियन (यवन) आक्रमण

1. सेल्युकस

- 305 ई.पू. में सेल्युकस व चन्द्रगुप्त मौर्य के बीच युद्ध हुआ।
- मेगस्थनीज इसका राजदूत था।

2. एण्टीयोकस तृतीय

- 206 ई.पू. के लगभग हिन्दुकुश पर्वत पार करके सुभगसेन नामक भारतीय राजा को हराया तथा भारत के उत्तर–पश्चिम के एक बड़े भू–भाग पर अधिकार कर लिया।
- सुभगसेन को भारतीयों का राजा कहा – पॉलिबियस ने

3. डेमेट्रियस (200–175 ई.पू.)

- राजधानी – साकल
- इसने 183 ई.पू. में हिन्दूकुश पर्वतों को पार कर सिंध और पंजाब पर अधिकार कर लिया।
- **इसके भारतीय अभियान की पुष्टि** – पतंजलि के 'महाभाष्य', 'गार्गी संहिता' तथा 'मालविकाग्निमित्रम्' से

4. यूक्रेटाइडीज –

- राजधानी – तक्षशिला
- स्ट्रैबो ने इसे 'एक हजार नगरों का स्वामी' कहा है।

5. मिनान्डर (160–120 ई.पू.)

- राजधानी – साकल (वर्तमान स्यालकोट)
- विशेष – दूसरा बैक्ट्रियन शासक था।
  - इसने 165–160 ई.पू. तक भारत का आक्रमण किया।
  - बौद्ध साहित्य **'मिलिन्दपन्हों'** रचना में बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ वार्तालाप का वर्णन मिलता है।
  - **नागार्जुन** या नागसेन ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।
  - बौद्ध साहित्य मिलिन्दपन्हों में मिनान्डर को **मिलिन्द** कहा गया है।
  - 'मिलिन्दपन्हों' ग्रन्थ **'पाली'** भाषा में है।

भारतीय यूनानी सम्पर्क का परिणाम –

- निश्चित तिथि से काल गणना की प्रथा, (संवतों का प्रयोग), सप्ताह के सात दिनों का विभाजन, विभिन्न ग्रहों के नाम
- यूनानियों के सम्पर्क से पूर्व भारत में पंचमार्क व आहत सिक्के प्रयोग में लाए जाते थे।
- यूनानियों के प्रभाव के कारण भारतीय मुद्राएँ सुडौल व लेखयुक्त हुई।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख उत्कीर्ण करवाने एवं सोने के सिक्के जारी करवाने का श्रेय यवनों को ही है।
- यूनानी कला शैली की विशिष्टताओं को भारत में प्रचलित किया।
- बाद में यही 'गांधार कला शैली' के रूप में जन्मी।

- भारत से यवनों को पराजित कर निष्कासित करने का श्रेय **पुष्यमित्र शुंग** को जाता है।
- तक्षशिला के शासक ने शुंग शासक **भागभद्र** के दरबार में एक दूत **'हेलियाडोरस'** को भेजा, जिसने बेसनगर में **'गरुड़ स्तंभ'** का निर्माण कराया।

सीथियन (शक) आक्रमण

- शक शासक अपने को 'क्षत्रप' कहते थे।
- सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक **नहपान** था।
- तक्षशिला का प्रथम शक क्षत्रप शासक **मोग या मोयेज** (80 ई.पू.) था।
- चष्टण का उत्तराधिकारी शकों का सर्वाधिक प्रतापी राजा **'रूद्रदामन'** (130–150 ई.) हुआ।
- इसने सातवाहन नरेश दक्षिणापथस्वामी शातकर्णी **'पुलुवामी'** को दो बार परास्त किया था।
- इसकी जानकारी रूद्रदामन के **'जूनागढ या गिरनार अभिलेख'** से होती है।
- रूद्रदामन ने **सुदर्शन झील** का जीर्णोद्धार कराया।
- लगभग 57 ई.पू. में उज्जैन के शासक ने शकों को परास्त कर **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की व **'विक्रम संवत्'** चलाया।
- **रूद्रसिंह** तृतीय अंतिम शक शासक था, जिसकी हत्या चौथी शताब्दी ई. के अंत में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने कर दी और शकों को भारत से बाहर किया व 'शकारि' की उपाधि धारण की।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

पार्थियन(पहलव) आक्रमण

- संस्थापक – माउस या माओस (90–70 ई.पू.)
- राजधानी – तक्षशिला
- प्रथम प्रतापी शासक – **गोंदो फर्निस** (20–41 ई.)
- **विशेष** – ये मूलतः ईरानी थे।
- इसके समय में प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक **'सेण्ट थामस'** (50 ई.) भारत में आया। कालान्तर में इनकी हत्या मद्रास के समीप स्थित क्यालपुर नामक स्थान पर कर दी गई। (लगभग 50 ई. में आया)
- भारतीय अभिलेखों में शकों व पार्थियनों को संयुक्त रूप से **'शक्–पहलव'** कहा गया।
- इनका अन्त कुषाण आक्रमण से हुआ, जिसका उल्लेख 'पतंजर अभिलेख' में किया गया है।

यू-ची (कुषाण) आक्रमण

- संस्थापक – **कुजुल कडफिसेस**
- रोमन सिक्कों की नकल करके ताँबे के सिक्के चलवाए।
- **विम कडफिसेस** ने शिव, त्रिशुल और नंदी के आकृति युक्त सोने के सिक्के चलाए।
- **विम कडफिसेस** शैव धर्मावलम्बी था व **'महेश्वर'** की उपाधि धारण की थी।

कनिष्क (78–144 ई.)

- **राजधानी** – इसकी दो राजधानियां थीं।
- **प्रथम** – पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर)
- **दूसरी** – मथुरा
- **राजकवि** – अश्वघोष
- **विशेष** – इस वंश का सर्वप्रतापी शासक था।
  - कनिष्क बौद्ध धर्म के महायान शाखा का अनुयायी था।
  - इसके शासनकाल में **चतुर्थ बौद्ध संगीति** आयोजित हुआ।
  - चतुर्थ बौद्ध संगीति में नागार्जुन शामिल हुए थे।
  - कनिष्क का राज्यारोहण 78 ई. में हुआ। यहाँ से भारतीय पंचाग शक् संवत् प्रारंभ हुआ।
  - कनिष्क का चीन के नरेश के साथ अनेक बार युद्ध हुआ था।

कनिष्क के दरबार में चार रत्न थे–

1. **अश्वघोष** – साहित्यकार
   - **रचना** – **'बुद्धचरित'** (बौद्ध धर्म का महाकाव्य), सौन्दरानंद, सुत्रालंकार
   - **उपाधि** – **'भारत का मिल्टन'** कहा जाता है।
   - **विशेष** – कनिष्क ने इसे मगध से विजित किया।
2. **नार्गाजुन** – वैज्ञानिक
   - **रचना** – **'माध्यमिक सूत्र'**
   - **सिद्धांत** – सापेक्ष्यता का सिद्धांत
   - **उपाधि** – भारत का आइंस्टीन
3. **चरक** – **आयुर्वेद आचार्य**
   - **रचना** – **'चरक संहिता'**
   - **विशेष** – यह 'आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ' है।
4. **वसुमित्र** – चतुर्थ बौद्ध संगीति के अध्यक्ष
   - **रचना** – **'महाविभाषसुत्र'** (बौद्ध धर्म का विश्वकोष)

मूर्तिकला –

- कनिष्क के शासनकाल में मूर्तिकला की दोनों शैलियाँ प्रचलित थीं–

1. गांधार कला शैली –

- यह एक यर्थात्वादी शैली है।
- इसे **'इण्डो-बैक्ट्रियन शैली'**, **यूनानी–बौद्ध**, **इण्डो–ग्रिक** या भारतीय 'यूनानी कला शैली' भी कहा जाता है।
- **मूर्तियाँ काले स्लेटी पत्थर** चूने और मिट्टी से बनी हैं।
- इसमें **सर्वाधिक मात्रा** में बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- इस समय निर्मित बुद्ध की मूर्तियों के सिर यूनानी देवता **अपोलो** के समान होती थीं।
- अफगानिस्तान का **बामियान** बुद्ध प्रतिमाओं के लिए प्रसिद्ध था।
- इसे 'इण्डो–ग्रीक कला शैली' के नाम से भी जाना जाता है।
- मूर्तियाँ ध्यान, पद्मासन, धर्मचक्रप्रवर्तन, वरद तथा अभय मुद्राओं में बनी हैं।

2. मथुरा या भारतीय कला शैली –

- यह एक **आदर्शवादी शैली** है।
- मूर्तियाँ **लाल बलुआ पत्थर** की बनायी जाती थीं।
- बुध की मूर्ति का निर्माण सर्वप्रथम इसी कला शैली से हुआ।
- बुद्ध को भगवान का नौवाँ अवतार स्वीकार किया गया।
- **हिन्दू** व **जैन मूर्तियों** का निर्माण भी किया गया था।
- मथुरा से कनिष्क की सिरविहीन मूर्ति मिली है, जिसके निचले भाग पर कनिष्क नाम खुदा हुआ है।

सिक्के –

- भारत में **कुषाणों** के शासनकाल में **'सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के'** चलाए गए।
- सोने के सिक्कों में एक का नाम – **'शतमान'** दूसरे का नाम – **'निष्क'** तथा ताँबे के सिक्के का नाम – **'काकणी'**
- कुषाणों का मूल निवास चीन को माना गया है।
- कनिष्क का राज्य मध्य एशिया तक फैला हुआ था।
- मध्य एशिया के ताशकंद, काशगर व खेतान को विजित किया। मध्य एशिया के इन क्षेत्रों को जीतने वाला कनिष्क भारतीय इतिहास का पहला शासक था।
- कनिष्क ने शक् शासक चष्टन को भी परास्त किया था।
- कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुर नगर बसाया।
- कुषाण वंश का **अन्तिम शासक वासुदेव** था।
- कुषाण काल में भारत का सबसे अधिक व्यापारिक संबंध रोमन साम्राज्य के साथ था।
- कनिष्क के कश्मीर विजय का उल्लेख 'राजतरंगिणी' ग्रन्थ में मिलता है।
- कनिष्क के दरबार में अश्वघोष नामक साहित्यकार था, जिसकी रचनाओं की तुलना महान मिल्टन, डोटे, काण्ट एवं वाल्टेयर से की जाती है।
- कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध का अंकन मिलता है।
- कनिष्क के शासनकाल में ही बौद्ध धर्म की महायान शाखा का सूत्रपात हुआ।

—00—

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

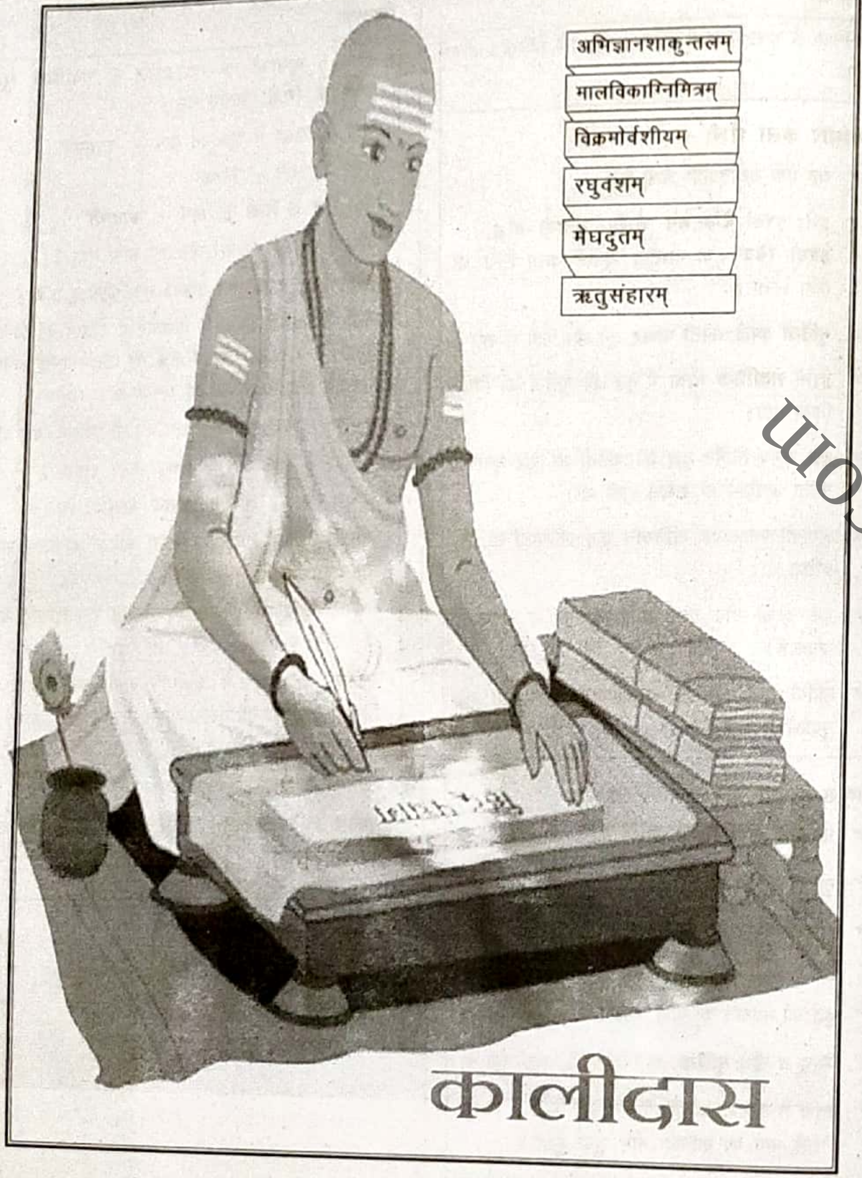

गुप्तकालीन भारत

गुप्त वंश

➤ कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद भारत में किसी बड़े साम्राज्य का अस्तित्व न रहा। किन्तु गुप्त साम्राज्य की स्थापना के साथ ही पुनः राजनीतिक एकता स्थापित हो गई। गुप्त शासकों ने दिग्विजय कर एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। इनका उदय तीसरी सदी के अंत में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ।

जाति-

➤ गुप्तों की जाति के संबंध में मतभेद है–

के.पी. जायसवाल	–	जाट
डॉ. राय चौधरी	–	ब्राह्मण
गौरी शंकर ओझा	–	क्षत्रिय

उत्पत्ति के स्रोत या जानकारी के स्रोत-

1. बौद्ध ग्रन्थ	–	'आर्यमंजूश्रीमूलकल्प', 'चन्द्रगर्भ परिपृच्छ'
2. जैन ग्रन्थ	–	'हरिवंश', 'कुवलयमाला'
3. लौकिक साहित्य	–	विशाखदत्त की 'देवीचन्द्रगुप्तम्' (नाटक), जिसमें रामगुप्त व चन्द्रगुप्त के बारे में जानकारी मिलती है।
4. अन्य साहित्य	–	'अभिज्ञानशाकुंतलम्', 'रघुवंशम्', 'मुद्राराक्षस', 'मृच्छकटिकम्', 'हर्षचरित्', वात्सायन का 'कामसूत्र' आदि।
5. अभिलेखीय साक्ष्य	–	समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति, उदयगिरि अभिलेख (चन्द्रगुप्त द्वितीय), कुमारगुप्त का विलसड़ स्तम्भ लेख, स्कंदगुप्त का भीतरी स्तम्भ लेख।
6. विदेशी यात्री	–	फाह्यान, चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय आया। ह्वेनसांग – कुमारगुप्त ने नालंदा विहार की स्थापना की।

गुप्तकाल के शासक व उनके कार्यकाल-

1. श्रीगुप्त (240–280 ई.)
2. घटोत्कच (280–319 ई.)
3. चन्द्रगुप्त प्रथम (319–335 ई.)
4. समुद्रगुप्त (335–375 ई.)
5. रामगुप्त (375–375 ई.)
6. चन्द्रगुप्त द्वितीय (375–414 ई.)
7. कुमारगुप्त (415–455 ई.)
8. स्कंदगुप्त (455–467 ई.)
9. भानुगुप्त
10. विष्णुगुप्त (550 ई. तक) – अंतिम शासक

विशेष – श्री गुप्त को गुप्त वंश का संस्थापक व आदिराज कहा जाता है।

– श्री गुप्त व घटोत्कच ने महाराज की उपाधि धारण की थी।

– गुप्त वंश की स्थापना श्रीगुप्त ने किया परन्तु वास्तविक संस्थापक – चन्द्रगुप्त प्रथम है।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त प्रथम

- राज्याभिषेक – 319 ई.
- उपाधि – 'महाराजाधिराज'
- विवाह – 'कुमारदेवी' (लिच्छवी कुल की कन्या)
- विशेष – गुप्त संवत् 319–320 ई. चलाया।
  – गुप्त संवत् व शक् संवत् (78 ई.) के बीच 241 वर्षों का अन्तर है।

समुद्रगुप्त

- अन्य नाम – 'भारत का नेपोलियन'
- उपाधि – 'परमभट्टारक', 'कविराज' व 'बहुकविता'
- लक्ष्य – 'धरणीबंध' (पृथ्वी को बाँधना)
- दरबारी कवि – हरिषेण
  रचना – प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख
- धर्म – वैष्णव धर्म का प्रबल समर्थक
- यज्ञ – अश्वमेघ यज्ञ करवाया।
- सिक्के – गरूड़, धनुर्धर, परशु, अश्वमेघ, व्याघ्रहंता एवं वीणासरण
- विशेष – गरूड़ मुद्राएँ सर्वाधिक लोकप्रिय थीं।

युद्ध अभियान–

- प्रथम शासक जिसने **विश्व विजय** स्वप्न देखा था।
- समुद्रगुप्त को **'सौ युद्धों का विजेता'** माना जाता है।
- समुद्रगुप्त द्वारा पराजित **'काँची'** का शासक **विष्णुगोप** था।
- इसे गणराज्यों के अन्त के लिए उत्तरदायी माना जाता है।
- दक्षिण को जीतने वाला **प्रथम भारतीय शासक**, परंतु विजय के पश्चात् **साम्राज्यों को** उनके शासकों को **वापस** कर दिया।

- इसने अपने दक्षिण विजय अभियान के दौरान तीन **नीतियाँ** चलाईं–
  1) **ग्रहण** (शत्रु पर अधिकार)
  2) **मोक्ष** (शत्रु को मुक्त)
  3) **अनुग्रह** (राज्य को लौटाना)
- समुद्रगुप्त की इस नीति को हरिषेण ने **'ग्रहणमोक्षानुग्रह'** के नाम से पुकारा।
- दक्षिण कोसल के महेन्द्रसेन (वाकाटक नरेश) तथा महाकांतार के व्याघ्रराज (नलवंशीय राजा) को पराजित किया।

महत्वपूर्ण तथ्य –

- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने गया में बौद्ध मंदिर बनवाने की अनुमति मांगी थी, जो उसे मिली।
- समुद्रगुप्त के चारण कवि **हरिषेण** ने अशोक के प्रयाग स्तंभ लेख पर समुद्रगुप्त की प्रशस्ति अभिलेख खुदवायी। इसे प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख के नाम से जाना जाता है तथा यह अभिलेख चंपू शैली (गद्य + पद्य शैली) में लिखा गया। इसके 7वें श्लोक में समुद्रगुप्त के विजय अभियानों का उल्लेख है।

रामगुप्त

- समुद्रगुप्त का पुत्र व उत्तराधिकारी था।
- पत्नी की रक्षा करने में असमर्थ था।
- शकों से चन्द्रगुप्त द्वितीय ने बचाया। जिसका उल्लेख विशाखदत्त कृत 'देवीचंद्रगुप्तम्' में मिलता है।

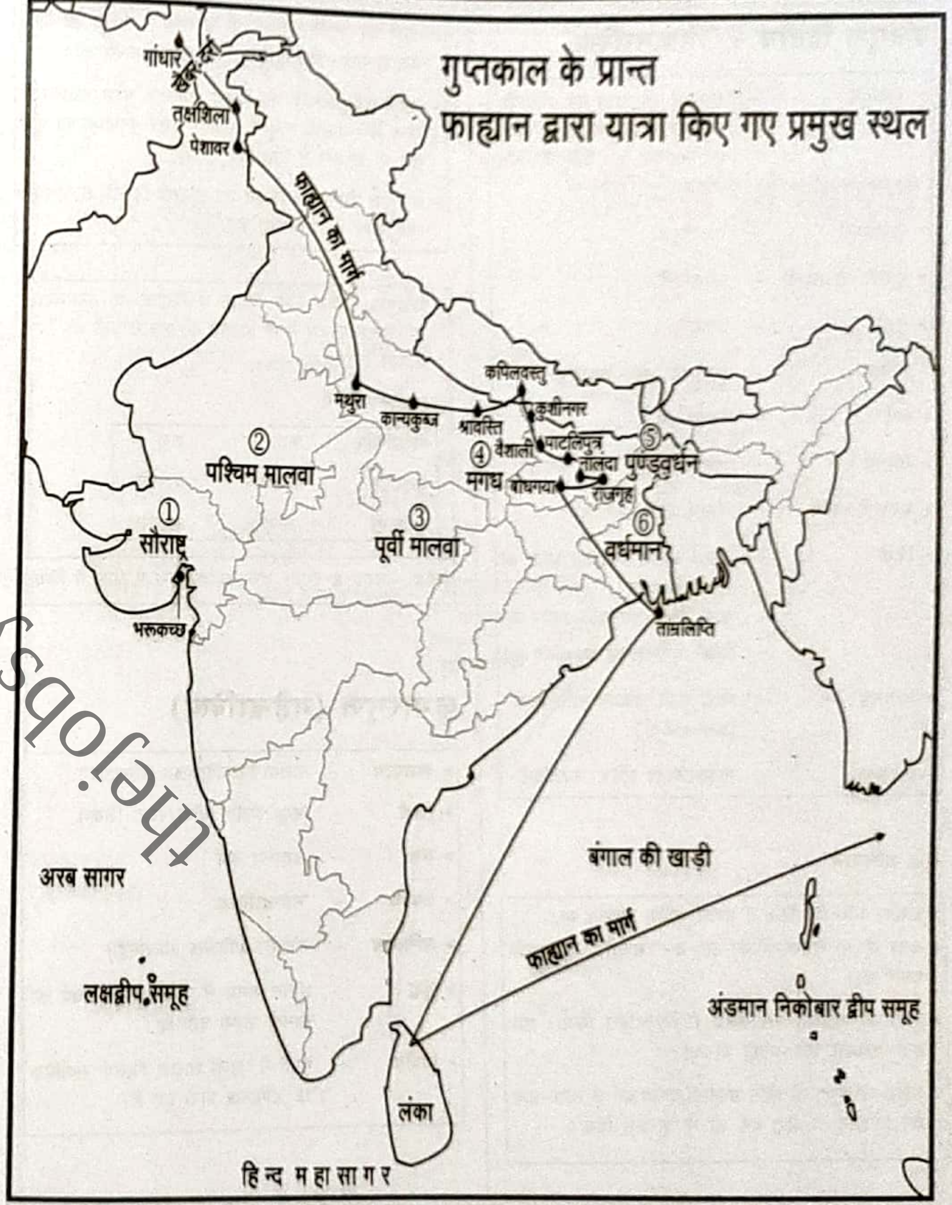

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त द्वितीय - 'विक्रमादित्य'

- पृष्ठभूमि – रामगुप्त की हत्या कर राजगद्दी पर बैठा तथा रामगुप्त की पत्नी ध्रुव स्वामिनी (ध्रुव देवी) से विवाह किया।
- राजधानी – पाटलीपुत्र
- दूसरी राजधानी – उज्जयिनी
- पुत्री – प्रभावती
  विवाह – वाकाटक नरेश रूद्रदामन से
- धर्म – वैष्णव धर्म
- उपाधि – गणारि, शकारी, परम भागवत
- दरबारी कवि – नौरत्न की मण्डली थी।
- सिक्के – रूपक नामक सर्वप्रथम चांदी का सिक्का चलवाया।
  – स्वर्ण सिक्के (धनुर्धारी प्रकार के)
  – सिक्कों में सिंह का वध करते हुए
- आगमन – चीनी यात्री फाह्यान भारत आया (399–414 ई.)
- स्थापत्य – महाकालेश्वर मंदिर, उज्जयिनी

युद्ध अभियान –

- उसका संधि विग्राहिक व प्रधान सचिव वीरसेन था।
- उत्तर के 10 गणराज्यों का अंत कर 'गणारि' की उपाधि धारण की।
- शकों को पराजित कर भारत से निष्कासित किया। अतः इन्हें 'शकारी' की उपाधि दी गई।
- धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनायी वैष्णव धर्म के साथ–साथ शैव (वीरसेन) व बौद्ध धर्म को भी संरक्षण दिया।

- शकों का पराजित करने के उपलक्ष्य में चाँदी का सिक्के चलाया तथा 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की।
- अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन से किया था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके साम्राज्य को गुप्त वंश के संरक्षण में मिलाया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के विजय का उल्लेख दिल्ली के मेहरौली लौह स्तंभ में उल्लेखित है।

- चन्द्रगुप्त द्वितीय स्वयं विद्वान व विद्वानों का आश्रयदाता था। इसके दरबार में नौ विद्वानों की एक मण्डली थी, जिसे नवरत्न कहा गया –

इस मण्डली में

वाराहमिहिर	वेतालभट्ट	शंकु
घटकर्पर	कालीदास	वररूचि
धनवन्तरि	क्षणपक	अमरसिंह

(कोड – वराह & वेताल शंघ का वध क्षण में अमर ने किया)

कुमारगुप्त (महेन्द्रादित्य)

- स्थापत्य – नालंदा विश्वविद्यालय (संस्थापक)
- सिक्के – 'मयूर शैली' (चाँदी/रजत सिक्का)
- यज्ञ – 'अश्वमेघ यज्ञ'
- उपाधि – 'महेन्द्रादित्य'
- अभिलेख – 'मंदसौर अभिलेख' (वत्सभट्टी)
- युद्ध – अंतिम समय में पुष्यमित्रों के संघर्ष का सामना करना पड़ा था।
- विशेष – गुप्तों में पहला शासक जिसके सर्वाधिक 18 अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

गुप्तकाल के अभिलेख एवं स्थापत्य

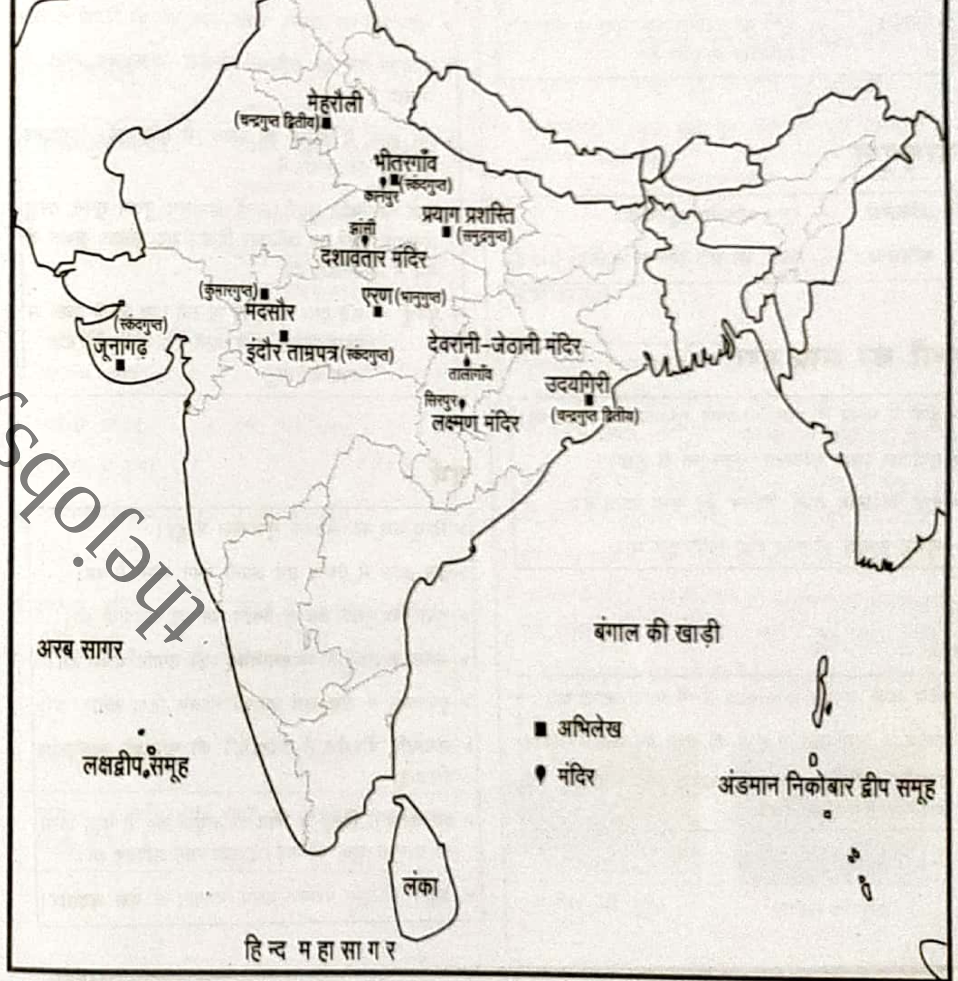

स्कंदगुप्त

- अभिलेख – भीतरगाँव अभिलेख, जूनागढ अभिलेख
- पुनरूद्धार – सुदर्शन झील
- निर्माण – विष्णु मंदिर (झील के किनारे)
- युद्ध – हूणों को पराजित कर भारत से निष्कासित किया।
- विशेष – हूणों का उल्लेख स्कंदगुप्त के भीतरगाँव अभिलेख में हुआ है।

भानुगुप्त

- अभिलेख – एरण अभिलेख खुदवाया।
- अभिलेख – पहली बार सती होने का उल्लेख। (510 ई.)

हूणों का आक्रमण -

- हूणों ने भारत में प्रथम आक्रमण गुप्तकाल में किया था।
- हूणों का प्रबल मुकाबला कुमारगुप्त से हुआ।
- हूणों का प्रथम राजा 'तिगिन' को माना जाता है।
- प्रसिद्ध शासक तोरमान तथा मिहिरकुल था।

विशेष –

- चीनी यात्री सूंगयुन (515–520 ई. में भारत आया था)
- मालवा के 'यशोवर्मन' ने हूणों की सत्ता को उखाड़ फेंका।
- **मंदसौर अभिलेख**, लगभग 532 ई. में मिहिरकुल को यशोवर्मन ने पराजित किया।

गुप्तकालीन संस्कृति

सामाजिक जीवन -

- सती प्रथा प्रारंभ।
- दास प्रथा चरम सीमा पर पहुँचा।
- इस काल में ब्राम्हणवाद का पुनुरूत्थान हुआ।
- पर्दा प्रथा का प्रचलन केवल उच्च वर्ग की स्त्रियों में था।
- कायस्थ वर्ग का सर्वप्रथम उल्लेख 'याज्ञवल्क्य स्मृति' में मिलता है।
- इस काल में अछूतों की संख्या में वृद्धि हुई। विशेषकर चण्डालों की संख्या में।
- शूद्रों की स्थिति सुधरी। उन्हें महाभारत, पुराण सुनने, घरेलु अनुष्ठान करने का अधिकार मिला। शूद्र मुख्यतः कृषक के रूप में उल्लेखित हैं।
- पुनर्मू – पति द्वारा छोड़ी गई या स्त्री द्वारा अपनी इच्छा से दूसरा विवाह करने वाली स्त्री को 'पुनर्मू' कहा जाता है। (मनु)

धर्म -

- हिन्दू धर्म की स्थापना गुप्तकाल में हुई।
- इस काल में वैष्णव धर्म अपनी चरम सीमा में था।
- गुप्त वंश मुख्य रूप से वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
- अनेक शासकों ने '**परमभागवत्**' की उपाधि धारण की।
- गुप्तकाल में **शैव धर्म** को भी संरक्षण दिया गया।
- **सेनापति वीरसेन** ने **उदयगिरि की गुफाओं** का निर्माण करवाया।
- इस काल में **विष्णु व शिव** की संयुक्त रूप से पूजा करने की परम्परा शुरू की गई। इसका नाम **हरिहर** था।
- त्रिमूर्ति की पूजा परम्परा प्रारंभ, भगवान के **दस अवतार**।

- भारत में **मंदिर निर्माण** की परम्परा इसी काल से प्रारंभ हुई।
- '**विष्णु**' एवं '**लक्ष्मी**' की पूजा गुप्तकाल में सर्वाधिक प्रचलित थी। **सूर्य पूजा** का प्रमुख केन्द्र '**मुल्तान**' था। यहाँ का '**सूर्य मंदिर**' प्रसिद्ध है।
- गुप्तकाल में ही प्रसिद्ध **बौद्ध** विहार 'नालंदा' की स्थापना की गई।

प्रमुख मंदिर -

1. **दशावतार मंदिर** – देवगढ़, झाँसी (उत्तर प्रदेश)
   – गुप्तकालीन मंदिर कला का सर्वोत्तम उदाहरण।
   – मंदिर निर्माण में शिखर का यह पहला प्रयोग था।
2. **भीतरगाँव का मंदिर** – कानपुर (उत्तर प्रदेश) **(लक्ष्मण मंदिर)**
3. **पार्वती मंदिर** – पन्ना (मध्य प्रदेश) **(नचना–कुठार)**
4. **देवरानी-जेठानी मंदिर** – तालागाँव (छ.ग.)
5. **लक्ष्मण मंदिर** – सिरपुर (छ.ग.), भीतरगाँव (कानपुर)
6. **विशणु मंदिर** – तिगवा, जबलपुर (मध्य प्रदेश)
7. **बौद्ध मंदिर** – नालंदा (बिहार)
8. **महाबोधि मंदिर** – बोधगया (बिहार)

नोटः– ये सभी मंदिर **ईंटों से निर्मित** तथा **नागर शैली** में बने हैं।

मूर्तिकला -

- सारनाथ व मथुरा का मूर्तिकला केन्द्रों के रूप में विकास हुआ।
- बुद्ध की मूर्ति के साथ ही हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ भी बनवाई गईं।
- शिव के **अर्द्धनारीश्वर रूप** की रचना इसी समय की गई।
- उदयगिरि से प्राप्त वराह अवतार की मूर्ति
- मथुरा से प्राप्त बुद्ध की मूर्ति, जिसमें वे खड़े हैं।
- सारनाथ में पद्मासन मुद्रा में प्राप्त बुद्ध की मूर्ति।
- सुल्तानगंज में प्राप्त बुद्ध की ताँबे की मूर्ति (वर्तमान में बकिंघम संग्रहालय)

चित्रकला -

- गुप्तकालीन चित्रों के उत्तम उदाहरण हमें महाराष्ट्र प्रान्त के **औरंगाबाद** में स्थित **अजन्ता** की गुफाओं तथा ग्वालियर के समीप स्थित **बाघ की गुफाओं** से प्राप्त होते हैं।
- अजन्ता के निर्मित **29 गुफाओं** में वर्तमान में **केवल 6** ही शेष हैं। **(गुफा संख्या 1, 2, 9, 10, 16, 17)**
- इन 6 गुफाओं में गुफा संख्या **16** एवं **17** ही गुप्तकालीन हैं।
- अजन्ता में प्रमुख चित्रों के विषय है – **मरणासन्न राजकुमारी** की, महात्मा बुद्ध का गृहत्याग, माता व पुत्र, जूलूस आदि।
- अजंता की गुफाएँ बौद्ध धर्म की **महायान शाखा** से संबंधित थीं।

एलोरा की गुफा

अजंता की गुफा

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख एवं उनके प्रवर्तक

	शासक/प्रवर्तक	प्रमुख अभिलेख
1)	समुद्रगुप्त	प्रयाग प्रशस्ति, एरण प्रशस्ति
2)	चन्द्रगुप्त द्वितीय	साँची अभिलेख, उदयगिरि शिलालेख, मेहरौली प्रशस्ति
3)	कुमारगुप्त	मंदसौर अभिलेख, उदयगिरि गुहालेख
4)	स्कंदगुप्त	जूनागढ़ प्रशस्ति, भीतरी स्तंभलेख
5)	कुमारगुप्त द्वितीय	सारनाथ बुद्धमूर्ति लेख
6)	भानुगुप्त	एरण स्तंभलेख

गुप्तकालीन साहित्य

- गुप्तकाल को **श्रेष्ठ कवियों** का काल कहा गया है।
- **पुराणों** का अंतिम रूप से संकलन गुप्तकाल में हुआ।
- **रामायण** और **महाभारत** का संकलन गुप्त युग में हुआ।
- गुप्तकाल को **संस्कृत साहित्य** का **स्वर्ण युग** माना जाता है।
- **'बुद्धदर्शन'** का प्रतिपादन व **18 पुराणों** का अंतिम संकलन इसी काल में हुआ।

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	नाटककार
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त
देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त
मृच्छकटिकम्	शूद्रक
स्वप्नवासदत्तम्	भास
प्रतिज्ञायौगंधरायणम्	भास
चारुदत्तम्	भास

विशेष– गुप्तकाल को **'स्वर्ण युग'**, **'क्लासिकल युग'** एवं **'पैरीक्लीन युग'** भी कहा जाता है।

अन्य साहित्यकार

वात्स्यायन	– कामसूत्र
अमरसिंह	– अमरकोष (संस्कृत का शब्दकोष)
बुद्धघोष	– विसुद्धिमार्ग
सिद्धसेन	– न्यायावार्ता

गुप्तकाल में चिकित्सा

- **वाग्भट्ट** – 'अष्टांगहृदय' की रचना की।
- **धनवंतरी** – आयुर्वेद आचार्य
- **सुश्रुत** – भारत के पहले सर्जन
  – ये तीनों आयुर्वेद के चिकित्सक थे।
  – बौद्ध विद्वान नागसेन/नागार्जुन ने इस चिकित्सा का आविष्कार किया।

गुप्तकालीन विज्ञान के ग्रन्थ

आर्यभट्ट– खगोलविद्, गणितज्ञ व ज्योतिषविद्

- **रचना** – आर्यभट्टीय, सूर्य सिद्धांत
  – आर्यभट्टीय एकमात्र ग्रंथ, जिसमें रचनाकार का नाम है।
- **विशेष** – π का मान 3.14 बताया।
  – पृथ्वी के गोल होने का प्रमाण दिया।
  – पृथ्वी के परिधि का लगभग दूरी बताया।
  – भारत के प्रथम उपग्रह का नामकरण इन्हीं के नाम पर
  – चन्द्रग्रहण व सूर्यग्रहण का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विश्लेषण किया।
  – प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक जिसने यह बताया, कि सूर्य स्थिर है तथा पृथ्वी उसके चारों ओर चक्कर लगा रही है।
  – दशमलव प्रणाली, बीजगणित एवं शून्यवाद के जनक।

ब्रह्मगुप्त

- **रचना** – ब्रह्मसिद्धांतिका
- **विशेष** – भारत का न्यूटन कहते हैं।
  – न्यूटन से पहले गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत दिया।

वराहमिहिर – खगोलविद्

- **रचना** – वृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका

भास्कराचार्य – गणितज्ञ

- **रचना** – लीलावती

नोट:– भारत में साहित्य विकास के कारण इसे प्राचीन भारत का स्वर्ण काल कहा जाता है।

अन्य तथ्य -

- संस्कृत ग्रंथों का यूरोपीय भाषा में अनुवाद
  - अभिज्ञानशाकुंतलम – विलियम जोंस
  - भगवतगीता – विल्किंस
- रोमन शास्त्र मुख्यतः खगोलशास्त्र की पुस्तक है।
- गुप्तकालीन चार शैव सम्प्रदाय थे–
  1) माहेश्वर
  2) पाशुपत – लकुलीश
  3) कापालिक
  4) कालामुख

गुप्त प्रशासन -

- प्रशासन मौर्यों से कम केंद्रित था।
- सम्राट की तुलना देवताओं से की जाती थी।
- केन्द्रीय शासन के विभिन्न भागों को 'अधिकरण' कहते थे।
- गणतंत्रीय राजव्यवस्था का ह्रास हुआ।
- प्रशासन राजतंत्रात्मक व्यवस्था पर आधारित था।
- देवत्व का सिद्धांत प्रचलित था।
- कुशल प्रशासन के लिये विशाल गुप्त साम्राज्य कई प्रांत में बंटा था।
- प्रांतों को **अवनि**, **देश** अथवा **भुक्ति** कहा जाता था।
- देश या राष्ट्र प्रशासन की सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई

प्रशासनिक इकाई

देश या राष्ट्र भुक्ति
↑
विषय
↑
वीथि
↑
पेठ (ग्रामों का समूह)
↑
ग्राम (शासन की सबसे छोटी इकाई)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- भुक्ति का प्रमुख 'उपरिक' कहलाता था।
- भुक्ति का विभाजन जनपद में तथा जनपद या विषय का प्रमुख '**विषयपति**' या '**कुमारामात्य**' कहलाता था।
- ग्राम का मुखिया '**ग्रामिक**' कहलाता था।
- ग्राम सभा को **ग्राम जनपद** एवं **पंचमंडली** कहा जाता था।
- **अग्रहार** – सिर्फ ब्राह्मणों को प्राप्त होने वाला अनुदान
- **विशेष** – सातवाहन काल से भूमिदान की परम्परा शुरू हुई थी, परन्तु सर्वाधिक भूमिदान गुप्तकाल में दिया गया।

देश या राष्ट्र भुक्ति
↓
विषय
↓
बीथि
↓
पेठ (ग्रामों का समूह)
↓
ग्राम (शासन की सबसे छोटी इकाई)

- **प्रमुख अधिकारी** –

महासेनापति	– सेना का नेतृत्व
महाबलाधिकृत	– सेना व छावनी का प्रमुख (सर्वोच्च अधिकारी)
रणभांडागारिक	– सैन्य व वित्त (सैनिकों) की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला अधिकारी
दण्डपाशिक	– पुलिस प्रमुख
महादण्डनायक	– न्यायाधीश
महासंधिविग्रहक	– युद्ध व शांति का मंत्री
महाप्रतिहार	– शाही महलों का रखवाला
पुरपाल	– नगर का प्रमुख अधिकारी।

- **विकेन्द्रित प्रशासन** – साम्राज्य प्रान्तों में विभाजित था। प्रान्त 'भुक्ति' कहलाते थे। भुक्ति का प्रमुख 'उपरिक' कहलाता था।

व्यापार -

- पूर्व में ताम्रलिप्ती (कोलकाता) तथा पश्चिम में गुजरात के भड़ौच से व्यापार किया जाता था।
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल उज्जैन था।
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग वस्त्र उद्योग था।
- इन्होंने कृषि सुधार की तरफ ध्यान आकृष्ट किया। सिंचाई के लिए नहरें बनवाईं व कृषकों को अनेक सुविधाएँ प्रदान की। (सुदर्शन झील की मरम्मत)
- **खिल/सिल** – वह भूमि, जो जोती नहीं जाती थी।
- गुप्त राजाओं ने **सर्वाधिक सोने के सिक्के जारी** किये, जिन्हें 'दीनार' कहा गया।
- निखान निधि (छिपा खजाना) पर राज्य एवं ब्राह्मणों का हिस्सा होता था।
- रेशम व्यापार – भारत और रोम के मध्य महत्वपूर्ण व्यापार का आधार था।

शिक्षा -

- नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। इसे कुमारगुप्त ने बनवाया था।

मुद्रा -

- ताँबे के सिक्कों का प्रचलन गुप्तकाल में कम था।
- इस काल में सर्वाधिक मात्रा में सोने के सिक्के जारी किए गए।
- सोने के सिक्के को **दीनार** तथा चाँदी के सिक्के को **रूपक** कहा जाता था।
- गुजरात विजय के पश्चात् चाँदी के सिक्के चलाए। (चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शकों को परास्त करने पर)
- गुप्तों की स्वर्ण मुद्राओं में स्वर्ण की मात्रा कुषाणों की स्वर्ण मुद्राओं की तुलना में कम थी।

—000—

गुप्तोत्तर कालीन भारत

(550 ई. 750 ई. के बाद)

पुष्यभूति वंश

- जानकारी के स्त्रोत–

बाणभट्ट	– हर्षचरित
व्हेनसांग	– सी–यू–की
रविकीर्ति	– ऐहोल प्रशस्ति
इत्सिंग	– का यात्रा वृतांत

पृष्ठभूमि –

- गुप्त वंश की समाप्ति के साथ ही देश में राजनीतिक एकता का पतन हो गया एवं अनेक छोटे–छोटे वंशों का उदय हुआ।
- थानेश्वर/थाणेश्वर को राजधानी बनाकर पुष्यभूति ने वर्धन वंश या पुष्यभूति वंश की नींव रखी।
- हवेनसांग के विवरण एवं आर्यमंजुश्रीकल्प में वर्धनों को 'वैश्य' कहा गया है।

प्रभाकर वर्धन –

- **वास्तविक संस्थापक** – **प्रभाकर वर्धन**
- **अन्य नाम** – प्रतापशिला
- **राजधानी** – थाणेश्वर (हरियाणा, अंबाला जिले)

हर्षवर्धन –

- **राजधानी** – कन्नौज
- **शासनकाल** – 606–647 ई. तक
- **उपाधि** – परमभट्टारक नरेश, हूण–दक्षिण केसरी
- **अन्य उपाधि** – महाराजाधिराज, सकलोत्तरापथनाथ
- **धर्म** – बौद्ध धर्म (महायान शाखा)
- **विशेष** – विष्णु एवं शिव की भी स्तुति करता था।
- **हर्ष की रचना** – रत्नावली, नागानंद, प्रियदर्शिका
- **दरबारी कवि** – बाणभट्ट
  रचना – **हर्षचरित**
- **विदेशी यात्री** – हवेनसांग (चीनी)
  अन्य नाम – यात्रियों में राजकुमार, शाक्य मुनि
  रचना – **सी–यू–कि**।
  विशेष – हवेनसांग 630–640 ई. के बीच भारत आया था।
- **आयोजन** – दो धर्म सभा का (643 ई.)
  1. **कन्नौज** (अध्यक्ष – हवेनसांग)
  2. **प्रयाग** (इस आयोजित सभा को '**मोक्ष परिषद**' कहा गया।)
- **विद्या का केन्द्र** – नालंदा व वल्लभी
- **युद्ध** – हर्षवर्धन को चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा नदी के तट पर पराजित किया तथा इसका वर्णन 'एहोल अभिलेख' (634 ई.) में करवाया।
- **मृत्यु** – हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज पर अधिपत्य स्थापित करने के लिए **त्रिपक्षीय संघर्ष** हुआ।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- **त्रिपक्षीय संघर्ष** – पाल वंश, गुर्जर प्रतिहार वंश, राष्ट्रकूट वंश के मध्य हुआ।
- अंतिम विजय राष्ट्रकूट वंश की हुई। परन्तु शासन गुर्जर प्रतिहारों ने किया।

विशेष –

- हर्षवर्धन अंतिम हिन्दू सम्राट था।
- हर्ष संवत् (606 ई.) की शुरूआत हुई।
- हर्षवर्धन ने भारत में कुम्भ मेले की शुरूआत की।
- हर्ष का साम्राज्य उत्तर में हिमालय, दक्षिण में नर्मदा नदी, पूर्व में असम, पश्चिम में सौराष्ट्र तक था।

पल्लव वंश

राजधानी – कांचीपुरम (तमिलनाडु)

- संभवतः पल्लव स्वतंत्र राज्य स्थापित करने के पूर्व सातवाहनों के सामंत थे।
- प्राथमिक जानकारी प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख व चीनी यात्री ह्वेनसांग की यात्रा से मिलती है।

प्रथम पल्लव शासक – विष्णुगोप

- **राजधानी** – कांची
- **विशेष** – समुद्रगुप्त द्वारा दक्षिणापथ अभियान के समय कांची का शासक था। (प्रयाग प्रशस्ति)

प्रथम प्रसिद्ध शासक – विष्णुगुप्त (सिंह विष्णु) (575–600 ई.)

- **राजधानी** – कांची
- **अन्य नाम** – अवनि सिंह
- **दरबारी कवि** – भारवि (संस्कृत)
  रचना – 'किरातार्जुनियम्'
- **स्थापत्य** – मामल्लपुरम् के आदिबराह गुहा मंदिर

द्वितीय प्रसिद्ध शासक

महेन्द्रवर्मन प्रथम (600–630 ई.)

- **उपाधि** – 'मत्तविलास', 'विचित्र चित्त',
- **धर्म** – प्रारंभ में शैव फिर जैन धर्म
- **नाटक** – **'मत्तविलास प्रहसन'** (हास्य ग्रंथ)

विशेष –

- **मण्डप वास्तु शैली** को प्रोत्साहन
- इसे **पुलिकेशिन द्वितीय** ने परास्त किया।
- इसके काल में **पल्लव–चालुक्य** एवं **पल्लव–पाड्य** संघर्ष शुरू हुआ।

तृतीय प्रसिद्ध शासक – नरसिंहवर्मन प्रथम (630–668 ई.)

- **उपाधि** – वातपीकोंड
- **स्थापत्य** – 'महाबलीपुरम्' शहर बसाया तथा लंका को जीता तथा यहाँ सप्तरथ मंदिर बनवाया।
- **चीनी यात्री** – ह्वेनसांग इसी समय कांची आया था।
- **युद्ध** – इसने **पुलकेशिन द्वितीय** को पराजित किया तथा इसके पीठ पर **विजय शब्द** गुदवाया।

चतुर्थ प्रसिद्ध शासक

नरसिंहवर्मन द्वितीय (692–720 ई.)

- **समकालीन कवि** – 'दण्डिन'
- **रचना** – दशकुमारचरितम्
- **अन्य** – अलवार संत (वैष्णव धर्म)
- **स्थापत्य** – कांचीपुरम् के **कैलाशनाथ मंदिर**, (राजसिद्धेश्वर मंदिर)
  – महाबलीपुरम् का समुद्रतटीय मंदिर, एरावतेश्वर मंदिर (कांची)

अपराजित (879–897 ई.)

- **विशेष** – पल्लव वंश का **अंतिम शासक** था।
  – इसके समय में दक्षिण भारत में चोलों का उदय हुआ।

महत्वपूर्ण तथ्य –

- ब्राह्मणों के उन्नति का काल था।
- पल्लव शासक **वैष्णव धर्मावलम्बी** थे।
- इसी समय **'नयनार' (शैव)** तथा **'अलवार' (वैष्णव)** संत प्रसिद्ध हुए।
- पल्लव वास्तुकला ही दक्षिण की द्रविड़ शैली का आधार बनी।
- **रथ मंदिर** का निर्माण हुआ। इन रथों को **सप्त पैगोडा** भी कहा जाता है।
- 9वीं शताब्दी तक पल्लव शासन का अंत हो गया और वहाँ तंजौर के चोलों का शासन हो गया।

चालुक्य वंश

बादामी या वातापि के चालुक्य (छठी से आठवीं शताब्दी)

- **आरंभिक शासक** – जयसिंह व उसके पुत्र रणराय हुए।
- **प्रथम ऐतिहासिक शासक** – जयसिंह
- **वास्तविक संस्थापक** – पुलकेशिन प्रथम
- **विशेष** – इसने ही वातापी/बादामी को चालुक्य सत्ता की राजधानी बनाया।

राजा मंगलेश (597–609 ई.)

- कल्चुरियों को परास्त किया।

सर्वप्रसिद्ध शासक – पुलकेशिन द्वितीय (609–642 ई.)

- **उपाधि** – दक्षिणापथेश्वर, परमेश्वर
- **दरबारी कवि** – रविकीर्ति
- **अभिलेख** – एहोल प्रशस्ति
- **उल्लेख** – हर्षवर्धन की गज सेना का
- **युद्ध** – इसने हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के तट पर पराजित कर परमेश्वर की उपाधि धारण की।
  – इसने कदम्बों की राजधानी बनवासी को उजाड़ दिया।
  – पल्लव वंशी शासक नरसिंहवर्मन प्रथम ने पुलकेशिन द्वितीय को परास्त कर उसकी राजधानी बादामी पर अधिकार कर लिया। इस विजय के बाद नरसिंहवर्मन ने 'वातापिकोंड' की उपाधि धारण की।
- **चीनी यात्री** – 641 ई. में ह्वेनसांग ने दक्षिण की यात्रा की व इसके शासन की प्रशंसा की।
- **विशेष** – इसने ईरान के राजा खुसरो द्वितीय के दरबार में अपना दूतमण्डल भेजा था।

कीर्तीवर्मन II

- अंतिम शासक
- इसके सामंत दंतिदुर्ग (राष्ट्रकूट) ने परास्त किया।

कल्याणी के चालुक्य –

- **संस्थापक** – तैल/तैलप द्वितीय
- **राजधानी** – मान्यखेट
- **विशेष** – आरंभ में यह राष्ट्रकूटों का सामंत था

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

सर्वप्रसिद्ध शासक

विक्रमादित्य सष्ठ (1070–1126 ई.)

- दरबारी कवि – विल्हण
  रचना – विक्रमांकदेवचरित्
- दूसरे कवि – विज्ञानेश्वर
  रचना – मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृतिपर टीका)
  – हिन्दू विधि की पुस्तक
- विशेष – चालुक्य शाखा का सर्वाधिक महान एवं अंतिम शासक

वेंगी के चालुक्य

- संस्थापक – विष्णुवर्धन
- 615 ई. में उत्तरी तथा दक्षिणी मराठा प्रदेश में पुलकेशिन द्वितीय द्वारा नियुक्त विष्णुर्वधन ने आन्ध्र प्रदेश में पूर्वी चालुक्य वंश की स्थापना की। इनकी राजधानी वेंगी थी।

सर्वप्रतापी शासक : विजयादित्य तृतीय

- सेनापति – पंडरंग
- दंतिदुर्ग ने चालुक्य वंश को समाप्त कर राष्ट्रकूट वंश की नींव डाली।

राष्ट्रकूट वंश

- संस्थापक – दन्तिदुर्ग (736 से 756 ई.)
- राजधानी – माल्यखेट
- प्रारंभिक राजधानी – नासिक

प्रथम प्रसिद्ध शासक – कृष्ण प्रथम

- स्थापत्य – कृष्ण प्रथम ने एलोरा की गुफाओं का निर्माण पूर्ण करवाया व उसके अंदर कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया।

द्वितीय प्रसिद्ध शासक – ध्रुव (धारावर्ष)

- युद्ध – राष्ट्रकूट का प्रथम शासक जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया।

तृतीय प्रसिद्ध शासक – गोविन्द तृतीय

- युद्ध – प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय को परास्त किया।
  – त्रिपक्षीय संघर्ष को अंतिम रूप से जीता तथा कन्नौज पर कब्जा किया।

अमोघवर्ष –

- दरबारी कवि – जिनसेन ('आदिपुरान' के रचनाकार)

कृष्ण तृतीय –

- उपाधि – सकलदक्षिणाधिपति
- विशेष – चोल शासक परांतक प्रथम को हराया।

महत्वपूर्ण तथ्य –

- एलोरा व एलिफेंट गुफा, मंदिरों का निर्माण इन्हीं के समय हुआ।
- अलमसूदी ने मान्यखेट के राजा वल्लराज को विहन के चार राजाओं में गिना है।
- राष्ट्रकूटों ने अपने साम्राज्य में मुस्लिम व्यापारियों को बसने और इस्लाम प्रचार की छूट दी थी।

गुर्जर-प्रतिहार वंश

संस्थापक – हरीशचन्द्र
राजधानी – अन्हिलवाड़ (राजस्थान)

प्रसिद्ध शासक : नागभट्ट प्रथम

- शासनकाल – 750 से 770 ई.
  अन्य नाम – मलेच्छों का नाशक
- विशेष – इसी ने सर्वप्रथम अरबों के आक्रमण को विफल किया था। :

प्रसिद्ध शासक : वत्सराज

- शासनकाल – 730 से 756 ई.
- युद्ध – इसी के समय से कन्नौज पर अधिकार हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारंभ हुआ।
  – इसने पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया किन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ।
- विशेष – वत्सराज प्रतिहार साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
  – 'सम्राट' की उपाधि धारण करने वाला इस वंश का पहला शासक था।
  – 19वीं शताब्दी में उत्तर भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में प्रतिहारों ने बांधा था।

प्रसिद्ध शासक : मिहिरभोज

- राजधानी – कन्नौज
- अन्य नाम – 'वरूआ' एवं राजा भोज प्रथम
- उपाधि – 'आदिवराह' (वष्णु का भक्त था)
- सिक्के – चाँदी के 'द्रम्भ' सिक्के चलवाए थे।
- युद्ध – धर्मपाल व ध्रुव से पराजित हुआ।
- सैन्य शक्ति – अरबी यात्री सुलेमान ने इनकी सैनिक शक्ति व राज्य में व्याप्त शक्ति व्यवस्था की प्रशंसा की है।
- विशेष – मिहिरभोज प्रतिहार वंश का सबसे प्रतापी शासक था।

प्रसिद्ध शासक : महेन्द्रपाल

- दरबारी विद्वान – राजशेखर
  रचना – कर्पूरमजंरी, काव्यमीमांशा एवं 'विद्धशालभजिका', 'बालरामायण'

प्रसिद्ध शासक : महिपाल

- विदेशी यात्री – 'अलमसूदी'
- विशेष – अलसमूदी ने प्रतिहारों को 'अलगुर्जर' व राजा को 'बौरा' कहा।

अंतिम शासक : यशपाल (1036 ई.)

महत्वपूर्ण तथ्य –

- यह वैष्णव धर्मावलम्बी थे।
- इसके समय कन्नौज का गौरव शिखर पर था।
- गुर्जर प्रतिहारों ने विदेशी आक्रमण से भारत में द्वारपाल की भूमिका निभायी।
- दिल्ली नगर की स्थापना तोमर नरेश अनंगपाल ने 11वीं सदी के मध्य में की।
- विशेष – 1036 ई. में राष्ट्रकूटों ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया।

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

पाल वंश

➤ शासनकाल	–	750 से 770 ई.
➤ संस्थापक	–	गोपाल
➤ राजधानी	–	पश्चिम बंगाल
➤ स्थापत्य	–	विक्रमशीला विश्वविद्यालय की नीव रखी।
	–	ओदन्तपुरी विहार की स्थापना करायी।

प्रसिद्ध शासक : धर्मपाल (770–810 ई.)

➤ स्थापत्य	–	विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया।
➤ युद्ध	–	पाल वंश का एकमात्र शासक जिसने 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में भाग लिया।

अन्य प्रसिद्ध शासक : देवपाल

➤ प्रारंभिक राजधानी	–	पाटलीपुत्र
➤ नई राजधानी	–	मुंगेर (बिहार)
➤ विशेष	–	बौद्ध धर्म का द्वितीय संस्थापक कहा जाता है।

अंतिम शासक : गोविन्दपाल (1119 ई.)

➤ विशेष	–	सुलेमान ने पाल राज्य की यात्रा की व पाल शासक को 'रूहमा' (धर्मपाल) कहा।

—000—

गुप्तोत्तर कालीन भारत (550–800)

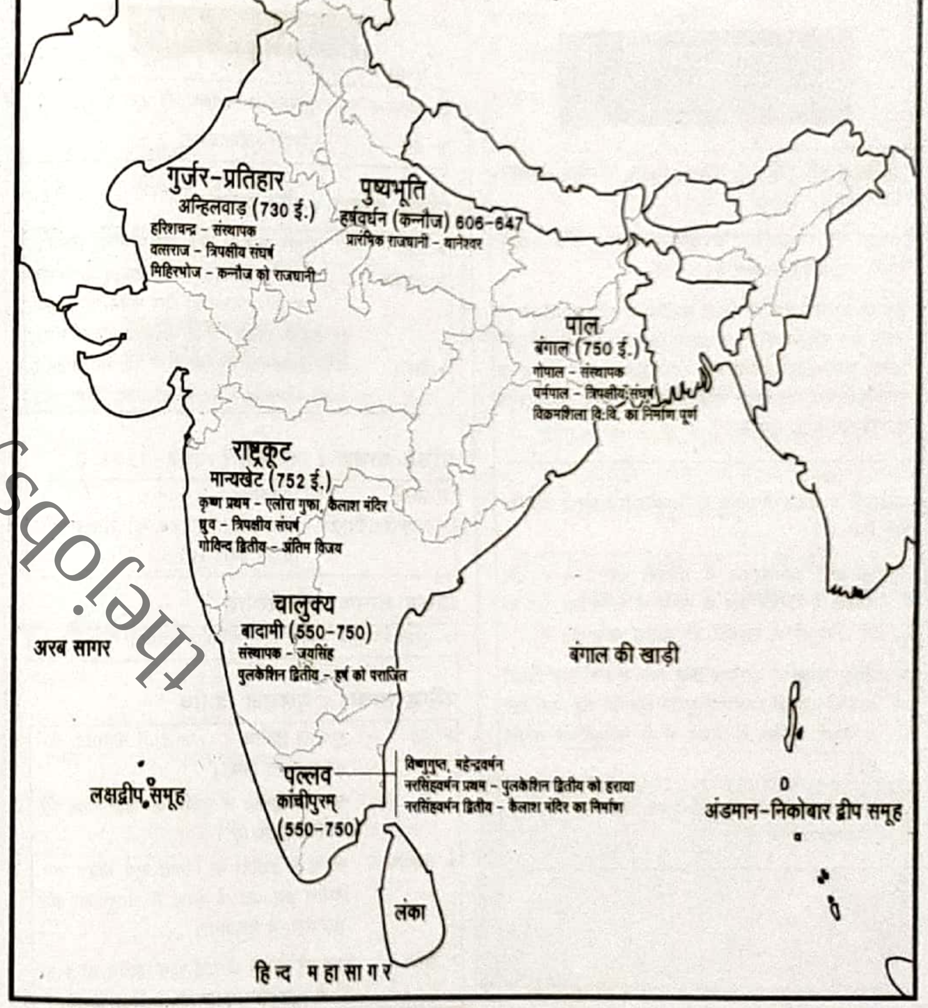

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत में राजपूत काल

राजपूत काल
(काल : 800–1200 ई.)

- तिथिक्रम की दृष्टि से गुर्जर–प्रतिहार राजपूतों में सबसे पहले आए।
- कल्हण की 'राजतरंगिनी' व 'कुमारपालचरित्' में 36 राजपूत कुलों का वर्णन मिलता है।
- हर्ष के पश्चात् देश में किसी केन्द्रीय सत्ता का अस्तित्व न रहा। देश की राजनीतिक एकता छिन्न–भिन्न हो गई और अनेक छोटे–छोटे राज्यों का उदय हुआ। इनमें से अनेक राजपूत राज्य कहलाए। राजपूत शब्द संस्कृत के राजपुत्र का बिगड़ा हुआ रूप है।

- राजपूतों के उदय के संबंध में निम्नलिखित प्रमुख मत दिए गए हैं–
  - **डी.आर. भण्डारकर व ईश्वरी प्रसाद** ने भारतीय समाज में विदेशी मूल के लोगों के सम्मिलित होने को ही राजपूतों के उत्पत्ति का कारण माना है।
  - **वी.ए. स्मिथ** के अनुसार शक तथा कुषाण जैसी विदेशी जातियाँ यहाँ के समाज में पूर्णतः घुलमिल गईं। इन देशी व विदेशी जातियों के मिश्रण से ही राजपूतों की उत्पत्ति हुई।
  - राजपूतों के उदय के अग्निकुण्ड का सिद्धांत 'चन्दरबरदाई' ने दिया।

सोलंकी वंश

- संस्थापक – मूलराज प्रथम (942 से 995 ई.)
- क्षेत्र – गुजरात (अन्हिलवाड़)

प्रसिद्ध शासक : भीम प्रथम

- युद्ध – परमार शासक भोज को पराजित किया।
- स्थापत्य – इसके शासनकाल में माउंटआबू के प्रसिद्ध जैन मंदिर दिलवाड़ा जैन मंदिर का निर्माण इसके सामंत विमल के द्वारा किया गया।
- विशेष – इसी के समय 1025 ई. में मोहम्मद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर में आक्रमण किया था।

प्रसिद्ध शासक : जयसिंह (1094–1153 ई.)

- उपाधि – 'सिंहराज'
- दरबारी आचार्य – जैन आचार्य हेमचंद को संरक्षण प्रदान किया था।

प्रसिद्ध शासक : कुमारपाल

- इसने सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।

प्रसिद्ध शासक : मूलराज द्वितीय

- युद्ध – मूलराज द्वितीय ने 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को पराजित किया।
  – मूलराज द्वितीय ने पृथ्वीराज चौहान को भी पराजित किया था।
- स्थापत्य – मोधेरा में बड़ौदा के निकट सूर्य मंदिर का निर्माण इस वंश के काल में 'वस्तुपाल' और 'तेजपाल' ने करवाया।
- विशेष – मूलराज द्वितीय के भाई भीम द्वितीय को 1187 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने पराजित किया।

गहड़वाल वंश

- संस्थापक – चन्द्रदेव
- राजधानी – कन्नौज

अंतिम प्रसिद्ध शासक : जयचंद (1170–1193 ई.)

- दरबारी – श्रीहर्ष
- रचना – नैषधचरित
- पुत्री – संयोगिता
- युद्ध – चन्दावर (1194 ई.) जयचंद विरूद्ध मोहम्मद गोरी। परिणाम – जयचंद मारा गया।

चौहान वंश

- संस्थापक – वासुदेव
- प्रारंभिक राजधानी – अहिच्छत्र
- नई राजधानी – अजमेर (अजयमेरू)
- स्थापना – अजय राज ने अजमेर शहर की स्थापना की।

प्रथम प्रसिद्ध शासक : विग्रहराज

- स्थापत्य – अजमेर का संस्कृत कॉलेज
- दरबारी कवि – सोमदेव
  रचना – 'ललितविग्रहराज'
- विशेष – कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसके खण्डहर में 'ढाई दिन का झोपड़ा' बनवाया था।

द्वितीय प्रसिद्ध शासक : पृथ्वीराज चौहान

- अन्य नाम – 'राय पिथौरा'
- विवाह – 'संयोगिता' (कन्नौज की राजकुमारी)
  – अपहरण करके विवाह किया था।
- पिता – सोमेश्वर
- राजधानी – दिल्ली को जीत करके राजधानी बनाया।
- दरबारी कवि – चन्द्रबरदाई
  रचना – 'पृथ्वीराज रासो'
- विशेष – बिजौलिया शिलालेख में चौहानों की पूरी वंशावली मिलती है।

युद्ध अभियान –

- इसने तराईन का दो युद्ध लड़ा था–
  (1) **तराईन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)**
  - पृथ्वीराज चौहान V/S मोहम्मद गौरी
  - पृथ्वीराज चौहान विजय

  (2) **तराईन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)**
  - पृथ्वीराज चौहान V/S मोहम्मद गौरी
  - मोहम्मद गौरी की विजय
  - जयचंद द्वारा धोखा देने के कारण पृथ्वीराज चौहान पराजित हुआ तथा उसकी हत्या कर दी गई।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

राजपूत काल (800-1200 ई.)

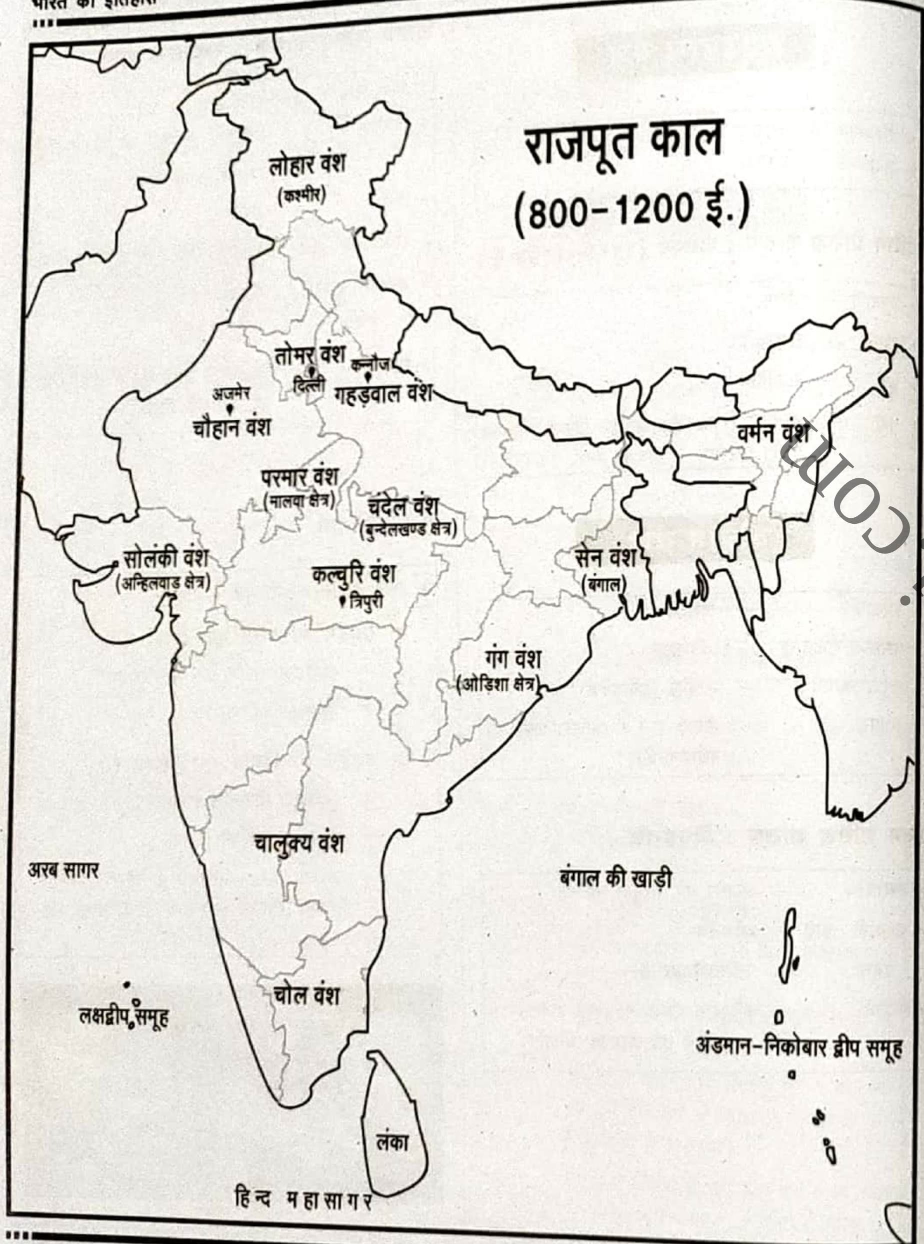

तोमर वंश

- शासक – अनंगपाल तोमर
- स्थापना – दिल्ली शहर की स्थापना की।

परमार वंश

- क्षेत्र – मालवा
- संस्थापक – उपेन्द्र कृष्णराज
- प्रारंभिक राजधानी – उज्जैन
- परवर्ती राजधानी – धार

प्रसिद्ध शासक : राजा भोज

- राजधानी – धारनगरी बसाया तथा राजधानी बनाया।
- निर्माण – 'भोजताल' झील (भोपाल)
  - धार में **सरस्वती मंदिर** बनवाया।
  - मुस्लिम शासकों ने इसे तोड़वाकर **'कमालपासा'** मस्जिद बनवाया।
  - वर्तमान में **हिन्दू-मुस्लिम** के मध्य **विवाद** का कारण है।

कश्मीर का शासन (800-1200)

कार्कोट वंश

संस्थापक – दुर्लभवर्द्धन (724-770)

- प्रसिद्ध शासक – ललितादित्य, मुक्तपीड़
- स्थापत्य – मार्तण्ड मंदिर (सूर्य मंदिर)
- दरबारी कवि – भवभूति (कन्नौज से प्राप्त)
  रचना – 'मालती माधव'

उत्पल वंश

संस्थापक – अवन्तिवर्मन

- इस वंश के राजा क्षेमगुप्त की पत्नी दिद्दा ने 50 वर्षों तक शासन किया।

लोहार वंश

प्रसिद्ध शासक : हर्ष

- अन्य नाम – कश्मीर का नीरो
- दरबारी कवि – कल्हण
  रचना – 'राजतरंगिनी' (12वीं सदी)

अंतिम शासक : जयसिंह

- विशेष – तुर्क शासक **जैनुल अबादीन** जिसे **कश्मीर का अकबर** कहते हैं।

सेन वंश (बंगाल)

संस्थापक – सामन्त सेन

- शासक – विजयसेन
- राजधानी – विजयपुर

प्रसिद्ध शासक : लक्ष्मण सेन

- दरबारी कवि – जयदेव
  रचना – 'गीतगोविन्द'

चंदेल वंश

- संस्थापक – नन्नुक (831 ई.)
- राजधानी – कालिन्जर/महोबा, फिर खजुराहो
  प्राचीन नाम – जैजाक भुक्ति (जयसिंह के नाम पर)
  क्षेत्र – बुन्देलखण्ड

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

प्रथम शासक : यशोवर्मन

- राजधानी – महोबा
- स्थापत्य – चतुर्भुज मंदिर का निर्माण
  - खजुराहो मंदिर का निर्माण कार्य शुरू किया।
  - खजुराहो में खर्जूरवाहक मंदिर का निर्माण भी कराया।
  - खजुराहो के प्रसिद्ध कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण करवाया।

द्वितीय शासक : धंगदेव

- राजधानी – महोबा से खजुराहो स्थानांतरित की।
- उपाधि – 'महाराजाधिराज'
- स्थापत्य – खजुराहो मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया।
- विशेष – इसे चंदेलों की वास्तविक स्वाधीनता का संस्थापक माना जाता है।

तृतीय शासक : विद्याधर

- युद्ध – कन्नौज के प्रतिहार शासक राज्यपाल की महमूद गजनवी के समक्ष **बिना युद्ध के आत्मसमर्पण** कर देने के कारण हत्या कर दिया।
  – इसने महमूद गजनवी से शांति समझौता किया।

महत्वपूर्ण तथ्य –

- धंग राजपूत इसी चंदेल शाखा से संबंधित हैं।
- आल्हा व उदल नामक दो सेनापति परमार्दिदेव के दरबार में थे।
- कीर्तिवर्मन की सभा में कृष्ण मिश्र रहता था, जिसने 'प्रबोध चन्दोदय' की रचना की।

कल्चुरि वंश

संस्थापक – कोकल्ल प्रथम (845 ई.)
राजधानी – त्रिपुरी (जबलपुर)

- मूल पुरूष – कृष्णराज
- संस्थापक – वामराजदेव
- स्थायी शासन – कोकल्य देव
- वर्णन – पुराण, पृथ्वीराजरासो, अल्बरूनी द्वारा
- वंशज – हैहय सहस्त्रार्जुन

विशेष –

- छत्तीसगढ़ में सबसे लंबी अवधी तक शासन करने वाला वंश था।
- कल्चुरि नरेश गांगेयदेव के सिक्कों पर लक्ष्मीजी की विशिष्ट आकृति चिन्हित है।
- गांगेयदेव ने '**विक्रमादित्य**' की उपाधि धारण की।
- शासक 'युवराज', जिसने 'केयूरवर्ण' की उपाधि धारण की, के दरबार में राजशेखर रहता था, जिसने 'काव्यमीमांशा' व 'विद्वसालमंजिका' की रचना की।

गंग वंश

संस्थापक – इन्द्रवर्मा प्रथम
क्षेत्र – ओड़िशा

प्रथम शासक : अनंतवर्मन चोडगंग

- स्थापत्य – जगन्नाथ मंदिर (पुरी), लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर) का निर्माण करवाया।

द्वितीय शासक : नरसिंहवर्मन चोडगंग

- स्थापत्य – 'कोणार्क के सूर्य मंदिर' का निर्माण करवाया।

—00—

भारत में संगम काल

प्रथम ई. से 1200 ई. तक

संगम का अर्थ – संघ, परिषद, गोष्ठी है।
संगम काल में तीन राजवंश थे।

(1) **चेर राजवंश**
राजधानी – वान्जी (केरल)
प्रतीक चिन्ह – धनुष
प्रथम शासक – उदियनजेरल (लगभग 130 ई.)

(2) **चोल वंश**
राजधानी – उरूवैर (तमिलनाडु)
प्रतीक चिन्ह – बाघ

(3) **पाण्ड्य वंश**
राजधानी – मदुरई (तमिलनाडु)
प्रतीक चिन्ह – मछली

- तीन सम्मेलन या संगम निम्न हैं–

1. **प्रथम सम्मेलन**
   स्थान – मदुरई (तमिलनाडु)
   अध्यक्ष – अगस्त ऋषि
2. **द्वितीय सम्मेलन**
   स्थान – कपाटपुरम (अलवै)
   अध्यक्ष – तोल्कापियर
   विशेष – तोलकप्पियम (तमिल व्याकरण ग्रंथ प्राप्त)
3. **तृतीय सम्मेलन**
   स्थान – मदुरई (तमिलनाडु)
   अध्यक्ष – नक्कीरर
   विशेष – 'अवधिष्ट' तमिल साहित्य का संकलन

विशेष –

- इन तीनों सम्मेलन में समस्त तमिल साहित्य का संकलन हुआ।
- इन तीनों वंशों को संगम काल कहते हैं। क्योंकि कि इस समय साहित्य विद्या के तीन सम्मेलन या संगम बुलाए गए थे।

इस काल की प्रमुख रचनाएँ–

1. **शिल्पदिकारम्**
   - **रचनाकार** – इलांगो आदिगलम्
   - **विशेष** – तमिल साहित्य का **प्रथम महाकाव्य**।
     – इस ग्रंथ में पवित्रता, पत्नी की पूजा की प्रतिष्ठा का उल्लेख है।
2. **मणिमेखलै**
   - सितलई सत्तार
   - **विशेष** – यह **बौद्ध धर्मग्रंथ** है।
   - यह कोवलव के जीवन चरित्र पर आधारित है।
3. **जीवक चितांमणि**
   - **रचनाकार** – तिरूत्तक्कदेवर
   - **विशेष** – यह जैन धर्म का प्रसिद्ध ग्रंथ है।
4. **कुरल**
   - **रचनाकार** – तिरूवल्लुवर
   - **विशेष** – **तमिल बाईबिल** भी कहा जाता है।

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

उत्तर प्राचीन कालीन चोल या द्वितीय चोल

(काल : 850–1200 ई.)

- राजधानी – तंजौर
- संस्थापक – विजयालय
- उपाधि – 'नरकेसरी'
- इस वंश की प्रधानता स्थापित करने का श्रेय परांतक प्रथम को है।

प्रसिद्ध शासक :

राजराज प्रथम –

- धर्म – शैव
- उपाधि – राजराज, शिवपादशेखर
- स्थापत्य – **वृहदेश्वर मंदिर/राजराजेश्वर** (तंजौर) तथा **ऐरावदेश्वर मंदिर**, (तंजौर)

विशेष – यह **विश्व धरोहर** की सूची में शामिल है।

- युद्ध
  - – नागपट्टनम में शैलेंद्र शाषक को **बौद्ध विहार** बनाने की अनुमति दी थी।
  - – पांडयों की राजधानी मदुरा पर अधिकार किया।
  - – **श्रीलंका पर आक्रमण** किया तथा वहाँ के शासकों को पराजित किया। परंतु श्रीलंका को अपने **अधीन नहीं** कर पाया।

राजेन्द्र प्रथम –

- पिता – राजराज प्रथम
- कार्यकाल – 1014 से 1040 ई.
- राजधानी – गंगैकोण्ड चोलपुरम्
- गुरू – शैव संत इसानशिव पंडित
- युद्ध – **गंगाघाटी के अभियान** की सफलता पर इन्होंने 'गंगैकोण्डचोल' की उपाधि धारण की।
  - – श्रीलंका को पूर्णरूप से जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाया।
  - – उत्तर भारत के राज्यों में कलिंग व बंगाल को जीता।
  - – 2 बार दूतमंडल चीन भेजा।

चोलों का प्रशासन

- **आय के मुख्य स्त्रोत** – कृषि तथा व्यापार कर (1/3)
- **सभा** – अग्रहारों और ब्राह्मणों की सभा
- **नगरम्** – व्यापारियों की सभा
- **स्थानीय स्वशासन** चोल कालीन प्रणाली की **मुख्य विशेषता** थी।
- चोल काल में स्त्रियों की स्थिति पूर्वकाल की तुलना में बेहतर थी।
- चोलों ने प्रशासन को चार पदसोपानों में बाँटा–

(1) राज्य – मण्डलम् (प्राचीन नाम)

(2) जिला – कोट्टम

(3) तहसील – नाडू

(4) राजस्व ग्राम – कुर्रम

- चोलों की शक्तिशाली नौसेना के कारण बंगाल की खाड़ी को **चोलों की झील** कहा जाता था।

धर्म :–

- चोल मुख्यतः शैव धर्म के उपासक थे तथा इन्होंने शैव धर्म के साथ–साथ वैष्णव धर्म को भी संरक्षण प्रदान किया।
- इनके काल में धर्म के दो प्रकार के संघ थे–
  1. **नयनार संघ** – शैव धर्म के अनुयायी
  2. **अलवार संघ** – वैष्णव धर्म के अनुयायी

विशेष –

- इस काल में भक्तिकाल की शुरूआत हुई।
- शिव की नृत्यरत धातु की नटराज प्रतिमा का निर्माण।
- प्राचीन काल में चोलों की पंचायत व संस्था बहुत प्रसिद्ध थी। जिसे **'ऊर'** कहा जाता था।

शंकराचार्य	– अद्वैतवाद
रामानुजाचार्य	– विशिष्ट द्वैतावाद

मंदिर निर्माण –

- कन्नड़ साहित्य के त्रिरत्न – पंप, पोन्न, रन्न।
- तमिल साहित्य के त्रिरत्न – कंबन, औट्टकुट्टन और पुगलेंदि।
- इनके समय दक्षिण भारत में मंदिर निर्माण की **द्रविड़ शैली** का विकास हुआ।
- इस शैली के प्रमुख मंदिर **कांची** का तथा **तंजौर** में राजराज द्वारा निर्मित **'राजराजा मंदिर'** या **वृहदेश्वर मंदिर** है।

(1200 ई. तक का इतिहास समाप्त)

—00—

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत में अरबी या तुर्की आक्रमण
या
गुप्तोत्तर काल में विदेशी आक्रमण

7वीं शताब्दी –

- इस्लाम धर्म की शुरूआत – पैगम्बर हजरत मुहम्मद
- स्थान – मक्का
- हिजरी संवत् की शुरूआत – 622 ई.

भारत में अरबी आक्रमण (711-715) –

- 712 ई. में अरबी शासक मोहम्मद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया।
- भारत पर आक्रमण करने वाला **प्रथम अरबी मुस्लिम** मुहम्मद बिन कासिम था।
- भारत में सिंध प्रांत के दाहिर के शासक पर आक्रमण किया।
- परन्तु इसने भारत में स्थायी रूप से शासन नहीं किया तथा वापस लौट गया।

भारत में तुर्क आक्रमण –

प्रथम शासक : मोहम्मद गजनवी (मृत्यु – 1030 ई.)

- भारत पर आक्रमण करने वाला **प्रथम तुर्की मुसलमान** सुबुक्तगीन था।
- यह गजनी (तुर्की से ईरान के बीच का क्षेत्र) का शासक था।
- यह प्रथम तुर्की था, जिसने भारत के कई क्षेत्रों को जीतने में सफलता हासिल की थी।
- पहला शासक जिसने 'सुल्तान' की पदवी धारण की।
- इसने हिन्दूओं का कत्लेआम किया तथा मूर्तियों को भंग कर '**बुतशिकन**' एवं '**गाजी**' की उपाधि धारण की।
- **भारत पर कुल आक्रमण** – 17

  आक्रमण की अवधि – 1000 से 1026–27 ई. के मध्य

  आक्रमण का कारण – 1. धन लूटना एवं
  2. इस्लाम धर्म का प्रचार
- **प्रथम आक्रमण** – 1000 में जयपाल के विरूद्ध किया।
- **छठ्वां आक्रमण** – 1008 ई. में महमूद ने आनंदपाल को वैहिन्द के युद्ध में परास्त किया।
- **16वाँ आक्रमण** – 1025 ई. में **सोमनाथ मंदिर** पर किया।
- **17वाँ (अंतिम)** – 1026 ई. में राजस्थान के खोखर जाति के विरूद्ध लड़ा।
- इसने नगरकोट स्थित प्रसिद्ध 'ज्वाला मंदिर' को लूटा।
- इनके साथ जो साहित्यकार भारत आए –
  1. **अलबरूनी** – 'तहकीक–ए–हिन्द'
     या
     'किताबुल–ए–हिन्द'
     या
     'तारीखे हिन्द'

  विशेष – अलबरूनी गजनवी का **दरबारी कवि** था। वह **संस्कृत** का विद्वान था।

  2. **फिरदौसी** – शाहनामा (Book of King)
  3. **उतबी** – इतिहासकार
  4. **बैहाकी**

द्वितीय शासक : मोहम्मद गौरी (मृत्यु – 1206 ई.)

- यह भी गजनी का शासक था।
- युद्ध का उद्देश्य धर्म प्रचार एवं धन लूटना था।
- यह शहाबुद्दीन मुहम्मद या मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन साम के नाम से जाना जाता था।

भारत पर युद्ध अभियान –

1175 – प्रथम आक्रमण भारत पर जाटों के विरूद्ध किया।

1178 – सोलंकी शासक मूलराज द्वितीय से पराजित हुआ।

1191 – **तराईन का प्रथम युद्ध**
- **मोहम्मद गौरी V/S पृथ्वीराज चौहान**
- पृथ्वीराज चौहान विजयी

1192 – **तराईन का द्वितीय युद्ध**
- मोहम्मद गौरी V/S पृथ्वीराज चौहान
- **मोहम्मद गौरी विजयी**। इसी युद्ध से भारत में मुस्लिम शक्ति की स्थापना हुई।

1194 – **चन्दावर का युद्ध**
- मोहम्मद गौरी V/S जयचन्द्र मोहम्मद गौरी विजयी
- चन्दावर युद्ध के पश्चात् मोहम्मद गौरी ने भारत का शासन कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंपकर गजनी लौट गया।
- गौरी का **अंतिम अभियान** पंजाब के 'खोखर जाति' के विरूद्ध था।

- गौरी ने प्रत्यक्ष शासन नहीं किया। उसने गुलाम नियुक्त किए जो निम्न हैं–
  1. कुतुबुद्दीन ऐबक (दिल्ली)
  2. बख्तियार खिलजी (बंगाल)
  3. कुवाया (सिन्ध)
  4. याल्दौस (गजनी)
- गौरी ने सिक्कों में लक्ष्मी माता की तस्वीर जारी किया।
- गौरी के साथ मोइनुद्दीन चिश्ती भारत आया था।
- 1206 ई. में मोहम्मद गौरी के मृत्यु के पश्चात् उसका गवर्नर कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का शासक बना। चूंकि ऐबक मोहम्मद गौरी का गुलाम था। अतः ऐबक के वंश को गुलाम वंश कहा गया।

(प्राचीन भारत समाप्त)

मोहम्मद गौरी

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

द्वितीय खण्ड

मध्यकालीन भारत का इतिहास

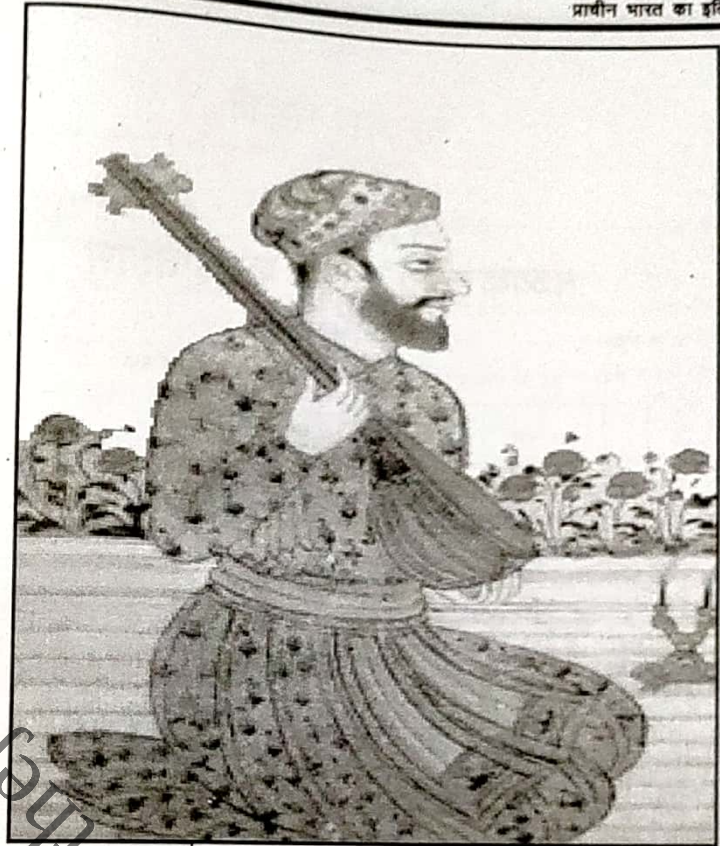

नाम	– अमीर खुसरो
उपाधि	– तुतिए हिन्द (भारत को तोता)
गुरू	– शेख ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया
आविष्कार	– सितार, वीणा
रचना	– खजाइन–उल–फुतूह, तुगलकनामा, आशिका
जन्मदाता	– ख्याल गायन शैली
विशेष	– तीन राजवंशों का दरबारी

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

मध्यकालीन भारत का इतिहास

रूपरेखा –

चन्दावर युद्ध के पश्चात् भारत में मुस्लिम शासकों का साम्राज्य फैल गया।

	वंश	समयकाल
1.	गुलाम वंश अथवा मामलूक वंश	1206–1290 ई.
2.	खिलजी वंश	1290–1320 ई.
3.	तुगलक वंश	1320–1414 ई.
4.	सैयद वंश	1414–1451 ई.
5.	लोदी वंश	1451–1526 ई.
	उपरोक्त पाँचों को दिल्ली सल्तनत कहा जाता है।	
6.	मुगल वंश	1526–1707 ई.

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मध्यकालीन भारत का इतिहास समाप्त हो जाता है।

दिल्ली सल्तनत

गुलाम वंश

- जब तक दिल्ली में सुल्तानों का शासन रहा तब तक के काल को दिल्ली सल्तनत कहते हैं। दिल्ली सल्तनत में कुल 5 वंश तथा गुलाम वंश में 3 वंश शामिल हैं।

- गुलाम वंश – 1. कुतुबी
  2. शमशी
  3. बलबनी

कुतुबी वंश
काल : 1206-1210 ई.
संस्थापक : कुतुबुद्दीन ऐबक

कुतुबुद्दीन ऐबक (तुर्की)

- राजधानी – लाहौर
- राज्याभिषेक – 1206–08 ई.
- विशेष – सिपहसलार या मलिक के रूप में भारत में शासन किया।
- स्वतंत्र शासक – 1208 में यह स्वतंत्र शासक बना।
- गुरू – शेख ख्वाजाकुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
- दरबारी कवि – हसन निजामी (साहित्यकार)
  रचना : ताज–उल–मासिर
- मृत्यु – 1210 में लाहौर में
  कारण – पोलो (चौगान) खेलते वक्त घोड़े से गिरने के कारण इसकी मृत्यु हो गयी।
- मकबरा – लाहौर

- उपाधि –
  1. **लाख बख्श** – दानशीलता के कारण
  2. **हातीम द्वितीय** – दयाशीलता के कारण (मिनहाज ने)
  3. **कुरान खाँ** – कुरान का बहुत कुशल पाठक था।
  4. **चन्द्रमुखी** – मोहम्मद गौरी ने इसे ऐबक अर्थात् चन्द्रमुखी की उपाधि दी थी।

प्रशासनिक कार्य–

- भारत में गुलाम वंश की नींव डाली।
- साम्राज्य को सुदृढ़ करने पर ध्यान दिया।
- शासक बनने के बाद साम्राज्य विस्तार का कार्य नहीं किया।

निर्माण कार्य–

1. **कुतुब मीनार** (दिल्ली) :
   - शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में निर्माण कार्य की नींव डाली।
2. **कुव्वत–उल–इस्लाम मस्जिद**
   - दिल्ली में **विष्णु मंदिर** को तोड़वाकर उसके स्थान पर मस्जिद का निर्माण करवाया।
3. **ढाई दिन का झोपड़ा** (अजमेर) :
   - संस्कृत विद्यालय को तोड़कर बनाया। **यह एक मस्जिद है।**

- इसकी मृत्यु के बाद आराम शाह लाहौर की गद्दी पर बैठा। जबकि दिल्लीवासियों ने तत्कालिक बदाँयू का सुबेदार इल्तुतमिश (कुतुबुद्दीन ऐबक का दामाद) को सुल्तान बनाने के लिए आमंत्रित किया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

➤ इल्तुतमिश ने आराम शाह को मारकर दिल्ली में एक नए वंश (शमशी वंश) की स्थापना की।

नोट – कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में शासन करने में सफलता मिली, क्योंकि उसने समकालीन शासकों के साथ पारिवारिक संबंध स्थापित किया।

शमशी वंश
काल : 1211-1266 ई.
संस्थापक : इल्तुतमिश
राजधानी : दिल्ली

प्रथम शासक : इल्तुतमिश (1211-1236 ई.)

➤ राजधानी – दिल्ली
➤ मकबरा – दिल्ली
➤ विशेष – दिल्ली सल्तनत का **वास्तविक संस्थापक**

➤ सिक्के – चाँदी का **टंका** एवं ताँबे का **जीतल**
➤ विशेष – प्रथम तुर्क सुल्तान, जिसने **शुद्ध अरबी सिक्के** चलवाए

➤ दरबारी कवि – मिनहाज–उल–सिराज
रचना – तबकात–ए–नासिरी

➤ प्रशासन – भारत में मुस्लिम प्रभुत्व की वास्तविक शुरूआत इल्तुतमिश से होती है।
– शासन प्रबंध में कुशलता लाने हेतु **इक्ता प्रणाली** की शुरूआत की तथा **इक्तेदार की नियुक्ति** की।
– इसने न्याय कार्यों के लिए बड़े नगरों में **'अमीरेदाद'** की नियुक्ति की।
– बड़े शहरों में शांति स्थापना हेतु **कोतवाल** रहता था।

➤ संगठन – इसने अपने 40 गुलाम सरदारों का एक संगठन का निर्माण किया, जिसे **तुर्कान–ए–चिहालगामी** कहा जाता था। इस संगठन को 'चरगान' भी कहा गया, जिससे तुर्क अमीरों का दमन हुआ।

➤ विशेष – 1229 ई. में बगदाद के खलीफा से शासन कार्यों के लिए **खिलआत प्रमाण पत्र** प्राप्त हुआ। खिलआत प्राप्त करने के बाद **'नासिर–उल–मिनोनीन'** की उपाधि धारण की।

स्थापत्य –

1. **सुल्तानगढ़ी का मकबरा** – भारत का पहला मकबरा
2. **मोईनुदीन चिश्ती की दरगाह** – अजमेर, नागौरी गेट
3. **कुतुबमीनार** का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया।
4. दिल्ली में विद्यालय बनवाया।

युद्ध अभियान

➤ इसने अपने प्रतिद्वंदियों ताजुद्दीन यल्दौज, नासिरूदीन कुबाचा (सिंध के शासक) और आरामशाह का सफलापूर्वक दमन किया।

➤ **1215 ई. में तराईन का तृतीय युद्ध** इल्तुतमिश व यल्दौज के मध्य हुआ।

➤ मंगोल आक्रमणकारी **चंगेज खाँ** के भय से ख्वारिज्म शाह का पुत्र **जलालुद्दीन मांगबर्नी** वहाँ से भागकर पंजाब की ओर आ गया। चंगेज खाँ उसका पीछा करता हुआ लगभग 1220–21 ई. में सिंध तक आ गया। इल्तुतमिश ने मंगोल जैसे शक्तिशाली आक्रमणकारी से बचने के लिए मांगबर्नी की कोई सहायता नहीं की।

➤ इल्तुतमिश की दूरदर्शिता ने तुर्की राज्य को मंगोल आक्रमण से बचाया।

विशेष – भारत में **मंगोलों का सर्वप्रथम आक्रमण** इल्तुतमिश के शासन काल में हुआ।

द्वितीय शासक : रूक्नुद्दीन फिरोज (1236 ई.) (माँ – शाह तूरकान)

➤ इल्तुतमिश का पुत्र था, जो इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली का शासक बना।

तृतीय शासक : रजिया सुल्तान (1236-40 ई.)

➤ रजिया सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री थीं।

➤ रूक्नुद्दीन फिरोज के अयोग्य शासक होने के कारण दिल्ली के **अमीरों के सहयोग से** दिल्ली की **शासिका** बनीं।

➤ यह भारतीय इतिहास में राजत्व सिद्धांतों के तहत् पुरूषों का वस्त्र **चोगा (कुबा)–कुलाह (टोपी)** पहनकर दरबार में आने लगी।

➤ **लाल वस्त्र** धारण करके **न्याय की मांग** की।

➤ साधारणतः यह दरबार में आते समय लाल वस्त्र धारण करके आने लगी।

➤ रजिया सुल्तान ने **भटिंडा के सुबेदार अल्तुनिया से विवाह** किया। (प्रेमी – याकुत)

➤ रजिया सुल्तान व अल्तुनिया का डकैतों ने **हत्या** कर दी। **(कैथल) हरियाणा**।

➤ रजिया सुल्तान की मृत्यु 1240 ई. में हुई।

➤ रजिया सुल्तान याकूब खाँ के नेतृत्व में शासन करती थी

➤ याकूब खाँ रजिया का सिपह सालार था। रजिया ने इसे 'अमीर–ए–शिकार' एवं 'आमीर–ए–आखुर' का पद प्रदान किया।

पतन का कारण–

1. सर्वप्रमुख कारण रजिया का **स्त्री होना**।
2. गुलाम तुर्क **सरदारों की महत्वकांक्षा**।

चतुर्थ शासक : बहराम शाह (1240-42 ई.)

➤ इसने वजीर के समकक्ष नयाब–ए–मुमलिकात या नाईब के पद का सृजन किया।

पंचम शासक : अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46 ई.)

➤ मसूदशाह का काल बलबन के उदय का काल कहलाता है।

छठवाँ शासक : नासिरूद्दीन महमूद (1246-66 ई.)

➤ **संत शासक** कहा जाता है।
➤ मुख्य काजी मिनहाजुद्दीन सिराज था।
➤ **टोपी सीकर** जीवन निर्वाह करता था।
➤ **अफराशियाब वंश** से स्वयं का नाता जोड़ा।

➤ इसके शासनकाल में **ग्यासुद्दीन बलबन नाईब** के पद पर नियुक्त हुआ तथा वास्तविक शासक बन बैठा।

➤ 1266 ई. नासिरूद्दीन महमूद की मृत्यु बलबन द्वारा जहर देने से हुई।

➤ मृत्यु के पश्चात् बलबन ने भारत में गुलाम वंश के तीसरे वंश बलबनी वंश की स्थापना की।

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

बलबनी वंश

काल : 1266-1290 ई.
संस्थापक : ग्यासुद्दीन बलबन

प्रथम शासक : ग्यासुद्दीन बलबन (1266-86 ई.)

- मूल नाम – बहाउद्दीन
- वंश – यह इलबरी तुर्क था।
- उपाधि – उलूग खाँ, 'जिल्ले इलाही'
- दरबारी कवि – अमीर खुसरो एवं अमीर हसन
- मृत्यु – बड़े पुत्र महमूद की मृत्यु की शोक में
- विशेष – यह इल्तुतमिश द्वारा खरीदा गया एक गुलाम था।

प्रशासन

- इसने **राजत्व का सिद्धांत** लागू किया।
- जिसके अनुसार **'नियाबत-ए-खुदाई'** अर्थात् राजा ईश्वर का प्रतिनिधि होता है।
- **तुरकान-ए-चिहालगामी** को भंग किया।
- इसने **लौह व रक्त की नीति** लागू किया।
- **नवरोज** नामक त्यौहार की परम्परा शुरू की।
- इसने **सैन्य विभाग (दीवान-ए-अर्ज)** की स्थापना की।
- बलबन को ही **सैन्य विभाग के संगठन** का श्रेय जाता है।
- बलबन ने **पाबोस** एवं **सिजदा** की प्रथा चलायी।
- **पाबोस** पाँव को चूमना, **सिजदा** घुटने पर बैठकर सम्राट के सामने सिर झुकाना।
- पुत्रों का नाम फारसी राजाओं के नाम पर रखा।

निर्माण कार्य –

- दिल्ली में **लाल महल** का निर्माण करवाया।
- इसने फारसी प्रशासन के तर्ज पर अपने दरबार को सजाया।

अंतिम शासक : कैकुबाद एवं क्यूमर्स (1286-90 ई.)

- कैकुबाद ने 'किलोखरी का दुर्ग' (हरा राजमहल) का निर्माण करवाया।
- कैकुबाद एवं क्यूमर्स का सेनापति जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी क्रांतिकर कैकूबाद एवं क्यूमर्स की हत्याकर खिलजी वंश की स्थापना की।

खिलजी वंश

काल : 1290-1320 ई.
संस्थापक : जलालुद्दीन खिलजी

प्रथम शासक : जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई.)

- राज्योरोहण – किलोखरी (हरामहल)

विशेष –

- इसका **भतीजा** व **दामाद** अलाउद्दीन खिलजी था।
- जलालुद्दीन खिलजी **दिल्ली सल्तनत का सबसे वृद्ध शासक** था।
- जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल में **अलाउद्दीन खिलजी कड़ा मानिकपुर** का शासक बना।
- यह अपने **राज्याभिशेक के समय 70 वर्ष** की उम्र पार कर चुका था।

महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

- 1290 में कड़ा मानिकपुर के सूबेदार मलिक छज्जु के विद्रोह को दबाया।
- इसके शासनकाल में **मंगोल आक्रमण** हुआ। (चंगेज खाँ का नाती उलूग खाँ ने आक्रमण किया।) परन्तु यह मंगोल **अलाउद्दीन खिलजी द्वारा परास्त हुए**। परन्तु यह मंगोल वापस नहीं गए तथा यहीं रहकर इस्लाम धर्म स्वीकार किया। ये **नवीन मुसलमान** कहलाए।

- जलालुद्दीन खिलजी, दिल्ली सल्तनत का **एकमात्र सुल्तान** था, जिसने दया, प्रेम और उदारता को अपने शासन का आधार माना।
- जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल में उसके भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने **1292** में अपने चाचा के कहने पर **भिलसा** व **देवगिरि अभियान** किया।
- उस समय **देवगिरि का शासक रामचन्द्रदेव** था। इस प्रकार जलालुद्दीन खिलजी के समय देवगिरि में आक्रमण मुसलमानों का **दक्षिण भारत पर पहला आक्रमण** था।
- 1296 में अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरि पर आक्रमण किया और वहाँ से बहुत धन लूटकर वापस आते समय मानिकपुर में अपने चाचा को (गंगा नदी) मिलने बुलाया तथा धोखे से उसकी हत्या करके दिल्ली का सुल्तान बना। इस कार्य को सफल बनाने में उसका भाई अलमस बेगम ने सहायता की थी।

द्वितीय शासक : अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- बचपन का नाम – **अली** तथा **गुर्शप**
- राज्याभिषेक – बलबन के **लाल महल** में
- मृत्यु – 1316 ई.
- उपाधि – **'सिकंदर-ए-सानी'**
- दरबारी कवि – अमीर खुसरो
- नई राजधानी – सीरी (दिल्ली के निकट)
  कारण – मंगोल आक्रमण से सुरक्षा के लिए
- सेनापति – जफर खाँ, उलूग खाँ, गाजी मलिक, मलिक काफूर

प्रशासन

- **दो नए कर लगाए–**
  1. **चराई कर** – दुधारू पशुओं पर
  2. **गढ़ी कर** – घरों एवं झोपड़ियों पर

  अन्य– 1. **जजिया** – गैर मुसलमानों से
  2. **जकात** – मुसलमानों से एक धार्मिक कर, जो संपत्ति का 40वाँ हिस्सा था।

- विद्रोह का दमन करने के लिए निम्नलिखित नीतियाँ चलायी–
  1. उसने सामंतों के पास अतिरिक्त जमीन को खालसा भूमि घोषित कर दी।
  2. विवाह एवं अन्य सामाजिक सम्मेलनों में अमीरों के मिलने पर प्रतिबंध लगाया।
  3. जुआ, शराब, नशाखोरी आदि असामाजिक तत्वों पर प्रतिबंध लगा दिया।
  4. अलाउद्दीन की राजस्व नीति सफलतापूर्वक लागू करने का श्रेय उसके नायक **'शर्जा कायिनी'** को दिया जाता है।

सैन्य संगठन –

- इतिहास का पहला शासक था, जिसने अपने पास स्थायी सेना रखी।
- हुलिया व दाग प्रथा आरंभ करवाया, जिसके अनुसार सैनिकों के 'हुलिये' का खिजा रखा जाता था तथा उत्तम किस्म के घोड़ों को 'दाग' दिया जाता था।
- सेनाओं की संख्या तीन लाख से अधिक थी। **कम वेतन** दिया तथा **बाजार नियंत्रण की व्यवस्था** लागू किया तथा **मूल्यों का नियंत्रण** किया।
  कारण – सेनाओं के कर्मचारियों के वेतन पूर्ति हेतु।
  उद्देश्य – विशाल सैनिकों की आवश्यताओं की पूर्ति करने के लिए। सभी वस्तुओं के लिए अलग-अलग बाजार की व्यवस्था किया–
  (1) सराए-ए-अदल (कपड़ा बाजार)
  (2) गल्ला बाजार (अनाज)
  (3) पशु एवं गुलाम बाजार
- अपने बाजार व्यवस्था के नियंत्रण हेतु तीन अधिकारियों की नियुक्ति की–
  1. दीवान-ए-रियासत – व्यापारी वर्ग पर नियंत्रण हेतु
  2. शहनाए-ए-मंडी – बाजार का दरोगा
  3. बरीद-ए-मुमालिक – गुप्तचर
- दीवान-ए-रियासत प्रमुख अधिकारी होता था।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

अलाउद्दीन खिलजी का साम्राज्य

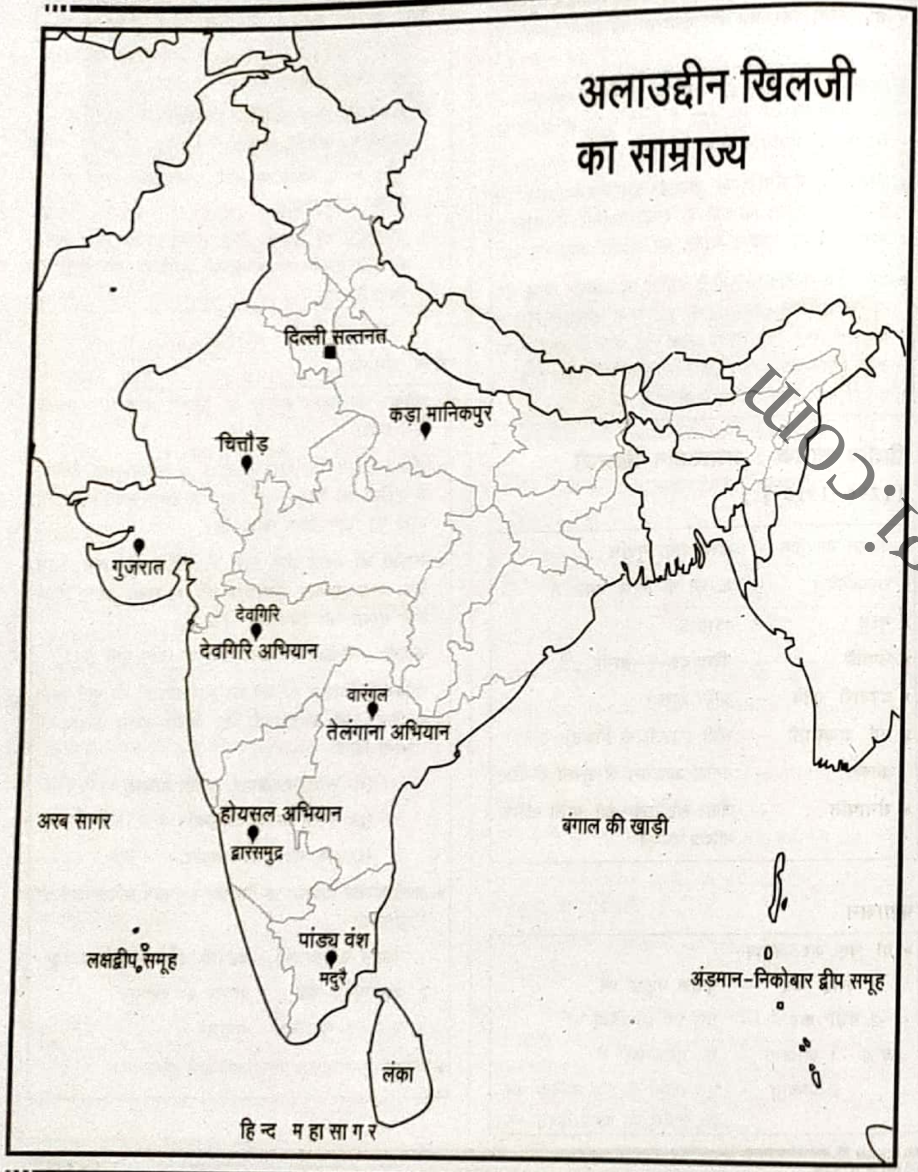

अलाउद्दीन खिलजी का विजय अभियान

पश्चिमोत्तर भारत का विजय अभियान–

गुजरात अभियान (1298 ई.)

- गुजरात का शासक – कर्णदेव
  पत्नी – कमला देवी
- सेनापति – उलूग खाँ एवं नुसरत खाँ
- विशेष – कमला देवी से विवाह किया।
  – गुजरात अभियान के दौरान **मलिक काफुर** को **1000 दीनार** में खरीदा। इतिहास में मलिक काफुर को **हजारदीनारी** के नाम से जाना जाता है।

रणथम्भौर विजय (1301 ई.)

- शासक – हमीरदेव,
- परिणाम – इसने सुल्तान की सेना को पराजित किया।
- विशेष – उलूग खाँ मारा गया बाद में स्वयं अलाउद्दीन ने रणथम्भौर पर आक्रमण कर जीत लिया।

चित्तौड़ विजय (1303 ई.)

- शासक – रतनदेव
- पत्नी – पद्मावती
- उद्देश्य – पद्मावती को प्राप्त करना
- वर्णन – **मलिक मोहम्मद जायसी** की रचना **पद्मावत** में किया गया है।
  – अमीर खुसरो के ग्रंथ **खजाइन–उल–फतह** में है।
- परिणाम – रतनदेव की हार व मृत्यु की खबर सुनकर पद्मावती ने जौहर प्रथा का अनुसरण कर अपने आपको अग्निकुण्ड में डाल दिया।
  – चित्तौड़ को जीतकर उसका नाम अपने पुत्र खिजखाँ के नाम पर **खिज्राबाद** रखा।

मालवा विजय (1305 ई.)

- शासक – महलकदेव
- सेनापति – हरनन्द (कोका प्रधान)
- परिणाम – एक योग्य राजनीतिज्ञ एवं कुशल योद्धा दोनों को परास्त किया।

दक्षिण भारत का विजय अभियान–

- वह दक्षिण भारत के शासकों को परास्त कर उन्हें सीधे अपनी अधीनता में नहीं रखना चाहता था।
- दक्षिण भारत विजय में उसका सेनापति मलिक काफूर था। दक्षिण भारत विजय का विवरण इस प्रकार है–

देवगिरी अभियान (1307–08) (दौलताबाद)

- शासक – रामचंद्र देव
- जीतकर शासन स्थापित करने के बजाय वार्षिक कर लिया।
- रामचन्द्र देव को 'राय रायान' की उपाधि दी।

तेलंगाना अभियान (1309–10)

- शासक – काकतीय वंश के शासक प्रतापरूद्र देव
- राजधानी – वारंगल
- विशेष – प्रतापरूद्र देव द्वितीय ने मालिक काफुर से बिना युद्ध किए स्वयं की मूर्ति बनावाकर उसमें जंजीर पहनाकर भेंट कर आत्मसमर्पण किया। तथा अन्नम देव भागकर छत्तीसगढ़ आ गया।
  – इस समय मलिक काफुर को काकतीय का 'कोहिनूर का हीरा' प्रदान किया।

होयसल अभियान (1310–11)

- राजधानी – द्वारसमुद्र
- शासक – वीर बल्लाल तृतीय

thejobsyogi.com

पाण्ड्य वंश (केरल)

- 1311 में मलिक काफुर ने पाण्ड्य पर आक्रमण किया, परन्तु यहाँ का शासक वीर पांड्य को पराजित नहीं कर पाया। अंततः धन लूटकर वापस लौट गया।

अलाउद्दीन खिलजी के निर्माण कार्य

- **अलाई दरवाजा** – दिल्ली के कुतुबमीनार के प्रागंण में – प्रारंभिक तुर्की कला का श्रेष्ठ नमूना।
- **कुशक–ए–शीरी** – दिल्ली में बनवाया।
- **जमैयत खाना** मस्जिद व हजार खम्भा महल

विशेष –

- भारत का **प्रथम** 'मुस्लिम सम्राट'
- इसके समय **सर्वाधिक मंगोल आक्रमण** हुए।
- मलिक काफूर को साम्राज्य का मलिक **'नायब'** घोषित किया।
- अलाउद्दीन ने सोमनाथ मंदिर को खूब लूटा।
- इसकी आर्थिक नीति की जानकारी जिआउद्दीन बरनी की कृति **'तारीख–ए–फिरोजशाही'** से मिली है।
- इसने **भू–राजस्व** की दर बढ़ाकर **1/2** भाग कर दिया।
- **दक्षिण भारत** पर आक्रमण करने वाला **प्रथम मुस्लिम शासक** था।
- प्रथम सुल्तान जिसने भूमि की पैमाइश कराकर उसकी वास्तविक आय पर लगान लेना निश्चित किया।

अंतिम शासक : कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316–1320)

- एकमात्र मुस्लिम शासक, जिसने अपने आपको मुस्लिम धर्म का खलीफा घोषित किया।

नासिरुद्दीन खुशरवशाह (1320 ई.)

- इसने **पैगम्बर के सेनापति** की उपाधि धारण की।
- गाजी मलिक (ग्यासुद्दीन तुगलक) ने इनकी हत्या कर तुगलक वंश की स्थापना की।

तुगलक वंश (1320–1414)

प्रथम शासक : ग्यासुद्दीन तुगलक (1320–25)

- **उपनाम** – गाजी मलिक
- **मकबरा** – तुकलकाबाद
- **मंगोल आक्रमण** – 29 बार विफल किया।
- **मृत्यु** – बंगाल अभियान से लौटने पर **तुगलकाबाद में एक लकड़ी के महल** में विश्राम करने के लिए ठहराया तथा धोखे से महल को हिलाकर हत्या कर दी गई।

विशेष –

- उदार नीति 'रस्म ए मियान' अपनाई।
- ग्यासुद्दीन के समय ही सर्वप्रथम दक्षिण के राज्यों को दिल्ली में मिलाया गया।
- इसने सिंचाई के लिए **कुएँ एवं नहरों का निर्माण** करवाया। सम्भवतः नहरों का निर्माण करने वाला ग्यासुद्दीन तुगलक प्रथम सुल्तान था।
- इसका सर्वहित में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य उसके द्वारा **कुरान के आधार पर** (राजनीति के नियमों द्वारा) कानूनों का संहिताबद्ध किया जाना था।

- प्रथम सुल्तान था, जिसने **डाक व्यवस्था** पूर्णरूपेण संगठित किया।
- ग्यासुद्दीन तुगलक जब बंगाल विजय कर वापस लौट रहा था, तब **निजामुद्दीन औलिया** ने कहा था– **"दिल्ली अभी दूर है।"**

द्वितीय शासक : मोहम्मद बिन तुगलक

- **शासनकाल** – 1325–51 ई.
- **वास्तविक नाम** – जुना खाँ
- **अन्य नाम** – अभागा आदर्शवादी, पागल सुल्तान, रक्त पिपासु
- **प्रांतों की संख्या** – 23
- **धार्मिक नीति** – धर्म के प्रति उदार
- **अफ्रीकी यात्री** – **इब्नबतुता**, भारत आया (1333 ई.)
  रचना – रेहला
- **मृत्यु** – सिंध, **थट्टा** (ज्वरगस्त)

मोहम्मद बिन तुगलक इतिहास में अपने योजनाओं के लिए प्रसिद्ध हुआ–

1. **दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि (1326–27 ई.)**
   - **कारण** – विद्रोह का दमन करने हेतु
   - **परिणाम** – असफल,
   - **कारण** – अकाल पड़ना
2. **राजधानी परिवर्तन (1326–27 ई.)**
   - दिल्ली से देवगिरि को राजधानी बनाने की घोषणा तथा इसका नाम परिवर्तन कर **दौलताबाद** रखा।
   - **कारण** – मंगोल आक्रमण से सुरक्षा (गार्डन ब्राउन) तथा देवगिरि का साम्राज्य के मध्य में स्थित होना। (बर्नी)
   - **परिणाम** – असफल
     कारण – दिल्ली के लोगों का देवगिरि में रहने से इंकार कर देना।
3. **सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (1329–30 ई.)**
   - **सिक्का** – ताँबे का सिक्का चलाया (दोगानी सिक्के)
   - **मूल्य** – चाँदी के टके के बराबर कर दिया
   - **पद्धति** – मंगोलो (चीन, ईरान) से ग्रहण किया।
   - **कारण** – विश्व बाजार में चाँदी की कमी
   - **परिणाम** – असफल,
   - **कारण** – लोगों ने अपने घर में टकसाल बना लिया।
4. **कृषि सुधार**
   - कृषि के सुधार हेतु **दीवान–ए–अमीर कोही** की नियुक्ति की।
   - बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए फार्म कृषि योजना चलाया।
5. **खुरासान एवं कराचिल अभियान**
   - विजय हेतु पहले से सैनिकों को वेतन दिया।
   - **परिणाम** – असफल
   - **कारण** – शासकों द्वारा मित्रता करना

विशेष –

- इसके शासनकाल में सर्वाधिक 34 विद्रोह हुए।
- उसने योग्यता के आधार पर लोगों की नियुक्ति की।
- मोहम्मद बिन तुगलक के काल में मदुरई स्वतंत्र राज्य था।
- दिल्ली सल्तनत के सभी सुल्तानों में इसका साम्राज्य सबसे बड़ा था।
- इसकी मृत्यु पर बदांयुनी का कथन था **"राजा को प्रजा से, प्रजा को राजा से मुक्ति मिली।"**
- एलफिंस्टन – **'पागल–सुल्तान'**
- जियाउद्दीन बरनी – **'विरोधी गुणों का सम्मिश्रण'**
- ग्यासुद्दीन ने जूना खाँ को उलूग खाँ की उपाधि देकर अपने जीवनकाल में ही उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।
- मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में ही **हरिहर व बुक्का** नामक दो भाईयों ने 1336 ई. में तुंगभद्रा नदी के समीप **विजयनगर साम्राज्य** की स्थापना की।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- महाराष्ट्र में अलाउद्दीन बहमन शाह द्वारा 1347 ई. में बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई।
- उसने मिस्र के अब्बासी खलीफा से मान्यता प्राप्त की एवं खुतबे व सिक्कों पर खलीफा का नाम अंकित करवाया।
- 1351 में सिंध में हुए विद्रोह को दबाने के लिए यहाँ गया किन्तु ज्वरग्रस्त हो गया और सिंध के **थट्टा** नामक स्थान पर उसकी मृत्यु हो गई।
- अनेक विफलताओं के कारण इसे इस्लामिक जगत का सर्वाधिक मूर्ख शासक' कहा गया।
- डॉ. **ईश्वरी प्रसाद** ने इनके बारे में कहा है– "मध्ययुग में राजमुकुट धारण करने वालों में मोहम्मद बिन तुगलक निःसंदेह योग्यतम व्यक्ति था।"

तृतीय शासक : फिरोजशाह तुगलक (1351-89 ई.) (सल्तनत युग का अकबर)

- **राज्याभिषेक** – दिल्ली
- **आत्मकथा** – **फुतुहाते फिरोजशाही** (फारसी में)
- **दरबारी कवि** – **बरनी**
  रचना – **तारीखे–फिरोजशाही**
- **विशेष** – मोहम्मद बिन तुगलक का चचेरा भाई था।

धार्मिक नीति –
- यह धर्म के प्रति **कट्टर** शासक था।
- इस नीति के तहत् यह **औरंगजेब का पूर्वगामी** कहलाता है।
- यह **ब्राह्मणों पर भी जजिया कर** लगाने वाला प्रथम शासक था।

इसने पाँच शहर बसाये –
1. जौनपुर – उ.प्र. (बड़े भाई जूना खाँ के स्मृति में)
2. हिसार – हरियाणा
3. फिरोजाबाद
4. फतेहाबाद
5. फिरोजपुर

युद्ध –
- जगन्नाथ मंदिर पर आक्रमण कर लूटा।
- कांगड़ा का ज्वालामुखी मंदिर तोड़वाया व लूटा।
- युद्ध की तुलना में प्रजा की भौतिक उन्नति को महत्व दिया।

महत्वपूर्ण तथ्य –
- यह दास प्रेमी था। (सर्वाधिक दास)
- सोंधर ऋण सहित सभी कर्ज माफ कर दिया।
- इसने **ससगनी** नामक चाँदी का सिक्का चलाया।
- अशोक का स्तम्भ लेख मेरठ टोपरा से दिल्ली लाया।
- **ऐवजी प्रथा** जिससे सैनिकों का पद वंशानुगत हो गया।
- दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान जिसने पहली बार ब्राह्मणों से भी जजिया कर वसूला।
- **दीवान–ए–खैरात** दान देने वाला विभाग एवं दीवाने–सफा (दवाखाना) की स्थापना करवाया।
- इसने दासों की देखभाल के लिए विभाग **दीवान–ए–बंदगान** बनाया व सार्वजनिक निर्माण विभाग का गठन किया।
- यमुना नदी से पाँच नहरों का निर्माण करवाया तथा 1200 बाग–बगीचे लगाए। **सिंचाई कर** उपज का दसवाँ भाग किया।
- कर प्रणाली में सुधार कर सभी करों को समाप्त करके कुरान के अनुसार केवल खर करों को वसूल किया। जजिया, जकात, खिराज, खम्स।
- सिंचित भूमि से शर्ब नामक सिंचाई कर लिया तथा पहली बार राज्य की वास्तविक आय जानने का प्रयास किया। हिसामुद्दीन जुनैद ने राज्य की वार्षिक आय 6.75 करोड़ टका आंकी।

thejobsyogi.com

अंतिम शासक : नासिरूद्दीन महमूद तुगलक (1398 ई.)

- इसी के शासनकाल में मध्य एशिया के शासक तैमूर लंग ने आक्रमण किया।
- **तैमूर लंग** – यह मध्य एशिया का चगताई तुर्क था। उसकी राजधानी समरकंद थी। उसने 1398 ई. में भारत पर आक्रमण किया। उस समय दिल्ली का सुल्तान तुगलक वंश का महमूद शाह था। उसने दिल्ली में 15 दिनों तक कत्लेआम किया तथा पश्चिमी भारत को अपने राज्यपाल खिज्र खाँ को सौंपकर वापस समरकंद लौट गया।
- भविष्य में तैमूर के वंशज बाबर ने भारत पर अपने अधिकार का दावा किया।
- 'मलकूजात–ए–तैमूरी' तैमूर की आत्मकथा थी।

सैय्यद वंश
काल : 1414-1451 ई.
संस्थापक : खिज्र खाँ सैय्यद

- खिज्र खाँ सैय्यद ने लाहौर व मुल्तान पर तैमूर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया।
- इसने 1414 में दिल्ली में आक्रमण करके उसे अधिकार में ले लिया।

प्रथम स्वतंत्र शासक : मुबारक शाह (1421 ई.)

- **दरबार में** – याहिया बिना अहमद सरहिन्दी
- **रचना** – तारीख–ए–मुबारकशाही

प्रथम प्रसिद्ध शासक : अलाउद्दीन आलमशाह (1445-1450 ई.)

- इसे 1451 ई. में बहलोल लोदी ने परास्त कर लोदी वंश की स्थापना की।

लोदी वंश
काल : 1451-1526 ई.

- **संस्थापक** – बहलोल लोदी
- **कार्यकाल** – 1451 से 1489
- **स्थापना** – लधियाना शहर बसाया
- **विशेष** – भारत का प्रथम अफगान वंश

प्रथम प्रसिद्ध शासक : सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.)

- **स्थापत्य** – आगरा शहर बसाया (1504 ई.)
- **राजधानी** – आगरा (1506 ई.)
- **उपनाम** – गुलरूखी
- **संगीत का ग्रंथ** – लज्जत–ए–सिकन्दरी की रचना किया
- **भूमि पैमाईश** – गज–ए–सिकंदर पैमाना (30 इंच)
- **आयुर्वेद ग्रंथ** – फहरंगे–सिकन्दरी (फारसी)
- **समकालीन** – गुजरात के महमूद बेगड़ा व चित्तौड़ के राणा सांगा
- **वजीर** – मोठ की मस्जिद (मियां भुआ) बनवाया
- **मृत्यु** – 1517 (गले की बीमारी से)
- **विशेष** – फिरोजशाह तुगलक के बाद दूसरा धर्मान्ध शासक

अंतिम प्रसिद्ध शासक : इब्राहीम लोदी (1517-1526 ई.)

- **पानीपत का प्रथम युद्ध** (1526)–
  - बाबर V/S इब्राहीम लोदी
  - इब्राहीम लोदी पराजित
  - मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।
- **विशेष** – बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ, दौलत खाँ तथा चितौड़ का शासक राणा सांगा ने आमंत्रित किया था।

Scanned with CamScanner

सल्तनतकालीन प्रशासन

प्रमुख मंत्री	संस्थापक	विभाग विशेष
1) वजीर	–	प्रधानमंत्री
2) दीवान–ए–आरिज	बलबन	सैन्य विभाग
3) दीवान–ए–मुस्तखराज	अलाउद्दीन खिलजी	वित्त विभाग
4) दीवान–ए–रियासत	अलाउद्दीन खिलजी	व्यापारी वर्ग पर नियंत्रण
5) शहनाए–मण्डी	अलाउद्दीन खिलजी	बाजार का दरोगा होता था।
6) मुहतसिव	अलाउद्दीन खिलजी	जनसाधारण के आचरण का रक्षक व नापतौल का निरीक्षक
7) दीवान–ए–अमीर कोही	मो. बिन तुगलक	कृषि विभाग
8) दीवान–ए–खैरात	फिरोजशाह तुगलक	सुन्नी बेरोजगारों के लिए व मुसलमान अनाथ स्त्री/विधवाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करता था।
9) दारूल–ए–सफा	फिरोजशाह तुगलक	राजकीय अस्पताल
10) दीवान–ए–बंदगान	फिरोजशाह तुगलक	दासों के देखभाल हेतु
11) सद्–उल–सुदूर		धर्म विभाग
12) दीवान–ए–रसालत		विदेश विभाग
13) दीवान–ए–कजा		न्याय विभाग
14) दीवान–ए–इंशा		डाक विभाग

सल्तनतकाल में–
1. प्रान्त के मुखिया को **इक्तेदार** कहा जाता था।
2. पुलिस के मुखिया को **कोतवाल** कहा जाता था।
3. गाँव के मुखिया को **मुकद्दम व चौधरी** कहा जाता था।

विकेन्द्रीयकरण–

विभाजन	प्रमुख
प्रांत (इक्ता)	– इक्तेदार, मुक्ति या वली
शिल	– शिलदार
परगना	– आमिल
ग्राम	– चौधरी, मुकद्दम या मुखिया

सल्तनतकालीन सैन्य संगठन

➤ सल्तनतकालीन रक्षा मंत्रालय का संगठन चंगेज खाँ (मंगोल) के दशमलव प्रणाली पर आधारित थी–
सेना का मुख्य भाग – अश्व सेना
10 अश्वरोही – 1 सर–ए–खेल
10 सर–ए–खेल – 1 सिपहसलार
10 सिपहसलार – 1 अमीर
10 अमीर – 1 मलिक
10 मलिक – 1 खान

➤ सैनिक सुधार की दृष्टि से अलाउद्दीन खिलजी का काल सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

➤ अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सैनिकों को नगद वेतन देने की प्रथा शुरू की तथा साथ ही उसने घोड़ों को दागने की और सैनिकों का हुलिया रखने की प्रथा चलायी।

सल्तनतकालीन कर व्यवस्था

उश्र	– भूमि कर था, जो केवल मुसलमानों से लिया जाता था, जिसका दर 1/10 था।
खराज	– भूमि कर था, जो गैर मुसलमानों से लिया जाता था। 1/3 से आधा तक
जकात	– धार्मिक कर, जो केवल मुसलमानों से लिया जाता था, जिसका दर 1/5 था।
जजिया	– धार्मिक कर था, जो गैर मुसलमानों से वसूल किया जाता था।
खुम्स	– खुम्स लूट का धन होता था, जिसका 1/5 भाग राजकोष में व 4/5 भाग सैनिकों में बाँट दिया जाता था।

लगान व्यवस्था –

➤ **बंटाई** – बंटाई लगान निर्धारित करने की एक प्रणाली थी, जिसमें राज्य की ओर से प्रत्यक्ष रूप से जमीन की पैदावार से हिस्सा लिया जाता था।
सल्तनतकाल में निम्नलिखित तीन प्रकार की बंटाई विधि प्रचलित थीं–
1) खेत बंटाई, 2) लंका बंटाई, 3) रास बंटाई

सल्तनतकालीन स्थापत्य

कुतुबुद्दीन ऐबक

1. **कुब्बत–उल–इस्लाम** – भारत का पहला मस्जिद (पहले विष्णु मंदिर) 1192 ई. में बना। यह दिल्ली में स्थित है।
2. **ढाई दिन का झोपड़ा** – संस्कृत कॉलेज को तोड़कर बनवाया गया।
स्थान – अजमेर (पहले बौद्ध विहार)
3. **कुतुबमीनार** – मेहरौली लौह स्तंभ के समीप
- सात मंजिला भवन थी। (72 m Hight)
- 7 में से 3 खण्डहर में परिवर्तित
- वर्तमान में विजय स्तंभ
- कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के स्मृति में
- पहली मंजिल का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया था।

इल्तुतमिश

(1) **कुतुबमीनार**– कुतुबमीनार का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया।
(2) **सुल्तानगढ़ी का मकबरा** – भारत का पहला मकबरा। स्थान – दिल्ली, अपने पुत्र की स्मृति में निर्मित

बलबन – लाल महल, दिल्ली

जलालुद्दीन खिलजी – किलोखरी का महल

अलाउद्दीन खिलजी

(1) अलाई दरवाजा, दिल्ली
(2) सीरी का महल, राजस्थान
(3) जमातखाना मस्जिद – हजार खम्भों का महल

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

सल्तनतकालीन स्थापत्य एवं मकबरे

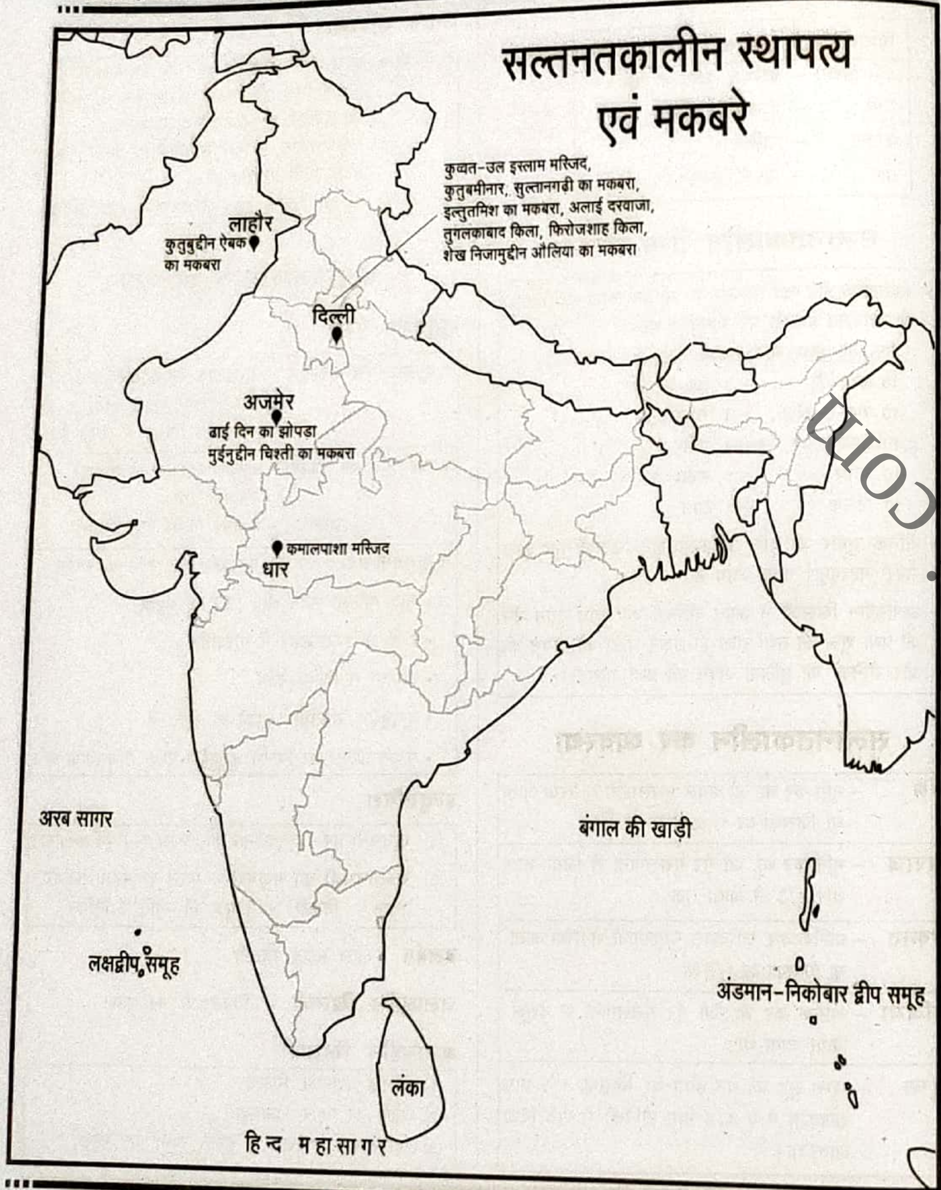

ग्यासुद्दीन तुगलक

1. तुगलकाबाद शहर
2. तुगलकाबाद महल

मोहम्मद बिन तुगलक

1. निजामुद्दीन औलिया का मकबरा
2. दौलताबाद शहर व किला

फिरोजशाह तुगलक

1. फिरोजशाह किला
2. पाँच शहर व पाँच नहर
3. दिल्ली में हौजखाना

जूनाशाह खानेजहाँ

1. काली मस्जिद

सल्तनतकालीन साहित्य कला

- इस काल की अधिकांश साहित्य फारसी भाषा में की गई।

क्र.	प्रमुख रचनाएँ	साहित्यकार	विशेष/भाषा
1.	चचनामा	अली अहमद	अरबी
2.	किताब-उल-हिन्द	अलबरूनी	अरबी
3.	तारीखे फिरोजशाही	बरनी	तुर्की
4.	फतुआ-ए-जहाँदारी	बरनी	तुर्की
5.	फुतुहाते फिरोजशाही	फिरोजशाह	आत्मकथा
6.	किताब-उल-रेहला	इब्नबतूता	
7.	तबकात-ए-नासिरी	मिनहाज उल सिराज	

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

मुगल साम्राज्य

मुगल साम्राज्य
1526–1707

मुगल – फेज-I
1526–1540
- बाबर (1526–1530)
- ↓
- हुमायूँ (1530–1540)

द्वितीय अफगान
(1540–1555)
1. शेरशाह सूरी
2. इस्लामशाह
3. मुहम्मद आदिलशाह
4. सिकंदरसूर

मुगल – फेज-II
1555–1707
- हुमायूँ (1555–1556)
- ↓
- अकबर (1556–1605)
- ↓
- जहांगीर (1605–1627)
- ↓
- शाहजहां (1627–1658)
- ↓
- औरंगजेब (1658–1707)

द्वितीय मुगल काल
(1707–1857)

बजफर मुअआ शाअब

ब	ज	फ	र	म	अ	आ	शा	अब	ब
बहादुर	जाहांदार	फर्रूख	रफी–उद	मुहम्मद	अहमद	आलम-I	शाहआलम	अकबर–II	बहादुर-II

मुगलकालीन युद्ध एवं अभियान

बाबर	1. पा	–	पानीपत	1526	–	इब्राहिम लोदी
	2. खा	–	खानवा	1527	–	राणा सांगा
	3. च	–	चंदेरी	1528	–	मेदनीराय
	4. घा	–	घाघरा	1529	–	बंगाल–बिहार
हुमायूँ	1. का	–	कालींजर	1531	–	अफगान
	2. दो	–	दोहरिया	1532	–	अफगान
	3. चु	–	चुनारगढ़	1532	–	शेरशाह
	4. चौ	–	चौसा	1539	–	शेरशाह
	5. बिल	–	बिलग्राम	1540	–	शेरशाह
	6. मच्छी	–	मच्छीवाड़ा	1555	–	अफगान
	7. सरही	–	सरहिंद	1555	–	सिकंदरसूर
अकबर	1. पा	–	पानीपत II	1556	–	हेमू
	2. गो	–	गोंडवाना	1564	–	दुर्गावती
	3. मेंह	–	मेंवाड़	1566	–	उदयसिंह
	4. ह	–	हल्दीघाटी	1576	–	महाराणा प्रताप
	5. गु	–	गुजरात	1571	–	हकिम मिर्जा कोका
	6. गा	–	गांधार	1581	–	पूर्वजों के लिए
	7. दक्षिण	–	दक्षिण अभियान	1591	–	चांदबीबी
	8. असि	–	असिरगढ़	1601	–	अंतिम अभियान

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

जहांगीर	1. मे – मेवाड़	– अमर सिंह
	2. अ – अहमदनगर	1617 – मलिक अम्बर

शाहजहां	1. बहा – बहादुरपुर	1658 – शाहसुजा
	2. धरम – धरमत	1658 – दारासिकोह
	3. सामु – सामुगढ़	1658 – दारासिकोह
	4. देव – देवराई	1659 – दारासिकोह

औरंगजेब	1. बी – बीजापुर	1686 – आदिलशाह द्वितीय
	2. गो – गोलकुण्डा	1687 – अबुल हसम
	3. पुर – पुरंदर	1665 – शिवाजी

मुगलकालीन स्थापत्य एवं वास्तुकला

बाबर	1. बा – बाबरी मस्जिद	1527 – मिरबांकी
	2. का – काबुलीबाग	1524 – पानीपत
	3. बाब – बाबर का मकबरा	– काबूल

हुमायूं	1. दिन – दिन-ए-पनाह महल	1533 – दिल्ली
	2. हु – हुमायूं का मकबरा	1564 – दिल्ली

अकबर	1. आगरा का किला	1566 – आगरा
	2. जांहगीर महल	1566 – आगरा
	3. अकबर का मकबरा	– सिंकदरा
	4. इलाहाबदा का किला	– इलाहाबाद संगम
	5. फतेपुर सिकरी	1571 – फतेहपुर सिकरी
	6. जोधा महल	– फतेहपुर सिकरी
	7. बिरबल महल	– फतेहपुर सिकरी
	8. रंग महल	– फतेहपुर सिकरी
	9. शेख सलिम चिस्ती का मकबरा	– फतेहपुर सिकरी
	10. जामा मस्जिद	– फतेहपुर सिकरी
	11. बुलंद दरवाजा	– फतेहपुर सिकरी

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

जहांगीर	1. अकबर का मकबरा	–	सिकंदरा
	2. एतमुद्दौला का मकबरा	–	आगरा

शाहजहां	1. दीवान ए आम	–	आगरा
	2 दीवान ए खास	–	आगरा
	3. मोती मस्जिद	–	आगरा
	4. मुसम्मनबुर्ज	–	आगरा
	5. ताज महल	–	आगरा
	6. शाहजहां का मकबरा	–	आगरा
	7. लाल किला	–	दिल्ली
	8. शाहजाहांनाबाद	–	दिल्ली
	9. जामा मस्जिद	–	दिल्ली

औरंगजेब	1. मोती मस्जिद	–	दिल्ली
	2. बीबी का मकबरा	–	औरंगाबाद (MH)

मुगलकालीन साहित्य

बाबर	1. तुजुके बाबरी	– बाबर
	2. बाबरनामा	– अब्दुल रहिम खानखाना

हुमायूं	1. हुमायूं नामा	– गुलबदन बेगम

अकबर	1. आइने अकबरी	– अबुल फजल
	2. अबुल फजल	– अकबरनामा, पंचतंत्र (फारसी)
	3. अब्दुल रहीम खानखाना	– बाबरनामा (अनुवाद)
	4. तुलसीदास	– दोहावली, विनयपत्रिका
	5. सूरदास	– सूरसागर, सूरसरावली
	6. केशवदास	– रामचंद्रिका
	7. मीराबाई	– मीरा के दोहे
	8. रसखान	– प्रेमवाटिका
	9. नकीब खां अब्दुल कादिर बदायूंनी	– महाभारत (अनुवाद)
	10. फैजी	– लीलावती (अनुवाद)
	11. तानसेन	– रागमाला
	12. बीरबल	– कविराज
	13. अब्दुल कादिर बदायूंनी	– रामायण (अनुवाद)
	14. टोडरमल	– भागवत पुराण (अनुवाद)
	15. दारासिकोह	– भगवद्त गीता (अनुवाद), मज्म–उल–बहरीन, सर्र–ए–अकबर (उपनिषद)
	16. मलिक मुहम्मद जायसी	– पद्मावत

theiobsyogi.com
Scanned with CamScanner

जहांगीर	1. तुजुकेजहांगिरी – जहांगीर
शाहजहां	1. पादशाहनामा – अब्दुल हामिद लाहोरी 2. शाहजहांनामा – इनायदखां
औरंगजेब	1. आलमगिरनामा – कासिम सिराजी

मुगल शासकों का जीवन परिचय

बाबर (जहीरूदीन मोहम्मद)	1. जन्म – काबूल 2. पत्नी – जीजी अनगा 3. पुत्र – हुमायूं, कामरान, हिंदाल, अशगरी 4. पुत्री – गुलबदन बेगम
हुमायूँ (नासीरूदीन मोहम्मद)	1. जन्म – काबूल 2. पत्नी – हमीदा बानो बेगम 3. पुत्र – अकबर 4. सेनापती – बैरमखाँ
अकबर (जलालुदीन मोहम्मद)	1. जन्म – अमरकोट (15 अक्टूबर 1542, राणा बीरसाल के अस्तबल में) 2. राज्याभिषेक – कालानौर (पंजाब) 3. पत्नी – जोधाबाई 4. पुत्र – जहांगीर 5. गुरू – शेख सलिम चिस्ती 6. ससूर – राजा भारमल, आमेर 7. साला – भगवनदास 8. बहनोई – शाहबुद्दीन 9. धाय मां – महाम अनगा 10. भाई – अधम खाँ (महाम अनगा का बेटा) 11. सेनापती – बैरमखाँ

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

	12. दत्तक पुत्र	–	अब्दुल रहिम खानखाना (बैरम खाँ, सलिमाबानो बेगम का बेटा)
	13. नौ रत्न	–	1. बीरबल 2. तानसेन 3. अबुलफजल 4. टोडरमल 5. अब्दुलरहिम खानखाना 6. मानसिंह 7. हकीम–हुकाम 8. फैजी 9. मुल्ला दो प्याजा
	14. मृत्यु	–	1605 (आगरा)
जहांगीर (नुरुद्दीन मोहम्मद)	1. जन्म	–	1569 ई.
	2. बचपन का नाम	–	सलिम (शेखु बाबा)
	3. पत्नी	–	मानबाई (शाह बेगम), नूरजांह (मेहरुन्निसा), जगत गोसाई
	4. पुत्र	–	खुसरो, खुर्रम, परवेज, शहरयार, जहांदार
	5. मृत्यु	–	1627
शाहजहां (शाहबुद्दीन मोहम्मद)	1. बचपन का नाम	–	खुर्रम
	2. पत्नी	–	अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज)
	3. पुत्र	–	दारासिकोह, औरंगजेब, शाहसुजा, मुराद
	4. मृत्यु	–	1658
औरंगजेब (मुहीउद्दीन मुजफ्फर आलमगिर)	1. पत्नी	–	दिलरास बानो बेगम (रबिया दुर्रानी)
	2. पुत्र	–	मुहम्मद सुलतान, अकबर द्वितीय, मुअज्जम, आलम, कामबख्श
	3. गुरू	–	मीर मुहम्मद हकीम
	4. मृत्यु	–	1707 (अहमदनगर)

मुगल साम्राज्य

प्रथम शासक : बाबर

- पानीपत के युद्ध में मेवाड़ का शासक **राणा सांगा**, इब्राहिम लोदी का चाचा **आलम खाँ** तथा **दौलत खाँ** लोदी ने बाबर को सहयोग किया।
- जीत के पश्चात् काबुल के प्रत्येक परिवार को एक–एक **चाँदी का सिक्का** भेंट दिया गया। इस दानशीलता के कारण इसे **कलन्दर** की उपाधि दी गई।
- खानवा युद्ध के जीत के बाद बाबर ने **'गाजी'** की उपाधि धारण की। और **'जेहाद'** का नारा दिया।
- पिता की इच्छानुसार साम्राज्य को विभाजित कर कामरान को काबुल तथा कन्धार, असगरी को संभल तथा हिन्दाल को अलवर (मेवाड़) का क्षेत्र प्रदान किया। अपने चचेरे भाई मिर्जा सुलेमान को बदख्शाँ प्रदेश दिया।

हुमायूं के शासन का प्रथम काल

- दोहरिया के युद्ध में हुमायूँ ने शेरशाह सूरी को बिना पराजित किए छोड़ दिया। यह हुमायूँ की बहुत बड़ी भूल थी।
- हुमायूँ के साथ दो चित्रकार 'अब्दुल समद' और 'मीर सैयद अली' आए थे।
- चौसा के युद्ध में भिस्ती ने उसकी जान बचायी, जिसके कारण हुमायूँ ने उसे एक दिन के लिए भारत का सम्राट बनाने का घोषणा किया था।

बिलग्राम का युद्ध 1540 – (कन्नौज)

- हुमायूँ विरूद्ध शेरशाह सूरी
- हुमायूँ अंतिम रूप से पराजित हुआ तथा भारत छोड़कर अमरकोट के शासक बीरसाल के यहाँ शरण लिया।

- निर्वासन के समय हुमायूँ ने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरु **'मीर अली अकबर'** की पुत्री **हमीदा बेगम** से निकाह किया। कालान्तर में **हमीदा बेगम** से ही अकबर का जन्म हुआ।
- शेरशाह सूरी विजित हुआ तथा उसने भारत में द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।
- मृत्यु 1556 में **दीन–ए–पनाह महल** की सीढ़ियों से गिरने से हुमायूँ की मृत्यु हो गई।
- हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर **कालानौर (पाकिस्तान)** में था। बैरम खाँ ने इसी स्थान पर अकबर का राज्याभिषेक किया।
- हुमायूँ के बारे में इतिहासकार **लैनपुल** ने कहा– "जीवनभर वह लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुये उसकी मृत्यु हो गई।"
- अबुल फजल ने इन्हे **इन्सान–ए–कामिल** कहकर संबोधित किया।

अकबर

- पानीपत के द्वितीय युद्ध में हेमू के आँख में तीर लग जाने के कारण उसकी सेना में भगदड़ मच गयी, जिस कारण हेमू जीता हुआ युद्ध हार गया।
  आर.डी. त्रिपाठी – हेमू की पराजय मात्र एक दुर्घटना थी एवं अकबर की विजय एक दैवी संयोग।
- हेमू हिन्दु था। उसने हुमायूँ की मृत्योपरांत दिल्ली पर अधिकार किया था व **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की।
- 1556–60 तक अकबर ने बैरम खाँ के संरक्षण में शासन किया।
- इसे अकबर का संरक्षण का काल कहा जाता है।
- 1560 में अकबर ने बैरम खाँ को मक्का–मदीना की तीर्थ यात्रा पर भेज दिया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- रास्ते में अफगान शासक द्वारा बैरम खाँ की हत्या कर दी गई।
- 1560–62 ई. तक अकबर के काल को **पेटीकोट का काल** कहा जाता है, जिसमें अकबर की माता **हमीद बानो बेगम, धांय माँ माहम अनगा, अधम खाँ** आदि समूह के नियंत्रण में कार्य किया।
- 1562 में अकबर स्वतंत्र शासक बना।
- 'दास प्रथा' का अंत किया।
- 1563 में 'तीर्थयात्रा कर' की समाप्ति
- 1564 में 'जजिया कर' की समाप्ति
- 1564 में गोंडवाना पर आक्रमण (शासिका – दुर्गावती)
- 1566–67 में मेवाड़ पर आक्रमण (शासक – उदयसिंह)
- 1569 में जहांगीर का जन्म
- 1571 में गुजरात पर आक्रमण
- 1571–72 में फतेहपुर सीकरी की स्थापना
- 1575 में 'इबादत खाना' की स्थापना (फतेहपुर सीकरी)
- 18 जून, 1576 में हल्दीघाटी का युद्ध (शासक – महाराणा प्रताप)
- 1578 में इबादतखाना को सभी के लिए खोला।
- 1579 में मजहर की घोषणा (धार्मिक मामलों में अपने आप को सर्वोच्च घोषित)
- 1582 में **दीन–ए–इलाही** धर्म की शुरूआत। यह सभी धर्मों के अच्छे गुणों का संरक्षक था। इसे आचार संहिता कहा जा सकता है। सदस्य संख्या मात्र 18 जिसमें से एक बीरबल था।
- 1583 में 'इलाही संवत्' चलाया। यह सूर्य पर आधारित था।
- 1585 में अकबर का कश्मीर अभियान
- 1591 में अकबर का दक्षिण अभियान
- 1596 में अहमद नगर का विजय (पुणे)
- 1601 में असीरगढ़ किला पर आक्रमण (मध्य प्रदेश) अकबर का अंतिम विजय अभियान
- 1605 में पेट की बीमारी (जलोदर) से मृत्यु हो गई।
- अकबर के शव को आगरा के निकट सिकंदरा में दफनाया गया तथा मकबरा बनवाया गया।

- अकबर ने सिक्ख गुरू रामदास को 500 बीघा जमीन प्रदान की। इसमें एक प्राकृतिक तालाब था। बाद में यहीं अमृतसर नगर बसाया गया एवं स्वर्ण मंदिर का निर्माण हुआ।
- अकबर के इबादतखाने में पारसी संत मेहरजी राणा आये थे। उन्होंने आग प्रज्वलित किया था। पारसी मंदिरों को 'फायर टेम्पल' कहते हैं।
- इसी के शासनकाल (1600) में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई।
- अकबर ने गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाया।
- बाल विवाह/सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया एवं विवाह की उम्र पुरुष 16 वर्ष तथा स्त्री की उम्र 14 वर्ष कर दी एवं विधवा पुनर्विवाह को मान्यता दे दी।

अकबर के दरबार में नवरत्न –

(1) **राजा बीरबल** – 'राजा' व 'कविराज' दोनों की उपाधि दी गई।
वास्तविक नाम – महेश दास
दीन–ए–इलाही धर्म को स्वीकार करने वाला प्रथम व अंतिम हिन्दु शासक

(2) **मानसिंह** – भगवान दास का लड़का व जहाँगीर का साला

(3) **अब्दुल रहीम खानखाना** – 1571 के गुजरात अभियान के विजय में **'खानखाना'** की उपाधि दी गई।

(4) **अबुल फजल** – अकबर का पुरोहित

(5) **तानसेन** – संगीतज्ञ (तनुपांडे) अकबर ने इन्हें **'कण्ठाभरण वाणीविलास'** की उपाधि दी।

(6) **हकीम हुकाम** – अकबर का रसोइया

(7) **मुल्ला दो प्याजा** – एक ईरानी विद्वान

(8) **टोडरमल** – अकबर का राजस्व एवं वित्त मंत्री

(9) **फैजी** – अबुल फजल का बड़ा भाई। अकबर के दरबार में **'राजकवि'** के पद पर आसीन था।

अकबर की मनसबदारी व्यवस्था या सैन्य प्रबंधन प्रणाली

- यह व्यवस्था चंगेज खाँ के दशमलव (दस) प्रणाली पर आधारित था।
- इसमें मनसब से आशय 'पद' से था।
- इसके प्रणेता **'टोडरमल'** थे।
- यह सैन्य व्यवस्था से जुड़ा था।
- पहले आनुवांशिक नहीं था, बाद में वंशानुगत हो गया।
- 1572 में इसकी शुरूआत हुई।
- मनसबदारों को वेतन नकद एवं जागीर दोनों में देने की व्यवस्था थी।
- सबसे छोटा मनसब 10 एवं सबसे बड़ा 10 हजारी था।
- इनमें दो अन्य उपाधियाँ **जात** और **सवार** थी।
- **जात** से व्यक्ति के वेतन व प्रतिष्ठा का ज्ञान होता था।
- **सवार** से घुड़सवार दस्तों की संख्या का ज्ञान होता था।
- दो अस्पा व सिंह अस्पा बाद में जहाँगीर ने जोड़ा।

अकबर की राजपूत नीति–

- अकबर की राजपूत नीति के तीन आधार थे–

(1) **विवाह** –अकबर ने राजपूतों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखा।

(2) **युद्ध** –अकबर ने साम्राज्य विस्तार के लिए युद्ध का भी सहारा लिया।

(3) **मित्रता** –अकबर ने साम्राज्य की सुरक्षा के लिए मित्रता को राजपूत नीति का प्रमुख आधार बनाया।

अकबर की आर्थिक प्रणाली –

- अकबर के वित्तमंत्री टोडरमल ने राजस्व के क्षेत्र में **'दहशाला व्यवस्था'** लागू किया था।
- इस समय भू–राजस्व की निम्नलिखित प्रथाएँ प्रचलित थीं–

(1) **जब्ती** – विगत वर्षों के आधार पर लगान निश्चित
(2) **बटाई** (गल्लाबख्शी) – सबसे प्राचीन पद्धति। फसल का कृषक एवं शासन के मध्य विभाजन होता था।
(3) **दानाबंदी** – अनुमानित आधार पर लगान
(4) **नश्क** – सम्पूर्ण गाँव का लगान एक साथ

- भूमि को उपज के आधार पर चार भागों में बाँटा गया– पोलज, परती, चाचर, बंजर।
- भू–राजस्व विभाग 10 वर्षों की औसत उपज के आधार पर औसत का 1/3 भाग लिया जाता था। इसे ही दहशाला पद्धति कहा गया।

अकबर के विजय अभियान –

(1) **गोंडवाना विजय (1564)**
- अकबर विरूद्ध चंदेल शासिका दुर्गावती
- अकबर विजित
- गोंडवाना का मुगल साम्राज्य में विलय

(2) **मेवाड़ आक्रमण (1566–77)**
- अकबर विरूद्ध राणा उदय सिंह
- उदय सिंह पराजित पर गिरफ्तार नहीं हुआ।
- अंततः मेवाड़ मुगल साम्राज्य में विलय नहीं हुआ।
- मेवाड़ शासक के दो वीर सेनापति जयमल एवं फत्ता की स्मृति में आगरा के किले के सामने मूर्तियाँ लगवाई।

(3) **हल्दीघाटी का युद्ध (1576)**
- अकबर विरूद्ध महाराणा प्रताप (मेवाड़ शासक)
- अकबर के सेनापति मानसिंह व आसफ खाँ
- महाराणा प्रताप पराजित परंतु गिरफ्तार नहीं हुआ।

(4) **गुजरात अभियान (1571)**
- अकबर विरूद्ध मुज्जफर खान तृतीय
- मिर्जा अजीज कोका गुजरात का शासक नियुक्त हुआ, परन्तु मिर्जा अजीज कोका द्वारा विद्रोह कर देने पर पुनः अकबर ने गुजरात पर आक्रमण किया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- इतिहासकारों के मतानुसार– अकबर का यह अभियान विश्व का सबसे तीव्रतम अभियान था।
- पुनः गुजरात विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने अपनी नई राजधानी का नाम फतेहपुर सीकरी रखा तथा शेख सलीम चिश्ती की याद में फतेहपुर सीकरी शहर बसाया तथा बुलंद दरवाजा का निर्माण करवाया।

(5) **अकबर का गांधार एवं काबुल अभियान (1581)**

- अकबर इस क्षेत्र को अपने पूर्वजों का क्षेत्र होने के कारण जीतना चाहता था।

(6) **अकबर का दक्षिण अभियान (1591)**

- 1596 में अकबर ने खानदेश व अहमद नगर को विजित किया।
- अहमद नगर की तत्कालीन शासिका या बीजापुर के शासक की विधवा चांद बीबी थी।
- अहमद नगर को अकबर द्वारा जीत लेने पर चांद बीबी ने आत्महत्या कर ली।

(7) **असीरगढ़ का युद्ध (1601)**

- यह अकबर का अंतिम विजय अभियान था। चूंकि असीरगढ़ दक्षिण का प्रवेश द्वार कहलाता था, इसलिए अकबर इसे जीतना चाहता था।

अन्य तथ्य –

- अकबर के दरबार में प्रसिद्ध चित्रकार **'अब्दुलसमद'** था। 'दसवन्त' व 'बसावन' भी अकबर के दरबार के चित्रकार थे।
- अकबर के समकालीन प्रसिद्ध सूफी सन्त 'शेख सलीम चिश्ती' थे।
- मैलीसन ने अकबर को राष्ट्रीय शासक कहा।
- अकबर ने 'अनुवाद विभाग' की स्थापना की।
- मुगलों की राजकीय भाषा फारसी थी।
- अकबर ने 'शीरीकलम' की उपाधि अब्दुलसमद को तथा 'जड़ीकलम' की उपाधि मुहम्मद हुसैन कश्मीरी को दिया।
- अकबर एक अनपढ़ शासक था।

जहाँगीर

- यह न्यायप्रिय शासक था।
- इसने 12 आदेश दिए जो **'दस्तूर उल अमल'** नाम से जाने जाते हैं।
- इसने आगरा के किले **शाहबुर्ज** और यमुना नदी के तट पर **स्वर्ण जड़ित न्याय की जंजीर** लगवाया था।
- यह चित्रकला प्रेमी था व स्वयं चित्रकार था।
- इसने अपनी जीवनी **'तुजके जहाँगीरी'** लिखी। इसे मौतबिंद खाँ ने पूर्ण किया।

इसके दरबार में दो प्रमुख चित्रकार थे–

(1) अब्दुलसमद
(2) मंसुर खाँ – पक्षियों के चित्र बनाने में कुशल

- इस कारण जहाँगीर के काल को भारतीय इतिहास के चित्रकाल का स्वर्णिम काल कहा जाता है।

- जहाँगीर के शासनकाल में ब्रिटिश व्यापारियों को भारत में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त हुई।

इनके शासनकाल में तीन ब्रिटिश व्यापारी भारत आए–

(1) हॉकिन्स (1608)
(3) टामस रो (1615) – इसे जहाँगीर ने 'खान' की उपाधि से सम्मानित किया।

जहाँगीर का विजय अभियान–

(1) **मेवाड़ अभियान**

- खुर्रम के नेतृत्व में इसने मेवाड़ के शासक अमर सिंह से समझौता करके मेवाड़ को मुगल साम्राज्य में मिलाया।

(2) **अहमदनगर अभियान**

- 1617 में खुर्रम के नेतृत्व में अहमदनगर पर अंतिम आक्रमण किया।
- यहाँ का शासक **मलिक अम्बर** था।
- इससे समझौता करके अंतिम रूप से अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में विलय कर लिया।
- इसी अभियान के बाद खुर्रम को जहाँगीर ने 'शाहजहाँ' की उपाधि प्रदान की।

जहाँगीर के समय विद्रोह –

(1) **खुसरो का विद्रोह (1606)**

- इस विद्रोह का खुर्रम के नेतृत्व में दमन किया गया।
- बाद में खुसरो की हत्या कर दी गई।
- विद्रोह के दौरान खुसरो को सिक्खों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने संरक्षण दिया था। इसलिए जहाँगीर ने अर्जुन देव की हत्या कर दी।
- 1615 ई. में मेवाड़ के शासक अमर सिंह (राणा प्रताप के पुत्र) से संधि कर ली।
- 1620 ई. में कांगड़ा पर विजय प्राप्त कर ली।
- कंधार जहाँगीर के हाथों से निकल गया।

(2) **खुर्रम का विद्रोह (1623)**

- इसने अपने ससुर आसफ खाँ के नेतृत्व में विद्रोह किया।
- विद्रोह का दमन कर दिया गया।

शाहजहाँ

विजय अभियान

- शाहजहाँ ने अफगानिस्तान को जीतकर अंतिम रूप से मुगल साम्राज्य में मिलाया।
- इसके शासनकाल में 1636 में औरंगजेब दक्षिण का सूबेदार बना।
- दूसरी बार 1652–58 तक दक्षिण का सूबेदार बना।
- 1658 में शाहजहाँ बीमार होने तथा इसके उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हुआ।
- इसने आसफ खाँ को **वजीर** का पद एवं महावत खाँ को 'खानखाना' की उपाधि प्रदान की।
- ताजमहल का मुख्य स्थापना कलाकार – **उस्ताद अहमद लाहौरी**।
- शाहजहाँ ने मयूर सिंहासन का निर्माण करवाया। इसका कलाकार 'बेबादल खाँ' था।
- शाहजहाँ के शासनकाल का 'स्थापत्य कला का स्वर्णकाल' कहा जाता है।
- इसने अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली लाने के लिए यमुना नदी के तट पर शाहजहाँनाबाद की नींव रखी।
- आगरा में जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने करवाया।
- इसके पुत्रों में दारासिकोह सर्वाधिक विद्वान था। इसने भगवद्गीता, योगवषिष्ठ, उपनिषद् एवं रामायण का फारसी में अनुवाद करवाया व 'सर्र–ए–अकबर' (महान रहस्य) नाम के उपनिषदों का अनुवाद करवाया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

औरंगजेब

विजय अभियान एवं नीतियाँ

- इसने राजपूतों से द्वेषपूर्ण व्यवहार किया यद्यपि औरंगजेब के शासनकाल में सर्वाधिक संख्या में राजपूत मनसबदार थे।
- औरंगजेब ने अपनी अलोकप्रियता को कम करने के लिए निम्नलिखित कार्य किए–
- जनता पर से अनेक कर हटा लिए।
- अपने जन्म दिवस पर भेंट स्वीकारना बंद कर लिए।
- इस्लाम प्रचार के कार्य किए व प्रत्येक नगर में मुहतसिब (आचरण के निरीक्षक) की नियुक्ति की।
- मुद्राओं पर कलमा लिखवाना बंद कर दिया।
- संगीत, कविता, चित्रकला पर प्रतिबंध लगवा दिया।
- शियाओं पर भी कड़े प्रतिबंध लगवाए।
- उसने 'सती प्रथा' पर प्रतिबंध लगवाया। (1664 ई.)

  नोटः– औरंगजेब कभी भी असम को पूर्णतः अपने अधिकार में नहीं रख सका।

  इसने 'झरोखा–दर्शन प्रथा' व 'नवरोज' रखने पर रोक लगा दी।
- मंदिर तोड़ा, धर्म परिवर्तन करने पर जोर दिया।
- औरंगजेब का साम्राज्य मुगलों में सर्वाधिक विस्तृत था। इसके काल में 22 सूबे थे, जबकि अकबर के समय 15 सूबे।

धार्मिक नीति

- औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसे **'जिन्दा पीर'** कहा जाता था। इसने हिन्दुओं और शियाओ के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार किया।
- इसमें 115 वर्ष बाद 1679 में पुनः हिन्दुओं पर **'जजिया कर'** व **'तीर्थयात्रा कर'** लगा दिया।

औरंगजेब का दक्षिण अभियान के कारण

(1) साम्राज्य विस्तार
(2) धन प्राप्ति
(3) शिवाजी का दमन
(4) हिन्दुओं और सियाओं के प्रभाव को कम करना।

दक्षिण विजय अभियान

(1) **बीजापुर** – 1686 में मुगल साम्राज्य में विलय
शासक – आदिल शाह द्वितीय

(2) **गोलकुण्डा** – 1687 में गोलकुण्डा का अंतिम रूप से मुगल साम्राज्य में विलय
शासक – अबुल हसन

विद्रोह –

(1) मारवाड़ का विद्रोह :
शासक – अजीत सिंह
संरक्षक – राठौर दुर्गादास

(2) जाट विद्रोह (1686)
विद्रोहकर्ता – गोकला, भरतपुर, चुरामन के नेतृत्व में स्वतंत्र हो गया।

(3) सिक्ख विद्रोह (1675) :
कारण – सिक्खों के 9वें गुरू तेगबहादुर को इस्लाम धर्म कबुल करने को औरंगजेब ने दबाव डाला तथा ग्रहण न करने पर उसकी हत्या कर दी गई।

मुगलकालीन चित्रकला–

(1) **बाबर** : बेजहाद (पूर्व का राफेल)
(2) **हुमायूँ** : अब्दुरसमद, मीर सैय्यद अली
(3) **अकबर** : दसवंत, बसावन
(4) **जहाँगीर** : चित्रकला का कला स्वर्णकाल आगरा में चित्रशाला का निर्माण करवाया।

प्रसिद्ध चित्रकार–

(1) **अबुल हसन**
(2) **उस्ताद मंसूर खान** – प्रकृति का चित्रकार था।
प्रसिद्ध चित्र : साइबेरिया का बिरला सारस (लंदन के म्यूजिम में रखा गया।)

मुगलकालीन राजस्व प्रणाली

(1) **खालसा भूमि** – सरकारी भूमि को खालसा भूमि कहा जाता था।
(2) **जागीर भूमि** – तनख्वाह के बदले दी जाने वाली भूमि
(3) **सयुरगल व मदद–ए–माश** – अनुदान में दी गई लगानहीन भूमि

- 1580 ई. में अकबर ने 'दहशाला' नाम की नवीन कर प्रणाली प्रारंभ की। इसे व्यवस्था को **'टोडरमल बंदोबस्त'** भी कहा जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि को चार वर्गों में बांटा गया है–

(1) **पोलज** – इसमें नियमित रूप से खेती होती है।
(2) **परती** – इस भूमि पर 1 या 2 वर्ष के अन्तराल में खेती होती थी।
(3) **चाचर** – इस भूमि पर तीन–चार वर्षों के अन्तराल में खेती होती थी।
(4) **बंजर** – यह खेती योग्य भूमि नहीं थी।

मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था

- मुगलकाल में सेना मुख्यतः चार भागों में विभक्त थी–

(1) **पैदल सेना**
(2) **घुड़सवार सेना** – यह मुगल सेना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग था।
(3) **तोपखाना**
(4) **हस्ति सेना**

मुगलकालीन प्रशासन

1. **वकील**	–	प्रधानमंत्री (बैरम खाँ, अकबर का वकील था)
2. **मीर बख्शी**	–	सेना विभाग का प्रमुख
3. **सद उस सुदुर**	–	धार्मिक मंत्री
4. **काजी उल कुजात**	–	मुख्य न्यायाधीश
5. **दीवान–ए–वजीर**	–	वित्तमंत्री
6. **मुहत शीब**	–	वह मंत्री, जो बरियत के अनुकूल व्यवस्था करनाचरण पर नजर रखना।
7. **सूबेदार**	–	प्रान्तों या सूबों का प्रमुख
8. **फौजदार**	–	नगर पुलिस अधिकारी
9. **कोतवाल**	–	नगर में दण्ड संबंधी मामलों का प्रमुख
10. **कानूनगो**	–	उस समय का पटवारी
11. **कारकून**	–	वर्तमान का क्लर्क
12. **मीर आतिश**	–	तोपखाने विभाग का प्रमुख
13. **खान–ए–सामा**	–	राजपरिवार व राजमहल का प्रबंधक

—00—

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

विजयनगर साम्राज्य

विशेष – मोहम्मद बिन तुगलक के समय 1336 में हरिहर व बुक्का नाम के दो भाइयों ने विजयनगर साम्राज्य की नींव डाली।

- शाब्दिक अर्थ – जीत का शहर
- राजधानी – विजयनगर (तुंगभद्रा नदी के तट पर)
- इसके काल को **संक्रांति काल** कहा जाता है।
- विजयनगर साम्राज्य के अन्तर्गत **चार राजवंशों** ने राज किया।
- इसे मध्यकालीन इतिहास का **"पहला हिन्दु साम्राज्य"** कहा जाता है। तथा भारत का अंतिम हिंदू साम्राज्य कहा जाता है।

	राजवंश	शासन अवधि	संस्थापक
1.	संगम वंश	1336–1486 ई.	हरिहर व बुक्का
2.	सुलुव वंश	1486–1505 ई.	नरसिंह सुलुव
3.	तुलव वंश	1505–1570 ई.	वीर नरसिंह
4.	आरवीडु वंश	1570–1614 ई.	तिरूमल

प्रथम वंश

संगम वंश

प्रथम शासक : हरिहर प्रथम (1336–1356 ई.)

- आनेगोन्डी के स्थान पर 'विजयनगर' को राजधानी बनाया।
- इसने होयसल राज्य को अपने राज्य में मिलाया।
- कदम्ब तथा मदुरा को विजित किया।
- हरिहर प्रथम को दो समुद्रों का अधिपति कहा जाता है।
- मृत्यु – 1356 ई.

द्वितीय शासक : बुक्का प्रथम (1356–1377 ई.)

- हरिहर प्रथम का भाई था।
- बुक्का प्रथम ने **'वेदमार्ग प्रतिष्ठापक'** की उपाधि ग्रहण की।
- इसने कृष्णा नदी को विजयनगर व बहमनी राज्य के बीच सीमा रेखा माना।
- मदुरई को अपने राज्य में मिलाया।
- 1774 ई. में चीन में अपना दूतमण्डल भेजा था।
- बुक्का प्रथम को **'तीनों समुद्रों का अधिपति'** कहा जाता है।

तृतीय शासक : हरिहर द्वितीय (1377–1404 ई.)

- सर्वप्रथम 'राजा' की उपाधि ग्रहण किया।
- इसने **'महाराजाधिराज'** की पदवी धारण की।
- श्रीलंका के राजा को पराजित कर कर वसूल किया।
- विद्वानों को संरक्षण देने के लिये इन्हें **'राज व्यास'** या **'राज वाल्मिकी'** कहा जाता था।

प्रसिद्ध शासक : देवराय प्रथम (1406–1422 ई.)

- इसके शासनकाल में यूरोपीय **(इटली)** यात्री **'निकोलोकोण्टी'** भारत आया।
- इनके दरबार में प्रसिद्ध तेलगू कवि **श्रीनाथ** रहता था।
- देवराय प्रथम ने तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनाकर नहर का निर्माण करवाया।
- अपनी पुत्री का विवाह फिरोजशाह से किया।

प्रसिद्ध शासक : देवराय द्वितीय (1422–1446 ई.)

- इसे **'इमाडिदेवराय'** के नाम से भी जाना जाता है।
- 1443 में **अब्दुल रज्जाक** (फारसी) फरिश्ता इसके दरबार में आये थे।
- एक अभिलेख में इन्हें **'गजबेटकर'** (हाथियों का शिकारी) कहा गया।

अंतिम शासक : विरूपाक्ष द्वितीय (1465–1485 ई.)

- सालुव नरसिंह का सेनानायक **नरसानायक** ने इसकी हत्या कर सालुव नरसिंह का राजा बना।
- इस घटना को विजयनगर साम्राज्य का **"प्रथम बलापहार"** कहा जाता है।

सालुव वंश

संस्थापक – सालुव नरसिंह

प्रसिद्ध शासक : इम्माडि नरसिंह

- इसकी हत्या नरसानायक के पुत्र वीरनरसिंह ने किया तथा एक नवीन राजवंश तुलुव वंश की स्थापना की। इसे **'द्वितीय बलापहार'** कहा जाता है।

तुलुव वंश

(1505–70) संस्थापक – वीर नरसिंह

प्रसिद्ध शासक : कृष्णदेव राय (1509–29 ई.)

- विजयनगर साम्राज्य का सबसे प्रतापी शासक
- उपाधि – **'आंध्रभोज'** कहा जाता था। इसने **'यवनराज स्थापनाचार्य'** की उपाधि धारण की।
- इसके दरबार में पुर्तगाली यात्री **डोमीगोस पायस** आया था।
- यह पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क का मित्र था।
- नागलपुर शहर की स्थापना किया।
- कृष्णदेव राय स्वयं एक कवि था। दो रचनाएँ–
  1. **'अमुक्त माल्यद'** (तेलगू) 2. **'जांबुवती कल्याण'** (संस्कृत)
- कृष्णदेव राय ने **"आन्ध्रभोज"**, **"अभिनवभोज"**, **"आन्ध्र पितामह"** आदि की उपाधि धारण की।
- इसके दरबार में अष्ट दिग्गज रहते थे–

  प्रमुख– (1) **अल्लसानि पेद्डाना** – रचना – 'हरिकथा सार'
  - इसे 'तेलगू कविता का पितामह' की उपाधि दिया गया था।

  (2) **तेनालिराम कृष्ण** – रचना – 'पाडुरंग महात्म्य'
- कृष्णदेव राय ने उडीसा के शासक **प्रतापरूद्र देव** से चार बार युद्ध किया तथा प्रत्येक बार उन्हें पराजित किया।
- इसने **बहमनी राज्य** को पूरी तरह जीता था।
- निर्माण कार्य– **'विट्ठल स्वामी'**, **'हजारादेवी का मंदिर'** निर्माण करवाया।
- **बाबर ने 'तुजुक-ए-बाबरी' में कृष्णदेव राय को भारत** का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कहा है।

अंतिम शासक : सदाशिव

- सेनापति – रामराय
- 1565 : **तालीकोटा का युद्ध** या **राक्षसी तंगडी या बन्नरघट्टा का युद्ध**
- विजयनगर विरूद्ध **बीजापुर, गोलकुण्डा, बीदर, अहमदनगर** की संयुक्त सेना अथवा **रामराय** विरूद्ध **अली आदिल शाह**
- विजयनगर पराजित
- इसे भारतीय इतिहास के भयंकर युद्धों में से एक माना जाता है।

Scanned with CamScanner

अरावीडु वंश

(1570–1650)

- सदाशिव के सेनापति **तिरूमल** ने इसकी हत्या कर इस वंश की नींव डाली।

सर्वप्रतापी शासक : वेंकट द्वितीय

- विजय नगर को अक्षुण्य रखने वाला अंतिम महान शासक

विजयनगर साम्राज्य की व्यवस्था–

(1) **नायंगर व्यवस्था** – विजयनगर साम्राज्य में कृषि एवं राजस्व संबंधी गठित व्यवस्था

(2) **आयंगर व्यवस्था** – **गाँवों के प्रशासन** के लिये की गई व्यवस्था को।

(3) इस साम्राज्य के काल में **संस्कृत भाषा** का विकास हुआ।

(4) इसके सैन्य विभाग को कन्दाचार कहा जाता था।

- साम्राज्य राज्य या मंडलम में, मंडलम्, नाडू (जिलों में नाडु स्थल), तहसील व ग्रामो में विभक्त थे।
- वित्त विभाग **'अठाकना'** कहलाता था।
- कुछ क्षेत्र सामंतों के अधीन थे। ये सामंत नायक कहलाते थे व यह प्रथा **नायकारा** कहलाती थी।
- शिष्ट प्रमुख भूमि कर **1/6** होता था।

महत्वपूर्ण तथ्य–

- विजयनगर साम्राज्य के अवशेष वर्तमान में **'हम्पी'** नामक स्थान पर प्राप्त हुए हैं।
- **अमरम प्रथा** – इसके अनुसार सेनानियों को निश्चित कर के एवज में कुछ क्षेत्र प्रदान किया जाता था। अमरम के प्रमुख **'अमरनायक'** थे।
- विजयनगर में **'सती प्रथा'** प्रचलित थी एवं 'विवाह कर' भी लिया जाता था।

—000—

बहमनी साम्राज्य

स्थापना वर्ष	–	1347
संस्थापक	–	अलाउद्दीन बहमन शाह द्वारा/हसन गंगु
राजधानी	–	गुलबर्गा

प्रसिद्ध सेनापति : महमूद गंवा

- इसने दक्षिण में **स्कूल–कॉलेजों** की स्थापना की।
- इसे **'मलिक–उल–तुज्जार'** व **'ख्वाजा जहाँ'** की उपाधि दी गई।

- 1489 में बहमनी साम्राज्य का विभाजन शुरू हुआ तथा यह पाँच राजवंशों में विभक्त हो गया–

(1) **बीजापुर** – स्वतंत्र वर्ष – 1489–90
वंश – आदिलशाही वंश
संस्थापक – युसुफ आदिल शाह

(2) **अहमदनगर** – स्थापना वर्ष – 1490
वंश – निजामशाही वंश
संस्थापक – मलिक अहमद

(3) **बरार** – स्थापना वर्ष – 1484
वंश – इमादशाही वंश
संस्थापक – फते उल्लाह/इमादशाह

(4) **गोलकुण्डा** – स्थापना वर्ष – 1512
वंश – कुतुबशाही वंश
संस्थापक – कुली कुलूकुतुब शाह

(5) **बीदर** – स्थापना वर्ष – 1527
वंश – बरीदशाही वंश
संस्थापक – कासिम बरीद, बाद में अमीर अली बरीद

विशेष–

- बरार का मुगल साम्राज्य में विलय – 1596
- अहमद नगर का मुगल साम्राज्य में विलय – 1617
- औरंगजेब द्वारा बीजापुर का मुगल साम्राज्य में विलय – 1686
- गोलकुण्डा का मुगल साम्राज्य में विलय – 1687
- बीजापुर में पहले ही बीदर का विलय हो चुका था।

निर्माण–

- आदिल शाह ने बीजापुर के **'गोल गुम्बद'** का निर्माण करवाया।
- बीजापुर के शासक इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय को **अबला बाबा** व **जगतगुरू** भी कहा जाता है। इसने **'किताब-ए-नौरस'** नामक **हिन्दी** लिखी तथा **नौरसपुर** नामक नगर बसाया।
- अहमदनगर की चांदबीबी अकबर की सेना का प्रतिरोध करने के कारण विख्यात हुई।
- कुलुकुतुब शाह ने हैदराबाद के चारमीनार का आधार रखा।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

मालवा

- **स्थापना** : फिरोजशाह तुगलक के समय दिलावर खाँ द्वारा (1398)
- **राजधानी** : धार

प्रथम प्रसिद्ध शासक : होसंग शाह

- इसने होशंगाबाद नगर की स्थापना की।

द्वितीय प्रसिद्ध शासक : नासिरुद्दीन शाह

तृतीय प्रसिद्ध शासक : महमूदशाह खिलजी

प्रमुख बातें–

1. होसंगशाह ने धार के स्थान पर **मांडु** को अपनी राजधानी बनाया।
2. होसंगशाह ने मांडु के किले के अन्दर **'हिन्डोला महल'** का निर्माण करवाया।
3. नासिरुद्दीन शाह ने **'बाज बहादुर'** तथा **'रानी रूपमति'** के महल का निर्माण करवाया।
4. महमूदशाह खिलजी ने मांडु पर **'जहाज महल'** का निर्माण करवाया।
5. महमूदशाह खिलजी का मेवाड़ शासक राणा कुम्भा के साथ युद्ध हुआ एवं पराजित हुआ।

मेवाड़

वास्तविक संस्थापक : राणा कुम्भा

- इसने मेवाड़ (चित्तौड़) में सिसोदिया वंश की नींव डाली।
- चित्तौड़ में **'कीर्ति स्तंभ'** का निर्माण करवाया। राणा कुम्भा ने 1448 ई. में चित्तौड़ में एक विजय स्तंभ की स्थापना की।
- इसका पुत्र राणा सांगा, बाबर का समकालीन था।
- राणा सांगा ने बाबर के साथ **खानवा का युद्ध, 1527** में लड़ा।
- राणा सांगा के दो पुत्र थे–

  (1) **उदय सिंह** : यह अकबर के समकालीन था।

  (2) **भोज सिंह** : मीराबाई इसकी पत्नी थी।
- **उदय सिंह का पुत्र महाराणा प्रताप था।**
- **महाराणा प्रताप ने 1576 में अकबर के साथ हल्दीघाटी का युद्ध** लड़ा।
- महाराणा प्रताप के शासनकाल तक मेवाड़ अजेय था।
- महाराणा प्रताप के पुत्र **अमरसिंह** के शासनकाल में जहाँगीर ने मेवाड़ को मुगल साम्राज्य में मिलाया।

जौनपुर (पूर्व का सिराज)

- **शहर बसाया** – फिरोजशाह तुगलक ने अपने शासनकाल में
- जौनपुर में स्वतंत्र शर्की राजवंश की स्थापना 'मलिक सरवर' ने की थी।
- शर्की शासन के अन्तर्गत विशेषकर 'इब्राहिम शाह' के समय जौनपुर में साहित्य व स्थापत्य कला के क्षेत्र में हुए विकास के कारण जौनपुर को 'भारत का सीराज' के नाम से जाना गया।
- अटाला देवी मंदिर, जिसका निर्माण कन्नौज के राजा विजयचन्द्र द्वारा की गई थी, उसे तोड़कर इब्राहिम शाह द्वारा मस्जिद का निर्माण करवाया गया था।
- यह दिल्ली सल्तनत से पृथक होने वाला प्रथम राज्य था।
- हिन्दी का प्रसिद्ध कवि और **'पद्मावत्'** का रचयिता **'मलिक मुहम्मद जायसी'** यहीं निवास करता था।

कश्मीर

संस्थापक – सूहादेव

- **दो शासक प्रसिद्ध हुए–**

(1) **सिकन्दर शाह (1398–1413 ई.)**

- ये कट्टर मुस्लिम थे। इसने बलपूर्वक तथा क्रूरतापूर्वक हिन्दुओं को इस्लाम स्वीकार कारने हेतु बाध्य किया।

(2) **जैन–उल–अबीदीन (1420–70 ई.)**

- इसने सहिष्णुता की नीति अपनाई तथा **जजिया कर समाप्त** कर दिया।
- हिन्दुओं को उच्च पदों पर नियुक्त किया।
- इसे **'कश्मीर का अकबर'** कहा जाता है।

बंगाल

संस्थापक – शमसुद्दीन इल्यास खाँ

- इसी के नाम पर वंश का नाम इल्यासशाही कहा गया।

सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक : अलाउद्दीन हुसैन शाह

- इस वंश की राजधानी पांडुका थी।

  दरबारी कवि – मालधर वसु

  रचना – 'श्रीकृष्णविजय'

  उपाधि – गुणराजा खान
- बलबन के समय इस क्षेत्र को लखनौती कहा जाता था।

गुजरात

- अहमद शाह ने स्वतंत्र गुजरात राज्य की स्थापना किया।
- इसने अहमदाबाद नगर की स्थापना की व पाटन के स्थान पर राजधानी बनाया।

सर्वाधिक प्रसिद्ध सुल्तान : महमूद बेगड़ा 'पेटू'

- अहमद शाह ने अहमदाबाद में जामा मस्जिद व तीन दरवाजा का निर्माण कराया।

—00—

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

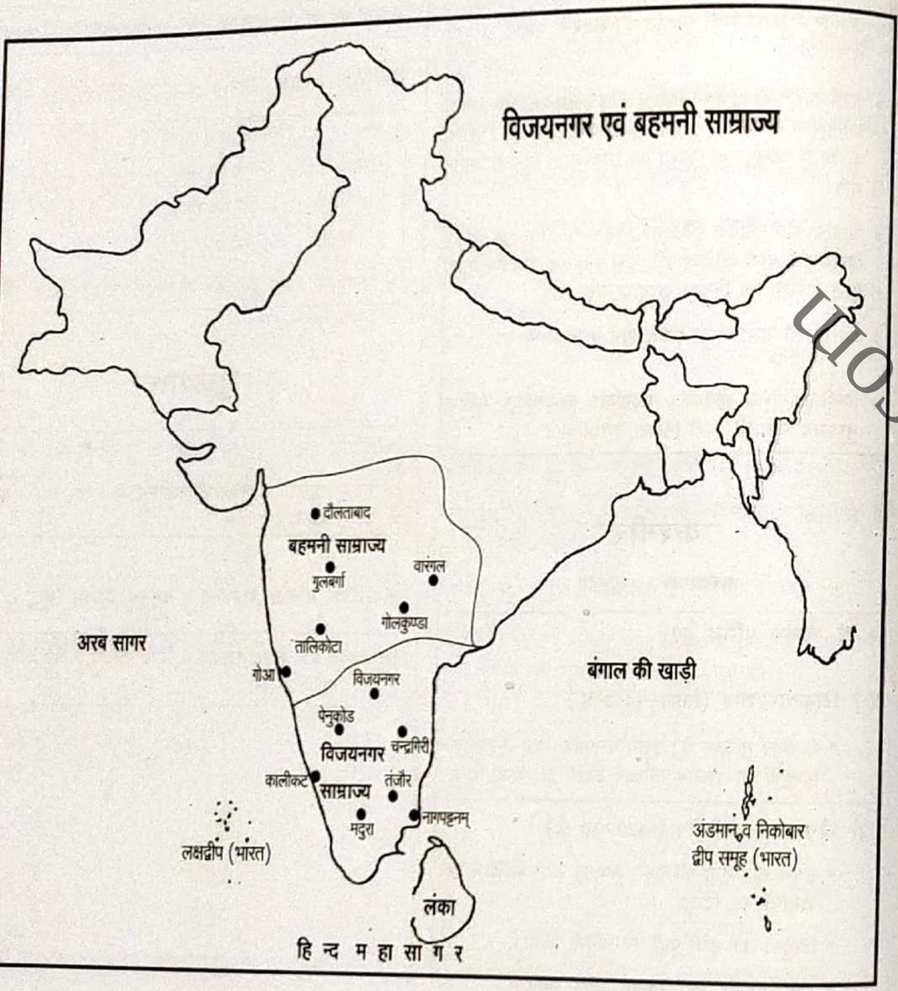

मध्यकालीन भारत में धार्मिक सुधार आंदोलन

सूफी आन्दोलन –

- सूफी का शाब्दिक अर्थ – **पवित्र**
- भारत में सूफी मत की शुरूआत 12वीं शताब्दी में हुई।
- भारत में आने वाले पहले सूफी संत शेख इस्माईल थे। इसके पश्चात् अल हुजवीरी 11वीं शताब्दी में भारत आए थे। 12वीं सदी में सूफीमत बारह सिलसिलों में विभाजित हो गया था। इनमें से अनेक भारत आए। अबुल फजल ने 'आइने–अकबरी' से भारत के 14 सूफी संप्रदायों का उल्लेख किया।

भारत में चार प्रमुख संप्रदाय थे –

चिश्ती, सुहारावर्दी, कादरी, नक्शबंदी

1. चिश्ती सम्प्रदाय –

- 1192 में मुईनुद्दीन चिश्ती, मोहम्मद गौरी के साथ भारत आया तथा चिश्ती सम्प्रदाय की नींव डाली।
- चिश्ती परम्परा का मुख्य केन्द्र अजमेर था।
- मोईनुद्दीन चिश्ती को **गरीब–ए–नवाज** कहा जाता है।
- चिश्ती सम्प्रदाय भौतिकवाद का विरोधी था।
- इसने त्याग व सहिष्णुता पर बल दिया।
- निजामुद्दीन औलिया ने अपने जीवनकाल में दिल्ली में सात सुल्तानों का शासन देखा था।
- शेख बुरहानुद्दीन गरीब ने 1340 ई. में दक्षिण भारत के क्षेत्रों में चिश्ती सम्प्रदाय की शुरूआत की और दौलताबाद को मुख्य केन्द्र बनाया।
- नासिरूदीन महमूद (औलिया के शिष्य) को चिराग–ए–दिल्ली के नाम से जाना जाता है।

मुईनुद्दीन चिश्ती
- बाबा फरीद → निजामुद्दीन औलिया → (शेख सलीम → अकबर; अमीर खुसरो)
- कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी → कुतुबुद्दीन ऐबक

निर्माण कार्य–

- मुईनुदीन चिश्ती का मकबरा, इल्तुतमिश ने अजमेर में बनवाया।
- कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण दिल्ली में करवाया।
- हजरत निजामुद्दीन औलिया का मकबरा दिल्ली में है। वर्तमान में इसे हजरत निजामुद्दीन के नाम से जाना जाता है।
- शेख सलीम चिश्ती का मकबरा अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बनवाया।

2. सुहारावर्दी धर्म संघ या संप्रदाय–

- संस्थापक : शेख शिहाबुद्दीन उमर सुहारावर्दी
- इन्होंने चिश्ती सम्प्रदाय के विपरीत भौतिकता और त्याग पर बल नहीं दिया।
- भारत में बहरूदीन जकारिया ने इस मत का प्रचार प्रसार किया। इनका प्रमुख केन्द्र मुल्तान था।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

3. कादिरी सम्प्रदाय–

- संस्थापक : अबुल कादिर अल जिलानी
- इनको **पीरान–ए–पीर** तथा **पीर–ए–दस्तगीर** आदि की उपाधियाँ प्राप्त थीं।
- राजकुमार दारा (शाहजहाँ का पुत्र) इस सिलसिले के मुल्लाशाह का शिष्य था।

4. नक्शबन्दी सम्प्रदाय–

- संस्थापक : ख्वाजा बाकी बिल्लाह
- भारत में लोकप्रिय बाकी बिल्लाह के शिष्य व अकबर के समकालीन '**शेख अहमद सरहिन्दी**' ने किया था।

भक्ति आंदोलन –

- 12वीं शताब्दी में **शंकराचार्य** के अद्वैतवाद दक्षिण भारत में चार संप्रदाय का जन्म हुआ।
- भक्ति आंदोलन हिन्दू समाज जितना ही पुराना है। इसके बीज वेद, गीता, व उपनिषदों में विद्यमान है। भारत में सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों के विरूद्ध एक विद्रोह हुआ, जो भक्ति आंदोलन कहलाता है। भक्ति आंदोलन में रामानुजाचार्य का विशिष्ट स्थान है। वे दक्षिण भारत के निवासी थे। भक्ति आंदोलन को दक्षिण से उत्तर लाने का श्रेय रामानंद को है। उन्हें ही उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का नवप्रवर्तक माना जाता है।

प्रमुख विशेषताएँ –

(1) सभी के लिए मोक्ष संभव
(2) भक्त एवं भगवान के बीच सीधा संबंध आत्मसम्पर्क अनन्य भक्ति पर जोर
(3) एकेश्वरवाद पर जोर
(4) गुरु के महत्व पर जोर
(5) आडम्बर, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड से दूर धार्मिक सरलता पर बल
(6) समाज सुधार का प्रयास।

धाराएँ:– मुख्यतः दो धाराओं में बंटा हुआ था–

1. निर्गुण : कबीर, नानक, रैदास आदि।
   - निराकार, निर्गुण ईश्वर में आस्था।
   - संतों ने वैयक्तिक साधनों पर बल दिया।
2. सगुण : वल्लभाचार्य, तुलसी, चैतन्य, सूरदास, मीरा, आदि।
   - साकार ईश्वर में आस्था
   - मूर्तिपूजा, अवतारवा, कीर्तन आदि का प्रचार
   - इसकी दो शाखाएँ थी – राममार्गी व कृष्णमार्गी शाखा

- अचिंत्यभेदाभेद – चैतन्य
- अद्वैतवाद – शंकराचार्य

प्रमुख सम्प्रदाय व प्रवर्तक :–

प्रवर्तक	संप्रदाय
(1) रामानुजाचार्य	श्री सम्प्रदाय
(2) माधवाचार्य	ब्रह्म सम्प्रदाय
(3) वल्लभाचार्य	रूद्र सम्प्रदाय
(4) गुरूनानक	सिक्ख सम्प्रदाय
(5) दादू दयाल	दादू पंथ एवं बिपटल सम्प्रदाय
(6) हित हरवंश	राधा वल्लभ सम्प्रदाय
(7) निम्बकाचार्य	सनक सम्प्रदाय
(8) चैतन्य	गोसाई संघ

क्र. सम्प्रदाय	गुरू
(1) विशिष्ट द्वैतावाद	रामानुजाचार्य
(2) शुद्धा दैतावाद	वल्लभाचार्य
(3) द्वैता द्वैतावाद	निम्बकाचार्य
(4) द्वैतावाद	मध्वाचार्य

उत्तर प्रदेश – इस आंदोलन को दक्षिण से उत्तर लाने का श्रेय रामानुज के शिष्य रामानंद को है। रामानंद के चार शिष्य थे–

(1) कबीर – पेशे से जुलाहा
(2) सेना – नाई
(3) रैदास – चर्मकार
(4) नामदेव – दर्जी
(5) पीपा – राजपुत

महाराष्ट – यहाँ भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक – **नामदेव**

- महाराष्ट्र में इस आंदोलन को आगे बढ़ाने का श्रेय नामदेव के दो शिष्यों को है–
  (1) **ज्ञानेश्वर**, (2) **तुकाराम**, (3) **रामदास**

बंगाल –

- बंगाल में इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया – चैतन्य महाप्रभु
- चैतन्य ने सर्कीतन सभा की शुरुआत की।
- अचिंत्य भेदाभेद वाद एक नया धर्म चलाया।

राजस्थान –

- मीराबाई ने यहाँ इसे आगे बढ़ाया।

भक्ति आंदोलन का प्रभाव–

- प्रांतीय भाषाओं और साहित्य का विकास हुआ।
- हिन्दू–मुस्लिम के मध्य समन्वय बढ़ा।
- धार्मिक सहिष्णुता की भावना उत्पन्न हुई।
- सामाजिक कुरीतियों एवं अंध–विश्वासों पर चोट।

सिक्ख सम्प्रदाय –

गुरू	नाम	विशेष
प्रथम	गुरू नानक देव	सिख धर्म के संस्थापक
द्वितीय	गुरू अंगद देव लहनासिंह	इसने गुरुमुखी लिपि की शुरुआत की।
तृतीय	गुरू अमर देव	लंगर प्रथा को स्थायी बनाया
चतुर्थ	गुरू राम दास	अमृतसर शहर (अमृत सरोवर तलाब के किनारे) की स्थापना की।
पंचम	गुरू अर्जुन देव	आदि ग्रंथ की रचना की.। स्वर्ण मंदिर का निर्माण करवाया। जहाँगीर ने मृत्यु दंड दिया।
षष्टम	गुरू हरगोविंद सिंह	सिक्खों को सैन्य शक्ति के रूप में संगठित किया।
सप्तम	गुरू हर राय	
अष्टम	गुरू हर किशन	
नवम	गुरू तेगबहादुर सिंह	इस्लाम धर्म न अपनाने के कारण औरंगजेब द्वारा हत्या करा दी गई। (शिशगंज गुरूद्वारा)
दशम	गुरू गोविंद सिंह	इसके बाद गुरू की परम्परा समाप्त हो गई। खालसा पंथ की स्थापना। (1699) इसने पाँच 'क' का निर्माण किया। (कन्घा, कड़ा, कच्छा, कृपाण, केश)

—000—

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

उत्तर मुगल काल

मराठा साम्राज्य

शिवाजी

जन्म – 1627
स्थान – शिवनेर (महाराष्ट्र)
पिता – शाहजी भोंसले
माता – जीजा बाई
गुरू – रामदास (अध्यात्मिक क्षेत्र में)
संरक्षक – दादा कोंडदेव (सैन्य क्षेत्र में)
पत्नी – साई बाई व सायरो बाई
पुत्र – राजाराम व शम्भाजी

शिवाजी की सफलता का कारण–

1. महाराष्ट्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ
2. मालवा क्षेत्र के साहसी व बलिष्ठ जवान
3. महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का प्रभाव व मराठी साहित्य का योगदान (संत – तुकाराम – रामदास – शिवाजी)
4. शिवाजी की **गोरिल्ला** या **छापामार युद्ध प्रणाली**

➤ भारतीय इतिहास में शिवाजी ने **हिन्दुत्व बादशाही** तथा **हिन्दुत्व धर्मोद्वारक** की उपाधि धारण की।

शिवाजी का विजय अभियान–

1643 – **सिंहगढ़ का किला**
1644 – **तोरण का किला**
– बीजापुर रियासत से जीता तथा जीत से प्राप्त धन को रायगढ़ किले का निर्माण करवाया।

1646 – रायगढ़ का किला
1648 – पुरंदर का किला – बीजापुर से
1656 – **रायगढ़ को राजधानी बनाया।**
1656 – **जबाली का किला** – जीत के पश्चात् शिवाजी सामरिक व आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुए।

1659 – **शिवाजी विरूद्ध बीजापुर**
– बीजापुर के शासक ने युद्ध में अपने सेनापति अफजल खाँ को आक्रमण हेतु भेजा तथा वह मारा गया।
– इस युद्ध के पश्चात् शिवाजी व बीजापुर में संधि हुई।

1660 – **शिवाजी विरूद्ध औरंगजेब**
– औरंगजेब के द्वारा शिवाजी के दमन हेतु 'शाइस्ता खाँ' को भेजा तथा शिवाजी के गोरिल्ला युद्ध नीति के कारण वह पराजित हुआ व दिल्ली वापस लौट गया।

1665 – **औरंगजेब ने जयपुर के शासक राजा जयसिंह को दक्षिण भेजा।**
– जयसिंह ने पुरंदर के किले का घेरा डाला।
– अन्तः इसी वर्ष **पुरंदर की संधि** हुई।

पुरंदर की संधि–

➤ शिवाजी विरूद्ध राजा जयसिंह (औरंगजेब) – 1665
➤ शिवाजी ने मुगलों से छीना हुआ 23 किला मुगलों को वापस किया।
➤ शिवाजी ने शम्भाजी को मुगल दरबार में भेजने के लिए सहमति दी।

शिवाजी की आगरा यात्रा –

➤ जयसिंह से किए गए समझौते के तहत् शिवाजी अगस्त 1666 में आगरा के किले में उपस्थित हुआ। परन्तु औरंगजेब द्वारा उचित सम्मान न मिलने पर भरे दरबार में विश्वासघाती कहकर औरंगजेब का अपमान किया।
➤ इसके पश्चात् शिवाजी और उनके साथियों को आगरा में स्थित महल में कैद कर दिया गया परन्तु रात्रि में गुप्त रूप से वह भागने में सफल हुआ।
➤ बाद में शिवाजी द्वारा क्षमा याचना माँगने पर औरंगजेब ने उन्हें **'राजा'** की उपाधि प्रदान की।
➤ **1667** – शिवाजी द्वारा पुरंदर की संधि का उल्लंघन करते हुए पन्हाला, कोल्हापुर, पन्हेर आदि 23 किले पुनः जीते।
➤ इसी क्रम में 1670 में उसने सिंहगढ़ का किला स्थापित किया।
➤ सूरत की पहली लूट – 1664
➤ सूरत की दूसरी लूट – 1670

1674 – पंडित गंगाभट्टा द्वारा राज्याभिषेक में 'छत्रपति' की उपाधि धारण की।
– शिवाजी का अंतिम सैन्य अभियान सिदियों के खिलाफ 1677 ई. में था। वे जंजीरा और गोवा पर कब्जा नहीं कर सके।
1680 – मृत्यु

शिवाजी का प्रशासन–

➤ शिवाजी का क्षेत्र चार भागों में विभाजित था–
(1) उत्तरी क्षेत्र – गुजरात से कोंकण (प्रांतपति – **दन्तोत्रिम्बक तिंगले**)
(2) दक्षिण क्षेत्र
(3) पूर्वी क्षेत्र
(4) विजित क्षेत्र – बीजापुर

नोटः– शिवाजी के उपरोक्त तीनों क्षेत्रों को **'मराठों का स्वराज'** कहा जाता है।

शिवाजी के अष्ट प्रधान–

1. पेशवा	–	प्रधानमंत्री, वित्तमंत्री (नागरिक व सैन्य मामलों का सर्वोच्च अधिकारी)
2. सर ए नौबत	–	सेनापति
3. अमात्य	–	लेखापाल (राजस्व मंत्री)
4. वाकयानवीस	–	गुप्तचर, सूचना एवं संधि विग्रह विभाग का मुखिया
5. चिटनीस/शुरूनवीस	–	डाकिया/संचार मंत्री
6. सुमन्त	–	विदेश मंत्री
7. पंडित राव	–	धार्मिक मामलों का प्रधान (युद्ध में भाग नहीं)
8. न्यायाधीश	–	न्याय प्रधान (युद्ध में भाग नहीं)

सैन्य व्यवस्था–

1. **शिवाजी की अश्व सेना** – पागा सेना (राजकीय)
2. **सिलेहदार सेना** – अस्थायी घुड़सवार सेना (निजी)
3. **पैदल सेना** (पायक)

नोटः–
➤ शिवाजी ने **दाग व हुलिया** प्रथा को अपनाया।
➤ शिवाजी ने नौसेना का महत्व समझा। उनके जहाजी बेड़े का मुख्य केन्द्र कोलाबा था।
➤ रैय्यतवादी प्रथा प्रचलित थी। लगान **उपज का 1/3** या 25 भाग था।

राजस्व व्यवस्था– मापतौल हेतु छड़ी नामक पैमाने का प्रयोग

कर व्यवस्था –

चौथ – लोगों की सुरक्षा के बदले लिया जाने वाला कर।
सरदेशमुखी – शिवाजी द्वारा अपने राजस्व के अन्तर्गत तथा बाहर के क्षेत्रों से भी मराठावाडा/पैतृक्वासी होने के नाते लेने वाला कर। (10 प्रतिशत)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

मराठा साम्राज्य का विस्तार

शम्भाजी (1680–89)

- 1680 में शिवाजी की मृत्यु के बाद सायरोबाई के संरक्षण में राजाराम शासक बना। परन्तु उसे अपदस्थ करके शम्भाजी ने शासन किया।
- 1689 में औरंगजेब ने अपने पुत्र अकबर द्वितीय को संरक्षण देने के कारण शम्भाजी को मरवाकर उसकी खाल में भूसा भरवा दिया।
- शम्भाजी ने हिन्दी व संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित कवि कलश को अपना सलाहकार नियुक्त किया।

राजा राम (1689–1700)

- अपनी दूसरी राजधानी सतारा को बनाया।

शिवाजी द्वितीय (1700–1708)

- राजाराम की मृत्यु के बाद उनकी विधवा पत्नी ताराबाई ने अल्प व्यस्क पुत्र को संरक्षण देकर उसका शासन किया।

साहू (1708–1748)

- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् बहादुरशाह के समय आजम द्वारा कैद में मुक्त कर दिए जाने पर साहू अपने कुछ साथियों के साथ वापस महाराष्ट्र आ गया। साहू व ताराबाई में संघर्ष हुआ। **खेड़ा के युद्ध** 1707 ई. में पेशवा की नीति एवं धनाजी जादव की सहायता से साहू विजयी हुआ। ताराबाई कोल्हापुर चली गई।
- 1714 ई. में राजराम की दूसरी पत्नी राजस बाई ने कोल्हापुर में ताराबाई को बंदी बनाकर अपने पुत्र को शम्भाजी द्वितीय के नाम से मराठा शासक घोषित किया।
- 1731 में साहू की सेना परास्त कर वारना की संधि द्वारा साहू को महाराष्ट्र का छत्रपति मानने के लिए बाध्य किया तथा शम्भाजी द्वितीय को कुछ क्षेत्र देकर इस गृहयुद्ध का अन्त किया।
- 1713 में साहू ने बालाजी विश्वनाथ को पेशवा नियुक्त किया।

प्रथम पेशवा : बालाजी विश्वनाथ (1720 में मृत्यु)

- 1719 में इन्होंने तात्कालिक मुगल सम्राट **फर्रूखसियर** से एक समझौता किया। इस समझौते को सर **रिचर्ड टेम्पल** ने 'मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा' कहा।

समझौते की मुख्य बातें–

(1) साहू को उसका स्वराज्य वापस कर दिया।

(2) साहू ने प्रतिवर्ष मुगल शासक को 12 लाख रू. कर के रूप में देने का वचन दिया।

द्वितीय पेशवा : बाजीराव प्रथम (लड़ाकू पेशवा) (सबसे अधिक क्षेत्र विजित किया)

- शासन काल 1720–1740 ई. तक
- यह बालाजी विश्वनाथ का पुत्र था।
- यह भी योग्य शासक था।
- शिवाजी के बाद **गोरिल्ला युद्ध** का सबसे बड़ा प्रतिपादक माना जाता है।
- बाजीराव ने 1728 ई. में निजामुनमुल्क को पालखेड़ा में परास्त कर मुंगीशेगांव की संधि हेतु बाध्य किया।
- 1737 ई. में भोपाल के युद्ध में पुनः मुगलों की ओर से लड़ रहें निजामुनमुल्क को भोपाल में परास्त कर दुरई सराय की संधि के लिए बाध्य किया।
- इसने मालवा व बुन्देलखण्ड को जीतकर मराठा वंश में विलय किया।
- इसने तत्कालिक हैदराबाद के शासक निजाम को नजराना देने के लिए बाध्य किया।
- इसने दिल्ली पर अपने प्रभाव को दिखाने के लिए 1737 ई. में आक्रमण किया।
- इसी के शासनकाल में **1739** में **ईरान का शासक नादिरशाह** ने दिल्ली पर आक्रमण किया था।
- बाजीराव प्रथम का **मस्तानी** नामक महिला से संबंध होने के कारण यह चर्चित रहा।
- इसे लड़ाकू पेशवा के नाम से भी जाना जाता है।
- 1740 में इनकी मृत्यु हो गई।

तृतीय पेशवा : बालाजी बाजीराव (सबसे विस्तृत साम्राज्य)

- शासनकाल – 1740–1761
- यह बाजीराव प्रथम का पुत्र था।
- 1750 ई. सांगली संधि के बाद पेशवा के हाथ में सारे अधिकार सुरक्षित हो गए।
- इसे नाना साहब के नाम से भी जाना जाता है।
- इसके शासनकाल में **1761** में **पानीपत का तृतीय युद्ध** हुआ।

पानीपत का तृतीय युद्ध : 1761

- मराठा विरूद्ध अहमदशाह अब्दाली
- परिणाम – मराठों की पराजय
- मराठा सेनापति – विश्वास राव व सदाशिव

नोट– इस युद्ध को '**काशीराज पंडित**' ने देखने का दावा किया।

- बालाजी बाजीराव की मृत्यु पानीपत के तीसरे युद्ध के पराजय के शोक में हुई।
- इस युद्ध के परिणाम पर इतिहासकार जे.एन. सरकार का कथन था कि–
"मराठा का कोई परिवार ऐसा नहीं था, जिसने अपना नातेदार या रिश्तेदार नहीं खोया।"

चतुर्थ पेशवा : माधवराव प्रथम

- शासनकाल – (1761–72)
- यह बालाजी बाजीराव का पुत्र था।
- इसने पानीपत के युद्ध से हुई क्षति को पूरा किया।
- इसने तत्कालिक मुगल शासक शाह आलम को पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठाया।
- 1772 में क्षय रोग से इनकी मृत्यु हो गई।
- इतिहासकार ग्राण्ट डफ कहते हैं कि–
"मराठों के लिए पानीपत का मैदान उतना घातक नहीं था जितना कि इस युवा पेशवा की मृत्यु।"

पंचम पेशवा : नारायण राव प्रथम

- शासनकाल – 1772–73
- यह माधवराव प्रथम का भाई था।
- 1773 ई. में इसका चाचा रघुनाथराव ने पेशवा बनने के लिये नारायणराव की हत्या कर दी।

छठा पेशवा : रघुनाथ राव (राघोबा)

- शासनकाल – 1773–74

सातवाँ पेशवा : माधवराव नारायण राव द्वितीय

- शासनकाल – 1774–95
- 1774 में जैसे ही माधवराव का पुत्र सवाई माधव नारायणराव पैदा हुआ। नाना फड़नवीस के नेतृत्व में बारभाई परिषद् नामक मराठा सरदारों के एक सशक्त संरक्षक दल ने उसे पेशवा घोषित कर दिया। निराश रघुनाथ राव अंग्रेजों की शरण में चला गया और उनकी मदद से सत्ता हथियाने का प्रयास किया।
- नारायण राव का पुत्र था।
- अल्पव्यस्क शासक था।
- अल्पव्यस्क होने के कारण शासन का दायित्व '**बारभाई**' नाम से 12 सदस्यों की एक परिषद् किया करती थी।
- जिसमें महादजी सिंधिया और नाना फड़नवीस प्रमुख थे।
- इसके शासनकाल में रघुनाथ राव ने **सूरत की संधि** अंग्रेजों के साथ करके पुणे पर आक्रमण करने की योजना बनाई, परन्तु गवर्नर जनरल की अनुमति न मिलने के कारण योजना असफल रही।
- इसके शासनकाल के दौरान 1775–82 के **मध्य प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध** हुआ।
- 1795 में माधव राव सिंधिया व माधवराव नारायण राव द्वितीय की मृत्यु हो गई।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

अंतिम पेशवा : बाजीराव द्वितीय

- शासनकाल – 1795–1818
- यह रघुनाथ राव का पुत्र था।
- अयोग्य शासक
- इसके शासनकाल में **द्वितीय** व तृतीय **आंग्ल–मराठा युद्ध** लड़ा गया।
- तीसरा आंग्ल–मराठा युद्ध में पराजित होने पर अंग्रेजों ने इन्हें पेंशन देकर कानपुर भेज दिया।
- इसने **लॉर्ड वेलेजली** से **'सहायक संधि'** का समझौता किया था।

मराठों का क्षेत्रीय शाखाएँ –

स्थान	वंश
(1) पुणे	पेशवा
(2) नागपुर	भोंसले
(3) ग्वालियर	सिंधिया
(4) इंदौर	होल्कर
(5) बड़ोदरा	गायकवाड़

- यह पूरा मिलाकर मराठा वंश है।
- मराठा वंश का विभाजन बाजीराव द्वितीय के समय हुआ था।

आंग्ल–मराठा युद्ध –

- **प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध (1775–82)**
  (सालबाई संधि – 1782)
  माधवराव नारायण द्वितीय विरूद्ध लॉर्ड वारेन हेस्टिंग।
  परिणाम – अंग्रेज पराजित
  मराठों का नेतृत्व – महादजी राव सिंधिया व नाना फड़नवीस

- **द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध (1803–1806)**
  मराठा संघ विरूद्ध लॉर्ड वेलेजली
  परिणाम – मराठों की पराजय

- **तृतीय आंग्ल–मराठा युद्ध (1817–1818)**
  मराठा संघ विरूद्ध लॉर्ड हेस्टिंग
  परिणाम – मराठों की पराजय
  भारत में मराठा संघ की समाप्ति।

आंग्ल–मराठा में होने वाली संधियाँ–

संधियाँ	वर्ष
सूरत की संधि	1775
पुरन्दर की संधि	1776
बड़गाँव की संधि	1779
सालबाई की संधि	1782
बसीन की संधि	1802
देवगाँव की संधि	1803
सुर्जी अर्जुनगाँव की संधि	1803
राजपुरघाट की संधि	1804
नागपुर की संधि	1816
ग्वालियर की संधि	1817
पूना की संधि	1817
मंदसौर की संधि	1818

—00—

तृतीय खण्ड

आधुनिक भारत का इतिहास

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

उत्तर मुगल काल

उत्तर मुगल काल (1707 से 1857)

क्र. शासक (काल)

1) **बहादुर शाह प्रथम** (शाह बेखबर) (1707-1712)
2) **जहांदार शाह** (लम्पट मूर्ख) (1712-1713)
3) **फर्रूखसियर** (घृणित कायर) (1713-1719)
4) **मोहम्मद शाह** (रंगीला) (1719-1748)
5) **अहमद शाह** (1748-1754)
6) **आलमगीर द्वितीय** (1754-1759)
7) **शाह आलम** (1759-1806)
8) **अकबर द्वितीय** (1806-1837)
9) **बहादुर शाह जफर** (1837-1857)

बहादुर शाह प्रथम (1707-1712)

- इसने ऊपरी समझौते व मेल-मिलाप की नीति अपनाई।
- इसने सरदारों को अंधाधुंध जागीरें बाँटी, जिससे साम्राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई।

जहाँदार शाह (1712-1713)

- यह लालकुंवर नामक स्त्री के प्रभाव में था।
- इसके काल में शासन की वास्तविक सत्ता योग्य सरदार जुल्फिकार खाँ के हाथों में आ गई।
- इसने एक गलत प्रवृत्ति देने पर लगान वसूली की 'इजारा प्रथा' को बढ़ावा दिया।

फर्रूखसियर (1713-1719)

- इसके शासनकाल में ईस्ट इंडिया कंपनी और मुगल साम्राज्य के बीच में एक समझौता हुआ।

इसकी निम्न शर्तें थीं–

1.3000 रू. वार्षिक की दीवानी पर बंगाल में व्यापार करने का स्वतंत्र रूप से अधिकार दिया।

2.10,000 रू. वार्षिक की दीवानी पर गुजरात में स्वतंत्र रूप से व्यापार करने का अधिकार दिया।

3.इस संधि को ईस्ट इंडिया कंपनी का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। (1717)

- इसके शासनकाल में सिक्ख सरदार बन्दासिंह व उसके साथियों को गिरफ्तार कर निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी, क्योंकि उन्होंने मुस्लिम धर्म ग्रहण नहीं किया। (1716)
- इसके समय मुगल दरबार में सर **सैय्यद बंधुओं** में अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली दो भाई थे, जिन्हें इतिहास में '**शासक निर्माता**' के नाम से जाना जाता था।
- सैय्यद बंधुओं ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई तथा जजिया व तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया।
- रफीउद्दरजात ने मराठों से एक समझौता किया, जिससे उसने मराठों को दक्कन में चौथ व सरदेशमुखी कर वसूलने सहित कई अधिकार प्रदान किया। (मराठों का मैग्नाकार्टा)
- इसके बाद रफी-उद-दौला, शाहजहाँ द्वितीय के नाम से बादशाह बना, परन्तु बीमारी से उनकी मृत्यु हो गयी।
- रफी-उद-दौला की बीमारी के कारण मृत्यु हो जाने पर मोहम्मद शाह को शासक बनाया।

मोहम्मद शाह (1719-48)

- मूल नाम रौशन अख्तर
- यह शराब का शौकीन था तथा विलासी प्रवृत्ति का होने के कारण इसे 'रंगीला' कहा जाता था।
- इसने निजाम को अपना सेनापति नियुक्त किया।
- इसने सैय्यद बंधुओं की हत्या करा दी।
- 1724 में मोहम्मद शाह व निजाम के मध्य मतभेद हो जाने के कारण निजाम ने स्वतंत्र हैदराबाद रियासत की स्थापना की।

विशेष:– ईरान (फारस) के सम्राट नादिरशाह ने 1739 ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया। इस समय दिल्ली का शासक मोहम्मद शाह था। नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता है।

- नादिरशाह 70 करोड़ रूपये, तख्ते ताऊस (मयूर सिंहासन) तथा कोहिनूर हीरा लेकर वापस लौट गया।
- 1747 में नादिरशाह की मृत्यु के बाद उसका सेनापति अहमद शाह अब्दाली ईरान का शासक बना और भारत पर आक्रमण किया।
- 1748 में 'मच्छीवाड़ा' के युद्ध में मोहम्मद शाह का लड़का अहमद शाह ने अहमद शाह अब्दाली को पराजित किया।

अहमद शाह (1748-1754)

- इसके समय अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर अपना दूसरा व तीसरा आक्रमण किया।
- यह हिजड़े जाविद खाँ के अनुचित प्रभाव में था।
- इसके समय 'गाजी खाँ' नामक सेनापति ने इसकी हत्या करके आलमगिर द्वितीय को शासक बनाया।

आलमगिर द्वितीय (1754-59)

- यह गाजी खाँ का कठपुतली शासक था।
- इसके समय 'प्लासी का युद्ध' लड़ा गया।

शाह आलम (1759-1806)

- मूल नाम – अली गौहर
- 1761 में पानीपत का तीसरा युद्ध लड़ा गया। इसमें अब्दाली ने मराठों को परास्त किया।
- 1764 में बक्सर के युद्ध में शाह आलम बंगाल और अवध के साथ अंग्रेजों से पराजित हुआ और अंग्रेजों ने इसे पेंशन पर इलाहाबाद भेज दिया।
- 1771 में इसकों पुनः दिल्ली की गद्दी पर माधवराव ने पदस्थ किया।
- इसके शासनकाल में लॉर्ड लेक ने 1803 में दिल्ली पर कब्जा कर लिया।

अकबर द्वितीय (1806-37)

- इसके शासनकाल में मुगल साम्राज्य दिल्ली में लाल किला तक सिमट गया।
- फुलवालों की सेर की शुरूआत की। (सामाजिक सद्भाव हेतु दिल्ली महोत्सव)
- अंग्रेजों के संरक्षण में बनने वाला पहला मुगल बादशाह
- इसने राजा राम मोहन राय को 'राजा' की उपाधि दी।

बहादुर शाह ज़फ़र (1837-57)

- इसके शासनकाल में 1857 में भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम हुआ।
- इस युद्ध में क्रांतिकारियों ने इन्हें भारत का सम्राट घोषित किया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- इन्होंने दिल्ली में इस क्रांति का नेतृत्व किया।
- 'जफर' इनका उपनाम था। इस नाम से वह लेखन कार्य करता था।
- 1857 ई. में पराजय के बाद इन्हें म्यांमार की राजधानी रंगून भेज दिया गया।
- जहाँ इनकी मृत्यु हो गई तथा यहीं पर इसकी समाधि बनाई गई।
- प्रसिद्ध शायर 'मिर्जा गालिब' इसी के समकालीन थे।

क्र.	मुगलों के स्वतंत्र राज्य	संस्थापक
1.	अवध	सआदत खाँ
2.	हैदराबाद	चिनकिलिच खाँ/निजाम-उल-मुल्क-आसफ जहाँ
3.	रूहेलखंड	वीर दाऊद एवं अली मुहम्मद खाँ
4.	बंगाल	मुर्शिदकुली खाँ
5.	कर्नाटक	सादुतुल्ला खाँ
6.	भरतपुर	चूरामन एवं बदन सिंह

(मुगलकाल समाप्त)

भारत में यूरोपीय कम्पनियाँ

कंम्पनियों का गठन

1. पुर्तगाली – 1498
2. ब्रिटिश – 1600
3. डच – 1602
4. फ्रांसीसी – 1664

कंम्पनियों का आगमन

1. पुर्तगाली – 1498
2. डच – 1605
3. ब्रिटिश – 1608
4. फ्रांसीसी – 1664

कंम्पनियों का लौटने का क्रम

1. पुर्तगाली
2. डच
3. फ्रांसीसी
4. ब्रिटिश

कम्पनियों की प्रथम कोठी

1. पुर्तगाली – कोच्ची
2. ब्रिटिश – सूरत
3. डच – मुसलीपट्टनम
4. फ्रांसीसी – सूरत

ब्रिटिश V/S अन्य

1. पुर्तगाली V/S डच
2. ब्रिटिश V/S डच
3. ब्रिटेन V/S फ्रांस
4. ब्रिटिश V/S फ्रांसीसी (आंग्ल कर्नाटक युद्ध)
5. ब्रिटिश V/S बंगाल
6. ब्रिटिश V/S मैसूर
7. ब्रिटिश V/S मराठा
8. ब्रिटिश V/S सिख
9. ब्रिटिश V/S नेपाल
10. ब्रिटिश V/S बर्मा
11. ब्रिटिश V/S भूटान
12. ब्रिटिश V/S अफगानिस्तान
13. ब्रिटिश V/S तिब्बत

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

1. पुर्तगाली

- 1498 – वास्कोडिगामा 'केप ऑफ गुडहोप' अरब सागर से होते हुए राजा जमोरीन के दरबार में कालीकट (केरल) उतरा।
- 1502 – वास्को–डि–गामा दूसरी बार कालीकट आया और कोची में पहली पुर्तगाली कोठी की स्थापना किया।
- 1505 – 'फ्रांसिस्को द अल्मेडा' पहला पुर्तगाली गर्वनर बनकर भारत आया।
- 1509 – 'अल्बुकर्क' दूसरा पुर्तगाली गर्वनर भारत आया। इसने गोवा को बीजापुर से छीना।
- यह पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक था।
- इसके बाद आए गवर्नर नूनो–डी–कून्हा ने भारत में गोवा को पुर्तगाली राजधानी बनाया।

नोटः– भारत में तम्बाकू की खेती, प्रिंटिंग प्रेस, अनानास, पपीता, अल्फांसो आम, काजू आदि पुर्तगालियों की देन है।

- भारत में पहला प्रिंटिंग प्रेस 1556 में गोवा में स्थापित हुआ।
- डचों ने भारत में आकर पुर्तगालियों को बाहर किया।

2. डच (1602-1759)

- 1602 ई. में डच ईस्ट इण्डिया कंपनी भारत आया।
- प्रमुख कोठियाँ – पहला कारखाना– 1605 मछलीपट्टनम्, 1610 पुलीकट, 1616 सूरत, 1641 विमलीपट्टम्, 1653 चिनसुरा
- 1759 बेदरा के युद्ध – अंग्रेजों से पराजित होकर भारत से चले गए।

3. ब्रिटिश

- 1599 – मर्चेंट एडवेंचर्स नामक व्यापारिक संस्था का गठन,
- 1600 – में महारानी एलिजाबेथ द्वारा 15 वर्षों का पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार प्राप्त हुआ। यही बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम से विख्यात हुई।
- 1608 – भारत में अंग्रेजों की पहली कोठी सूरत में स्थापित हुई।
- 1611 – दक्षिण में पहली कोठी मुसलीपट्टनम में स्थापित हुआ।
- 1615 – ईस्ट इंडिया को जहाँगीर के समय में भारत से व्यापार करने की अनुमति प्राप्त हुई।
- 1632 – अंग्रेजों ने गोलकुण्डा के सुल्तान से सुनहरा फरमान प्राप्त किया।
- 1639 – अंग्रेजों ने सेंट जार्जफोर्ट का किला मद्रास में बनवाया।
- 1661 – ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स की पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ विवाह हुआ तथा पुर्तगालियों द्वारा चार्ल्स को बंबई दहेज में दिया गया।
- 1699 – जॉब चार्नाक ने बंगाल के तीन गाँव सुतानटी, कलिकाता व गोविन्दपुर को मिलाकर कलकत्ता शहर बसाया। (हैमिल्टन ने फर्रूखसियर को दर्दनाक बीमारी से छुटकारा दिलाया था, बदले में 1717 ई. में ईस्ट इण्डिया कंपनी को 3000 रू. वार्षिक दीवानी पर स्वतंत्र व्यापार करने का दस्तावेज प्राप्त हुआ।)
- 1745 – अंग्रेजों और फ्रांसिसीयों में मध्य आंग्ल कर्नाटक युद्ध हुआ।
- 1760 – तृतीय आंग्ल–कर्नाटक युद्ध के दौरान **वान्डीवास के युद्ध** में फ्रांसिसी पराजित हुए और भारत सें उनकी सत्ता समाप्त हो गई।
- 1759 – बेदरा के युद्ध में डचों को पराजित कर भारत से निष्कासित किया।
- 1757 – प्लासी के युद्ध में बंगाल और 1764 ई. में बंगाल के नवाब को पराजित करने के बाद बंगाल में ईस्ट इण्डिया कंपनी का प्रत्यक्ष शासन शुरू हुआ।
- 1798-1805 – लॉर्ड वेलेजली ने अपने सहायक संधि के तहत् हैदराबाद, मैसूर, तन्जौर, जयपुर का विलय किया।
- जैतपुर और सतारा, ग्वालियर, नागपुर आदि का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया।
- शेष रियासत का विलय डलहौजी ने हड़प नीति से किया।
- 1814 – नेपाल युद्ध में गोरखाओं का पराजित कर ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया।
- 1818 – मराठों के पराजित होने से मराठा साम्राज्य का ईस्ट इण्डिया कंपनी में विलय हुआ।
- 1849 – पंजाब का ईस्ट इण्डिया कंपनी में विलय हुआ।
- 1885 – लॉर्ड डफरिन ने अफगानिस्तान को ब्रिटिश साम्राज्य में विलय किया।
- 1857 की क्रांति में मुगलों को पराजित करने पर लॉर्ड कैनिंग ने मुगल साम्राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

4. फ्रांसीसी (1602-1759)

- 1742 – पहला फ्रांसीसी गर्वनर जनरल **डुप्ले** भारत आया।
  डुप्ले के समय में ही पहला आंग्ल–कर्नाटक युद्ध हुआ।
- 1664 – भारत में फ्रांसिसी ईस्ट इण्डिया कंपनी भारत आयी।
- 1668 – पहली कोठी सूरत में स्थापित किया।
  (फ्रैंको मार्टिन) ने पांडिचेरी शहर की नींव डाली।
- कर्नाटक पर अधिकार हेतु अंग्रेज–फ्रांसीसी संघर्ष।
- दूसरा फ्रांसीसी गर्वनर जनरल **काउंट–डी–लाली** भारत आया।
- 1760 – वांडीवाश युद्ध – फ्रांसीसियों की पराजय
- 1763 – पेरिस की संधि

ब्रिटिश V/S अन्य

1. पुर्तगाली V/S डच

- डच कंपनी ने पुर्तगालियों को पराजित कर भारत से निष्कासित किया।

2. ब्रिटिश V/S डच

- 1759 – बेदरा के युद्ध : अंग्रेजों से पराजित होकर डच सत्ता समाप्त।

3. ब्रिटेन V/S फ्रांस

- यूराप में ब्रिटेन और फ्रांस के बीच सप्तवर्षी युद्ध, जिसके कारण भारत में ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी एक दूसरे के विरोधी।

4. ब्रिटिश V/S फ्रांसीसी (आंग्ल कर्नाटक युद्ध)

- कर्नाटक में उत्तरदायित्व के संघर्ष को लेकर ब्रिटिश और फ्रांसीसी सत्ता आमने–सामने हुए, जो कि आंग्ल कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है।

thejobsyogi.com

उत्तराधिकार का संघर्ष–

1. प्रथम आंग्ल-कर्नाटक युद्ध (1746-48)
2. द्वितीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध (1748-54)
3. तृतीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध (1756-63)

1. प्रथम आंग्ल-कर्नाटक युद्ध : (1746-48)

- **कारण** – यूरोप में ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार युद्ध
- **परिणाम** – फ्रांसीसी विजयी

Scanned with CamScanner

2. द्वितीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध : (1748-54)

- यह युद्ध हैदराबाद व कर्नाटक के उत्तराधिकार के कारण हुआ।

(1) **हैदराबाद** – निजाम के पुत्र और पौत्र के मध्य
– मुजफ्फर जंग (फ्रांसीसीयों का पक्ष) V/S नासिर जंग (अंग्रेजों का पक्ष)
परिणाम – नासिर जंग मारा गया।

(2) **कर्नाटक** – चन्दा साहब (फ्रांसीसी) V/S अनवरुद्दीन (अंग्रेज)
परिणाम – अनवरुद्दीन मारा गया। (अम्बूर का युद्ध)

विशेष – इस युद्ध में विजयी त्रिगुट (डुप्ले, मुजफ्फर जंग एवं चंदा साहब)
– बाद में अंग्रेजों ने अरकाट में घेरा डालकर फ्रांसीसी सेना को हराया तथा 1754 में 'पांडिचेरी की संधि' हेतु बाध्य किया।

3. तृतीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध : (1756-63)

- **कारण** – यूरोप में ब्रिटेन व फ्रांस के मध्य सप्तवर्षीय युद्ध
- **1760** – वाण्डीवास युद्ध : फ्रांसीसी सेनापति काउण्ट–डी–लैली V/S अंग्रेज सेनापति आयरकूट
– काउण्ट–डी–लैली पराजित, फ्रांसीसी सत्ता का निष्कासन।
- **1763** – पेरिस की संधि

कर्नाटक	युद्ध	समाप्ति संधि
प्रथम युद्ध (1746-48)	सेंट टॉम का युद्ध	एक्सला शापेल संधि (1748)
द्वितीय युद्ध (1748-54)	अम्बूर युद्ध, अरकाट घेरा	पांडिचेरी की संधि (1754)
तृतीय युद्ध (1756-63)	वांडीवांश का युद्ध (1760)	पेरिस की संधि (1763)

5. ब्रिटिश V/S बंगाल

बंगाल रियासत –

1. 1740 – **अलीवर्दी खाँ** बंगाल रियासत का संस्थापक।
2. 1756 – **सिराजुद्दौला** बंगाल का नवाब बना।
3. **मीरजाफर**
4. **मीरकासिम**

प्लासीका युद्ध : (23 जून, 1757)

- लॉर्ड क्लाइव V/S सिराजुद्दौला
- **कारण** – 1. अंग्रेजों द्वारा व्यापारी दस्तावेज का दुरूपयोग करना
2. 20 जून, 1756 ई. में ब्लैकहोल की घटना। अंग्रेज इतिहासकार के अनुसार–
"सिराजुद्दौला ने 146 अंग्रेजों को छोटी सी कोठरी में बंद कर दिया और 23 जून को खोला। इसमें दम घुटने से 123 की मृत्यु हुई। इसे ही ब्लैक होल की घटना के नाम से जाना जाता है।"
3. सिराजुद्दौला के द्वारा कलकत्ता के फोर्ट विलियम किला पर अधिकार करना आदि।
- **परिणाम** – सिराजुद्दौला पराजित
- **पराजय का कारण** – लॉर्ड क्लाइव द्वारा कूटनीति व लालच देकर नवाब के सेनापति मीर जाफर व कलकत्ता के अमीर राय दुल्ला को अपनी ओर मिलाना। मीर मदान तथा मोहनलाल नवाब के कट्टर समर्थक थे।

- सिराजुद्दौला को गिरफ्तार कर लिया गया और मीर जाफर को नवाब बनाया गया।
- मीर जाफर अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बन गया तथा अप्रत्यक्ष रूप से बंगाल का शासन ईस्ट इण्डिया कंपनी के हाथ में आ गया।
- अंग्रेजों के धन लोलुप्ता को पूरा न करने के कारण मीर जाफर को अपदस्थ कर मीर कासिम को नवाब बनाया गया।
- मीर कासिम योग्य व स्वाभिमान शासक था। इसने अंग्रेजों के हस्तक्षेप को बर्दास्त नहीं किया, परिणामस्वरूप 1764 ई. में बक्सर का युद्ध हुआ।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

बक्सर का युद्ध : (1764)

- मीर कासिम, अवध का नवाब शुजाउद्दौला, मुगल सम्राट शाह आलम V/S हैक्टर मुनरो (अंग्रेज)
- **परिणाम** – अंग्रेज विजित
- **दूरगामी प्रभाव** – इस युद्ध ने भविष्य में हिन्दुस्तान की सत्ता किसके हाथों में होगी, इसका निर्धारण किया।

इलाहाबाद की संधि (1765)

- मई 1765 में लॉर्ड क्लाइव बंगाल का गवर्नर बना।
- 1765 **इलाहाबाद की संधि** – शाह आलम व शुजाउद्दौला के साथ
  (1) अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी का अधिकार।
  (2) अवध को बफर स्टेट के रूप में बदल दिया गया।
  (3) कड़ा व इलाहाबाद के क्षेत्र मुगल सम्राट को दे दिए गए।

1. हैदरअली V/S आयरकुट
2. हैदरअली V/S आयरकुट
3. टीपू सुल्तान V/S कार्नवालिस
4. टीपू सुल्तान V/S वेलेजली

6. ब्रिटिश V/S मैसूर

मैसूर रियासत –

- 1761 – हैदर अली ने मैसूर रियासत की स्थापना की।
- **राजधानी** – श्रीरंगपट्टनम्

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध : (1767-69)

- हैदरअली अंग्रेजों पर भारी पड़े।
- **त्रिगुट** – मराठा, निजाम, अंग्रेज
- **परिणाम** – मद्रास संधि द्वारा युद्ध समाप्त

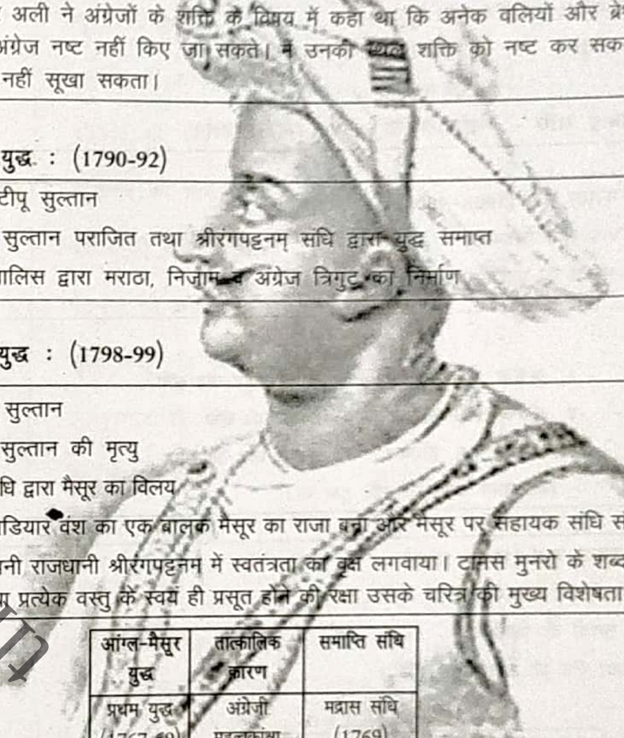

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध : (1780-84)

- **कारण** – अंग्रेजों द्वारा मद्रास संधि का उल्लंघन
- **परिणाम** – 1784 ई. में मैंगलोर की संधि द्वारा समाप्त (मैकार्टनी के प्रयासों से)
- **विशेष** – युद्ध के दौरान हैदर अली व अंग्रेजों का सेनापति आयरकुट मारा गया।
  – हैदर अली ने अंग्रेजों के शक्ति के विषय में कहा था कि अनेक वलियों और ब्रेथवेटों की पराजय से अंग्रेज नष्ट नहीं किए जा सकते। मैं उनकी स्थल शक्ति को नष्ट कर सकता हूं परंतु समुद्र को नहीं सूखा सकता।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध : (1790-92)

- कार्नवालिस V/S टीपू सुल्तान
- **परिणाम** – टीपू सुल्तान पराजित तथा श्रीरंगपट्टनम् संधि द्वारा युद्ध समाप्त
- **विशेष** – कार्नवालिस द्वारा मराठा, निजाम व अंग्रेज त्रिगुट का निर्माण

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध : (1798-99)

- वेलेजली V/S टीपू सुल्तान
- 1799 ई. में टीपू सुल्तान की मृत्यु
- 1799 ई. सहायक संधि द्वारा मैसूर का विलय
- इस युद्ध के बाद वाडियार वंश का एक बालक मैसूर का राजा बना और मैसूर पर सहायक संधि सौंप दी गई।
- टिपू सुल्तान ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम् में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया। टामस मुनरो के शब्दों में "नवीनता की अविभ्रांत भावना तथा प्रत्येक वस्तु के स्वयं ही प्रसूत होने की रक्षा उसके चरित्र की मुख्य विशेषता थी।"

आंग्ल-मैसूर युद्ध	तात्कालिक कारण	समाप्ति संधि
प्रथम युद्ध (1767-69)	अंग्रेजी महत्वकांक्षा	मद्रास संधि (1769)
द्वितीय युद्ध (1780-84)	माही का मामला	मंगलौर की संधि (1784)
तृतीय युद्ध (1790-92)	गुंटूर, त्रावणकोर का मामला	श्रीरंगपट्टनम् की संधि (1792)
चतुर्थ युद्ध (1799)	टीपू फ्रांसीसी सहयोग	कृष्णराज (वाडियार वंश) को सत्ता

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

7. ब्रिटिश V/S मराठा

1. माधवराव नारायण-II V/S लॉर्ड वारेन हेस्टिंग।
2. मराठा संघ V/S लॉर्ड वेलेजली
3. मराठा संघ V/S लॉर्ड हेस्टिंग

आंग्ल–मराठा युद्ध –

➤ प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध (1775–82)

- माधवराव नारायण-II V/S लॉर्ड वारेन हेस्टिंग।
- **मराठों का नेतृत्व** – महादजी सिंधिया व नाना फड़नवीस
- **परिणाम** – अंग्रेज पराजित
- 1782 **सालबाई संधि** – महादजी सिंधिया V/S डेविड एण्डर्सन

➤ द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध (1803–1806)

- मराठा संघ V/S लॉर्ड वेलेजली
- **परिणाम** – मराठों की पराजय

महत्वपूर्ण संधि –

1. **अंग्रेज V/S सिंधिया** – सूरजी अर्जुन गांव संधि
2. **अंग्रेज V/S भोसले** – देवगांव की संधि
3. **अंग्रेज V/S होल्कर** – राजपूर घाट की संधि

– इसी समय बसीर की संधि हुआ था।

➤ तृतीय आंग्ल–मराठा युद्ध (1817–1818)

- मराठा संघ V/S लॉर्ड हेस्टिंग
- **परिणाम** – मराठों की पराजय
- भारत में मराठा संघ की समाप्ति।
- **प्रमुख युद्ध** –

1. सीताबर्डी नागपुर	– भोसले पराजित
2. कोरेगांव	– पेशवा पराजित
3. महितपुर	– होल्कर पराजित

- कोरेगांव के युद्ध में पराजित होने के बाद पेशवा बाजीराव –II को कानपुर के निकट बिठूर पेंशन देकर भेज दिया गया और पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया। जहां 1853 में उसकी मृत्यु हो गई।
- नाना साहब पेशवा इनके पुत्र थे।

आंग्ल–मराठा में होने वाली संधियाँ

संधियाँ	वर्ष
सूरत की संधि	1775
पुरन्दर की संधि	1776
बड़गाँव की संधि	1779
सालबाई की संधि	1782
बसीन की संधि	1802
देवगाँव की संधि	1803
सुर्जी अर्जुनगाँव की संधि	1803
राजपुरघाट की संधि	1804
नागपुर की संधि	1816
ग्वालियर की संधि	1817
पूना की संधि	1817
मंदसौर की संधि	1818

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

8. ब्रिटिश V/S सिक्ख

राणा रणजीत सिंह
खड़कसिंह शासक
नौनिहाल सिंह
दिलीप सिंह (कोहिनूर हीरा)

सिक्ख रियासत –

- 1797 – राणा रणजीत सिंह ने लाहौर में स्वतंत्र सिक्ख रियासत की स्थापना की।
- 1809 – चार्ल्स मेटकॉफ और रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि सम्पन्न हुई।
- 1849 – रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र खड़कसिंह शासक बना।
- इसके बाद नौनिहाल सिंह शासक बना।
- दिलीप सिंह अंतिम सिक्ख शासक था।

प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध : (1845-46)

- लॉर्ड हार्डिंग के समय (सबरॉंव का युद्ध)
- **परिणाम** – सिक्ख पराजित (लाहौर की संधि 1846 व भैरोवाल की संधि 1846)

द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1848-49)

- गर्वनर लॉर्ड डलहौजी के समय
- **चिलियानवाला का युद्ध** – सिक्ख V/S अंग्रेज कमांडर गफ – अनिर्णित।
  सिक्ख V/S चार्ल्स नेपियर – सिक्ख पराजित।
- सिक्ख पराजित हुए तथा अंतिम सिक्ख शासक दिलीप सिंह और उसकी संरक्षिका रानी जिन्दा को निष्कासित कर 5 लाख वार्षिक पेंशन पर लंदन भेज दिया गया। (गुजरात युद्ध)
- पंजाब का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय। (1849)
- अंग्रेजों को **कोहिनूर का हीरा** दिलीप सिंह से प्राप्त हुआ।

9. ब्रिटिश V/S नेपाल

- 1814-16 – लार्ड हेस्टिंग्स : आंग्ल–नेपाल युद्ध, नेपाल पराजित।
- **"संगोली की संधि"** – कांगड़ा (उत्तराचंल) का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय
  – गोरखाओं को ब्रिटिश सेना में शामिल

10. ब्रिटिश V/S बर्मा (1825)

1. **प्रथम आंग्ल–बर्मा युद्ध** (1825–1826) – लार्ड एमहर्स्ट के समय। बर्मा परास्त हुआ व यांडबु की संधि हुई।
2. **द्वितीय आंग्ल–बर्मा युद्ध** (1852–53) – लोवर बर्मा का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय
3. **तृतीय आंग्ल–बर्मा युद्ध** (1885–1888) – शेष बर्मा का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय

- साइमन कमिशन (1927) की सिफारिश के आधार पर भारत शासन अधिनियम 1935 के अंतर्गत बर्मा को भारत संघ से अलग किया गया।

11. ब्रिटिश V/S भूटान (1852)

- 1865 में लॉरेंस के समय यह युद्ध लड़ा गया।
- भूटान के 18 पहाड़ियों पर अंग्रेजों का अधिकार स्थापित हुआ।

12. ब्रिटिश V/S अफगानिस्तान

- **प्रथम आंग्ल–अफगान (1839–1842)** – लार्ड **ऑकलैण्ड** के समय
- **द्वितीय आंग्ल–अफगान (1878)** – लार्ड लिटन के समय – अंग्रेज पराजित
- **तृतीय आंग्ल–अफगान (1884)** – लार्ड डफरिन के समय अफगानिस्तान का भारत में विलय हुआ।
- **डूरण्ड लाइन (1893)** – लॉर्ड **लैंसडाउन** के समय सर डूरण्ड ने भारत और अफगानिस्तान के मध्य डूरण्ड लाइन खींचा।

13. ब्रिटिश V/S तिब्बत

- **1903** – 'यंग हस्बेंड मिशन' लॉर्ड कर्जन के समय तिब्बत भेजा गया।
  – इसी दौरान तिब्बतियों से संधि करके चुंबी घाटी पर अंग्रेजों का कब्जा

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत में ब्रिटिश शासन का विकास

1. सवैधानिक विकास 2. न्यायपालिका 3. विधायिका 4. कार्यपालिका	9. रेलवे 10. सड़क 11. वायुमार्ग	15. सिविल सेवा
5. निर्वाचन 6. शिक्षा 7. समाचार पत्र 8. उद्योग	12. डाक 13. टेलीग्राफ 14. टेलीफोन	16. कृषि एवं राजस्व 17. बैंकिंग 18. शेयर बाजार

1. भारत में संवैधानिक विकास

रेग्युलेटिंग एक्ट : 1773

- ब्रिटिश शासन ने ईस्ट इण्डिया कंपनी पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।
- बंगाल के गवर्नर को बंगाल का गवर्नर–जनरल घोषित किया।
- 1774 – कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय स्थापित किया गया।
- सर एलीजा इम्जे प्रथम मुख्य न्यायाधीश

पिट्स इंडिया एक्ट : 1784

- रेग्युलेटिंग एक्ट के कमियों को दूर करने के लिए लाया गया।
- बोर्ड ऑफ कंट्रोल (BOC) एवं बोर्ड ऑफ डॉयरेक्टर (BOD) का गठन
- मद्रास और बम्बई प्रेसीडेंसी को बंगाल के अधीन लाया गया।
- प्रथम चार्टर एक्ट 1793 – कंपनी के व्यापार का अधिकार 20 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया।

चार्टर एक्ट : 1813

- इसके द्वारा ईस्ट इण्डिया कंपनी के भारत के साथ व्यापार को पुनः 20 साल के लिए बढ़ाया गया (1833)।
- ईस्ट इण्डिया कंपनी के भारत के साथ व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया। (चाय पर चीन के साथ व्यापारिक एकाधिकार को छोड़कर)
- धर्म प्रचार (ईसाई) को स्वतंत्रता दी गई।

चार्टर एक्ट : 1833

- बंगाल के गवर्नर जनरल को **भारत का गवर्नर जनरल** नियुक्त किया गया।
- भारत में कानूनों को संहिता बद्ध करने के लिए **विधि कमिशन** का गठन किया गया।
- गवर्नर जनरल को कार्यकारिणी परिषद् में चौथा एवं विधि में **पहला सदस्य विधि सदस्य** लॉर्ड मैकाले की नियुक्ति।
- ईस्ट इण्डिया कंपनी के व्यापारिक कार्य समाप्त करके राजनीतिक व प्रशासनिक संस्था में बदल दिया गया।

चार्टर एक्ट : 1853

- गवर्नर जनरल के परिषद् को विभाजित करके विधायिका व कार्यपालिका किया गया।
- यहीं से भारत में **संसदीय प्रथा** शुरू।
- खुली **प्रतियोगिता परीक्षा** के माध्यम से भर्ती का प्रावधान।

भारत सरकार अधिनियम : 1858

- इस एक्ट द्वारा भारत के गवर्नर जनरल को भारत का वायसराय–कम–गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया।
- भारत के शासन का दायित्व ईस्ट इण्डिया कंपनी के हाथों से ब्रिटिश सरकार ने अपने हाथों में ले लिया।
- देशी रियासतों के साथ समानतापूर्वक व्यवहार करना।
- 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' (BOC) व 'बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स' (BOD) को समाप्त करके 'भारत सचिव' का नया पद बनाया गया।

भारत परिषद् अधिनियम : 1861

- भारत के तीनों दण्ड संहिता – IPC, CPC, CRPC
- भारत का पुलिस कंडक्ट कोड लागू
- भारत के गवर्नर जनरल को अध्यादेश जारी करने का अधिकार दिया गया।
- गवर्नर जनरल के कार्यकारणी सदस्यों का विस्तार करके 12 अतिरिक्त सदस्यों की नियुक्ति।
- पोर्टफोलियो पद्धति की शुरूआत।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत परिषद् अधिनियम : 1892

- गवर्नर जनरल के विधायिक परिषद् को बढ़ाया गया।
- पहली बार विधायिक सदस्यों को सरकार से प्रश्न पूछने की अनुमति दी गई।
- परिषदों को बजट पर चर्चा करने का अधिकार दिया गया।
- भारत में निर्वाचन प्रणाली की शुरूआत/अप्रत्यक्ष
- Law of Concent of Age Act. लागू
- गोण्डों केशवजी कर्वे द्वारा विवाह उम्र महिला – 12 वर्ष तथा पुरूष – 14 वर्ष
- इस दौरान राष्ट्रवादियों ने नारा दिया– 'प्रतिनिधित्व नहीं, तो कर नहीं'

मार्ले-मिन्टो सुधार : (Indian Council Act. : 1908-09)

- केन्द्रीय कांऊसिल में विधि सदस्यों की संख्या बढ़ा करके 60 कर दी गई।

  27 – निर्वाचित, 33 – मनोनीत
- प्रांतीय विधायिकाओं में भी विधायी सदस्यों की संख्या को बढ़ायी गई और प्रांतों में निर्वाचित सदस्यों का बहुमत स्थापित किया गया।
- कांऊसिल के सदस्यों को पूरक प्रश्न पूछने की अनुमति
- गवर्नर जनरल के कार्यकारिणी परिषद् में पहली बार एक भारतीय सदस्य **एस.पी. सिन्हा** को नियुक्त किया गया।
- भारत में **साम्प्रदायिक निर्वाचन** पद्धति की शुरूआत, मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र बनाय गया।
- भारत में **प्रत्यक्ष निर्वाचन** पद्धति की भी शुरूआत हुई।

मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार : भारत सरकार अधिनियम 1919

- केन्द्रीय विधायिका को **द्विसदनीय** बना दिया गया–

  1) राज्य परिषद् 2) केन्द्रीय विधान परिषद्
- प्रशासन के विषयों को केन्द्र व राज्य सूची में बाँटा गया।
- महिलाओं को पहली बार मताधिकार प्रदान किया गया।
- प्रांतों में **द्वैत शासन** व्यवस्था लागू की गई।
- प्रांतीय विषयों को आरक्षित व हस्तांतरित दो सूचियों में बाँटा गया।
- भारत में संवैधानिक विकास की समीक्षा के लिए प्रति 10 वर्ष में एक संवैधानिक निकाय गठित करने का उपबंध।
- 'मेम्बर ऑफ प्रिंसेस' के गठन का उपबंध किया गया।

- लोक सेवा आयोग के गठन का उपबंध।

  नोटः- 1921 – 'मेम्बर ऑफ प्रिंसेस' स्थापित

  1926 – लोक सेवा आयोग गठित (फेडरल) पूर्ण स्वायत्त

  1927 – साइमन कमीशन का गठन
- सांप्रदायिक निर्वाचन का विस्तार करके सिक्खों को निर्वाचन में शामिल किया गया।

भारत सरकार अधिनियम 1935

- राज्यों से द्वैत शासन समाप्त करके केन्द्र में लगाया गया।
- एक अखिल भारतीय संघ के गठन का प्रावधान किया गया।
- बर्मा को भारत संघ से अलग किया गया।
- प्रशासन के विषयों को केन्द्रीय, प्रांतीय एवं समवर्ती सूचियों में बाँटा गया।
- आरबीआई व संघ लोक सेवा आयोग का गठन – 1935 किया गया।
- न्यायालय के प्रबंधन में (सर्वोच्च) संघीय/उच्चतम न्यायालय का गठन – 1935

  नोटः- भारतीय संविधान का अधिकांश अंश 1935 अधिनियम से लिया गया।

  1936 ई. में भारत का पहला आम चुनाव सम्पन्न हुआ।

भारत स्वाधीनता अधिनियम 1947

- जुलाई 1947 में यह अधिनियम पारित हुआ।
- इसमें भारत का विभाजन करके भारत तथा पाकिस्तान दो अधिराज्यों की स्थापना की गई।
- देशी रियासतों को अपने इच्छानुसार भारत या पाकिस्तान में शामिल होने का अधिकार दिया गया।
- इस अधिनियम से भारत को स्वतंत्रता मिली इसलिए इसे भारत के लिए एक ऐतिहासिक तोहफा कहा जाता है।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

2. न्यायपालिका

- **1772** – लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स के समय कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना किया गया था।
- **1862** – कलकत्ता, मुम्बई तथा मद्रास में उच्च न्यायालय की स्थापना किया गया।
- 1935 के अधिनियम के तहत भारत में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना हुई।
- **1859–60** – लॉर्ड मैकाले ने भारत के विधि सहिंताओं IPC, CPC, CRPC का संकलन हुआ। जो 1861 के अधिनियम से लागू हुआ।

3. विधायिका

- 1853 के चार्टर एक्ट से गवर्नर जनरल की परिषद को कार्यकारिणी परिषद तथा विधायी परिषद में विभाजित किया गया। यही से भारत में स्वतंत्र विधायिका का सूत्रपात होता है।
- 1892 के भारत परिषद अधिनियम से विधायिका के सदस्यों का अप्रत्यक्ष निर्वाचन की प्रक्रिया प्रारंभ हुआ।
- 1909 की अधिनियम से राज्यों के लिए पृथक विधायिका का गठन किया गया।
- 1909 के अधिनियम से राज्य विधायी परिषद में निर्वाचित सदस्यों का बहुमत सुनिश्चित किया गया।
- 1919 के अधिनियम से विधायिका को द्विसदनीय बनाया गया। 1. विधानपरिषद 2. राज्यपरिषद
- 1935 के अधिनियम से दोनों सदनों का नाम लोकसभा और राज्यसभा किया गया।

4. कार्यपालिका

- 1853 के चार्टर एक्ट से पृथक रूप से गवर्नर जनरल का कार्यकारिणी परिषद का गठन हुआ।
- 1861 के अधिनियम से पोर्टफोलियो (विभागीय व्यवस्था) व्यवस्था की शुरूआत हुई।
- 1861 के अधिनियम से गवर्नर जनरल को अध्यादेश जारी करने की शक्ति दिया गया।
- 1909 के अधिनियम से गवर्नर जनरल के कार्यकारिणी परिषद में पहला भारतीय एस.पी. सिन्हा को शामिल किया गया।
- 1919 के अधिनियम से गवर्नर जनरल के कार्यकारिणी परिषद में तीन भारतीयों को शामिल किया गया।

5. निर्वाचन

- भारत में निर्वाचन प्रणाली की शुरूआत/अप्रत्यक्ष
- भारत में साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति की शुरू हुई।
- सर्वप्रथम साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया।
- भारत में प्रत्यक्ष निर्वाचन शुरू।
- महिलाओं को पहली बार मताधिकार प्रदान किया गया।
- सांप्रदायिक निर्वाचन का विस्तार करके सिक्खों को निर्वाचन में शामिल किया गया।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में बी.आर. अम्बेडकर ने दलितों के लिए साम्प्रदायिक निर्वाचन की मांग किया था। जिसे तात्कालीक ब्रिटिश प्रधानमंत्री मेकडोनाल्ड ने मेकडोनाल्ड अवार्ड 1932 के रूप में दलितों को प्रदान किया। अंततः 1932 में पुणे पैक्ट में गांधी जी और अम्बेडकर के बीच समझौता के द्वारा वापस लिया गया। जिसके बदले दलितों को आरक्षण प्रदान किया गया।
- 1935 के अधिनियम से आम जनता को मताधिकार प्रदान किया गया। तथा एंग्लो इंडियन एवं यूरोपियन को सामुदायिक निर्वाचन में शामिल किया गया।
- 1936 ई. में भारत का पहला आम चुनाव सम्पन्न हुआ।

6. भारत में शिक्षा का प्रसार

- वारेन हेस्टिंग्स ने सर्वप्रथम शिक्षा के लिए मदरसों की स्थापना की।
- **1784** – **विलियम जोन्स** – 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल'
- **1791** – **जोनाथन डंकन** – बनारस में संस्कृत विद्यालय
- **1801** – **लार्ड वेलेजली** – प्रशिक्षण हेतु फोर्ट विलियम कॉलेज (आई.सी.एस.)
- **1813** – भारत में शिक्षा प्रसार के लिए ईस्ट इण्डिया कंपनी ने 1 लाख रू. अनुदान दिया।
- **1833** – मैकाले के सिफारिश पर भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बना।
- **1853** – शिक्षा पर वुड डिस्पेच लागू – 1854 में (पाश्चात्य शिक्षा का मैग्नाकार्टा)
- **1854** – भारत में सिविल सेवा आयोग का गठन
- **1856** – मद्रास, मुम्बई, कलकत्ता में विश्व विद्यालय की स्थापना।
- **1882** – विलियम हंटर की अध्यक्षता में प्राथमिक शिक्षा पर समिति गठित
- **1902** – रैले कमीशन की सिफारिश पर विश्वविद्यालय में सरकारी नियंत्रण लागू।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- 1917 – सैडलर कमेटी गठित, (10+2) पद्धति का सुझाव दिया।
- 1929 – हार्टोग कमेटी
- 1937 – गाँधीजी का वर्धा प्रस्ताव (मूलभूत शिक्षा पर बल)
- 1944 – सारजेंट कमेटी गठित
- 1948 – राधाकृष्णन समिति

7. भारत में समाचार पत्रों का विकास

- 1556 – छापाखाना की शुरूआत – पुर्तगालियों द्वारा
- 1557 – गोवा के कुछ पादरियों के द्वारा भारत की पहली पुस्तक छापी गई।
- 1684 – ईस्ट इण्डिया कंपनी ने भारत में प्रिंटिंग प्रेस (मुद्रणालय) की स्थापना की।
- 1780 – 'द. बंगाल गजट'
  - जेम्स आगस्ट हिक्की (यूरोप)
  - सरकार का विरोधी होने के कारण वेलेजली द्वारा प्रतिबंध
  - भारत का पहला समाचार पत्र
- 1816 – 'बंगाल गजट'
  - गंगाधर भट्टाचार्य
  - भाषा – अंग्रेजी
  - प्रथम भारतीय समाचार पत्र
- 1818 – 'कलकत्ता जनरल'
  - बकिंघम
- 1821 – 'संवाद कौमूद्री'
  - राजाराम मोहनराय
- 1822 – 'मिरातुल अखबार', 'चंद्रिका'
  - राजाराम मोहन राय
  - भाषा – फारसी
- 1823 – जॉन एडम्स के द्वारा प्रेस प्रतिबंध
- 1826 – 'उदन्त मार्तदण्ड' (उगता सूरज)
  - जुगल किशोर (कानपुर)
  - हिन्दी भाषा में भारत का पहला

- 1855 – 'हिन्दू पेट्रीयाट'
  - हरिशचन्द्र मुखर्जी
- 1859 – 'सोम प्रकाश'
  - ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
  - लिटन द्वारा वार्नाकूलर प्रेस एक्ट –1878
- 1861 – 'इन्दु'
  - रानाडे
- 1861 – 'टाईम्स ऑफ इंडिया' – मुम्बई
- 1867 – 'कवि वचन सुधा'
  - भारतेन्दु हरिशचन्द्र
- 1873 – 'हिन्दी केसरी'
  - माधवराव सप्रे
- 1906 – 'युगान्तर'
  - बारीन्द्र कुमार घोष
- 1907 – 'अभ्युदय'
  - मदनमोहन मालवीय

चर्चित व्यक्ति व उनके द्वारा चलाए गए समाचार पत्र

(01) लोकमान्य तिलक – 'मराठा' (अंग्रेजी), 'केसरी' (मराठी)
(02) मोतीलाल नेहरू – 'इंडिपेन्डेंस' (अंग्रेजी)
(03) एनी बेसेंट – 'न्यू इण्डिया' (अंग्रेजी), 'कामन विल' (अंग्रेजी)
(04) पं. जवाहरलाल नेहरू – 'नेशनल हेरॉल्ड'
(05) महात्मा गाँधी – 'यंग इण्डिया' (अंग्रेजी), 'नव जीवन' (गुजराती), 'हरिजन' (हिन्दी-गुजराती)
(06) मदनमोहन मालवीय – 'हिन्दुस्तान'
(07) मोहम्मद अली जिन्ना – 'कामरेड' (अंग्रेजी), 'हमदर्द' (ऊर्दू)
(08) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी – 'बंगाली पत्रिका' (अंग्रेजी)
(09) अब्दुल कलाम अजाद – अल हिलाल अल विलाल
(10) के.एम. पणिक्कर – 'हिन्दुस्तान टाइम्स'
(11) मोतीलाल बोस – 'अमृत बाजार पत्रिका' (बंगाली)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

8. उद्योग

- 1812 सेरामपुर (प.ब.) – पहला कागज उद्योग
- 1855 मुम्बई – पहला कपड़ा मील (विविंग एण्ड स्पीनिंग कंपनी, कावस जी डॉबर के द्वारा)
- 1855 रिसरा (प.ब.) – पहला जूट मिल स्थापित हुआ।
- 1870 कुल्टी (प.ब.) – पहला इस्पात संयंत्र
- 1904 मद्रास – पहला सीमेंट संयंत्र
- 1907 टाटानगर (झारखण्ड) – पहला वृहद स्टील प्लांट (जमसेद जी टाटा) द्वारा

9. रेलवे

- 1851 में रुड़की से सहारनपुर के बीच प्रायोगिक तौर पर चलायी गई थी।
- लार्ड डलहौजी के समय 16 अप्रैल, 1853 ई. (मुम्बई से थाणे के मध्य) पहली रेल फेरीक्वीन चली।
- 1900 में बिलासपुर रेलवे का गठन हुआ।
- लॉर्ड कर्जन के समय रेलवे बोर्ड का गठन हुआ।
- 1951 में चेन्नई भारत का पहला रेलवे जोन बना।

10. सड़क

- लॉर्ड आकलैण्ड के समय बंगाल के सोनार गांव से पाकिस्तान के लाहौर तक ग्रांड ट्रक रोड का पुनर्निर्माण किया गया।
- 1862 में मुम्बई से कोलकाता के बीच जी.ई. रोड़ का निर्माण हुआ।

11. वायुमार्ग

- 1911 में नैनी से इलाहाबाद के बीच भारत में पहली बार वायु सेवा की शुरूआत हुई।
- 1932 में भारत की पहली वायु सेवा टाटा एयरलाइंस की शुरूवात हुयी।
- भारत के पहला पायलट जमशेद जी टाटा थे।
- 1953 में वायु सेवा का राष्ट्रीकरण किया गया।
- घरेलू सेवा के लिए इंडियन एयरलाइंस तथा विदेशी सेवा के लिए एयर इंडिया का गठन किया गया।

12. डॉक

- 1851 में लॉर्ड डलहौजी ने डॉक विभाग का गठन किया।
- कराची से पहला डॉक टिकट जारी किया।

13. टेलीग्राम

- टेलीग्राम सेवा – 1851 ई. (कलकत्ता से डायमंड हार्बर के बीच)
  – लारेंस के शासनकाल में भारत से ब्रिटेन के बीच समुद्री टेलीग्राम सेवा स्थापित हुआ।

14. टेलीफोन

- 1883 में रिपन के समय शिमला में पहला टेलीफोन एक्सचेंज स्थापित हुआ।

15. सिविल सेवा

- 1793 में कार्नवालिस कोड से भारत में सिविल सेवा का जन्म हुआ।
- डलहौजी के समय लॉर्ड मैकाले की सिफारिश पर 1855 में सिविल सेवा में भर्ती के लिए प्रतियोगिता परीक्षा प्रारंभ हुआ।
- 1863 में सत्येन्द्रनाथ ठाकुर सिविल सेवा में चुने जाने वाले पहले भारतीय हैं।
- लार्ड लिटन ने सिविल में प्रवेश की उम्र को 23 से घटाकर 19 साल कर दिया। जिसके विरुद्ध सुरेन्द्र नाथ टैगोर ने सिविल से त्यागपत्र देकर इंडियन एसोसिएशन तथा बंगाली समाचार पत्र के माध्यम से देश भर में आंदोलन चलाया।
- ली. कमेटी की सिफारिश पर 1926 में PSC का गठन हुआ।
- 1935 में इसे FPSC किया गया।
- 1950 में इसका नाम UPSC किया गया।

16. कृषि एवं राजस्व

- 1774 में लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स ने रेवेन्यू बोर्ड का गठन किया।
- 1772 में कलेक्टर का पद सृजित हुआ।
- लॉर्ड कार्नवालिस के समय जॉन सोर ने राजस्व निर्धारण के लिए पंचशाला व्यवस्था लागू किया।
- 1793 में लॉर्ड कार्नवालिस के समय जॉन सोर ने बंगाल में स्थायी बंदोबस्त लागू किया।
- जॉन शोर को ब्रिटिश शासन का टोडरमल कहा जाता है।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- लॉड हैस्टिंग्स के समय 1821 में लैंड टेनेंसी एक्ट पारित हुआ।
- लॉर्ड हैस्टिंग्स के समय टॉमस मुनरो ने मद्रास प्रेसीडेंसी में रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू किया।
- लॉर्ड हैस्टिंग्स के समय एल्फिस्टन ने रैयतवाड़ी और महालवाड़ी को मिलाकर मिश्रित व्यवस्था मुम्बई प्रेसीडेंसी में लागू किया।
- लॉर्ड विलियम बैंटिंक के समय मार्टिन बर्ड ने उत्तर भारत में महालवाडी व्यवस्था लागू किया।

17. भारत में बैंकिंग का विकास

- **बैंक ऑफ हिन्दुस्तान** - 1770
  - भारत का प्रथम बैंक
- **बैंक ऑफ बंगाल** - 1806
  - भारत में करेंसी जारी करने वाला प्रथम बैंक
- **बैंक ऑफ मुम्बई** - 1840
- **बैंक ऑफ मद्रास** - 1843
- **अवध कॉमर्शियल बैंक** - 1881
  - भारतीयों के द्वारा संचालित भारत का प्रथम बैंक
- **पंजाब नेशनल बैंक** - 1894
  - पूर्णत: भारतीय नियंत्रण में संचालित बैंक
- **इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया** - 1921
  - बैंक ऑफ मद्रास, बैंक ऑफ बंगाल व बैंक ऑफ मुम्बई को मिलाकर
  - जुलाई 1955 में इम्पीरियल बैंक का आंशिक राष्ट्रीयकरण कर इसका नाम **एसबीआई** किया गया।
- **भारतीय रिजर्व बैंक**
  - इसका गठन 1934 के अधिनियम से 1 अप्रैल, 1935 में किया गया।
  - 1 जनवरी, 1949 को इसका राष्ट्रीयकरण किया गया।

18. स्टॉक एक्सचेंज

- मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज – 1875
- अहमदाबाद स्टॉक एक्सचेंज – 1894

भारत में ब्रिटिश शासन

A. ईस्ट इण्डिया कंपनी का शासन
- (i) बंगाल के गवर्नर का शासन
- (ii) बंगाल के गवर्नर जनरल का शासन
- (iii) भारत के गवर्नर जनरल का शासन

B. ब्रिटिश क्राऊन का शासन
- (i) गवर्नर जनरल कम वायसराय का शासन

बंगाल के गवर्नर

लॉर्ड क्लाईव : (1757-60) एवं (1765-67)

- बंगाल में द्वैत शासन व्यवस्था : प्रशासनिक कार्यों का दायित्व नवाब के नियंत्रण में
  राजस्व व न्याय संबंधी विषय ईस्ट इण्डिया कंपनी के नियंत्रण में आ गया।
- प्रथम श्वेत विद्रोह हुआ। (कर्मचारियों के वेतन में कटौती)
- राबर्ट क्लाईव ने बंगाल के समस्त क्षेत्र के लिए दो उप–दीवान नियुक्त किए.
  बंगाल – मुहम्मद रजा खाँ
  बिहार – राजा शिताब राय
- वेन्सी टार्ट – (1760-65) बक्सर युद्ध
  क्लाईव – (1765-67) द्वितीय गवर्नरी काल
  वर्लेस्ट – (1767-69)
  कर्टियस – (1769-72)

वारेन हेस्टिंग्स : (1772-73)

- प्रथम रेग्यूलेटिंग एक्ट (नियंत्रण करना) पारित – बंगाल के गवर्नर को बंगाल का गवर्नर जनरल बना दिया गया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

बंगाल के गवर्नर जनरल

वारेन हेस्टिंग्स (1772-86)

- संस्थात्मक गठन – 1774 सर्वोच्च न्यायालय (कलकत्ता)
  - 1774 ई. में 'राजस्व बोर्ड'
  - शिक्षा को संस्थागत स्वरूप देकर मदरसा की स्थापना।
  - 1791 संस्कृत वि.वि. बनारस (जोनाथन डंकन)
- प्रशासनात्मक गठन –

न्याय व्यवस्था – मुगल प्रशासन के तर्ज पर-
- 1784 पिट्स इंडिया एक्ट (गवर्नर जनरल के अधिकार में कटौती, इसलिए 1786 में इसने त्यागपत्र दिया)
- द्वैत शासन प्रणाली का अंत किया।
- राजधानी व टकसाल मुर्सीदाबाद से कलकत्ता स्थानांतरित किया।

सामाजिक कार्य –
- विलियम विलकिन्स ने गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
- विलियम जोंस द्वारा 1784 ई. में कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसायटी' की स्थापना।
- जेम्स आगस्टस हिक्की द्वारा 'बंगाल गजट' (1780 में प्रथम समाचार पत्र प्रारंभ)

नोट
- यह प्रथम गवर्नर जनरल था, जिसके ऊपर नंद कुमार नामक बंगाली ने घूस लेने का आरोप लगाया।
- अवध के नवाब से गलत तरीके से धन लेने के आरोप के कारण लंदन जाने पर इसके ऊपर महाभियोग चलाया गया।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786-93)

- नागरिक सेवाओं का जनक
- कलेक्टरों को न्याय संबंधी कार्यों की दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार का अधिकार दिया।
- पुलिसिंग का कार्य जमींदारों के हाँथों से लेकर जिले में एस.पी. व थानों की स्थापना एवं उसमें दरोगा की नियुक्ति की। (पुलिस सुधार)

- स्थायी बंदोबस्त : अर्थशास्त्र के जॉन शोर के योजना अनुसार बंगाल में लागू किया।
- मोबाईल कोर्ट : चलता फिरता न्यायालय का गठन किया।
- कार्नवालिस संहिता : प्रशासन के क्षेत्र में सुधार हेतु (1793)
- इसके समय तृतीय आंग्ल–मैसूर युद्ध लड़ा गया।

सर जॉन शोर (1793-98)

- यह अहस्तक्षेप वाला गवर्नर जनरल था।
- इसने ईस्ट इण्डिया कंपनी के अधीन क्षेत्रों पर प्रशासन किया। अन्य क्षेत्र पर आक्रमण नहीं किया।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805)

- अंग्रेजों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- 1798 ई. में सहायक संधि की नीति लागू किया। जिसके अंतर्गत निम्न प्रावधान थे–
  (1) संबंधित रियासत को एक अंग्रेज सैनिक टुकड़ी अपने यहाँ रखनी पड़ती थी, जिसका खर्च रियासत द्वारा वहन किया जाता था।
  (2) अन्य विदेशी सत्ताओं से किसी प्रकार का संबंध न रखना।
  (3) अन्य रियासतों से किसी प्रकार का कूटनीतिक संबंध न स्थापित करना।
  (4) रियासत को अपने दरबार में एक अंग्रेज प्रतिनिधि रखना पड़ता था।
  (5) इस सबके बदले रियासत का एक स्वतंत्र भू-क्षेत्र अंग्रेजों को देना पड़ता था।
- सहायक संधि का प्रयोग क्रमशः
  – हैदराबाद (1798), मैसूर (1799), तन्जौर (1799),
  अवध (1801), पेशवा (1802), भोंसले (1803), सिंदिया (1803)
  (हैदराबाद के निजाम ने सर्वप्रथम अपनाया।) (कोड – HMT APBS)
  जयपुर, उदयपुर व बुन्दी आदि पर सहायक संधि लागू की गई।
  (इससे पहले सहायक संधि का प्रयोग फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने किया था।)
- प्रमुख संधियाँ –
  - 1802 बेसीन की संधि V/S बाजीराव-II
  - 1803 देवगांव की संधि V/S भोंसले
  - 1803 सुरजी अर्जुन गांव की संधि V/S सिंधिया

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- प्रमुख युद्ध –
  - द्वितीय आंग्ल–मराठा
  - चतुर्थ आंग्ल–मैसूर
- 1799 में प्रेस पर प्रतिबंध लगाया गया।
- 1800 में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' कलकत्ता की स्थापना।
- 1803 में अंग्रेजों का दिल्ली पर अधिकार

लॉर्ड कार्नवालिस (1805-05)

- द्वितीय कार्यकाल 1805 ई. में भारत आया।
- यहीं मृत्यु हो गई तथा उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में दफनाया गया।

जॉर्ज बोर्लो (1805-07)

- होल्कर से राजपुरघाट की संधि।
- वेल्लोर में धार्मिक कारणों से सिपाही विद्रोह (1806)

लॉर्ड मिन्टो प्रथम (1807-13)

- 1809 ई. में अमृतसर की प्रसिद्ध संधि हुई।
- मेटकॉफ विरूद्ध राणा रणजीत सिंह

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-23)

- 1813 – पहला चार्टर एक्ट : ईस्ट इण्डिया कंपनी के व्यापारिक क्षेत्रों में एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया।
- प्रमुख युद्ध – 1814-16 ई. में आंग्ल–नेपाल युद्ध (नेपाल पराजित)
  संगोली समझौता : कांगड़ा (उत्तराचंल) को ब्रिटिश साम्राज्य में तथा गोरखा को ब्रिटिश सेना में शामिल किया।
  – 1816-18 ई. में तृतीय आंग्ल–मराठा युद्ध लड़ा गया।
- 1816 पिण्डारियों के दमन
  – कर्नल हिस्लोव का नेतृत्व
  – पिण्डारी लूटपाट करते थे तथा मराठा सेना का युद्ध के समय सेना के रूप में सहयोग करते थे।

- भू–राजस्व व्यवस्था – 1821 ई. में के क्षेत्र में प्रथा सम्पन्न हुई।
  – (1) **महालवाड़ी** (उत्तर भारत) – लॉर्ड बैंटिग के समय मार्टिन बर्ड ने लागू किया।
  (2) **रैयतवाड़ी** (मद्रास) – मद्रास के गर्वनर टामस मुनरो ने लागू किया।
- 1822 ई. में बंगाल में बंगाल 'टैनेन्सी एक्ट/कास्तकारी अधिनियम' लागू किया।
- इसने वेलेजली के द्वारा लगाए गए प्रेस प्रतिबंधों को हटाया व प्रेस की स्वतंत्रता को बहाल किया।
- इसके समय भारत में शिक्षा व समाचार पत्र का तेजी से विकास हुआ व भारत में पुनर्जागरण की शुरूआत हुई।

जॉन एडम्स (1823)

- प्रेस पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करने के कारण कुख्यात हुआ।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28)

- इसके समय प्रथम आंग्ल–बर्मा युद्ध लड़ा गया।
- बर्मा परास्त हुआ व यांडबु की संधि।
- बैरकपुर सैनिक विद्रोह (1824)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत के गवर्नर जनरल

लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828-35)

- बंगाल का अंतिम व भारत का पहला गवर्नर जनरल था।
- बैंटिक एक उदारवादी गवर्नर जनरल था।
- जिसने भारत में कई सृजनात्मक व लोकतांत्रिक कार्य किए।

कार्य–

- **1829** 1) सती प्रथा का अंत किया।
  2) कर्नल स्लीमन के नेतृत्व में ठगी प्रथा का अंत।
- **1833** 1) मैकाले की अध्यक्षता में विधि आयोग का गठन किया।
  2) मैकाले समिति की रिपोर्ट पर भारत को अंग्रेजी की शिक्षा का माध्यम घोषित किया। (1835)
  3) इसी समय द्वितीय चार्टर एक्ट आया।
  4) इसमें बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल घोषित किया।
- **1835** 1) बैंटिक त्यागपत्र देकर वापस चला गया।

नोट – इसने मोबाईल कोर्ट बंद किया।
– 1835 में प्रथम मेडिकल कॉलेज (कलकत्ता)
– इंग्लैण्ड के राजा की आकृति वाले नए सिक्के चलाए।

लॉर्ड चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36)

- यह भारत का दूसरा गवर्नर जनरल था।
- इसने एडम्स के द्वारा लगाए गए प्रेस प्रतिबंध को समाप्त किया।
- इसे 'भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता' कहा जाता है।

ऑकलैण्ड प्रथम (1836-42)

- इसके समय 1838-42 ई. के बीच प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध हुआ।
- इसने ग्रांट ट्रंक रोड (जी.टी. रोड) का पुर्ननिर्माण करवाया।
- डाक प्रणाली की शुरूआत हुई।

लॉर्ड एलिनबरो (1842-44)

- इसके समय सिन्ध प्रांत का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय हुआ। (नेपियर द्वारा 1845)
- 1843 ई. में दास प्रथा का अंत किया।

लॉर्ड हार्डिंग (1844-48)

- रविवार को अवकाश घोषित
- नरबलि प्रथा का अंत किया।
- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध हुआ।

लॉर्ड डलहौजी (1848-56)

- यह साम्राज्यवादी गवर्नर जनरल था।
- प्रमुख युद्ध – 1848-49, द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध
  – 1852-53, द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध
  – 1852 भारत-भूटान युद्ध

रचनात्मक कार्य

टेलीग्राम सेवा – 1851 ई. (कलकत्ता से डायमंड हार्बर के बीच)
रेल्वे – 16 अप्रैल, 1853 ई. (मुम्बई से थाणे के मध्य)
उद्योग – बिविंग एण्ड स्पीनिंग कपड़ा मिल, मुम्बई (कावस डी डाबर)
– रिशरा (बंगाल) में प्रथम जूट मिल (1855)
डाक – 1852, भारत में पहला डाक टिकट जारी किया। (कराची)
– 1854, पोस्टल अधिनियम

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

शिक्षा – चार्ल्स वुड के नेतृत्व में 'शिक्षा आयोग का गठन' (1853) इसे 'शिक्षा का मैग्नाकार्टा' या 'चाल्स वुड डिस्पैच' भी कहा जाता है। (1854)
– लोक शिक्षा विभाग का गठन (1854)
– टामसन व्यवस्था – भारतीय भाषाओं में शिक्षा की व्यवस्था
– रूड़की में इंजीनियरिंग कॉलेज व कलकत्ता में कृषि महाविद्यालय की स्थापना
– लंदन विवि. के तर्ज पर भारत के कलकत्ता, मुम्बई व मद्रास में विवि. का गठन किया। 1856

मर्चेन्ट सर्विस – नाविकों की स्थिति सुधारने हेतु मर्चेन्ट सर्विस एक्ट बनाया।

- 1854, लोक निर्माण विभाग का गठन (PWD)

डलहौजी की सैन्य परिवर्तन –

1. 'प्रथम गोरखा रेजिमेन्ट' गोरखाओं की सेना में बढ़ोतरी।
2. तोपखानों को मुर्शीदाबाद से मेरठ स्थानांतरित किया।
3. सेना का मुख्यालय 'शिमला' को बनाया।
4. सेना में भारतीयों की संख्या में कटौती किया।
5. स्वतंत्र डाक व्यवस्थाओं को समाप्त कर दिया।
6. जनरल इन लिस्टमेंट एक्ट पारित, जिसके तहत् भारतीय सैनिकों को विदेशों में सेवा देना अनिवार्य था।

डलहौजी की हड़प नीति –

1. 1848 ई. में इसने रियासतों का विलय के लिए एक नीति लागू किया, जिसे हड़प नीति कहते हैं।
2. वे रियासत, जो कभी भी मुगल या मराठों के अधीन नहीं रहा, उनको छोड़कर शेष रियासतों में यह नीति लागू हुआ।
3. हड़प नीति लागू करने वाली रियासतें–

सतारा – 1948, सम्बलपुर, जैतपुर – 1849,
बघाट – 1850, उदयपुर – 1852
बरार, झांसी – 1853, नागपुर – 1854,
बरौली – 1855, अवध – 1856
कोड – (SSJ BU BJN BA)

- डलहौजी ने पेंशनों व पदवियों को समाप्त कर दिया।
- 1853 ई. में बाजीराव द्वितीय के मरने के बाद नाना साहब का पेंशन बंद करा दिया।
- डलहौजी मुगल बादशाह की उपाधि समाप्त कर दिया।
- विधवा विवाह इसी के समय पारित हुआ लेकिन लागू नहीं हुआ।

भारत के वायसराय

लॉर्ड कैनिंग (1856-1862)

- ईस्ट इण्डिया कंपनी के अधीन भारत का अंतिम गवर्नर जनरल था।
- ब्रिटिश क्राऊन के अधीन भारत का प्रथम गवर्नर जनरल कम वायसराय था।
- इसके समय 'विधवा पुनर्विवाह' नियम लागू हुआ।
- मार्च 1857 ई. में मंगल पाण्डे का विद्रोह हुआ।
- अप्रैल 1857 ई. में भारत का स्वतंत्रता संग्राम हुआ।
- अगस्त 1858 ई. में महारानी विक्टोरिया की घोषणा पत्र जारी।
- 1858 ई. में बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल/बोर्ड ऑफ डारेक्टर समाप्त कर भारत परिषद् या सचिव का पद स्थापित किया गया।
- पहला 'भारत शासन अधिनियम' पारित हुआ।
- 1860 ई. में जेम्स विल्सन के द्वारा भारत का पहला बजट शुरू हुआ।
  – प्रथम कागजी मुद्रा जारी।
  – इसके समय में पहला आर्म्स एक्ट पारित हुआ।
- 1861 ई. में पहला 'भारत परिषद् अधिनियम' पारित हुआ।
  – मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास उच्च न्यायालय की स्थापना 1861 अधिनियम द्वारा।
- 1861 ई. में पोर्टफोलियो प्रणाली लागू – IPC – 1860

लॉर्ड एल्गिन प्रथम (1862-63)

- इसने 'बहावी आंदोलन' का दमन किया।

सर जॉन लॉरेंस (1863-69)

- इसके समय में भारत व लंदन के बीच में पहला समुद्री टेलीग्राफ सेवा शुरू हुआ।
- अकर्मण्यता की नीति लागू किया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

लॉर्ड मेयो (1869-72)

- इसने भारत में वित्तीय विकेन्द्रीकरण की नीति लागू किया।
- 1872 ई. में मेयो के समय डेंजिल इबेट्सन ने भारत में पहली जनगणना का कार्य किया।
- अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना किया।
- 1872 ई. में एक अफगानी द्वारा चाकू मारकर इसकी हत्या कर दी गई। (एकमात्र)

लॉर्ड नार्थ ब्रुक (1872-76)

- इसके समय में पंजाब का कूक आंदोलन हुआ।

लॉर्ड लिटन (1876-80)

- यह एक साम्राज्यवादी व प्रतिक्रियावादी वायसराय था।
- भारतीयों का विरोधी था।
- इसके समय उत्तर भारत में भयानक आकाल पड़ा था –
  - जिसकी अनदेखी करके इसने 1877 ई. में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के सम्मान में 'दिल्ली दरबार' (प्रथम बार) का आयोजन किया।
- यहाँ इसे केशर-ए-हिन्द की उपाधि से नवाजा गया। इस कारण इसकी गंभीर आलोचना हुई।
- 1878 ई. में 'वार्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' पारित किया। ('सोम प्रकाश' के लिए)
- 1879 ई. में यह अधिनियम ईश्वरचंद विद्यासागर के समाचार पत्र 'सोम प्रकाश' को प्रतिबंधित करने के लिए लाया गया।
- प्रेस पर प्रतिबंध लगाया।
- इसने द्वितीय आर्म्स एक्ट अधिनियम पारित किया।
- अपने गलत नीतियों के कारण द्वितीय अफगान युद्ध में पराजित हुआ।
- भारतीयों का आई.सी.एस. में प्रवेश को रोकने के लिए भर्ती की उम्र को 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया।
- इन्होंने रिचर्ड स्टेची की अध्यक्षता में 'आकाल आयोग' की स्थापना की।

लॉर्ड रिपन (1880-84)

- यह सबसे उदारवादी व लोकतांत्रिक वायसराय था।
- कार्य –

1881 – 1) नियमित जनगणना शुरू
2) स्थानीय स्वशासन का प्रारंभ, इस कारण रिपन को 'स्थानीय स्वशासन का पिता' कहते हैं।
3) पहला कारखाना अधिनियम पारित किया।
4) बाल श्रम पर प्रतिबंध लगाया।
5) विलयम हंटर की अध्यक्षता में प्राथमिक शिक्षा देने के लिए 'हंटर आयोग' का गठन किया गया।

1882 – 1) इल्बर्ट विधेयक लाया गया।
2) द्वितीय श्वेत विद्रोह हुआ।
3) प्रेस प्रतिबंध (वर्नाक्यूलर एक्ट) हटाया।

लॉर्ड डफरिन (1884-88)

- इसके शासनकाल में अंतिम आंग्ल-बर्मा युद्ध लड़ा गया।
- बर्मा का अंतिम रूप से ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर दिया गया।
- इसके शासनकाल में 1885 ई. में एओ. ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की।

लॉर्ड लैन्सडाऊन (1888-94)

- इसी के समय हेनरी डूरण्ड द्वारा भारत-अफगानिस्तान के मध्य 'डूरण्ड रेखा' खींची गई।
- 1890 ई. में भारतीय रेल्वे एक्ट पारित।
- दूसरा कारखाना अधिनियम, 1891 – काम के घंटे तय किए गए (11 घंटे)

लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894-99)

- इसका कथन था कि– "भारत को तलवार के बल पर जीता गया है और तलवार के बल पर शासन किया जाएगा।"

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

लॉर्ड कर्जन (1899-1905)

- 1901 – सर मॉनकीफ की अध्यक्षता में 'सिंचाई आयोग' का गठन
- 1902 – शिक्षा के 'रैले आयोग' का गठन किया।
- पुलिस सुधार के लिए 'एण्ड्रयू फ्रेजर आयोग' का गठन किया।
- आकाल के लिए 'मेकडोनाल्ड आयोग' का गठन किया।
- 1904 – इसने पुशा में 'भारतीय कृषि शोध व अनुसंधान परिषद्' का गठन किया।
- 1905 – भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पास किया गया।
- भारत में 'सहकारिता आंदोलन' का सूत्रपात किया।
- 'पुरातत्व विभाग' का गठन किया।
- कलकत्ता में 'विक्टोरिया मेमोरियल हॉल' का निर्माण हुआ।
- सर ई. रॉबर्टसन की अध्यक्षता में इसने रेल्वे में सुधार के लिए कार्य किया व रेल्वे बोर्ड का गठन किया।
- सर्वाधिक रेल्वे लाईन का निर्माण इसी के कार्यकाल में हुआ।
- 16 अक्टूबर, 1905 को बंगाल का विभाजन
- बंगाल विभाजन के कारण इसने 'बांटो और राज करो' का नियम दिया था।

लॉर्ड मिन्टो द्वितीय (1905-10)

- 1906 – 'मुस्लिम लीग' का गठन
- 1907 – कांग्रेस का 'सूरत अधिवेशन'
- 1908 – 'स्वदेशी आन्दोलन'
- 1909 – 'मार्ले-मिन्टो सुधार'

लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910-16)

- 1911 – दूसरा 'दिल्ली दरबार' आयोजित
  - दिसम्बर 1911 ई. में जॉर्ज पंचम ब्रिटेन का राजा भारत आया।
  - इसके स्वागत के लिए मुबंई में 'गेट्वे ऑफ इण्डिया' बनाया गया।
  - इसी सभा में भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लाने की घोषणा की गई।
  - बंगाल का विभाजन रद्द

- 1912 – दिल्ली भारत की राजधानी बनी।
  - रविन्द्रनाथ की रचना 'गीतांजली' प्रकाशित हुई।
- 1913 – रवीन्द्रनाथ टैगोर को साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।
  - 'गदर पार्टी' की स्थापना
- 1914 – प्रथम विश्व युद्ध शुरू
  - 'कामागाटामारू प्रकरण'
- 1915 – गाँधीजी स्वदेश (9 जनवरी, 1915) वापस हुए।
  - गोपालकृष्ण गोखले की मृत्यु

लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916-21)

- 1916 – 'होमरूल आन्दोलन' प्रारंभ
  - कांग्रेस का 'लखनऊ अधिवेशन'
  - गाँधीजी का भारतीय राजनीति में प्रवेश
- 1917 – प्रथम विश्व युद्ध समाप्त
  - शिक्षा पर 'सैडलर आयोग' का गठन
  - गाँधीजी का प्रथम सत्याग्रह – 'चम्पारण आंदोलन'
  - 'मांटेग्यू चेम्सफोर्ड घोषणा'
  - 'होमरूल आंदोलन' समाप्त
- 1919 – 'मांटेग्यू चेम्सफोर्ड अधिनियम' पारित हुआ।
  - 'रोलेक्ट एक्ट' पारित हुआ।
  - 'जलियांवाला बाग हत्याकांड'
  - 'खिलाफत आंदोलन' शुरू
- 1920 – लोकमान्य तिलक की मृत्यु
  - 'असहयोग आंदोलन' शुरू
  - 'मार्क्सवादी कम्यूनिष्ट पार्टी' की स्थापना
  - 'राष्ट्र संघ' की स्थापना (लीग ऑफ नेशन)
- 1921 – कांग्रेस का 'अहमदाबाद अधिवेशन'

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

लॉर्ड रीडिंग (1921-26)

- **1922** – 'चौरा-चौरी काण्ड' (गोरखपुर)
  - – 'असहयोग आंदोलन' समाप्त
- **1923** – 'स्वराज दल' की स्थापना
- **1924** – कांग्रेस का 'बेलगाँव अधिवेशन'
  - – हिन्दुस्ता रिपब्लिकेशन एसोसिएशन की गठन
- **1925** – 'काकोरी काण्ड' (ट्रेन लूट) हुआ।
  - – विट्ठल भाई पटेल विधानसभा के अध्यक्ष (प्रथम) चुने गए।

लॉर्ड इरविन (1926-31)

- **1927** – कांग्रेस का 'मद्रास अधिवेशन'
- **1928** – 'साइमन कमीशन' भारत आया।
  - – लाला लाजपत राय की मृत्यु
  - – हिन्दू सोशिलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन।
  - – लाहौर बम काण्ड
- **1929** – असेम्बली बम काण्ड,
  - – 'नेहरू रिपोर्ट' प्रस्तुत
  - – 31 दिसम्बर, 1929 ई. को कांग्रेस का 'लाहौर अधिवेशन'
- **1930** – 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' प्रारंभ
  - – गाँधी का 'दाण्डी मार्च'
  - – 'प्रथम गोलमेज सम्मेलन' (लंदन)
  - – स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी को मनाना प्रारंभ
- **1931** – गाँधी-इरविन समझौता
  - – 'द्वितीय गोलमेज सम्मेलन' (लंदन), 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' स्थगित

लॉर्ड विलिंग्टन (1931-36)

- **1932** – 'तृतीय गोलमेज सम्मेलन' (लंदन)
  - – 'पूना पैक्ट'
  - – साम्प्रदायिक अधिनिर्णय (मैकडोनाल्ड अवार्ड की घोषणा)
  - – 'द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन' प्रारंभ
- **1335** – 'भारत प्रशासन अधिनियम' पारित

लॉर्ड लिनलिथगो (1936-44) (प्रथम कार्यकाल व 1938-43 : दूसरा कार्यकाल)

- **1936** – भारत का पहला आम चुनाव
- **1937** – कांग्रेस का 'हरिपुरा अधिवेशन' – सुभाषचन्द्र बोस
- **1939** – कांग्रेस का 'त्रिपुरी अधिवेशन'
  - – 'द्वितीय विश्व युद्ध' शुरू
  - – 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना – सुभाषचन्द्र बोस
- **1940** – 'अगस्त प्रस्ताव' (अंग्रेजों द्वारा)
  - – पृथक पाकिस्तान की पहली बार मांग (लाहौर अधिवेशन)
- **1942** – 'क्रिप्स मिशन' प्रस्ताव
  - – 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रारंभ
  - – अटलांटिक चार्टर
  - – कस्तूरबा गाँधी की मृत्यु
- **1944** – सी. राजगोपालाचारी फार्मूला

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

लॉर्ड बेवेल (1944-47)

- 1945 – 'शिमला सम्मेलन'
  - – 'द्वितीय विश्व युद्ध' समाप्त
  - – क्लीमेंट एटली ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बना।
- 1946 – 'कैबिनेट मिशन' प्रस्ताव
  - – 'नौसेना विद्रोह'
  - – भारत में अंतरिम सरकार का गठन
  - – 'संविधान सभा' का गठन
  - – नेहरू प्रधानमंत्री बने।
  - – लालकिला मुकदमा

लॉर्ड माउण्टबेटन : (प्रथम कार्यकाल : मार्च 1947-अगस्त 1947 व दूसरा कार्यकाल : 1947-48)

- उपनाम – डिकी बर्ड
- 1947 – ब्रिटिश भारत के अंतिम वायसराय कम गवर्नर जनरल
  - – स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल।
  - – माउण्टबेटन योजना के तहत भारत–पाकिस्तान का विभाजन हुआ।
  - – इन्ही के समय जुलाई 1947 में भारतीय स्वाधीनता अधिनियम पारित हुआ जिसके तहत भारत को आजादी मिली।

ब्रिटिश शासन के दौरान विद्रोह एवं आंदोलन

1. सामाजिक/धार्मिक सुधार आंदोलन

(भारत में पुनर्जागरण)

- विश्व में – प्रथम ब्रिटेन
- भारत में – 18वीं (वास्तविक रूप से 19वीं शताब्दी)

राजा राममोहन राय (ब्रह्म समाज)

- भारत में 'पुनर्जागरण के पिता' और 'धार्मिक सुधार आंदोलन के पिता'
- 1815 – आत्मीय सभा की स्थापना
- 1817 – इनके प्रयासों से हिन्दू कॉलेज (कलकत्ता) डेविड हेयर के द्वारा स्थापित
- 1821 – 'संवाद कौमूदी' समाचार–पत्र का प्रकाशन
- 1822 – 'मिरातुल' अखबार, चंद्रिका
- 1825 – 'वेदान्त कॉलेज' स्थापित
- 1828 – 'ब्रह्म समाज' की स्थापना, कलकत्ता
  मूर्ति पूजा का विरोध, एकेश्वरवाद पर बल
- 1829 – 'सती प्रथा' को समाप्त (लॉर्ड विलियम बैंटिक द्वारा)
- 1833 – ब्रिटेन (ब्रिस्टल) में मृत्यु
  नोट– 1833 ई. में मृत्यु के बाद ब्रह्म समाज का नेतृत्व देवेन्द्रनाथ टैगोर द्वारा
- 1865 – विभाजन – आदि ब्रह्म समाज – देवेन्द्रनाथ
  भारतीय ब्रह्म समाज – केशवचन्द्र सेन
- 1878 – साधारण ब्रह्म समाज (भारतीय ब्रह्म समाज से टूटकर)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

1828 ब्रह्म समाज (राजा राम मोहन राय)

- **आदि ब्रह्म समाज** – देवेन्द्रनाथ टैगोर
- **1866 भारतीय ब्रह्म समाज** – केशवचन्द्र सेन
  - **भारतीय ब्रह्म समाज** – केशवचन्द्र सेन
  - **साधारण ब्रह्म समाज** – आनंद मोहन बोस (1878)

दयानंद सरस्वती (आर्य समाज)

- **'आर्य समाज' के संस्थापक** – दयानंद सरस्वती (1875, मुम्बई)
- **वास्तविक नाम** – मूलशंकर
- **गुरू** – विरजानंद
- **उद्देश्य** – वैदिक ज्ञान की पुर्नस्थापन
- **वैदिक धर्म की स्थापना पर बल** – 'वेदों की ओर लौटो'
- **प्रमुख केन्द्र** – लाहौर
- **पुस्तक** – 'सत्यार्थ प्रकाश'
- **1882** – 'गोरक्षणी सभा' की स्थापना की।
  – 'शुद्धी आंदोलन' चलाया।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास –

- **1886** – डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर (दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज)
- **1902** – में अनुयायी श्रृद्धानंद ने हरिद्वार में गुरूकुल कांगड़ी वि.वि. की स्थापना की।
  – वेलेण्टाइन शिरोल ने आर्य समाज को 'भारतीय अशांति का जनक' कहा है।

थियोसोफिकल सोसायटी –

- **संस्थापक** – मेडम पेट्रोंसाना ब्लाटस्की व कर्नल हेनरी ऐल्काट
- **उद्देश्य** – मुख्य रूप से वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना व वेदों के ज्ञान को आम जनता तक पहुँचाना।
- **स्थापना** – 1875 में
- **1875** – न्यूयार्क (अमेरिका)
- **1882** – अड्डयार (भारत में) शाखा
- **1891** – एनीबेसेंट भारत आयीं।
- **1933** – मृत्यु तक नेतृत्व किया।
- **1898** – बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल खोला, जो बाद में 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बना।
- **1916** – होमरूल आंदोलन चलाया।

नोट – थियोसोफिकल सोसायटी द्वारा मूर्तिपूजा व सती प्रथा को अपना समर्थन देने के कारण इसकी आलोचना की गई।

रामकृष्ण मिशन –

- **संस्थापक** – स्वामी विवेकानंद
- **स्थान** – वेल्लूर मठ (कोलकता)
- **स्थापना** – 1897 में
- **उद्देश्य** – स्वामी विवेकानंद के गुरू रामकृष्ण परमहंस के विचारों, दर्शनों और शिक्षाओं आदि को आम जनता तक पहुँचा करके जागृति लाना।

स्वामी विवेकानंद : संक्षिप्त परिचय

- **जन्म** – 1863
- **मृत्यु** – 1902
- **वास्तविक नाम** – नरेन्द्रनाथ दत्त
- खेतड़ी (राजस्थान) के महाराजा के नाम पर नामकरण विवेकानंद किया गया।
- 11 सितम्बर 1893 में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो धर्म सम्मेलन में भाग लिया और भारतीय सनातन धर्म को प्रतिपादित किया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

प्रार्थना समाज –

- संस्थापक – आत्माराम पांडुरंग/महादेव गोविन्द रानाडे
- स्थापना वर्ष – 1867
- स्थान – मुम्बई
- दलितों व पीड़ितों हेतु – 'दलित जाति मण्डल' एवं 'समाज सेवा संघ' की स्थापना
- शैक्षिक कार्य हेतु – 'दक्कन एजुकेशन सोसायटी' की स्थापना
- राजनीतिक संस्था – 'पूना सार्वजनिक सभा'

देव समाज/धर्म सभा –

- संस्थापक – राधाकांत देव
- स्थापना वर्ष – 1830 (कलकत्ता)
- ब्रह्म समाज के विरोध में इसका उदय हुआ।
- विशेष – राजाराम मोहन राय के अंग्रेजी शिक्षा के विरूद्ध में

बंगाल के सुधारक –

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

- 1856 में 'विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' पारित कराया।
- ग्रंथ – Marriage of Hindu Widow
- इन्हीं के समय बेथ्यून द्वारा कलकत्ता में 1849 में कन्याओं हेतु बेथ्यून स्कूल की स्थापना।

मुस्लिम धार्मिक सुधार आंदोलन

- बहावी आन्दोलन (1863) – पटना (सैयद अहमद बरेलवी)
- देवबंद स्कूल (1867) सहारनपुर (उ.प्र.) –मु. कासिम ननौतवी, रशीद अहमद, गंगोही द्वारा।

अहमदिया आंदोलन (1889)

- पंजाब में मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी

फरायजी आंदोलन

- संस्थापक – हाजी शरीयत उल्ला

मोहम्मडन लिट्रेटी सोसायटी (1863)

- कलकत्ता में अब्दुल लतीफ

अलीगढ आंदोलन : सर सैय्यद अहमद खाँ

- 1875 में अलीगढ़ में एक स्कूल खोला, जो 1877 में एंग्लो मोहम्मडन ओरियंटल कॉलेज के रूप में बदला। यही आगे चलकर 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' बना।
- 1864 में 'साइटिफिक सोसाइटी' की स्थापना, जिसमें अंग्रेजी पुस्तकों का उर्दू अनुवाद किया जाता था।
- उर्दू पत्रिका – तहजीब–उल–अखलाक
- 1888 में अंग्रेजों के विरोध में यूनाइटेड इंडियन पेट्रियाटिक एसोसिएशन बनाया।

फारसी समाज सुधार आंदोलन –

- रहनुमाएँ माजदा सभा (1852)
- संस्थापक – दादाभाई नौरोजी

यंग बंगाल आंदोलन –

- संस्थापक – हेनरी विवियन डेरोजिओ
- पत्र – 'ईस्ट इंडिया'
- ये भारत के प्रथम राष्ट्रवादी कवि कहे जाते हैं।
- इन्होंने, बंगहित सभा व डिबेटिंग क्लब का गठन किया।
- 1828 में एकेडमिक एसोसिएशन की स्थापना की।

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

पश्चिमी भारत में –

- प्रथम सुधारक – लोकहितवादी गोपाल हरि देशमुख
- 1849 में – परमहंस मंडली
- विधवा विवाह उत्तेजक मंडल (महाराष्ट्र) – विष्णु शास्त्री पंडित

जाति प्रथा के विरूद्ध –

सत्यशोधक समाज (1873) – ज्योतिबा फुले (महाराष्ट्र)
- उद्देश्य – दलितोद्धार
- रचना – गुलामागिरी
- 1932 – हरिजन सेवक संघ, गांधी जी द्वारा
  – आल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन – बी.आर. अम्बेडकर
  – डिप्रेस्ड क्लास मिशन सोसायटी – बी.आर. सिन्दे
- 1906
- 1920 – आत्म सम्मान आंदोलन – ई.वी. रामास्वामी नायकर
- जस्टिस पार्टी – सी.एन. मुदलियार
- एझवा आंदोलन – केरल, श्री नारायण धर्म परिपालन योगम

अन्य –

- राधास्वामी सत्संग – 1861 – आगरा – शिवदयाल महाराज
- वेद समाज – 1864 (मद्रास) – केशवचंद्र सेन
- देव समाज – 1887 (लाहौर) – शिवनारायण अग्निहोत्री
- भारत धर्म महामण्डल – 1902 (वाराणसी), मदन मोहन मालवीय
- समाज सेवा संघ – 1911, नारायण मल्हार जोशी
- प्रजा मित्र मण्डल – 1205–06 – सी.आर. रेड्डी
- अखिल भारतीय महिला सभा – 1927

2. क्रांतिकारी आंदोलन

भारत में क्रांतिकारियों का प्रथम चरण

महाराष्ट्र में आंदोलन –

- **अभिनव भारत संस्था**
- भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों की शुरूआत महाराष्ट्र से हुई।
- सर्वप्रथम क्रांतिकारी – वासुदेव बलवंत फड़के (1870)
- तिलक ने गणेश महोत्सव (1893) व शिवाजी महोत्सव (1995) की शुरूआत की।

- महाराष्ट्र में दूसरा क्रांतिकारी –

चापेकर बन्धु – दामोदर, बालकृष्ण, वासुदेव चापेकर
- यह तीनों लोकमान्य तिलक के शिष्य थे।
- 1897 ई. में पुणे के प्लेग कमीश्नर रेन्ट व एमहर्स्ट की गोली मारकर दामोदर और बालकृष्ण ने हत्या कर दी तथा उन्हे फांसी हो गई।

सावरकर बन्धु – वीर सावरकर
- सावरकर 1899 ई. में मित्र मेला का संगठन का निर्माण किया।
- 1904 ई. में तरूण इटली के तर्ज पर इन्होंने 'अभिनव भारत' समाज बनाया। (इसी में मित्र मेला का विलय हुआ)
- इसी का एक सदस्य अनन्त कोन्हरे था।

- महाराष्ट्र में अनंत कोन्हरे ने नासिक के जिला कलेक्टर जैक्सन की गोली मारकर हत्या कर दी। (1909)

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

बंगाल में आंदालेन –

- **अनुशीलन समिति**
- यहाँ का मुख्य क्रांतिकारी भूपेन्द्रनाथ दत्त (विवेकानन्द का भाई) था। तथा अन्य बारिन्द्रनाथ घोष (अरविंद घोष का भाई)
- इन्होंने क्रांतिकारी पत्रिका 'युगान्तर' (1906) और 'सांध्य' का प्रकाशन कलकत्ता से व 'काल' का प्रकाशन किया।
- संगठन – 'अनुशीलन समिति' (1902)
- खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी ने 1908 ई.में मुज्जफरपुर के जिला जज किंग्सफोर्ड पर बम फेंका, परन्तु वह बच गया।
- खुदीराम बोस को फांसी हुई व चाकी ने अपने आपको गोली मार ली।
- 1909 में मदन लाल ढींगरा ने कर्जन वायली की हत्या की।
- 1909-10 में अलीपुर षड्यंत्र – अरविंद घोष, कनाईलाल दत्त और सत्येन्द्र बोस।

दिल्ली में आंदोलन –

- **प्रसिद्ध क्रांतिकारी** – **रास बिहारी बोस** व **मास्टर अमीरचंद।**
  - दिल्ली सड़यंत्र केस, चांदनी चौक दिल्ली में लार्ड हार्डी पर बम फेका गया।
  - मास्टर अमीर चंद गिरफ्तार फांसी, जबकि राज बिहारी बोस जापान भाग गया।

पंजाब में आंदोलन –

- **संस्था** – भारत माता सोसाइटी
- **प्रसिद्ध क्रांतिकारी** – अजीतसिंह (भगतसिंह का चाचा), लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाखना
- **संस्थापक** – अजीत सिंह

सरकारी प्रतिक्रिया – दमनकारी कानून बनाए गए:-

- विस्फोटक पदार्थ अधिनियम - 1908
- समाचार पत्र अपराध प्रेरक अधिनियम - 1908
- भारतीय प्रेस अधिनियम - 1910
- राजद्रोहात्मक सभा निवारण अधिनियम - 1911

विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन

ब्रिटेन में आंदोलन –

- प्रसिद्ध क्रांतिकारी – श्यामजी कृष्ण वर्मा
- 1904 ई. में इंडिया हाऊस संगठन बनाया।
- इंडियन होमरूल सोसायटी की स्थापना।
- इंडियन सोशियलाजिस्ट पत्र निकाला।
- सदस्य – मदनलाल धींगरा
- इस संगठन के सदस्य मदनलाल ने 1909 ई. में इण्डिया हाऊस के सचिव विलयम की हत्या कर दी।

पेरिस में आंदोलन –

- प्रसिद्ध क्रांतिकारी – भीखाजी कामा
- इन्होंने 1907 ई. में स्टुर्डगार्ड जर्मनी में भारत का तिरंगा झण्डा पहली बार फहराया।
- पत्र – वंदेमातरम्

अमेरिका (सेन फ्रांसिस्को) –

- प्रसिद्ध क्रांतिकारी – लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाखना, बरकत उल्ला खाँ, भाई परमानंद, रहमत अली।
- इन्होंने यहाँ 1913 ई. में 'गदर पार्टी' की स्थापना की।
- समाचार पत्र – 'गदर'

नोटः- मार्च 1940 में उधम सिंह (Student of Engineering) ने जलियावाला बाग हत्याकाण्ड के समय गवर्नर जनरल रहे माइकल ओ. डायर की कैंक्सटन हॉल लंदन में गोली मारकर हत्या कर दी।

बर्लिन – इंडियन इंडिपेंडेंस कमेटी का गठन (वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय)

अफगानिस्तान

- दिसम्बर 1915, राजा महेन्द्र प्रताप ने जर्मनी के सहयोग से अंतरिम भारत सरकार की स्थापना किया।
- इनके साथी थे बरकतउल्ला

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

भारत में क्रांतिकारियो (उग्रवादियों) का दूसरा चरण

हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन का गठन : (1924) (कानपुर)

- संस्थापक – रामप्रसाद बिस्मिल, सचिन्द्र सन्याल, चन्द्रशेखर आजाद, असफाक उल्ला खाँ
  नोट – भगतसिंह 1925 ई. में शामिल हुए।

काकोरी डकैती काण्ड : (9 अगस्त, 1925)

- प्रमुख क्रांतिकारी – रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, असफाक उल्ला खाँ (फाँसी)
- भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद फरार
- सचिन्द्र सन्याल (उम्रकैद)

भारत नौजवान सभा (1926)

- संस्थापक – भगत सिंह, छबील दास, यशपाल

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन : (1928)

- हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन का नाम बदलकर 1928 ई. में यह रखा गया।
- संस्थापक – चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह
- लाहौर पुलिस अधिकारी – सांडर्स को गोली मारी।

पब्लिक एसोसिएशन द्वारा –

सांडर्स हत्याकांड/लाहौर षड्यंत्र : (1928)

- लाला लाजपतराय के हत्या का बदला लेने के लिए भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव ने तात्कालिक लाहौर के पुलिस कप्तान सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी।

असेम्बली बम काण्ड : (1929)

- पब्लिक सेप्टी बिल के विरोध के लिए भगतसिंह व बटुकेश्वर दत्त ने संसद के खाली बेंचों पर बम फेंका।
- जिसका उद्देश्य किसी की हत्या करना नहीं बल्कि विद्रोह करना था।
- इसके कारण भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त गिरफ्तार हुए।
- लाहौर षड्यंत्र के सभी अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया व मुकदमा चलाया गया।
- जतिन दास की 64 दिन की भूख हड़ताल से जेल में मृत्यु हो गई।
- 23 मार्च, 1931 ई. को भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव को लाहौर षड्यंत्र का आरोपी मानकर फाँसी दी गई।

चटगांव शस्त्रागार कांड (1930) (बांग्लादेश)

- प्रमुख क्रांतिकारी – सूर्यसेन/मास्टर दा
- शस्त्रागार लूटकर स्वतंत्र सरकार की घोषणा
- सूर्यसेन को फांसी (1934)
- अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में पुलिस मुठभेड़ में चंद्रशेखर आजाद की मृत्यु 27 फरवरी, 1931 को हो गयी।

अन्य घटनाएँ –

- 1932 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के बीना दास ने बंगाल के गवर्नर को गोली मारी थी।
- **कल्पना दत्ता** ने चटगाँव शस्त्रागार केस में एवं **प्रीतिलता वाडेकर** ने चटगाँव रेल्वे इंस्टीट्यूट पर छापे मारें।
- 1931 में कोमिल्ला की दो स्कूली छात्राओं **सुनीती चौधरी** और शांति घोष ने एक कलेक्टर की गोली मारकर हत्या की।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

3. किसान आंदोलन

1. नील आंदोलन (1859-60)

- स्थान - पश्चिम बंगाल
- कारण - ब्रिटिश नील उत्पादकों के खिलाफ
- वर्णन - नील दर्पण (दीनबंधु मित्र)
- परिणाम - 1860 ई. तक नील की खेती पूरी तरह समाप्त हो गई।

2. पाबना (1873 से 1876)

- स्थान - पश्चिम बंगाल
- कारण - जमींदारों के विरूद्ध
- प्रमुख नेता - इसान चंद्र राय, शम्भुपाल

3. दक्कन विद्रोह (1874)

- स्थान - महाराष्ट्र
- कारण - जमींदारों और साहूकारों के विरूद्ध
- परिणाम - दक्कन उपद्रव आयोग व दक्कन औषक राहत अधिनियम पारित

4. कूका आंदोलन (1872)

- स्थान - पंजाब
- प्रमुख नेता - भगत जवाहरमल

5. रामोसी किसानों का विद्रोह

- स्थान - महाराष्ट्र
- प्रमुख नेता - वासुदेव बलवंत फड़के

7. ताना भगत आंदोलन (1914) - बिहार, जतरा भगत

8. तिभागा आंदोलन (1946) - बंगाल

9. अखिल भारतीय किसान सभा (1936) - लखनऊ, स्वामी सहजानन्द सरस्वती (अध्यक्ष)

10. चम्पारन सत्याग्रह (1917) - नील की तिलकठिया पद्धति के विरूद्ध महात्मा गांधी का सर्वप्रथम सत्याग्रह।

11. खेड़ा (1918) - महात्मां गांधी का प्रथम वास्तविक किसान सत्याग्रह। सरदार वल्लभभाई पटेल और इंदुलाल याज्ञनिक मुख्य सहयोगी थे।

12. बारदोली सत्याग्रह (1928) - लगान न अदायगी का आंदोलन। नेतृत्वकर्ता वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधि दी गई।

4. जनजाति विद्रोह

1. मोपला विद्रोह (1920) - केरल का मालाबार क्षेत्र मुख्य नेता अली मुसलियार तथा महात्मा गांधी, सौकत अली एवं मौलाना आजाद ने आंदोलन को सहयोग दिया।

2. मुण्डा विद्रोह (1893-1900)

- झारखण्ड में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ – **लॉर्ड हेस्टिंग्ज के समय**
- नेता – बिरसा मुण्डा

3. अहोम विद्रोह (1828-1830)

- असम – अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ (वृक्ष कटाई कर सड़क)
- नेता – गोमधर कुँवर

4. संथाल विद्रोह (1854-56) – झारखण्ड

- गवर्नर जनरल – लॉर्ड डलहौजी
- प्रसिद्ध नेता – सिदु कान्हु (कुल 50 वर्षों तक चला)

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner

5. भील विद्रोह (1825-31)
- उत्तर–पश्चिम महाराष्ट्र

6. रामोसी विद्रोह (1822-29)
- महाराष्ट्र में रामोसी जनजाति के किसानों द्वारा। नेता – चित्तर सिंह

7. रंपा विद्रोह (1879) – सीताराम राजु (आंध्रप्रदेश)

5. छात्रसंघ आंदोलन

यंग बंगाल आंदोलन –

- **संस्थापक** – हेनरी विवियन डेरोजिओ
- **पत्र** – 'ईस्ट इंडिया'
- ये भारत के प्रथम राष्ट्रवादी कवि कहे जाते हैं।
- इन्होंने बंगहित सभा व डिनेटिंग क्लब का गठन किया।
- 1828 में एकेडमिक एसोसिएशन की स्थापना की।

6. मजदूर आंदोलन

- **1918** – अहमदाबाद मील मजदूर आंदोलन
- **कारण** – वेतन वृद्धि
- **विशेष** – महात्मा गांधी के आमरण अनशन
- **परिणाम** – पूर्णतः सफल आंदोलन

7. राष्ट्रीय आंदोलन

1857 की क्रांति

- **29 मार्च, 1857** – बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) में मंगल पाण्डे का विद्रोह
- **08 अप्रैल, 1857** – मंगल पाण्डे को फाँसी
- **31 मई, 1857** – देश में विद्रोह के लिए निर्धारित तिथि
- **10 मई, 1857** – 1857 की क्रांति की शुरूआत

विद्रोह का कारण–

1) **राजनीतिक कारण–**
- वेलेजली की सहायक संधि
- डलहौजी की हड़प नीति
- राजाओं के पेंशन व उपाधियों की समाप्ति (लॉर्ड डलहौजी)

2) **सामाजिक कारण–**
- सती प्रथा, नरबलि प्रथा व दास प्रथा का अन्त
- विधवा पुर्नविवाह अधिनियम लागू करना
- अंग्रेजी शिक्षा लागू करना
- रंगभेद की नीति।

3) **धार्मिक कारण–**
- ईसाई धर्म का प्रचार
- ईसाई धर्मावलंबियों को सरकारी नौकरियों में पदोन्नति व रियासत देना।
- जनरल इन लिस्टमेंट एक्ट (1822)

4) **सैनिक कारण–**
- जनरल इन लिस्टमेंट एक्ट
- निःशुल्क डाक व्यवस्था को डलहौजी द्वारा समाप्त कर देना।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

5. तत्कालिक कारण–
- एनफिल्ड रॉयफल का प्रयोग
- मंगल पाण्डे को फाँसी

घटनाएँ –

- **10 मई, 1857** – मेरठ छावनी के सैनिकों द्वारा विद्रोह
- **11 मई, 1857** – मेरठ छावनी के सैनिकों द्वारा दिल्ली पर अधिकार व बहादुरशाह जफर को विद्रोहियों का नेता घोषित किया।
- **31 मई, 1857** – सम्पूर्ण विद्रोह की तिथि घोषित।

विद्रोह का क्षेत्र

क्र.	स्थान	नेतृत्व	दमन
1.	दिल्ली	बहादुरशाह जफर, बख्त खाँ	बर्नाड हडसन
2.	लखनऊ	बेगम हजरत महल	कैम्पवेल
3.	कानपुर	नाना साहब	कैम्पवेल
4.	ग्वालियर	तात्या टोपे	ह्यूरोज
5.	झाँसी	लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
6.	इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील
7.	जगदीशपुर	कुँवर सिंह	विलियम टेलर व विसेंट आयर
8.	बरेली	खान बहादुर खान	
9.	मेरठ	कदम सिंह	
10.	मध्य भारत	तात्या टोपे	

क्रांति का स्वरूप –

- एल.आर. रीच – धर्मान्धों का ईसाईयों के विरूद्ध युद्ध था।
- वी.डी. सावरकर – सुनियोजित राष्ट्रीय संघर्ष
- आर.सी. मजूमदार – राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न तो प्रथम था न तो राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था।
- डिजरायली – राष्ट्रीय विद्रोह
- टी.आर. होम्ज – सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष
- जेम्स आउट्रम, डब्ल्यू. टेलर – अंग्रेजों के विरूद्ध हिन्दु–मुसलमानों का षड्यंत्र
- लॉरेन्स, सीले – पूर्णतः सैनिक विद्रोह।

अन्य – गालिब ने 1857 का विद्रोह देखा।

एचिसन ने कहा 1857 के विद्रोह में हम मुसलमानों को हिन्दुओं से भीड़ा नहीं पाए।

असफलता का कारण –

- अंग्रेजों का बेहतर सैन्य संगठन तथा विद्रोह का समय से पूर्व प्रारंभ होना।
- भारतीय रियासत पटियाला, लाभा, इलाहाबाद, जिदद नेपाल द्वारा अंग्रेजों को सहयोग देना।
- भाग लेने वाले के मध्य एकता का अभाव।
- बहादुरशाह जफर का दुर्बल नेतृत्व।
- सुनियोजित कार्यक्रम एवं संगठन का अभाव।
- सर्वमान्य उद्देश्य की कमी एवं उद्देश्य का निश्चित ना होना।
- कम्पनी की तुलना में विद्रोहियों के पास साधन सीमित थे।
- देश के बहुत बड़े भाग बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, कश्मीर व दक्षिण भारत में क्रांति नहीं फैलने के कारण क्रांति का स्वरूप सीमित था।
- राष्ट्रीयता का अभाव – सभी विद्रोही नेता अपने स्वार्थ के लिए लड़ रहे थे।

प्रभाव एवं परिणाम –

- भारत की सत्ता 1858 ई. में विक्टोरिया की घोषणा द्वारा ईस्ट इण्डिया कंपनी के क्राऊन को हस्तांतरित।
- 1858 ई. में भारतीयों को अस्त्र–शस्त्र रखने पर प्रतिबंध किया गया।
- भारतीयों में एकता की भावना का विकास तथा मनोबल ऊँचा हुआ।
- राष्ट्रीयता की भावना का उदय।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

बंगाल विभाजन (16 अक्टूबर, 1905)

➤ **कारण** – सरकार के अनुसार– प्रशासनिक असुविधा
राष्ट्रीय नेताओं के अनुसार – बंगाल में राष्ट्रीय आंदोलन का दमन

➤ **विभाजन** –

1. **पूर्वी बंगाल** (राजधानी – ढाका) मुस्लिम बहुल व हिन्दु अल्पसंख्यक प्रथम लेफ्टिनेंट गवर्नर ब्लूमफिल्ड फूलर	2. **पश्चिम बंगाल** (राजधानी – मुर्शीदाबाद, कोलकता) मुस्लिम व बंगला भाषी अल्पसंख्यक लेफ्टिनेंट गवर्नर एण्ड्रयु फ्रेजर

➤ **प्रतिक्रियाएँ** – 7 अगस्त, 1905 को स्वदेशी आंदोलन की घोषणा हुई।

1. 16 अक्टूबर को शोक दिवस के रूप में मनाया गया।
2. रक्षाबंधन का त्यौहार शुरू हुआ।
3. 'वन्देमातरम्' व 'आमोर सोनार बांग्ला' गीत गाए गए।
   'वन्देमातरम्' – भारत का राष्ट्रगीत बना।
   'आमोर सोनार बांग्ला' – बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना। (1971)
4. भारत में स्वदेशी 'आंदोलन' शुरू हुआ, जिसे भारत का पहला जन आंदोलन कहा जाता है।
   - "यह निर्णय हमारे ऊपर बज्र की तरह गिरा है" - सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
   - "यह एक निर्मम भूल है" - गोखले

➤ **आंदोलन का क्षेत्र एवं नेतृत्वकर्ता** –

बम्बई एवं पुणे में – तिलक
पंजाब में – अजीत सिंह
उत्तर प्रदेश में – लाला लाजपत राय
दिल्ली में – सर सैय्यद हैदर रजा
मद्रास में – चिदम्बरम् पिल्लै

नोट - (स्वदेशी आंदोलन के समय समर्थन एकत्र करने में 'स्वदेश बांधव समिति' की सहत्वपूर्ण भूमिका थी।
स्थापना - अश्वनी कुमार दत्त)

➤ **विभाजन पर टिप्पणी**–

गोखले – "यह एक निर्मम भूल है।"
सुरेन्द्रनाथ बनर्जी – "यह निर्णय हमारे ऊपर बज्र की तरह गिरा है।"
नोटः– 1905 ई. में हुए कांग्रेस के बनारस अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए गोखले ने स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन को समर्थन दिया।

स्वदेशी बांधव समिति – अश्विनी कुमार, लोगों को एकत्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

• 15 अगस्त, 1906 को राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् की स्थापना।

➤ **सरकारी प्रतिक्रिया**–

• छात्रों पर अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु 'कर्लाइल सर्कुलर' जारी किया।
• प्रेस की स्वतंत्रता व सार्वजनिक सभाओं पर प्रतिबंध।
• कूटनीति से मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बढ़ावा व मुस्लिम लीग की स्थापना में योगदान।

स्वदेशी आंदोलन का चरमोत्कर्ष (1908)

➤ बंगाल विभाजन के विरोध में शुरू हुआ।
➤ 1906 में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए पहली बार स्वराज की मांग की।
➤ कार्यक्रम – विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व स्वदेशी वस्तुओं को प्रोत्साहित करना।
➤ भारत का पहला जनआंदोलन
➤ पहली बार महिलाओं ने पूर्ण रूप से प्रदर्शन किया।
➤ मुख्य नेता – सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

नोट - 1908 ई. में तिलक पर राजद्रोह का आरोप, 6 वर्ष का कारावास
- रवीन्द्रनाथ टैगोर वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन के आलोचक थे।
- स्वदेशी आंदोलन को चलाने की तरिके को लेकर उग्रवादी और उदारवादी नेताओं के मध्य मतभेद।

फलस्वरूप कांग्रेस की सुरत अधिवेशन में कांग्रेस में फूट।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

होमरूल आंदोलन (1916) गृह शासन

- आयरलैण्ड के होमरूल आंदोलन से प्रभावित।
- **उद्देश्य** – ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहते हुए संवैधानिक तरीके से स्वशासन को प्राप्त करना।
- प्रमुख नेता - बाल गंगाधर तिलक श्रीमती ऐनीबेसेंट

तिलक का होमरूल

- 28 अप्रैल 1916 बेलगांव में होमरूल लीग की बाल गंगाधर तिलक ने स्थापना की।
- इसका प्रभाव कर्नाटक, महाराष्ट्र (बम्बई को छोड़कर), मध्यप्रांत एवं बरार तक फैला हुआ था।
- 'मराठा' व 'केसरी' समाचार पत्र इसके प्रचार-प्रसार का माध्यम था।

एनी बेसेन्ट का होमरूल - **सितम्बर 1916, आडियार (मद्रास) में**
सचिव - जी. अरूण्डले
अन्य सहयोगी - बी.पी. वाडिया, रामास्वामी अय्यर
एनीबेसेंट का साप्ताहिक पत्र 'कामन बिल' एवं दैनिक पत्र 'न्यू इण्डिया' प्रकाशित होना इसी का क्रम था (1914)

- 1917 लीग के बढ़ते प्रभाव से मांटेग्यू चेम्सफोर्ड घोषणा द्वारा होमरूल आंदोलन समाप्त।
- एनी बेसेन्ट, जॉर्ज अरूण्डेल और बी.पी. वाडिया को गिरफ्तार कर लिया गया। (इसके विरोध में एस. सुब्रह्मण्यम अय्यर ने नाइट हुड की उपाधि वापस कर दिया।)
- एनी बेसेन्ट की लोकप्रियता फलस्वरूप 1917 कांग्रेस कलकत्ता अधिवेशन में अध्यक्ष बनाया गया। (पहली महिला अध्यक्ष - "भारत अब अनुग्रहों के लिए अपने घुटनों पर नहीं, बल्कि अधिकारों के लिए अपने पैरों पर खड़ा है।" इनके वाक्य थे)

मांटेग्यू घोषणा/भारत का मेग्नाकार्टा

- 20 अगस्त 1917 को लाया गया।
- युद्ध के बाद भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दिया जाएगा।
- इसी आधार पर होमरूल आंदोलन वापस लिया गया।

रौलेक्ट एक्ट - 1919

- सर सिडनी रौलेट द्वारा
- 'काला कानून' के नाम से जाना जाता है, किसी भी संदिहास्पद व्यक्ति को गिरफ्तार कर उस पर मुकदमा चलाया जा सकता था। (बंदी प्रत्यक्षीकरण कानून को निलंबन करने का अधिकार सरकार को इस एक्ट से प्राप्त हो गया।)
- इसलिए इस एक्ट को "बिना अपील, बिना वकील, बिना दलिल" वाला कानून कहा गया।
- विरोध में 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी हड़ताल किया गया।
- दिल्ली में इस आंदोलन की बागडोर स्वामी श्रद्धानंद नंद जी ने संभाली।
- **गांधी जी की भूमिका**
  - यहां से भारतीय राजनीति में प्रवेश हो चुका था।
  - इन्होने रौलेक्ट एक्ट का आलोचना करते हुए सत्याग्रह सभा की स्थापना की।
  - 8 अप्रैल 1919 को इसके फलस्वरूप 'पलवल' (हरियाणा) में गिरफ्तार कर लिया गया।

जलियावाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919)

- **कारण** – सतपाल व किचलु की गिरफ्तारी में मौन प्रदर्शन।
- **घटना** – जनरल आर. डायर द्वारा अमृतसर के जलियावाला बाग में किए जा रहे शांतिपूर्ण सम्मेलन पर गोली चलाई। इस घटना में हंसराज नामक भारतीय व्यक्ति ने जनरल डायर का सहयोग किया था।
- **परिणाम** – 1200 लोगों की मृत्यु (इंडियन सर्वे) – 379 लोगों की मृत्यु (ब्रिटिश शासन)
- **प्रतिक्रिया** – रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सर (नाइट हुड) की उपाधि त्यागी।
  – शंकर नायर ने गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी पद से त्यागपत्र दिया।
- **जाँच** – हंटर कमेटी (लॉर्ड हंटर – अध्यक्ष)
- **टिप्पणी** – दीनबन्धु एफ. एण्ड्रयूज – जानबूझकर की गई क्रूर हत्या
  पंजाब का गवर्नर ओ. डायर – डायर के कृत्य पर कहा कि तुम्हारी कार्यवाही ठीक है। गवर्नर इसे स्वीकार करता है।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

हंटर कमेटी -

- स्थापना – अक्टूबर, 1919
- रिपोर्ट प्रस्तुत – मार्च, 1920
- अध्यक्ष – लॉर्ड हंटर
- सदस्य – 8 (5 अंग्रेज और 3 भारतीय – चीमन सीतलवाड़, सुल्तान अहमद, जगत नारायण)
- उद्देश्य – जलियावाला बाग घटना की जाँच हेतु
- विशेष – पंजाब के गवर्नर को निर्दोष घोषित किया।
  - ब्रिटिश अखबार ने जनरल डायर को 'ब्रिटिश साम्राज्य' का रक्षक व 'ब्रिटिश साम्राज्य का शेर' कहा।
  - सरकार ने डायर को उनकी सेवा के लिए उसे 'मान की तलवार' की उपाधि दी।

नोट – भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड की जाँच के लिए एक आयोग गठित की।
अध्यक्ष – मदनमोहन मालवीय
सदस्य – मोतीलाल नेहरू, गाँधीजी, सी.आर. दास, तैय्यबजी और पुपुल जयकर

खिलाफत आंदोलन -

- कारण – ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रथम विश्व युद्ध के बाद टर्की पर सिवर्स की संधि लादना। (खलीफा को पदच्यूत व टर्की को बांटना)
  – चूंकि संसार भर के मुसलमान टर्की के सुल्तान को अपना खलीफा (धर्मगुरू) मानते थे।
- कार्यक्रम – नवम्बर, 1919 दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का अधिवेशन
  – सितम्बर, 1919 में खिलाफत कमेटी का गठन
  अध्यक्ष – महात्मा गाँधी नेता – मोहम्मद अली, शौकत अली
  – गांधी जी द्वारा एक शिष्टमण्डल वायसराय से मिलने इंगलैण्ड गया जिसके नेता मोहम्मद डॉ. अंसारी थे।
- 'अल हिलाल' और 'कामरेड' पत्रिका - अबुल कलाम आजाद का विशेष सहयोग था।
- 1924 में तुर्की में कमाल पासा का सरकार बना और खलिफा के पद को समाप्त कर दिया गया, फलस्वरू खिलाफत आंदोलन स्वमेव समाप्त।
- 31 अगस्त, 1920 – पूरे देश में खिलाफत दिवस के रूप में मनाया गया।

नोटः– इस आंदोलन ने आगे चलकर असहयोग आंदोलन को समर्थन किया।
1924 ई. में टर्की के कमालपासा द्वारा खलीफा के पद को समाप्त कर देने से यह आंदोलन समाप्त हो गया।

- मोपला विद्रोह - धर्मांधता उभारे जाने के कारण मालाबार में भीषण हत्याकाण्ड हुआ, इसे मोपला विद्रोह के नाम से जानते हैं, ये इसी का परिणाम था।

असहयोग आंदोलन (1920–22)

- प्रारंभ – 01 अगस्त, 1920
- समाप्त – 12 फरवरी, 1922
  – गाँधीजी का प्रथम जनआंदोलन
- कार्यक्रम – कांग्रेस का कलकत्ता का विशेष अधिवेशन (सितम्बर, 1920)
  अध्यक्ष – लाला लाजपत राय
  परिणाम – गाँधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पारित।
- वार्षिक सम्मेलन (नवम्बर, 1920)
  अध्यक्ष – वीर राघवाचारी
  परिणाम – असहयोग आंदोलन को समर्थन
- कार्य– 1. अवैतनिक पद का त्याग – वकील, सरकारी पद, सभा, सम्मेलन
  2. सरकारी स्कूल-कॉलेजों एवं न्यायालयों का बहिष्कार
  3. विदेशी सामान का बहिष्कार
  4. उपाधियों का त्याग -
  - इसकी शुरूआत गाँधीजी ने 'केशर-ए-हिन्द' लौटाकर की।
  - जमुनालाल बजाज ने 'राय बहादुर' की उपाधि त्यागी।
  - सरदार वल्लभ भाई, मोतीलाल नेहरू ने वकालत त्यागी।
- दिसम्बर 1920 नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में 'स्वशासन' के स्थान पर 'स्वराज्य' का नया लक्ष्य स्थापित किया गया।

नोट – जिन्ना, ऐनी बेसेंट, सी.आर. दास, शंकर नायर, सुरेन्द्रनाथ मुखर्जी, विपिनचन्द्र पाल आदि नेताओं ने गाँधीजी के इस प्रस्ताव का विरोध किया।
– जिन्ना, बेसेंट व पाल आदि नेताओं ने गाँधीजी के प्रस्ताव से असंतुष्ट होकर कांग्रेस छोड़ दी।

- आंदोलन की प्रगति -
1. पश्चिम भारत, बंगाल तथा उत्तरी भारत में आंदोलन को अभूतपूर्व सफलता मिला।
2. इस दौरान सर्वाधिक शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार बंगाल में हुआ। मद्रास में पूर्णतः असफल रहा।
3. मुहम्मद अली ऐसे पहले नेता थे, जिन्होंने पहले गिरफ्तारी दी।
4. गाँधीजी के आह्वान पर आंदोलन के खर्च के लिए 1920 में तिलक स्वराज फंड की स्थापना की, जिसमें 1 करोड़ से अधिक रूपए जमा हुए।
5. 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन पर काला झण्डा दिखा कर राष्ट्रव्यापी हड़ताल से किया।
6. मोहम्मद अली पहले नेता थे जिन्हे सर्वप्रथम गिरफ्तार किया गया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

चौरा-चौरी कांड (5 फरवरी, 1922)

- जिला – देवरिया (उ.प्र.)
- शांतिपूर्ण जुलूस में पुलिस द्वारा बाधा उपस्थित करने के कारण भीड़ ने चौरा-चौरी (गोरखपुर) के पुलिस थाना में आग लगा दी। परिणामस्वरूप थानेदार सहित 21 पुलिस वाले थाने में मारे गए।
- 5 फरवरी, 1922 – चौरा-चौरी की हिंसा से दुःखी होकर गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को समाप्त कर दिया। (बारदोली प्रस्ताव द्वारा) (मार्च, 1922 – गाँधीजी गिरफ्तार, 1924 – गाँधीजी रिहा)
- प्रतिक्रियाएँ –
  1. **मोतीलाल नेहरू** – "यदि कन्याकुमारी के किसी गाँव ने कोई अपराध किया है, तो उसकी सजा हिमालय के किसी गाँव को नहीं दिया जाना चाहिए।"
  2. **सुभाषचन्द्र बोस** – "जब आंदोलन चरम पर था, तब उसे समाप्त करना त्रासदी है।"
  3. **मौलाना अबुल कलाम आजाद** – "एक बड़ी राजनीतिक भूल।"
- 13 मार्च 1922 को गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया और छः वर्ष की सजा सुनाई गयी। (स्वास्थ्य संबंधी कारण से 1924 को रिहा।)

स्वराज दल (1 जनवरी, 1923)

- **स्थान** – इलाहाबाद
- **अध्यक्ष** – देशबंधु चितरंजन दास
- **सचिव** – मोतीलाल नेहरू
- **सदस्य** – बिट्ठलभाई पटेल, मदनमोहन मालवीय, जयकर और सुभाष चंद्र बोस,
- **विरोधी** – राजगोपालाचारी, राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. अंसारी, वल्लभ भाई पटेल, पं. जवाहरलाल नेहरू
- **कारण** – गाँधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन को बंद कर देना।
- **उद्देश्य** – सरकार में प्रवेश करके अंदर से सरकार का विरोध करना।
- **सफलता** – 1. 1923 ई. के चुनाव में केन्द्र में 42/101 सीटें जीते, तीन राज्यों को मिलाकर सरकार (मुम्बई, म.प्र. व उत्तर प्रदेश)
  2. इस पार्टी के सदस्य 1925 ई. में बिट्ठलभाई पटेल विप्रानसभा (लोक) के पहले भारतीय अध्यक्ष बने।
- **पतन** – 1925 ई. में चितरंजन दास की मृत्यु, पार्टी को बड़ा आघात
  – 1926 ई. में चुनाव में असफल

(नोट - **गया अधिवेशन** – अपने गुट की हार स्वीकार करते हुए चितरंजन दास ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद और मोतीलाल नेहरू ने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया।
– बिट्ठलभाई पटेल, मदन मोहन मालवीय और जयकर के साथ मिलकर स्वराज पार्टी की स्थापना की।)

बरसाड आंदोलन (1923-24)

- नेतृत्व – वल्लभाई पटेल (गुजरात)
- उद्देश्य – सरकार द्वारा लगाए गए डकैती कर के विरोध में

नोटः– इस आंदोलन को हार्डीमन ने ग्रामीण गुजरात में पहल सफल गाँधीवादी सत्याग्रह कहा।

बायोकोम सत्याग्रह (1924-25)

- यह अछूतों द्वारा मंदिर प्रवेश का प्रथम सत्याग्रह था।
- 1925 में महात्मा गाँधी ने बायोकोम का दौरा किया।

साइमन कमीशन (1927)

- **अध्यक्ष** – साइमन
- **गठन** – 1927 (इंग्लैण्ड)
- 3 फरवरी, 1928 – भारत में मुंबई बंदरगाह तट पर उतरे।
- सदस्य – 6 + अध्यक्ष (सभी यूरोपीय-अंग्रेज)
- गठन का उद्देश्य – 1919 प्रावधानों के तहत्
- **विरोध का कारण** – आयोग में किसी भी भारतीय को शामिल न करना।
- **प्रतिक्रिया** – काला झण्डा, धरना, "साइमन वापस जाओ" के नारे।
  - 1928 – विरोध प्रदर्शन में लाला लाजपत राय की पुलिस (सांडर्स) की लाठी से चोट लगने से मृत्यु हो गई।
  - रिपोर्ट – 1930 में प्रकाशित।
- **मुख्य बिन्दु**- 1. भारत का शासन संघीय हो।
  2. प्रांतों में उत्तरदायित्व शासन लागू किया जाए।
  3. भारत को अभी स्वराज्य न दिया जाए।
  4. 10 वर्ष बाद पुनर्निरीक्षण के लिए एक संविधान आयोग की नियुक्ति।

नोट – यद्यपि इस आयोग की कड़ी आलोचना की गई, परन्तु इसके अनेक बातों को 1935 के भारत शासन अधिनियम में स्वीकारा गया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

नेहरू रिपोर्ट (1928)

- **अध्यक्ष** – मोतीलाल नेहरू
- **सदस्य** – अणें, बोस, प्रधान, कुरैशी, खान
- **गठन** – तत्कालिक भारत सचिव बरकेन हेड द्वारा भारतीयों को एक सर्वसम्मत संविधान निर्माण की चुनौती देने के कारण गठन।
- **लक्ष्य** – डोमेनियम स्टेट
- **प्रावधान** – (1) भारत को अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों की भांति औपनिवेशिक स्वराज्य दिया जाए।
  (2) प्रान्तों के उत्तरदायित्व शासन लागू हो।
  (3) साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली समाप्त कर इसके लिये स्थान सुरक्षित किया जाए।
  (4) सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की जाए।
  (5) संघीय शासन प्रणाली – सभी देशी रियासतें भारतीय संघ में शामिल। अवशिष्ट शक्तियाँ केन्द्र को।
  (6) मौलिक अधिकार दिए जाएं।
  (7) एक धर्मनिरपेक्ष राज्य।
  (8) भारतीय सेना व लोक सेवाएँ भारतीय संसद के अधीन हो।

बारदोली सत्याग्रह (अक्टूबर, 1928)

- **नेतृत्व** – वल्लभभाई पटेल
- **स्थान** – गुजरात
- **कारण** – गुजरात के किसानों के लागान वृद्धि के विरोध में
- **विशेष** – यहीं पर महिलाओं ने पटेल को 'सरदार' की उपाधि दी।

नोट – 'पाटीदार युवक मंडल' एवं 'पटेल बंधु' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन जो कुंवर जी एवं कल्याण जी मेहता के नेतृत्व में था।
- दुवला आदिवासी/कालिपराज : पाटीदार किसानों की जमीन जोतने वाले आदिवासियों को पुकारा जाता था।
- गांधी जी ने इन्हे 'रानीपराज' नाम दिया।

जिन्ना की 14 सूत्रीय मांगें (1929)

- नेहरू रिपोर्ट के विरोध में मोहम्मद अली जिन्ना ने 1929 ई. को 14 सूत्रीय रिपोर्ट की माँग।
- अल्पसंख्यक के लिए प्रत्येक प्रान्त में आवश्यक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था हो।
- केन्द्रीय विधायिका में न्यूनतम 1/3 मुस्लिम प्रतिनिधित्व।

कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (दिसंबर, 1929)

- **अध्यक्ष** – पंडित जवाहरलाल नेहरू
- **लक्ष्य** – पूर्ण स्वराज्य
- **प्रमुख बातें** – (1) 31 दिसम्बर, 1929, मध्य रात्रि रावी नदी के तट पर भारत का तिरंगा झंडा फहराया गया।
  (2) प्रतिवर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। (1930-50)
  (3) सविनय अवज्ञा आंदोलन को मंजूरी।

पूर्ण स्वराज दिवस (26 जनवरी 1930)

- 1927 छः वर्ष के लम्बे अवकाश के बाद गांधी जी द्वारा पुनः भाग लिया गया।
- दिसम्बर 1929 में लाहौर अधिवेशन – जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया एवं 'पूर्ण स्वराज्य' का लक्ष्य घोषित किया।
- 31 दिसम्बर 1929 रात 12 बजे रावी नदी के तट पर जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा झण्डा फहराया, 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वाधीनता दिवस मनाया गया।
- इसी अधिवेशन में कांग्रेस को सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने का अधिकार मिला।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

गांधी जी की 11 सूत्रीय मांग

➤ 31 जनवरी 1930 इरविंग एवं रैम्जे मैकडोनाल्ड के सम्मुख।

➤ प्रमुख बिन्दु - 1. रूपए का पुनर्मूल्यन विनिमय दर में कमी एक शिलिंग 4 पेंस हो।
2. भू राजस्व 1/2 किया जाए।
3. मद्यनिषेध लागू किया जाए।
4. नमक कर समाप्त किया जाए।
5. सैनिक व्यय में 1/2 किया जाए।
6. अधिक वेतन पाने वाले सरकारी पदाधिकारियों की संख्या कम की जाए।
7. विदेशी कपड़े पर विशेष आयात कर लगाया जाए।
8. तटकर विधेयक लाया जाए।
9. सभी राजनीतिक बंदी छोड़ दिए जाएं।
10. गुप्तचर विभाग को समाप्त किया जाए।
11. भारतीयों को आत्म रक्षा के लिए हथियार रखने का अधिकार प्रदान किया जाए।

➤ 12 मार्च 1930 तक मांग पूर्ति न होने पर गांधी जी द्वारा नमक कानून उल्लंघन करने चेतावनी दी गई।
➤ सरकार द्वारा सकारात्मक रूख न होने के कारण सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का निश्चय किया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)

➤ **कारण** - तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन द्वारा गाँधीजी के 11 सूत्रीय मांग (1930) को अस्वीकृत कर देना।

➤ **कार्यक्रम** - (1) नमक कानून का उल्लंघन कर स्वयं द्वारा नमक बनाया जाए। (**दाण्डी मार्च**)
(2) सरकारी सेवा, शिक्षा, अदालत एवं उपाधियों का बहिष्कार
(3) महिलाओं द्वारा शराब, अफीम एवं विदेशी कपड़े की दुकानों पर धरना।
(4) विदेशी वस्तुओं को बहिष्कार कर उन्हे जला देना।
(5) कर अदायगी पर रोक।

➤ आंदोलन का स्वरूप -

• उत्तर-पश्चिम प्रांत में खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमांत गाँधी) के नेतृत्व में खुदाई खिदमतगार संगठनों के सदस्यों ने सरकार का विरोध किया। उनका दल लाल कुर्ती कहलाता था।

• नागालैण्ड में अल्पव्यस्क रानी गैडिनल्यू ने विरोध किया। इसे सरकार ने आजीवन कारावास की सजा दी।

• लड़कियों के द्वारा मंजरी सेना व वानर सेना का गठन किया गया।

1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय ही उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त के कबाइली लोगों ने गाँधीजी को 'मलंग बाबा' कहा।

• सुभाषचन्द्र बोस ने गाँधी के दाण्डी मार्च की तुलना 'इल्बा' से लौटने पर नेपोलियन के पेरिस मार्च और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए मुसोलिनी के रोम मार्च से की जा सकती है।

नोट - सविनय अवज्ञा आंदोलन से घबराकर प्रथम गोलमेज सम्मेलन हुआ।
- पहली बार महिलाओं ने प्रबलता से मुख्य रूप से भाग लिया।

दाण्डी यात्रा

➤ 12 मार्च 1930 गांधी जी 78 स्वयं सेवकों, जिसमें वेब मिलर भी एक थे, के साथ दाण्डी के लिए प्रस्थान किया। (साबरमती आश्रम से 358 किलोमीटर दूर)

➤ 6 मार्च 1930 दाण्डी पहुंचकर समुद्र तट पर नमक कानून तोड़ा।

➤ देश के अन्य भाग में -

राज गोपालाचारी - त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम तक यात्रा की।
असम - सिलहट से नोआखली तक यात्रा की।
के. केलप्पन एवं टी.के. माधवन - कालीकट से पयान्नूर तक यात्रा की।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 नवम्बर, 1930, लंदन)

- स्थान – सेंट जेम्स पैलेस (लंदन)
- उद्घाटन – ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम द्वारा
- अध्यक्षता – प्रधानमंत्री रेम्जे मैक्डोनाल्ड
- उद्देश्य – आंदोलन के प्रभाव को कम करने हेतु
- कुल प्रतिनिधि – 89

हिन्दू महासभा	– जयकर और मुंजे
मुस्लिम	– जिन्ना आगा खाँ
सिक्ख सरदार	– संपूर्ण सिंह
दलित वर्ग से	– अम्बेडकर

नोटः- • कांग्रेस ने भाग नहीं लिया।
• अन्ततः मजबूर होकर गाँधी-इरविन समझौता हुआ।

गाँधी-इरविन समझौता (5 मार्च, 1931) दिल्ली पैक्ट

- गाँधी का प्रथम गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार करने के कारण गाँधी-इरविन समझौता हुआ।
- तेजबहादुर सप्रू एवं जयकर के प्रयास से 17 फरवरी, 1931 में गाँधी-इरविन समझौता हुआ।
- 05 मार्च, 1931 ई. में समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

- **इस समझौते के दो पक्ष थे –**
  (1) **गाँधीजी द्वारा स्वीकार की गई शर्तें:-**
  - सविनय अवज्ञा आंदोलन समाप्त कर दिया जावेगा।
  - कांग्रेस ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन जावेगा।
  - पुलिस द्वारा की जा रही ज्यादतियों के लिए आयोग का गठन नहीं।

  (2) **इरविन द्वारा स्वीकार की गई शर्तें:-**
  - कांग्रेस नेताओं की जब्त संपत्ति वापस करेगा।
  - महिलाओं को शराब व अफीम के धरने हेतु छूट।
  - समुद्री किनारे वालों को नमक बनाने की छूट।
  - हिंसा लिप्त बंदियों को छोड़ बाकी को रिहा कर दिया जाए।

नोटः – इस समय गाँधीजी ने कहा था- "गाँधी मर सकता है, किन्तु गाँधीवादी नहीं।"
– नेहरू और बोस ने इस समझौते की कड़ी आलोचना की।
– युवा कांग्रेसी इस समझौत से इसलिए असंतुष्ट थे, क्योंकि गाँधीजी तीनों क्रांतिकारी भगतसिंह, सुखदेव एवं राजगुरू को फाँसी से नहीं बचा सके।
– नमक कानून भी नहीं हटाया गया।

- महत्व – इस समझौते ने पहली बार कांग्रेस को ब्रिटिश शासन के समक्ष बराबरी का दर्जा दिया।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सितंबर, 1931)

- मुख्य बातें – गाँधीजी एस.एस. राजपूताना नामक जहाज से पहुँचे।
  - ऐनी बेसेंट ने सम्मेलन में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया।
  - अंबेडकर ने दलितों के पृथक प्रतिनिधित्व की मांग की जिससे गाँधीजी दुःखी हुए।
  - अन्ततः सम्मेलन असफल रहा।
  - भारत आने पर गाँधीजी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा - "मैं खाली हाथ लौटा हूँ परन्तु अपने देश की इज्जत को मैंने बट्टा नहीं लगने दिया।"
  - चर्चिल – "ब्रिटिश सरकार अधनंगे फकीर की कृपा पर निर्भर है।"
  - सुभाष चन्द्र बोस – "महात्मा जी एक राजनीतिज्ञ के रूप में असफल रहें।"

thejobsyogi.com

द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन (जनवरी, 1932)

मैक्डोनाल्ड अवार्ड/सांप्रदायिक निर्णय (अगस्त, 1932)

- प्रारंभ – तत्कालिक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त, 1932 को साम्प्रदायिक निर्णय प्रस्तुत किया।
- प्रावधान – अन्य प्रावधानों के साथ हरिजनों के लिये भी हिन्दूओं से पृथक निर्वाचन व प्रतिनिधित्व की व्यवस्था। (इससे पहले मुसलमान, सिक्ख एवं ईसाई के लिए व्यवस्था थी।)
- उद्देश्य – राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के लिए हरिजनों को हिन्दूओं से पृथक निर्वाचन का अधिकार

नोट – इस समय गाँधीजी यरवदा जेल में थे।

Scanned with CamScanner

पूना पैक्ट (26 सितंबर, 1932)

- हरिजनों को हिन्दुओं से पृथक निर्वाचन के अधिकार प्रदान करने के विरोध में, गांधी जी द्वारा कहा गया - या तो छुआ-छूत को जोड़ से समाप्त करो या मुझे अपने बीच से हटा लो। (1933 में हरिजन नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन गांधी जी द्वारा)
- अम्बेडकर ने समझौते के अन्तर्गत साम्प्रदायिक निर्वाचन समाप्त कर उसके स्थान पर सामान्य निर्वाचन का प्रावधान किया।
- हरिजनों के आरक्षण के स्थान पर एक ही निर्वाचक मण्डल की गांधी जी की इच्छा पर अम्बेडकर द्वारा स्वीकार नहीं किया जाने के कारण 'गांधी-अम्बेडकर मतभेद उत्पन्न हुए।
- मदनमोहन मालवीय, राजेन्द्र प्रसाद व पुरूषोत्तम दास टंडन के सहयोग से गाँधी व अम्बेडकर के बीच समझौता हुआ, इसे ही 'पूना पैक्ट' के नाम से जाना जाता है।

तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 नवंबर, 1932)

- **मुख्य बातें** - भारत सचिव सैमुअल होर ने आयोजित किया।
  - कांग्रेस प्रतिनिधियों ने भाग नहीं लिया।

श्वेत पत्र (1932)

- **मुख्य बातें** - तीनों गोलमेज सम्मेलनों के परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने भारत में भावी संविधान एवं प्रशासनिक सुधार के लिए श्वेत पत्र मार्च, 1932 में जारी किया, जो 1935 के अधिनियम का आधार बना।

गाँधीजी और हरिजन उत्थान (1932)

- जेल से छूटने के बाद गाँधीजी ने 1932 ई. में अखिल भारतीय छुआछूत विरोधी लीग की स्थापना की।

गाँधीजी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन बंद (1934)

कांग्रेस समाजवादी दल (1934)

- **संस्थापक** - जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्रदेव, मीनू मसानी
- **अध्यक्ष** - आचार्य नरेन्द्र देव
- **प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन** - अक्टूबर 1934, मुंबई

(कांग्रेस के वामपंथी रूझान वाले नेता एक समाजवादी दल की स्थापना पर विचार कर रहे थे।)

भारत का पहला आम चुनाव (1936-37)

- 1935 के प्रावधानों के तहत्
- 1937 में चुनाव में कांग्रेस ने 8 प्रान्तों में सरकार बनायी।
- कांग्रेस को संयुक्त प्रान्त मद्रास, मध्य प्रदेश, बरार, उड़ीसा, बिहार में पूर्ण बहुमत प्राप्त
- बंगाल व पंजाब में गैरकांग्रेसी मंत्रिमंडल बना।
- पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी तथा बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी की सरकारें बनी।

सिकंदर-जिन्ना पैक्ट (1937)

- यूनियनिस्ट पार्टी नेता सिकंदर हयात खाँ व जिन्ना के मध्य हुआ।

त्रिपुरी अधिवेशन (1939)

- सुभाषचंद्र बोस, गाँधीजी समर्थित पट्टाभि सीतारमैया को पराजित कर अध्यक्ष पद के लिए चुने गए।
- पराजय के बाद गाँधीजी ने कहा- "पट्टाभि की हार मेरी हार है।"
- महात्मा गाँधीजी के असहयोग के कारण बोस ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया व फ़ारवर्ड ब्लाक की स्थापना की।

मुक्ति दिवस

- द्वितीय विश्व युद्ध (03 सितम्बर, 1939) में वायसराय लिनलिथगो ने भारत को विधानमण्डल की अनुमति के बिना शामिल कर लिया।
- इसके विरोध में 15 नवम्बर, 1939 को कांग्रेस ने मंत्रिमण्डल से इस्तीफा दे दिया।
- कांग्रेस मंत्रिमण्डल के त्यागपत्र दिए जाने के बाद मुस्लिम लीग ने दिसम्बर, 1939 को 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया।

पाकिस्तान की माँग (1940)

- **23 मार्च 1940** - लाहौर अधिवेश मुस्लिम लीग, अध्यक्षता करते हुए मोहम्मद अली जिन्ना ने पहली बार को भारत से पृथक पाकिस्तान की माँग की।

(30 मार्च 1930 - इलाहाबाद अधिवेशन मुस्लिम लीग सर मोहम्मद इकबाल द्वारा सर्वप्रथम मुस्लिम देश की स्थापना की बात कही थी।

1933 - चौधरी रहमत अली ने भारतीय मुसलमानो के राष्ट्रीय देश पाकिस्तान की संज्ञा (नामकरण) दी।)

पाकिस्तान मांग का प्रस्ताव - खलीकुज्जमा ने तैयार किया था।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

अगस्त प्रस्ताव/लिनलिथगो प्रस्ताव (8 अगस्त, 1940)

- वायसराय – लिनलिथगो
- इस प्रस्ताव में भारत को भविष्य में औपनिवेशिक स्वराज्य देने की बात कही गई थी।
- युद्धोपरांत 'संविधान सभा' के गठन का प्रावधान।
- मुख्य सलाहकार परिषद् का निर्माण।
- कांग्रेस ने इसे अस्वीकार कर दिया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह/दिल्ली चलो आंदोलन (1940)

- 17 अक्टूबर 1940 गांधी जी द्वारा शुरू किया गया, एक तरह से व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आंदोलन था।
- प्रथम सत्याग्रही विनोबा भावे 'पवनार' में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया।
- दूसरे सत्याग्रही जवाहर लाल नेहरू।

क्रिप्स प्रस्ताव (30 मार्च, 1942)

- अध्यक्ष– स्टेफोर्ड क्रिप्स
- उद्देश्य – द्वितीय विश्व युद्ध में जापान रंगून तक कब्जा कर चुका था।
  - ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों से सहयोग प्राप्ति के लिए इस मिशन को भारत भेजा।

- मुख्य बातें–
  - युद्धोपरांत भारत को पूर्ण डोमिनियन स्टेट्स देने की बात कही गई।
  - युद्धोपरांत भारत में संविधान के निर्माण हेतु एक 'संविधान सभा' का गठन किया गया।

नोटः–
  - महात्मा गाँधी ने इसकी आलोचना 'पोस्ट डेटेड चेक' कहकर खारिज कर दिया।
  - मुस्लिम लीग ने भी पाकिस्तान की स्पष्ट घोषणा न किए जाने के कारण खारिज कर दिया।
  - सिक्खों ने पंजाब को भारत से अलग करने की योजना से खारिज कर दिया।

  (क्रिप्स के प्रस्ताव में भारत के विभाजन की रूपरेखा का संकेत मिल रहा था।
  अप्रैल 1942 को क्रिप्स मिशन के प्रस्ताव को अचानक वापस ले लिया गया।)

भारत छोड़ो आंदोलन (8 अगस्त, 1942)

- इसे 'अगस्त क्रांति' या 'वर्धा प्रस्ताव' भी कहते हैं।
- वर्धा प्रस्ताव पर सहमति न बनने पर गांधी जी ने चुनौती देते हुए कहा "मैं मुट्ठी भर बालू से कांग्रेस से भी बड़ा संगठन खड़ा कर सकता हूं।"
- कांग्रेस के वर्धा कार्यकारिणी ने भारत छोड़ो का प्रस्ताव दिया।
- गाँधी ने बंबई के ग्वालिया टैंक से 8 अगस्त 1942 को 'भारत छोड़ो आंदोलन' की घोषणा की।
- गाँधीजी ने **'करो या मरो'** का नारा दिया।
- 09 अगस्त 1942 को **'आपरेशन जीरो ऑवर'** घोषित किया गया जिसके तहत कांग्रेस के सभी महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- गाँधीजी की पत्नी कस्तूरबा गाँधी व सचिव महादेव देसाई को आगा खाँ पूना महल में कैद किया गया। यहीं इनकी मृत्यु हो गयी।

- आलोचना –
  - साम्यवादी दल, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, अम्बेडकर एवं सप्रू ने भारत छोड़ो आंदोलन की आलोचना की एवं इसमें भाग नहीं लिया।
  - सभाषचन्द्र बोस ने बर्लिन रेडियो पर बोलते हुए इसे जनवादी अहिंसक गोरिल्ला युद्ध की संज्ञा दी।
  - अम्बेडकर ने अनुत्तर दायित्वपूर्ण एवं पागलपन भरा कार्य कहा।
  - मुस्लिम लीग ने 'अंग्रेजों बाँटो और भागो' का नारा दिया।
  - लिनलिथगो – '1857 के बाद सबसे गंभीर विद्रोह' कहा।
  - इसके दूरगामी परिणाम सुखदायी रहे, चीन के तात्कालिक मार्शल च्यांग काई शेक ने अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट को पत्र में लिखा –

    "अंग्रेजों के लिए सबसे श्रेष्ठ यह है कि वे भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दे दें।"

- कार्यक्रम
  - स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान यह पहला ऐसा आंदोलन था जो नेतृत्व विहीन एवं स्वस्फुर्त था।
  - जयप्रकाश नारायण, अरूणा आसफ अली, राममनोहर लोहिया ने भूमिगत होकर इस आंदोलन का संचालन किया।
  - उषा मेहता ने बम्बई में भूमिगत रेडियो का संचालन किया।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- सामान्तर सरकार की स्थापना
  - संयुक्त प्रान्त (उ.प्र.) में बलिया, बम्बई में सतारा, बंगाल में मिदनापुर एवं बिहार के
  - पहली सामान्तर सरकार – बलिया, नेतृत्व – चितु पांडे।
  - सर्वाधिक लंबे समय तक सामान्तार सरकार सतारा की थी,
  - नेतृत्व – नाना पाटिल व प्रमुख नेता आई.वी. चौहान
    - मिदनापुर में 1944 तक चली और यहां की सरकार को **जातिय सरकार** के नाम से जाना जाता है।

      नेतृत्व – सतीश सावंत, उन्होने **विद्युत वाहिनी** सैन्य संगठन बनवाया था।

नोट– प्रथम आंदोलन जो नेतृत्वहीन होकर स्वस्फूर्त संचालित।

सी. राजगोपालाचारी फार्मूला (10 अप्रैल, 1944)

- उद्देश्य – कांग्रेस व मुस्लिम लीग में समझौता कराने हेतु
  - आगे चलकर भारत का विभाजन इसी फार्मूले के तहत् हुआ।

लॉर्ड वेवेल योजना (4 जून, 1945)

- वायसराय के कार्यकारिणी परिषद् का भारतीयकरण किया गया।
- कार्यकारिणी परिषद् में सवर्ण हिन्दुओं व मुसलमानों की संख्या बराबर कर दी गई।
- युद्ध के बाद संविधान निर्माण भारतीयों द्वारा किया जायेगा।

शिमला सम्मेलन (जून, 1945)

- कारण– वेवेल योजना पर विचार-विमर्श हेतु
- सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रमुख नेता – नेहरू, जिन्ना, अबुल कलाम आजाद, गफ्फार खाँ, तारासिंह आदि।
- कांग्रेस प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व – अबुल कलाम आजाद
- सम्मेलन की असफलता का कारण – मुस्लिम लीग द्वारा यह शर्त रखा गया, कि वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में मुस्लिम सदस्यों की नियुक्ति वह स्वयं करेगी।
- 1945 – द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त

- 1945 – ब्रिटेन में आम चुनाव
  - क्लीमेंट एटली (लेबर पार्टी) ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बना।
  - इसके पहले ब्रिस्टल चर्चिल (रूढ़िवादी पार्टी) प्रधानमंत्री थे।
  - एटली ने भारतीय स्वतंत्रता की मांग को स्वीकार करते हुए केबिनेट मिशन भारत भेजा।

नौसेना विद्रोह (18 फरवरी, 1946)

- आई.एन.एस. तलवार नामक जहाज के सैनिकों ने विद्रोह किया।

  कारण – पौष्टिक भोजन का न देना।

  मुख्य केन्द्र – मुम्बई व सूरत
- एम.एस. खान के नेतृत्व में नौसेना केन्द्रीय हड़ताल समिति का गठन
- सरदार पटेल व जिन्ना द्वारा समझौता करने से विद्रोह समाप्त।

केबिनेट मिशन (1946)

- **अध्यक्ष** – स्टेफर्ड क्रिप्स
- **सदस्य** – पैथिक लॉरेन्स (भारत सचिव), ए.सी. अलेक्जेण्डर (नौसेना मंत्री)
- दिल्ली पहुँचे – 24 मार्च 1946, 16 मई, 1946 को योजना प्रस्तुत।
- **प्रस्ताव** – (1) एक भारत संघ का निर्माण किया जाएगा।

  (2) जो ब्रिटिश प्रान्त व देशी रियासतों से बनेगा।

  (3) संविधान निर्माण के लिए संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जाएगा, जो आम चुनाव के तहत् होगा।

  (4) 389 सदस्य (296 ब्रिटिश प्रांतों के + 93 देशी रियासतों से)

  (5) 10 लाख की जनसंख्या वाले क्षेत्र से एक सदस्य चुना जायेगा।

  (6) मुस्लिम लीग के पृथक पाकिस्तान की माँग को अस्वीकार कर दिया गया।

नोट– संविधान निर्माण होने तक सर्वदलीय अन्तरिम सरकार का गठन किया जायेगा।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

सीधी कार्यवाही दिवस (16 अगस्त, 1946)

- अन्तरिम सरकार की योजना का मुस्लिम ने विरोध किया।
- फलस्वरूप पाकिस्तान की माँग को पूरा करने के लिये 16 अगस्त, 1946 को 'सीधी कार्यवाही दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।
- परिणामस्वरूप साम्प्रदायिक दंगे हुए। नोआखली (ढाका) दंगे का प्रमुख केन्द्र था।
- लीग ने नारा दिया – 'लड़कर लेंगे पाकिस्तान'

1946 का निर्वाचन

- केबिनेट मिशन योजना के तहत् जुलाई 1946 ई. में (आम चुनाव) संविधान सभा चुनाव होगा।
- कुल 296 सीट, 201 कांग्रेस, 73 मुस्लिम लीग

अंतरिम सरकार का गठन

- 2 सितम्बर, 1946 को पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में 12 सदस्यीय अंतरिम सरकार का गठन हुआ।
- 9 दिसम्बर को सचिदानन्द सिन्हा संविधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष बने।
- 11 दिसम्बर, 1946 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष बने।

एटली की घोषणा

- 20 फरवरी, 1947 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की– जून 1948 ई. से पहले भारत को स्वतंत्र कर दिया जाएगा।

माउंटबेटेन योजना प्रस्तुत (03 जून, 1947)

- 24 मार्च, 1947 लॉर्ड माउंटबेटेन भारत के अंतिम वाइसराय बनकर भारत आए।
- भारत का विभाजन किया गया।
- पंजाब व बंगाल का विभाजन (तत्कालिक) संबंधित प्रांतों के विधानसभाओं द्वारा किया जाएगा।
- उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त व असम के सिलहट प्रान्त का निर्धारण जनमत के आधार पर किया जाएगा।
- विभाजन के लिए एक सीमा आयोग (रेडक्लिफ आयोग) का गठन।
- देशी रियासतों को भारत या पाकिस्तान में मिलना होगा।

भारत का स्वतंत्रता (विलियट) एक्ट (4 जुलाई, 1947)

- ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत – 04 जुलाई, 1947
- स्वीकृति – 18 जुलाई, 1947
- एक्ट द्वारा भारत व पाकिस्तान दो भागों में पृथक
- भारत सचिव का पद समाप्त
- रियासतों पर ब्रिटिश प्रभुत्व समाप्त
- विभाजन डायरेक्टर – बी.पी. मेनन
- 15 अगस्त, 1947 में भारत व पाकिस्तान दो राष्ट्र अस्तित्व में आये।

पाकिस्तान का निर्माण

- 14 अगस्त, 1947 की रात्रि पाकिस्तान को सत्ता का हस्तांतरण कर दिया गया।

  प्रथम गवर्नर – जिन्ना

  प्रथम प्रधानमंत्री – लियाकत अली
- क्षेत्र – सिन्ध, ब्लूचिस्तान, पूर्वी बंगाल, उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त, पंजाब का मुस्लिम बहुल इलाका मुख्य रूप से शामिल।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

फारवर्ड ब्लॉक और आजाद हिन्द फौज का गठन

फारवर्ड ब्लॉक : 1939

- संस्थापक – सुभाषचन्द्र बोस

इंडियन लीग : 1941

- संस्थापक – सुभाषचन्द्र बोस (बर्लिन में)

आजाद हिन्द फौज (1 सितंबर, 1942)

- **स्थान** – सिंगापुर
- **कैप्टन** – मोहन सिंह व राजबिहारी बोस
- 1943 में सुभाषचन्द्र बोस के द्वारा पुनर्गठन

नोट- आजाद हिन्द फौज की स्थापना का विचार सर्वप्रथम कैप्टन मोहन सिंह के मन में आया था।

- आजाद हिन्द फौज के प्रमुख ब्रिगेड- गाँधी, नेहरू, आजाद, सुभाष, रानी झाँसी ब्रिगेड।
- 1945 में जापानी सेना के साथ संयुक्त रूप से भारत पर आक्रमण (मणिपुर राजधानी) इम्फाल तक कब्जा किया।
- अगस्त 1945 ई. में सुभाषचन्द्र बोस की विमान दुर्घटना में मृत्यु व अमेरिका द्वारा जापान पर बम गिराने से आजाद हिन्द फौज की सेना असफल हुई और गिरफ्तार कर लिये गए।
- नवंबर 1945 ई. में आजाद हिन्द फौज को छुड़वाने हेतु लाल किला में मुकदमा चला।
- **प्रमुख अभियोगी** – शहनवाज हुसैन, प्रेम सहगल व ढिल्लो को छुड़ाने के लिए।
- **वकील** – पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, मुलाभाई देसाई और काटजू, सेज बहादुर राजू आदि ने पैरवी की।

विशेषः–

- बोस ने अक्टूबर 1943 में सिंगापुर में अस्थायी सरकार 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना की।
- जुलाई, 1944 ई. में बोस ने गाँधीजी को संबोधित करते हुए 'राष्ट्रपिता' कहा है।
- बोस ने प्रसिद्ध नारा "तुम मुझे खून दो, मैं तुझे आजादी दूंगा।" का नारा दिया।

गाँधीवादी युग

संक्षिप्त जीवन परिचय –

- पुरा नाम – मोहनदास करमचंद गाँधी
- जन्म – 2 अक्टूबर, 1869 (पोरबंदर, गुजरात)
- माता – पुतलीबाई
- पिता – करमचंद गाँधी (राजकोट के दीवान थे)
- गुरु – गोपालकृष्ण गोखले (राजनीतिक क्षेत्र में), लियो टालस्टॉय (दर्शन के क्षेत्र में)
- शिक्षा – 1887 मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर वकालत पढ़ने इंग्लैण्ड गए।
  – 1891 में बैरिस्टर बनकर भारत वापस आए।

दक्षिण अफ्रीका में प्रथम सत्याग्रह का प्रयोग

- 1893 में गुजरात के एक व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने दक्षिण अफ्रीका गए।
- एशियाई मजदूरों के प्रति प्रजातीय उत्पीड़न तथा भेदभाव (रंग भेद नीति) के विरूद्ध सर्वप्रथम यहीं सत्याग्रह आंदोलन का प्रयोग किया।
- 1893 से 1894 तक यहीं सत्याग्रह आंदोलन चलाए इसी दरमियान दक्षिण अफ्रीका में दो आश्रम की स्थापना की –
  1. टालस्टॉय आश्रम (फॉर्म) - जर्मन शिल्पकार कालेन बाख के मदद से आंदोलनकारियों हेतु पुनर्वास एवं भरन पोषन के रूप में स्थापना।
  2. फिनिक्स आश्रम (1904)
- 1909 – 'हिन्द स्वराज' की रचना की।

भारत वापसी –

- 9 जनवरी, 1915 को लौटे। (इस उपलक्ष्य में वर्तमान में 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है।)
- 1915 ई. में देशभर में भ्रमण किए।
- गाँधीजी प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत आए।
- भारतीयों को युद्ध के लिए प्रेरित करने के कारण उनकी भर्ती करने वाले सार्जेण्ट कहकर आलोचना हुई।
- 1916 – राजनीति में प्रवेश अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

चम्पारण सत्याग्रह (1917)

- इसे इनका प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन कहा जाता है, जो भारत में पहला सफल सत्याग्रह था।"
- 'तीन कठिया पद्धति' (3/20 भाग पर नील की खेती करनी होती थी।) का विरोध करने हेतु।
- राजकुमार शुक्ल नामक किसान के अनुरोध पर गए।
- गाँधीजी के साथ राजेन्द्र प्रसाद, ब्रज किशोर, मजहर उलहक, महादेव देसाई, नरहरिक पारिख, जे.बी. कृपलानी मामले की जांच करने चम्पारण्य पहुंचे।
- अन्य लोकप्रिय नेताओं में अनुग्रह नारायण सिन्हा, रामनवमी प्रसाद एवं सम्भू शरण वर्मा शामिल थे।

अहमदाबाद मिल मजदूर.आंदोलन

- मार्च 1918 में **'प्लेग बोनस'** नामक मुद्दे पर मिल मालिकों एवं मजदूरों के मध्य विवाद।
- गाँधी जी के हस्तक्षेप से 35 प्रतिशत बोनस मजदूरों को प्राप्त हुआ।
- इसे गाँधीजी का प्रथम **'भूख हड़ताल'** कहा जाता है, गाँधी जी की यह दूसरी प्रमुख विजय थी।
- इस संघर्ष में अम्बालाल साराभाई की बहन **'अनुसुईया बेन'** का सक्रिय योगदान रहा।
- गाँधी जी का 'नव जीवन' नामक दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन इसी अवसर की देन है।

खेड़ा का सत्याग्रह

- 1918 गुजरात में अकाल के पश्चात करों के भुगतान के विरूद्ध गाँधी जी का यह हस्तक्षेप खेड़ा सत्याग्रह' के नाम से जाना जाता है।
- इसे **"कर नहीं आंदोलन"** भी कहा जाता है, इसे गाँधी जी के **"प्रथम असहयोग"** आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है।
- इसी आंदोलन में सरदार वल्लभभाई पटेल एवं इन्दुलाल याज्ञिक पहली बार इनके अनुयायी बने।
- खेड़ा का आंदोलन लोगों के बीच नवीन जागरूकता का पर्याय बना और लोग जागरूक हुए कि 'जब तक उनका देश' सम्पूर्ण आजादी प्राप्त नही करता वे अन्याय और शोषण से मुक्त नहीं होंगे।

चम्पारण	- पहला सत्याग्रह (पहला सविनय अवज्ञा)
अहमदाबाद	- प्रथम भुख हड़ताल
खेड़ा	- प्रथम असहयोग

भारतीय इतिहास के प्रमुख व्यक्तित्व

कांग्रेस

अबुल कलाम आजाद	➤ भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री
एनी बेसेंट	➤ 1917 – 'कलकत्ता अधिवेशन' की पहली महिला अध्यक्ष ➤ गीता का अंग्रेजी अनुवाद 'लोटस साउण्ड्स' में किया। ➤ 1916 – 'होमरूल आंदोलन' चलाया। ➤ फेबियनवादी ➤ 'थियोसाफिकल सोसायटी' के अध्यक्ष ➤ 1920 में कांग्रेस से अलग हुए।
गोपालकृष्ण गोखले	➤ गाँधीजी के राजनीतिक गुरू ➤ महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य ➤ संस्था – 'सर्वेन्ट ऑफ इण्डिया'
सी. राजगोपालाचारी	➤ 1954 ई. में सी.वी. रमन व राधाकृष्णन के साथ सर्वप्रथम 'भारत रत्न' प्राप्तकर्ता
सी.आर. दास, सुभाषचन्द्र बोस	➤ 1920 ई. में आई.सी.एस. की नौकरी छोड़कर राजनीति में प्रवेश ➤ "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का नारा दिया। ➤ गाँधी को 'बापू' की उपाधि दी। ➤ 'दिल्ली चलो' व 'जय हिन्द' नारा दिया। नोटः- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधीजी को 'महात्मा' की उपाधि दी।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

सरदार वल्लभभाई पटेल	➤ जन्म – 31 अक्टूबर, 1875 (गुजरात) ➤ 1928 ई. के बाद बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व किया। ➤ बारदोली की महिलाओं ने इन्हें 'सरदार' की उपाधि दी। ➤ भारत का एकीकरण करने के कारण इन्हें भारत का 'लौह पुरूष' कहा जाता है। ➤ स्वतंत्र भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री व गृहमंत्री ➤ मृत्यु – 1950 ई. में
पं. जवाहरलाल नेहरू	➤ अखबार – 'नेशनल हेराल्ड' ➤ जन्म – 14 नवम्बर, 1889 ➤ मृत्यु – 1964 ➤ पेशा – वकालत ➤ पत्नी – कमला नेहरू ➤ बेटी – इंदिरा गाँधी ➤ घर – आनन्द भवन (इलाहाबाद) ➤ 1912 में कांग्रेस के बांकीपुर अधिवेशन से राजनीति में प्रवेश ➤ असहयोग आंदोलन में पहली बार जेल गये। ➤ 1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष ➤ 1955 में भारत रत्न ➤ 'आधुनिक भारत का स्वप्नदृष्टा' ➤ 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' और 'ग्लिमसेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' के रचयिता
अम्बिका चरण मजूमदार	➤ 1916 के लखनऊ कांग्रेस के अध्यक्ष
हकीम अजमल खाँ	➤ 'जामियामिलया विश्वविद्यालय' के संस्थापक ➤ 1921 के अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष
चक्रवर्ती वीर राघवाचारी	➤ 1920 के नागपुर कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष ➤ पहले भारतीय जिन्होंने भारत के लिए पहला स्वराज्य संविधान बनाया।

चक्रवर्ती राज गोपालाचारी	➤ स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल ➤ 1954 में भारत रत्न ➤ अन्तरिम सरकार में शिक्षामंत्री ➤ 1944 में भारत विभाजन पर राजगोपालाचारी फार्मूला प्रस्तुत किया।
दादाभाई नौरोजी	➤ 'ग्रैण्ड ओल्ड मैन' के नाम से प्रसिद्ध ➤ ब्रिटिश हाऊस ऑफ कामन्स में चुने गये प्रथम भारतीय ➤ 'पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया' में इन्होंने धनवहिर्गमन का सिद्धांत दिया। ➤ 'ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन' के संस्थापक ➤ 1886, 1893 तथा 1906 में कांग्रेस के अध्यक्ष ➤ सर्वप्रथम 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया।
लाला लाजपत राय	➤ गरमपंथी नेता ➤ उपनाम – पंजाब केसरी ➤ 1920 में एटक की स्थापना किया। ➤ 'वन्देमातुरम पत्रिका' के प्रकाशक ➤ रचना – 'अनहैप्पी इण्डिया' ➤ 1928 में साइमन कमीशन के विरोध में पुलिस की लाठी से लाहौर में मृत्यु।
नेलिनी सेन गुप्ता	➤ जतिन्द्र सेन गुप्ता की पत्नी, ब्रिटिश मूल की ➤ 1933 में कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष
पट्टाभि सितारमैया	➤ 1939 में सुभाषचन्द्र बोस से कांग्रेस का चुनाव हारे। ➤ 1948 में कांग्रेस के अध्यक्ष

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

राजनीति

अरविन्द घोष	➤ रचना – 'द लाइफ डिवाइन' ➤ आश्रम – ऊरूवेला आश्रम (पांडिचेरी) ➤ पत्रिका – 'द आर्य', 'युगान्तर' ➤ मानिकतल्ला बम कांड के अभियुक्त ➤ आईसीएस में चयनित
आचार्य नरेन्द्र देव	➤ 1934 ई. में समाजवादी कांग्रेस पार्टी का गठन किया।
अरूणा आसफ अली	➤ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत नेतृत्व ➤ पति – आसफ अली अमेरिका में भारत का पहला राजदूत
जयप्रकाश नारायण	➤ जनता पार्टी के संस्थापक ➤ भारत छोड़ो आंदोलन का भूमिगत नेतृत्व ➤ 1974 में समग्र क्रांति का नेतृत्व किया। ➤ 1934 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना
रानी गैण्डेलीव	➤ नागाओं की रानी ➤ नागालैण्ड में नागाओं का नेतृत्व
विपिन चन्द्रपाल	➤ लाल बाल पाल में से एक गरम दल के नेता ➤ 'वन्देमातरम्' संस्था के संस्थापक ➤ 'न्यू इण्डिया' पत्र के संपादक
अब्दुल कासिम फजलुल हक	➤ कृषक प्रजा पार्टी के संस्थापक, बंगाल ➤ मुस्लिम लीग के संस्थापक सदस्य

thejobsyogi.com

लोकमान्य तिलक	➤ मृत्यु – 1930 ई. में ➤ किताब – 'गीता रहस्य' ➤ समाचार पत्र – 'मराठा' व 'केसरी' ➤ त्यौहार – गणेश चतुर्थी व शिवाजी महोत्सव का प्रारंभ किया। ➤ कांग्रेस के गरम दल के प्रमुख नेता ➤ "स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है" का नारा दिया। ➤ 1908 - स्वदेशी आंदोलन में गिरफ्तार - 6 वर्ष के लिए मांडले जेल ➤ 1916 ई. में होमरूल आंदोलन चलाया।
भुलाभाई देसाई	➤ वकील जिसने 1946 में आजाद हिन्द फौज के बन्दियों के लिए मुकदमा की पैरवी किया।
सी.एन. अन्नादुरई	➤ 'अन्ना' उपनाम से प्रसिद्ध ➤ 'डीएमके पार्टी' के संस्थापक एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री
शंकरन नायर	➤ जलियावाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में गवर्नर जनरल के कार्यकारिणी परिषद् से इस्तीफा दिया। ➤ एडवोकेट जनरल के पद पर चयनित पहला भारतीय
चौधरी रहमत अली	➤ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र ➤ 1933 में सर्वप्रथम 'पाकिस्तान' शब्द गढ़ा।
गोपालकृष्ण आयंगर	➤ लोकमान्य तिलक के मराठा और केसरी के संपादक
महाराजा गंगासिंह	➤ बिकानेर का महाराजा, जिन्हें 1921 में स्थापित प्रिंसेस ऑफ चेम्बर (नरेन्द्र मंडल) का पहला चान्सलर बनाया गया।

Scanned with CamScanner

गोपीनाथ बारदोलाई	➤ असम के पहले मुख्यमंत्री
जे.बी. कृपलानी	➤ भारतीय राजनीति का भीश्म पितामह ➤ 1999 में मरणोपरांत भारत रत्न
गोविन्द बल्लभ पंत	➤ उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री ➤ 1957 में भारत रत्न प्राप्त
कस्तूरबा गाँधी	➤ उपनाम – बा ➤ 1944 में आगा खाँ पैलेस मुम्बई में मृत्यु
कादम्बिनी गांगुली	➤ भारत की प्रथम महिला स्नातक ➤ कांग्रेस के मंच में भाग लेने वाली पहली महिला
लक्ष्मी सहगल	➤ आजाद हिन्द फौज की महिला रेजीमेंट की कैप्टन
मोतीलाल नेहरू	➤ 'स्वराज्य पार्टी' के संस्थापक सचिव ➤ 1928 में प्रस्तुत 'नेहरू रिपोर्ट' के अध्यक्ष
राजकुमार शुक्ल	➤ चम्पारण, बिहार के किसान नेता ➤ इन्हीं के निमंत्रण पर महात्मा गांधी चम्पारण सत्याग्रह में भाग लेने गये थे।
राममनोहर लोहिया	➤ कांग्रेस समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य

समाज सुधारक

ठक्कर बापा	➤ पूरा नाम – अमृतलाल विट्ठलाल ठक्कर ➤ गाँधी के प्रबल समर्थक ➤ अछुतोद्धार के क्षेत्र में भील सेवा मंडल स्थापित
ई.बी. रामास्वामी नायकर/पेरियार	➤ 1925 ई. में दलितों के उत्थान हेतु 'सेल्फ रेसपेक्ट मूवमेन्ट' गठित किया।
अलेरु सीताराम राजू	➤ आन्ध्र प्रदेश के गैर जनजातीय नेता ➤ 1924 ई. में रम्पा विद्रोह का नेतृत्व
कन्हैया लाल मानिकलाल मुंशी	➤ रचना – "Follow the Mahatma" ➤ 1938 में भारतीय विद्या भवन का निर्माण किया। ➤ 1952 में वन महोत्सव आंदोलन चलाया।
ज्योतिबा फुले	➤ 'सत्य शोधक समाज' ➤ किताब – 'गुलाम गिरि'
डॉ. केशवराव बलीराम हेडगेवार	➤ 1925 में आर.एस.एस. के संस्थापक
मदनमोहन मालवीयध्महामना	➤ गाँधीजी के शिष्या एवं सहयोगी
मेडलिन स्लाडे/मीरा बेन (ब्रिटेन की)	➤ ऋषिकेश – आश्रम 'पशुलोक' की स्थापना, 'बापूधाम' (वर्तमान में)
महादेव गोविन्द रानाडे	➤ प्रार्थना समाज
मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल/ सिस्टर निवेदिता	➤ यह आयरलैण्ड की थीं। ➤ स्वामी विवेकानन्द की शिष्या थीं।
विनायक नरहरि भावे/ आचार्य विनोबा भावे	➤ भू-दान आंदोलन के प्रवर्तक ➤ सर्वोदय आंदोलन के प्रवर्तक

theiobsyogi.com
Scanned with CamScanner

हर विलास शारदा	➤ इनके प्रयासों से 1930 ई. मे 'बाल विवाह अधिनियम' पारित ➤ शारदा एक्ट – 14 से 18 वर्ष
हेनरी विलियम डेरेजिओ	➤ 'यंग बंगाल' आंदोलन के संचालक
डॉ. आत्माराम पांडुरंग	➤ महाराष्ट्र के समाज सुधारक ➤ 'प्रार्थना समाज' के संस्थापक
अच्युत ऐश पटवर्धन	➤ कांग्रेस समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य
आनन्द मोहन बोस	➤ 'इण्डियन एसोसिएशन' के संस्थापक ➤ 'साधारण ब्रम्ह समाज' के संस्थापक
देवेन्द्रनाथ ठाकुर	➤ 'ब्रम्ह समाज' के अध्यक्ष ➤ 'तत्वबोधिनी' पत्रिका के संस्थापक ➤ 'शांतिनिकेतन' के संस्थापक ➤ उपनाम – महर्षि
धुण्डो केशर कर्वे	➤ महाराष्ट्र के समाज सुधारक ➤ दक्कन ऐजुकेशन सोसायटी से संबद्ध
ई.वी. रामास्वामी नायकर	➤ उपनाम – पेरियार ➤ दक्षिण भारत में 'आत्मसम्मान आंदोलन' चलाया।
महात्मा हंसराज	➤ आर्य समाज से संबद्ध समाज सुधारक ➤ डी.ए.वी. कॉलेज के संस्थापक
जदोनाग	➤ 'नागा आंदोलन' के नेता ➤ जिसने पृथक नागा राज्य बनाने की घोषणा की।
डॉ. कोटनिश	➤ 1938 में एम.ए. अटल के नेतृत्व में चीन भेजे गए चिकित्सक दल का सदस्य

प्रशासन

काजीराम नटराजन अन्नादुराई	➤ डी.एम.के. पार्टी के संस्थापक
कैलाशनाथ काटजु	➤ मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री
राजकुमारी अमृत कौर	➤ भारत की प्रथम स्वास्थ्य मंत्री ➤ डब्ल्य.एच.ओ. की महासचिव
ए.ओ. ह्यूम	➤ अंग्रेज आईसीएस के अधिकारी ➤ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक ➤ 1885-1906 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सचिव
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर	➤ दलित नेता ➤ महु (मध्य प्रदेश) में जन्म ➤ 'डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन' की स्थापना ➤ 'बहिष्कृत भारत' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन ➤ 'समाज समता संघ' के संस्थापक ➤ भारत सरकार में विधि मंत्री ➤ संविधान सभा के 'प्रारुप समिति' के अध्यक्ष ➤ 1956 के नागपुर अधिवेशन में बौद्ध धर्म ग्रहण किया। ➤ 1990 में मरणोपरांत भारत रत्न
जगजीवन राम	➤ उपनाम – बाबू ➤ अन्तरिम सरकार में श्रममंत्री ➤ भारत सरकार में उप प्रधानमंत्री
जेम्स बिल्सन	➤ भारत सरकार का प्रथम वित्त सदस्य ➤ 1860 में प्रथम बजट प्रस्तुत किया।
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी	➤ जनसंघ के संस्थापक ➤ स्वतंत्र भारत के पहले वाणिज्य मंत्री ➤ कश्मीर के पूर्ण विलय के आंदोलन के कारण कश्मीर में इनकी हत्या

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

क्रांतिकारी

चापेकर बन्धु	➤ 1897 में पुना प्लेग के अधिकारी रेन्ड व एम्सहर्ट की गोली मारकर हत्या (बालकृष्ण व दामोदर) ➤ बालकृष्ण – दामोदर – वासुदेव चापेकर ➤ तिलक के शिष्य
जतिनदास/बम वैज्ञानिक	➤ 64 दिन का भूख हड़ताल से मृत्यु
मैडम भीखाजी कामा	➤ पेरिस के प्रसिद्ध महिला क्रांतिकारी ➤ 1907 ई. में स्टुडगार्ड (जर्मनी) में पहली बार तिरंगा फहराया।
मदनलाल धींगरा	➤ लंदन के इंडियन हाऊस के सदस्य ➤ 1909 ई. में विलियम कर्जन वायली की हत्या की।
चित्तु पांडे	➤ 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय बलिया में स्वतंत्र सरकार/समानांतर सरकार का गठन
मतांगिनी हजारा	➤ 1929 ई. के गोलीकाण्ड में गोली लगने के बावजूद भी झण्डा नहीं छोड़ा। ➤ कृषक क्रांतिकारी विधवा
अजीत सिंह	➤ भगत सिंह के चाचा ➤ 'भारत माता' पत्र का प्रकाशक ➤ 'भारत माता सोसायटी' के संस्थापक
मास्टर अमीरचंद	➤ लाहौर बम काण्ड और दिल्ली षड्यंत्र के अभियुक्त ➤ 1915 में फाँसी
अनन्त कन्हेरे	➤ नासिक जैक्सन हत्याकाण्ड के मुख्य अभियुक्त
बारीन्द्र कुमार घोष	➤ बंगाल में क्रांतिकारी संस्था 'युगान्तर' के संस्थापक

ब्रिटिश अर्थव्यवस्था का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

(1) भारत में परम्परागत कुटीर व ग्रामोद्योग का ह्रास
(2) आधुनिक उद्योगों का विकास
(3) कृषि का वाणिज्यीकरण – खाद्यान्न की कृषि न करकर वाणिज्यिक खेती करना।
(4) धन का निकास (पलायन)
(5) नई जमींदारी प्रथा का विकास
(6) किसानों की दरिद्रता

स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित प्रमुख पुस्तकें

(रचनाकार – पुस्तकें)

दादाभाई नौरोजी	➤ 'पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया'
रोमेशदत्त	➤ 'द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'
जवाहरलाल नेहरू	➤ 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया', 'ग्लिम्पसेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री', 'मेरी कहानी'
लाला लाजपत राय	➤ 'अनहैप्पी इण्डिया', 'आर्य समाज', 'भारत में इंग्लैण्ड का ऋण', 'दयानन्द की जीवनी', 'शिवाजी की जीवनी', 'मेजिनी की जीवनी'
अबुल कलाम आजाद	➤ 'इंडिया विन्स फ्रीडम'
अरविन्द घोष	➤ 'युगान्तर', 'वन्दे मातृरम', 'कर्मयोगी', 'द लाइफ डिवाइन', 'द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी', 'द एसेस ऑन गीता', 'कनवरसेशन ऑफ द डेड', 'द सुपरमैन', 'द रैनीसेंस इन इण्डिया'
बारीन्द्र कुमार घोष	➤ 'भवानी मंदिर' (क्रांति से संबंधित)
आचार्य नरेन्द्रदेव	➤ 'समाजवाद एवं राष्ट्रीय आंदोलन'
जयप्रकाश नारायण	➤ 'समाजवाद की क्यों'

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

मोहम्मद अली जिन्ना	➤	'हमदर्द'
सरोजनी नायडू	➤	'सांग ऑफ इण्डिया'
वीर सावरकर	➤	'वार ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस'
एनी बेसेन्ट	➤	'न्यू इण्डिया'
भारतेन्दु हरिशचन्द्र	➤	'भारत दुर्दशा'
सुभाषचन्द्र बोस	➤	'इण्डियन स्ट्रगल'
लाला हरदयाल	➤	'हिन्ट्स फॉर सेल्फ कल्चर'
मैथलीशरण गुप्त	➤	'भारत-भारती'
मदनमोहन मालवीय	➤	'लीडर', 'अभ्युदय'
राजा राममोहन राय	➤	'संवाद कौमुदी'
मोहनदास करमचंद गाँधी	➤	'यंग इण्डिया', 'हिन्दु स्वराज', 'माई एक्सपेरीमेंट विथ ट्रूथ'
बाल गंगाधर तिलक	➤	'गीता रहस्य'
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	➤	'इण्डिया डिवाइडेड'

भारत का स्वतंत्रता संघर्ष

महत्वपूर्ण तथ्य

- 'शुद्धि आंदोलन' के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती थे।
- 'राष्ट्रीय युवा दिवस' स्वामी विवेकानंद से संबंधित है।
- 'देव समाज' के संस्थापक शिव नारायण अग्निहोत्री थे।
- 'यंग बंगाल' आंदोलन का प्रवर्तक विवियन डेरीजियो था।
- चर्चिल ने महात्मा गाँधी को अर्द्धनग्न फकीर कहा था।
- डंडा फौज का गठन पंजाब में चमनदीव ने किया था।
- महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले थे।
- दिल्ली षड्यंत्र में दीनानाथ के द्वारा मुखबिरी की गई थी।
- 'बारदोली आंदोलन' का नेतृत्व वल्लभभाई पटेल ने किया था।
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को 'बिना ताज का बादशाह' कहा जाता है।
- भारत का विस्मार्क सरदार वल्लभभाई पटेल को कहा जाता है।
- एम.जी. रानाडे, गोखले के आध्यात्मिक एवं राजनीतिक गुरू थे।
- अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना लखनऊ में हुई।
- पहला अंग्रेज विरोधी संघर्ष सन्यासियों के द्वारा शुरू किया गया।
- 'भारत, भारतीयों के लिये' का नारा आर्य समाज ने दिया था।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम 'महात्मा' कहा।
- 'आत्मसम्मान आंदोलन' की शुरूआत रामस्वामी नायकर ने की थी।
- सुभाषचन्द्र बोस को सर्वप्रथम 'नेताजी' ऐडोल्फ हिटलर ने कहा था।
- गोपाल हरिदेशमुख को 'लोकहितवादी' के नाम से भी जाना जाता है।
- भगतसिंह को फाँसी की सजा सुनाने वाला न्यायाधीश जी.सी. हिल्टन थे।
- महाराष्ट्र से महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी पत्र 'काल' का संपादन परांजपे ने किया।
- सबसे कम उम्र में फाँसी की सजा पाने वाला क्रांतिकारी खुदीराम बोस था।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कुख्यात सेलुलर जेल अण्डमान में स्थित है।
- सबके लिये एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर का नारा श्री नारायण गुरू ने दिया।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेने वाले भारतीय नेता थे।
- 21 दिसंबर, 1909 ई. को अनंत कन्हरे ने जैक्सन की गोली मारकर हत्या कर दी।
- "मैं एक क्रांतिकारी के रूप में कार्य करता हूँ।" यह कथन जवाहरलाल नेहरू का है।
- 19वीं शताब्दी के 'भारतीय पुनर्जागरण का पिता' राजा राममोहन राय को कहा जाता है।
-
-
- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने 1905 ई. में लंदन में 'इण्डियन होमरूल सोसायटी' की स्थापना की।
- महात्मा गाँधी ने 1925 ई. और 1930 ई. में कांग्रेस की सदस्यता से दो बार इस्तीफा दिया था।
- बाल गंगाधर तिलक ने 1893 ई. में गणपति एवं 1895 ई. में शिवाजी उत्सव मनाना प्रारंभ किया।
-
- 23 फरवरी, 1931 ई. को चन्द्रशेखर आजाद पुलिस मुठभेड़ में इलाहाबाद के अलफ्रेड पार्क में शहीद हुए।

16 अगस्त, 1909 को इन्हें

-

मृत्युदण्ड दिया गया।

- पंजाब के सुनाम नामक स्थान के सरदार ऊधमसिंह ने 13 मार्च, 1940 ई. को लंदन में पंजाब के भूतपूर्व लेफ्टीनेंट गवर्नर डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।
-

'लक्ष्मीबाई रेजीमेंट' था।

- 08 नवंबर, 1943

क्रमशः 'शहीद द्वीप' और 'स्वराज्य द्वीप' रखा।

भारत के महान शहीद

खुदीराम बोस	➤ 1908 में सेशन जज किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंकने के कारण वेणी रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार एवं 11 अगस्त, 1908 को फाँसी की सजा।
अशफाकउल्ला खाँ	➤ 19 अगस्त, 1925 ई. को काकोरी डाकगाड़ी डकैती कांड के अभियोग में राजेन्द्र लाहिड़ी के साथ बंदी एवं 18 दिसंबर, 1927 ई. को फाँसी की सजा।
ऊधमसिंह	➤ 13 मार्च, 1940 को सर माइकल-ओ-डायर को कैक्सटन हॉल, लंदन में गोली मारने के कारण गिरफ्तार एवं 12 जून, 1940 ई. को फाँसी की सजा।
भगत सिंह	➤ सान्डर्स की हत्या तथा 08 अप्रैल, 1929 को केन्द्रीय विधानसभा में बम फेंकने के सिलसिले में गिरफ्तार एवं 23 मार्च, 1931 ई. को सुखदेव व राजगुरु के साथ फाँसी की सजा।
सुखदेव	➤ सान्डर्स की हत्या के केस में मौत की सजा हुई। 15 अप्रैल, 1929 ई. को गिरफ्तार एवं 23 मार्च, 1931 ई. को भगत सिंह के साथ फाँसी दी गई।
बटुकेश्वर दत्त	➤ भगत सिंह के साथ केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकने के आरोप में गिरफ्तार हुए एवं इन्हें आजीवन कारावास का दण्ड मिला।
चन्द्रशेखर आजाद	➤ काकोरी डाकगाड़ी के डकैती केस के मुख्य आरोपी तथा अंग्रेजी सरकार ने इन्हें जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिये तीस हजार रू. पुरस्कार की घोषणा की। 23 फरवरी, 1931 ई. को एल्फर्ड पार्क इलाहाबाद में शहीद हुए।
मास्टर अमीरचन्द	➤ दिल्ली षड्यंत्र के प्रमुख क्रांतिकारी अमीचन्द फरवरी, 1914 ई. में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग के हत्या करने के आरोप में गिरफ्तार एवं 08 मई, 1915 ई. को चार साथियों के साथ इन्हें फाँसी दी गई।
अवध बिहारी	➤ दिल्ली षड्यंत्र केस एवं लाहौर बम काण्ड के आरोप में फरवरी, 1914 ई. में गिरफ्तार एवं 08 मई, 1915 ई. को फाँसी।
मदनलाल धींगरा	➤ 01 जुलाई, 1909 ई. में कर्नल विलियम कर्जन वाइली की हत्या करने के कारण गिरफ्तार एवं 16 अगस्त, 1909 ई. में फाँसी।
दामोदर च.पेकर	➤ 22 जून, 1897 ई. को प्लेग कमिश्नर रैन्ड और लेफ्टिनेंट एमहर्स्ट हत्या के आरोप में अपने भाइयों के साथ गिरफ्तार एवं 18 अप्रैल, 1898 ई. को फाँसी दी गई। इनके भाई बालकृष्ण चापेकर को 12 मई, 1899 ई. तथा वासुदेव चापेकर को 08 मई, 1899 ई. में फाँसी दे दी गई।
वासुदेव बलवन्त फड़के	➤ सशस्त्र सेना बनाकर ब्रिटिश सेना का विरोध करने के कारण कालापानी की सजा के सिलसिले में अदन में आमरन अनशन करके 1883 ई. में प्राणत्याग।
अनन्त कन्हरे	➤ नासिक के जैक्शन हत्याकाण्ड में प्रमुख अभियुक्त। अप्रैल 1910 में फाँसी।
सूर्यसेन	➤ 18 अप्रैल, 1930 ई. में चटगाँव शस्त्रागार पर आक्रमण। जनवरी, 1934 ई. में फाँसी।

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

उपाधि, प्राप्तकर्ता एवं दाता

उपाधि	प्राप्तकर्ता	दाता
'राजा'	राजा राममोहन राय	अकबर द्वितीय
'विवेकानंद'	स्वामी विवेकानंद	महाराजा खेतड़ी
'गुरूदेव'	रवीन्द्रनाथ टैगोर	महात्मा गाँधी
'नेताजी'	सुभाषचन्द्र बोस	हिटलर
'राष्ट्रपिता'	महात्मा गाँधी	सुभाषचन्द्र बोस
'महात्मा'	महात्मा गाँधी	रवीन्द्रनाथ टैगोर
'सरदार'	वल्लभभाई पटेल	बारदोली की महिलाएँ
'कायदे आजम'	मोहम्मद अली जिन्ना	महात्मा गाँधी
'देशरत्न'	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	महात्मा गाँधी
'लोकमान्य'	बालगंगाधर तिलक	
'पंजाब केशरी'	लाला लाजपत राय	
'भारत का बिस्मार्क'	वल्लभभाई पटेल	
'लौहपुरूष'	वल्लभभाई पटेल	
'ग्रैण्ड ओल्ड मैन ऑफ इण्डिया'	दादाभाई नौरोजी	
'नाइटेंगल ऑफ इण्डिया'	सरोजनी नायडू	
'दीनबन्धु'	सी.एफ. एण्ड्रुज	
'देशबन्धु'	चितरंजन दास	
'शहीद-ए-आजम'	भगत सिंह	

प्रमुख व्यक्तियों के कथन एवं नारे

दयानंद सरस्वती	➤ "भारत भारतीयों के लिये है"
	➤ "वेदों की ओर लौटो"
	➤ "जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि एवं उत्तम होता है।"
विवेकानंद	➤ "स्वधीनता, विकास का प्रथम चरण है"
भारतेन्दु हरिशचन्द	➤ "हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान"
मंगल पांडे	➤ "मारो फिरंगी को"
भगत सिंह	➤ "इंकलाब जिन्दाबाद"
	➤ "साम्राज्यवाद का नाश हो"
मोहम्मद इकबाल	➤ "इंकलाब"
	➤ "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा"
श्यामलाल गुप्ता	➤ "झण्डा ऊँचा रहे हमारा"
रामप्रसाद बिस्मिल	➤ "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है"
सुभाषचन्द्र बोस	➤ "जयहिन्द" "दिल्ली चलो"
	➤ "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा"
बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय	➤ "वन्दे मातृरम"
	➤ "कांग्रेस के लोग पदों के भूखे हैं"
रवीन्द्रनाथ टैगोर	➤ "जन-गण-मन"
	➤ "आमार सोनार बांग्ला"
	➤ "एकला चलो रे"
बाल गंगाधर तिलक	➤ "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहुंगा"
लाला लाजपत राय	➤ "साइमन वापस जाओ"
	➤ "मेरे शरीर पर पड़ा प्रत्येक लाठी का प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की कील साबित होगा"
	➤ "अगर संसार में कोई पाप है तो कमजोरी, कमजोरी मौत है"

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

राजेन्द्र प्रसाद	➤ "पाकिस्तान के वास्तविक संस्थापक जिन्ना अथवा रहीमउल्ला नहीं वरन् लॉर्ड मिण्टो थे"
मौलाना आजाद	➤ "नेहरू एक राजभक्त है, जबकि जिन्ना एक राजनीतिज्ञ"
सरदार पटेल	➤ "कर मत दो"
वीर सावरकर	➤ "बिना अनुशासन की वीरता कायरता के समान ही व्यर्थ होती है"
माण्टेग्यू	➤ "हवा में रहने वाला शुद्ध दार्शनिक" (महात्मा गाँधी के संदर्भ में)
जवाहरलाल नेहरू	➤ "पूर्ण स्वराज्य"
	➤ "आराम हराम है"
	➤ "वे हेव मेड ए ट्रायस्ट विद डेस्टिनी"
	➤ "हू लिव्स इफ इण्डिया डाइज"
	➤ "अनेक ब्रेकों वाली परन्तु इंजन रहित मशीन" (1935 अधिनियम के संदर्भ में)
	➤ "मैं स्वभाव से ही समाजवादी हूँ"
	➤ "दासता का नया चार्टर" (1935 अधिनियम के संदर्भ में)
महात्मा गाँधी	➤ "करो या मरो"
	➤ "अंग्रेजो भारत छोड़ो"
	➤ "सत्य और अहिंसा ही मेरा ईश्वर है"
	➤ "पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा"
	➤ "भारत के सौरमण्डल का एक सितारा डूब गया" (लाला लाजपत राय की मृत्यु के संदर्भ में)
	➤ "नेहरू में राजनीतिक उत्तराधिकारी है"

पं. जवाहरलाल नेहरू मंत्रिमण्डल

(1947-1950)

➤ 1947– 24 जनवरी 1950	→ गवर्नर जनरल – सी. राजगोपालाचारी
➤ 24 जनवरी–1950–1969	→ राष्ट्रपति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
➤ 1962–1964	→ राष्ट्रपति – डॉ. राधाकृष्णन
➤ 15 अगस्त 1947	→ भारत आजाद
➤ 26 अक्टूबर 1947	→ पाकिस्तानी सेना का कबिलाई आक्रमण जम्मू-कश्मीर में।
➤ जनवरी 1948	→ UNO का जम्मू-कश्मीर में सीजफॉयर का आदेश।
➤ 1948	→ भारत की प्रथम औद्योगिक नीति जारी।
	→ जुनागढ़, हैदराबाद, जम्मू-कश्मीर का भारत संघ में विलय।
	→ भारत का राष्ट्रमण्डल में बने रहने का निर्णय।
	→ NCC का गठन
➤ 1949	→ RBI का राष्ट्रीयकरण
	→ राष्ट्रीय आय का अनुमान समिति का गठन
	→ अयोध्या विवाद का पुनर्जन्म
➤ 1950	→ योजना आयोग का गठन
	→ जय प्रकाश नारायण जी का सर्वोदय योजना
	→ भारतीय संविधान लागू।
	→ सार्वजनिक वितरण प्रणाली की शुरूआत
	→ सरदार वल्लभ भाई पटेल का देहांत

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

▶ 1951
→ पंचवर्षीय योजना प्रारंभ, महाकौशल समाचार पत्र
→ SFC का गठन
→ राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC) का गठन
→ एशियाड खेल प्रतियोगिता प्रारंभ
→ भारत का प्रथम रेलवे जोन 'चेन्नई' का उद्घाटन
→ जनसंघ का गठन
→ पंजाब में प्रथम बार राष्ट्रपति शासन लागू
→ संविधान में पहला संशोधन अनुसूचि–9 जोड़ा गया।

▶ 1952
→ भारत का प्रथम आम चुनाव।
→ परिवार नियोजन कार्यक्रम प्रारंभ।
→ सामुदायिक विकास कार्यक्रम प्रारंभ
→ FSI, Hindustan Shipyard का राष्ट्रीयकरण
→ पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का काश्मीर अभियान।
→ वन महोत्सव व आंदोलन, प्रथम वन नीति
→ W.W.E. का गठन

▶ 1953
→ Air lines का राष्ट्रीयकरण, Air India तथा इण्डियन Air lines का गठन
→ आंध्रप्रदेश राज्य का भाषा के आधार पर गठन।
→ सिविल सेवा में सुधार के लिए पॉल एच. एपल्बि समिति का गठन।
→ राज्य पुनर्गठन आयोग – फजल अली आयोग का गठन
→ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का संदेहास्पद देहांत

▶ 1954
→ भारत–चीन बाइंग सम्मेलन
इण्डोनेशिया में सम्मेलन। पंचशील समझौता पर हस्ताक्षर। चीन का तिब्बत पर दावा को भारत की मान्यता।
→ पाण्डिचेरी का भारत संघ में विलय।

thejobsyogi.com

▶ 1955
→ पंचशील समझौता लागू।
→ DCICI का गठन

▶ 1956
→ राज्यों का भाषा के आधार पर पुनर्गठन।
→ डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नागपुर सम्मेलन, बौद्ध धर्म ग्रहण, देहांत।
→ अप्सरा, भारत का प्रथम अनुसंधान रियेक्टर स्थापित ट्राम्बे में।
→ नई औद्योगिक नीति – भारत
→ LIC का राष्ट्रीय करण
→ UGC का गठन
→ द्वितीय पंचवर्षीय योजना प्रारंभ
→ छत्तीसगढ़ महासभा का गठन
→ मुंदणा कांड
→ बरार मध्य प्रांत से मुम्बई राज्य को हस्तांतरित एवं मध्यप्रदेश राज्य का गठन

▶ 1957
→ लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, 'पंचायतीराज' पर बलवंत राज्य मेहता समिति का गठन।

▶ 1958
→ ONGC का गठन
→ मेहता समिति का रिपोर्ट

▶ 1959
→ 2 अक्टूबर 1959 'नागौर' राजस्थान से पंचायती राज लागू।
→ भिलाई स्टिल प्लांट का डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा उद्घाटन।
→ दलाई लामा को भारत द्वारा राजनीतिक शरण।
→ T.V. प्रसारण का प्रायोगिक परीक्षण।

▶ 1960
→ मुम्बई स्टेट का महाराष्ट्र राज्य में पुनर्गठन
→ भारत–पाकिस्तान सिंधु नदी जल समझौता

▶ 1961
→ तृतीय पंचवर्षीय योजना प्रारंभ।
→ BSP का निर्माण पूर्ण।

Scanned with CamScanner

→ NAM गुट निरपेक्ष आंदोलन का गठन।

पं. जवाहर लाल नेहरू, मार्शल टीटो (रा.युगो.) नासीर हुसैन (राष्ट्रपति मिस्र)

→ गोवा का भारत संघ में विलय।

➤ **1962**

→ भारत पर चीन का आक्रमण।

→ ITBB का गठन

→ संथानम समिति (भ्रष्टाचार) का गठन

→ डॉ. राधाकृष्णन भारत का राष्ट्रपति निर्वाचित।

→ भारत में प्रथम राष्ट्रपति आपातकाल लागू।

→ नागालैंड राज्य का गठन

➤ **1963**

→ CBI का गठन

→ भारत का पहला राकेट – 'नाइक अपाचे' का परीक्षण।

➤ **1964**

→ पं. नेहरू जी का देहांत। शास्त्री प्रधानमंत्री बने।

→ CNC का गठन

→ IDBP का गठन

→ VTI का गठन

→ जामुल सिमेंट प्लांट निर्मित।

लाल बहादुर शास्त्री

(1964–11 जनवरी 1966)

➤ **1965**

→ कोरबा में BALCO की स्थापना।

→ द्वितीय भारत–पाक युद्ध

→ HYVP : High yield variety program की शुरूआत (खरीफ फसल)

→ BSF की स्थापना

→ All India Radio के शाखा के रूप में दैनिक दूरदर्शन प्रसारण की शुरूआत

➤ **1966**

→ जनवरी में ताशकंद समझौता : उजबेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में भारत–पाक के मध्य महत्वपूर्ण समझौता लाल बहादुर शास्त्री एवं पाक प्रधानमंत्री अयुब खान के मध्य।

→ हरित क्रांति की शुरूआत

→ W.R.S. का रायपुर में गठन

→ इंदिरा गांधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री

→ 'कोठारी आयोग' का गठन, जिसके आधार पर पहली शिक्षा नीति का विवरण दिया गया।

→ पंजाब को दो राज्यों पंजाब व हरियाणा में विभाजन

➤ **1967**

→ जाकिर हुसैन भारत के तीसरे राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित

→ खूबचंद बघेल द्वारा छत्तीसगढ़ भातृत्व संघ का निर्माण

→ बंगाल में नक्सलवाद विचारधारा की शुरूआत

→ कोयना महाराष्ट्र में भीषण भूकंप

➤ **1968**

→ NMDC : छत्तीसगढ़ के बैलाडीला में स्थापना

→ हरगोविंद खुराना के नेतृत्व में भारत की पहली शिक्षा नीति लागू।

➤ **1969**

→ वी.वी. गिरी भारत के चौथे राष्ट्रपति निर्वाचित।

→ ISRO की स्थापना

→ CISF की स्थापना

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

- → 14 बड़े बैंको का राष्ट्रीयकरण
- → इन्दिरा कांग्रेस का गठन

➤ 1970
- → वर्गीस कुरियन द्वारा दुग्ध क्रांति की शुरूआत

➤ 1971
- → तृतीय भारत–पाक युद्ध
- → द्वितीय आपातकाल लागू
- → 16 दिसम्बर जनरल नियाजी (पाकिस्तान) का जगजीत सिंह अरोरा के समक्ष समर्पण
- → बाघ व मोर को राष्ट्रीय पशु एवं राष्ट्रीय पक्षी के रूप में घोषणा

➤ 1972
- → बांग्लादेश का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय।
- → वन्य जीव प्राणी संरक्षण अधिनियम लागू।
- → GIC का राष्ट्रीयकरण।
- → शिमला समझौता : भारत और पाक के मध्य श्रीमती इंदिरा गांधी व जुल्फीकार अली भुट्टो ने किया।

➤ 1973
- → भारत सरकार के द्वारा बाघों के संरक्षण हेतु प्रोजेक्ट टाइगर अपनाया गया।

➤ 1974
- → 18 मई को पोखरण राजस्थान में पहली नाभिकीय परीक्षण किया गया।
- → जिम कार्बेट नेशनल पार्क (उत्तराखण्ड) को भारत का पहला टाइगर रिजर्व घोषित किया गया।

➤ 1975
- → इंदिरा गांधी द्वारा आंतरिक अशांती के आधार पर राष्ट्रीय आपातकाल लागू किया।
- → इलाहाबाद हाइकोर्ट द्वारा राजनारायण V/S इंदिरा गांधी के मध्य ऐतिहासिक फैसला सुनाया गया
- → 10 अप्रैल को सिक्किम को भारतीय संघ में राज्य का दर्जा दिया गया।
- → क्षेत्रीय ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना
- → ICDP प्रोग्राम की शुरूआत
- → बीस सुत्रिय कार्यक्रम (गरीबी हटाने और रोजगार बढ़ाने हेतु) की शुरूआत
- → 'आर्यभट्ट' प्रथम भारतीय उपग्रह का बैंकुवर कजाकिस्तान से परीक्षण
- → जयप्रकाश नारायण द्वारा समग्र क्रांति लाया गया।

➤ 1976
- → 42वां संविधान संशोधन Mini Constitution of India कहा जाता है, संसद में पास हुआ।
- → पहली जनसंख्या नीति
- → सामाजिक वानिकी कार्यक्रम की शुरूआत

➤ 1977
- → मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी सरकार का गठन
- → 1977–80 के मध्य Rolling plan लागू
- → मण्डल आयोग का गठन

➤ 1978
- → 44वां संविधान संशोधन
- → NTPC कोरबा (छत्तीसगढ़) में स्थापित

➤ 1979
- → IRDP (एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम) की शुरूआत
- → मदर टेरेसा को शांति का नोबल पुरस्कार

➤ 1980
- → श्रीमती इंदिरा गांधी का पुनः प्रधानमंत्री के रूप में द्वितीय अवधि की शुरूआत
- → 6वां पंचवर्षीय योजना लागू
- → 6 अन्य बड़े बैंको का राष्ट्रीयकरण
- → अटल बिहारी वाजपेयी एवं लाल कृष्ण अडवानी के द्वारा भारतीय जनता पार्टी का गठन किया गया। लाल कृष्ण अडवानी प्रथम अध्यक्ष बने।
- → वन संरक्षण अधिनियम

➤ 1981
- → द्वितीय कृत्रिम उपग्रह एप्पल का परीक्षण

➤ 1982
- → INSAT का गठन
- → NABARD का गठन
- → आयात–निर्यात बैंक का अस्तित्व
- → रंगीन दूरदर्शन का प्रसारण
- → ज्ञानी जैल सिंह भारत के प्रथम सिक्ख राष्ट्रपति निर्वाचित

➤ 1983
- → IGMDP का गठन
- → भारत की विश्व क्रिकेट कप की जीत
- → सुब्रमह्यणम चंद्रशेखर को 'चंद्रशेखर लिमिट' के लिए भौतिक का नोबल पुरस्कार

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

1984	→ राजीव गांधी प्रथम युवा प्रधानमंत्री
	→ राकेश शर्मा प्रथम अंतरिक्ष यात्री हुए।
	→ इंदिरा गांधी की हत्या
	→ ऑपरेशन ब्लु स्टार
	→ ऑपरेशन मेघदूत
	→ इंदिरा आवास योजना का शुभारंभ
1985	→ 'दल–बदल कानून' भारतीय संविधान अनुसूची 10 जोड़ा गया।
	→ SPG का गठन
	→ इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी
	→ सातवां पंचवर्षीय योजना
	→ SAARC का गठन
1986	→ बोफोर्स तोप घोटाला
	→ एल.एम. सिंघवी आयोग का गठन, ग्राम सभा के संदर्भ में
	→ नई शिक्षा नीति, ऑपरेशन 'ब्लैकबोर्ड'
	→ पर्यावरण संरक्षण अधिनियम
	→ ग्राहक सुरक्षा अधिनियम
1987	→ TRYFED व NEFED का गठन
	→ IRS Series (सुदूर संवदेन उपग्रहों की शुरूआत)
	→ BIFR (औद्योगिक पुर्निमाण व विकासं बैंक)
	→ गोवा को राज्य का दर्जा
1988	→ SEBI (सिक्योरिटी एक्सचेंज बोर्ड)
	→ NHB (नेशनल हाऊसिंग बोर्ड)
	→ वयस्क मताधिकार की उम्र 21 से 18 वर्ष
	→ पृथ्वी मिसाइल का परीक्षण
	→ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम

1989	→ बी.पी. सिंह का मोर्चा सरकार
	→ अनुसूचित जाति व जनजाति अधिनियम
	→ अग्नि मिसाइल का परीक्षण
	→ बोडोलैण्ड स्वायत्त परिषद का गठन

चंद्रशेखर सरकार

1990	→ आकाश मिसाइल व त्रिशूल मिसाइल
	→ SIDBI का गठन
	→ मण्डल आयोग की सिफारिश से लागू

पी.वी. नरसिम्हाराव

1991	→ नई औद्योगिक नीति एवं नवीन आर्थिक नीति
	→ पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या
1992	→ पंचायतीराज अधिनियम
	→ हर्षद मेहता शेयर घोटाला
1993	→ NSF का गठन
	→ अन्य पिछड़ा वर्ग अधिनियम
1994	→ 73वां संविधान संशोधन के अनुसार, मध्यप्रदेश (छत्तीसगढ़ सहित) पहला राज्य जहां पंचायत चुनाव हुए।
1995	→ मानवाधिकार आयोग
	→ VSNL के द्वारा पहली बार इंटरनेट सेवा की शुरूआत
	→ वृद्धावस्था पेंशन योजना की शुरूआत

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

अटल बिहारी (13 दिवसीय)

➤ 1996	→ अटलांटा ओलंपिक लिएंडर पेस ने कांस्य पदक जीता
	→ देवगोड़ा सरकार (1996–97)
➤ 1997	→ इंद्र कुमार गुजराल सरकार (1997–98)
	→ BIMSTEC का गठन
➤ 1998	→ अटल बिहारी बाजपेयी द्वितीय काल
	→ 13 मई से 18 मई द्वितीय परमाणु परीक्षण 'शक्ति 1998'
➤ 1999	→ अटल बिहारी बाजपेयी तृतीय काल
	→ कारगील युद्ध
➤ 2000	→ सिडनी ओलंपिक कर्णम मलेश्वरी (कांस्य पदक)
	→ 1 नवम्बर छत्तीसगढ़, 9 नवम्बर उत्तराखण्ड, 5 नवम्बर झारखण्ड नवीन राज्य स्थापित
	→ प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
	→ अन्त्योदय अन्न योजना, अन्नपूर्णा योजना
	→ TRI (टेलिकॉम रेगुलेटरी अथारिटी ऑफ इंडिया) का गठन

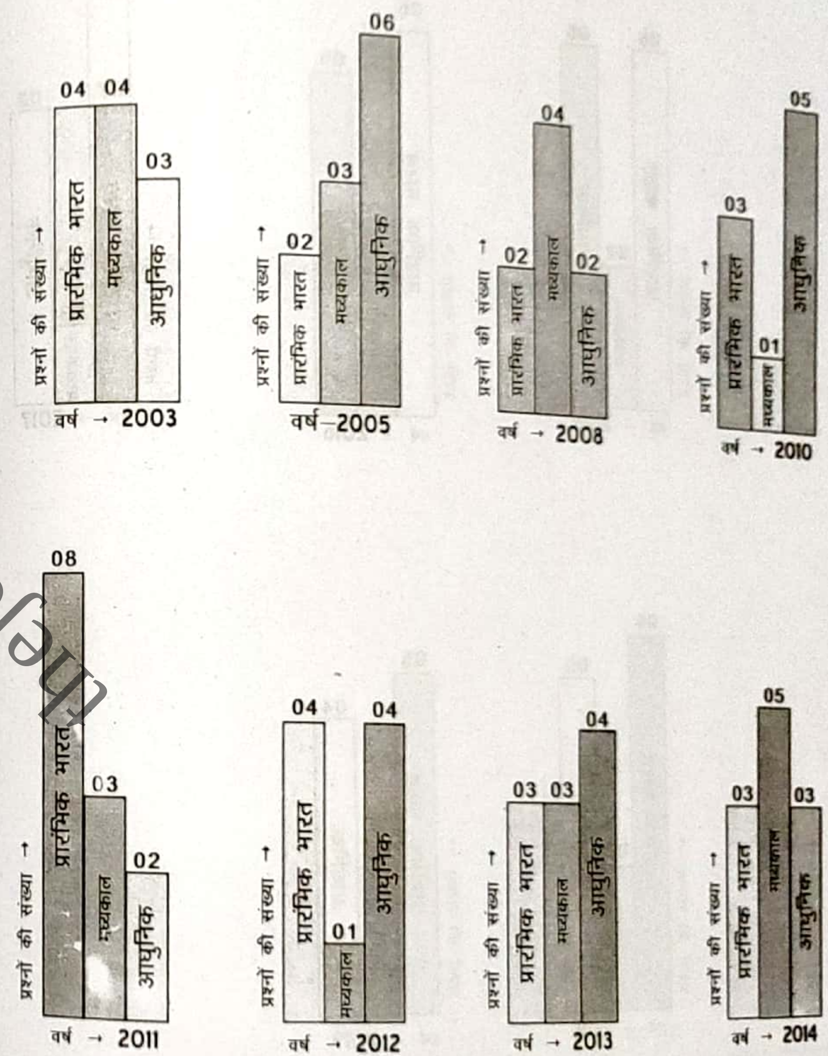

thejobsyogi.com
Scanned with CamScanner

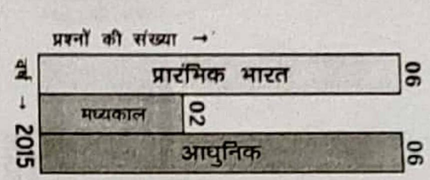

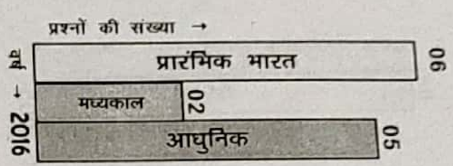

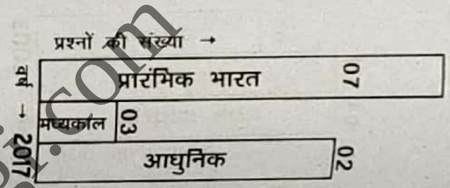

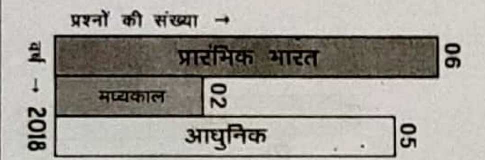

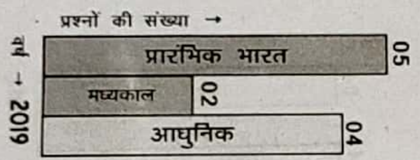

thejobsyogi.com

Scanned with CamScanner